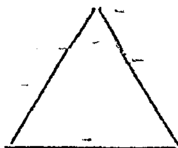
श्रीक्षपणासारगर्भित लब्धिसारका

अर्थसंदृष्टि अधिकार ।

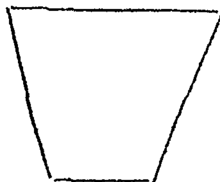
संदृष्टेर्लब्धिसारस्य क्षपणासारमीयुषः ।
प्रकाशिनः पदं स्तौमि नेमीन्दोर्माधवप्रभोः ॥ १ ॥

अथ लब्धिसार क्षपणासार शास्त्रविषै कहे जे अर्थ तिनविषै केते इक अर्थनिकी सं-
दृष्टि जो पूर्वाचार्यनिकरि कीनी संकेतरूप सहनानी तिनके स्वरूपका निरूपण कीजिए-
है— सो संदृष्टि तौ मूलग्रन्थविषै वा टीकाविषै जैसैं लिखीं तैसैं इहां लिखिए है । तहां
परंपरा लेखक दोषतैं जे संदृष्टि तहां अन्यथा लिखीं तिनिने बुद्धि अनुसारि सवांरि लि-
खौंगा । वा बुद्धि भ्रमतैं अन्यथा लिखों तौ विशेषबुद्धि सवांरि लीजियो । बहुरि तिनि-
का स्वरूप गाथानिविषै लिख्या नाहीं टीकाविषै भी लिख्या नाहीं मैं मेरी बुद्धि अनुसारि
विधि मिलाइ २ तिनके स्वरूपकौं लिखौंगा सो आकारादिरूप संदृष्टि तौ कठिन अर मेरी
बुद्धि अल्प, शास्त्रविषैं लिख्या नाहीं, वा बतावनेवाला मिल्या नाही तातैं जानौ हौं तिनके
स्वरूप लिखनेमैं चूक परैगी परंतु मार्ग तौ जान्या जाइ इस वासतैं मैं लिखौं हौं सो जहां
क होइ तहां विशेषबुद्धि सवांरि शुद्ध करियो । मोकौं बालक मानि क्षमा करियो । ब-
हुरि इहां संदृष्टि वा तिनका स्वरूप विषैं जिनिका मोकौं स्पष्ट ज्ञान न भया ते इहां नाही

लिखी हैं, मूल ग्रंथतैं जानियो। बहुरि केते इक सुगम जानि ग्रंथ विस्तार भयतैं नाहीं लिखिये है। तिनिकौं विधि मिलाइ जानिये बहुरि केते इक गोम्मटसार टीकाका संदृटि अधिकार विषै लिखी हैं ते इस शास्त्रविषै थीं तिनकौं इहां नाहीं लिखिए है तहांतैं जानियो। बहुरि जे इहां संदृष्टि वा तिनका स्वरूप इहां लिखिए है ते इहांतैं जानियो। तहां एकबार जिस अर्थकी जो संदृष्टि लिखी होइ सोई तिस अर्थकी जहां तहां संदृष्टि जानि लेनी। ग्रंथ विस्तारभयतैं वारम्बार लिखी नाही है। बहुरि इहां लिखी संदृष्टिनिकौं वा तिनके स्वरूपकौं जान्या चाहे सो पहलै तौ श्रीगोम्मटसारकी भाषाटीकाविषै जो जुदा जुदा संदृष्टि अधिकार कीया है ताकौं अभ्यासै तहां पहलैं सामान्यस्वरूप निरूपण कीया है ताकौं जानैं तौ संदृष्टिनिकौं पहिचानै अर विशेषकौं जानैं। वहां इहां सदृश संदृष्टि होइ तिनिका ज्ञान होइ जाइ। बहुरि इहां आकार रूप संदृष्टि बहुत हैं। तहां ऊर्ध्व रचनाविषै घटता क्रमलीएं निषेकादिकनिकी संदृष्टि ऐसी—

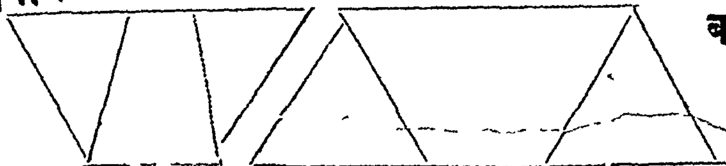


अर गुणश्रेणि आयामादिविषैं बधता क्रमकी ऐसी



अर पूर्वै द्रव्य था

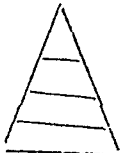
अर नवीन द्रव्य और मिलाये तहां दो बडा लीक, तहां पूर्वै घटता क्रम था अर दीया द्रव्य का बधता क्रम है वा पूर्वै बधता क्रम था, दीया द्रव्य घटता क्रम लीएं था तिनकी ऐसी संदृष्टि जाननी।



बहुरि नीचले ऊपरले निषेकनिविषै जैसैं जैसैं विधान होइ तैसैं तैसैं नीचे ऊपरि रचना लिखनी। बहुरि समपट्टिकाविषैं समरूप रचना ऐसी करनी। बहुरि अनुभाग आदि तिर्यग् रचनाविषै आडी रचना करनी तहां समपट्टिकाकी सूची ऐसी घटता क्रमकी ऐसी करनी इत्यादि अनेक प्रकार हैं। सो आगैं जहां संदृष्टि लिखैंगे तहां तिनका स्वरूप भी लिखैंगे सो जानना। तहां पहलैं प्रथमोपशम सम्यक्त्वका विधानकी संदृष्टि कहिए है–

तहां प्रकृतिनिका बंध उदय सत्त्वविषै कूट रचना गोम्मटसारका स्थान समुत्कीर्तन अधिकारविषै जैसैं कही है तैसैं इहां संभवती जानि लेनी। बहुरि तीनों करणनिकी संदृष्टि गोम्मटसारका संदृष्टि अधिकारविषै गुणस्थानाधिकारविषै जैसैं कही है तैसैं जाननी। बहुरि अपकर्षण उत्कर्षणका कथनविषै परमाणूनिकी अपेक्षा घटता क्रम लीएं जे निषेक तिनकी ऐसी △ संदृष्टि

करि तहां अपकर्षणविषैं जघन्य अतिस्थापन जघन्य निक्षेपकी संदृष्टिविषै तौ जघन्य अतिस्थापन अर जघन्य निक्षेप अर ग्रह्या हूवा निषेक इनका विभागके अर्थि ऐसी—

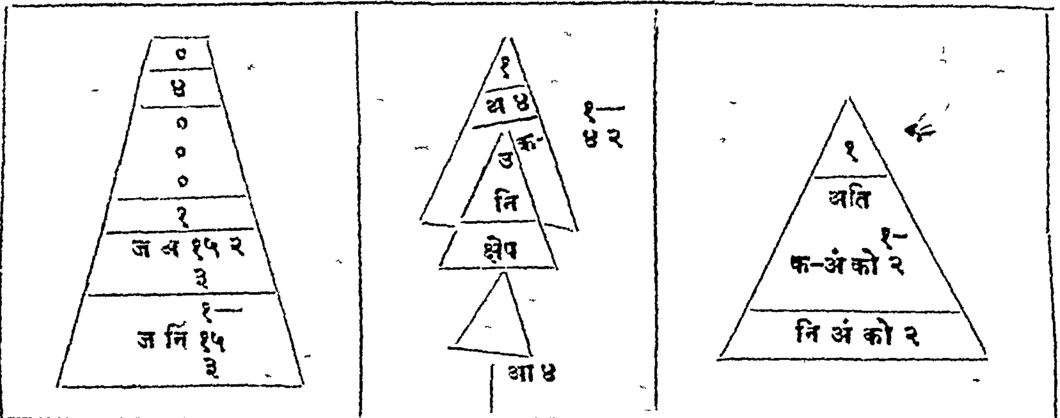


इह

ए

वीचिमें लीककरि तहां आवलीकी संहनानी इहां सोलह तामैं एक घटाएं पंद्रह ताका त्रिभाग एक अधिक प्रमाण नीचले निषेक जघन्य निक्षेप हैं। अर तामैं पंद्रहका दोयत्रिभाग मात्र वीचिके निषेक जघन्य अतिस्थापन अर ताके ऊपरि ग्रह्या हूवा निषेक एक लिखना अर ताके ऊपरि अपकर्षणके अन्य भेदनिके अर्थि विंदी लिखनी। बहुरि उत्कृष्ट निक्षेप आतिस्थापनकी संदृष्टिविषै नीचै तौ आबाधावली अर ऊपरि उत्कृष्ट निक्षेप ताके ऊपरि उत्कृष्ट अतिस्थापन, ता ऊपरि ग्रह्या हूवा अंतका निषेक स्थापना। इहां आबाधाविषै निषेक रचना नाहीं है तातैं ऊभी लकीर ही करनी। अर अतिस्थापन ग्रह्या निषेकका विभागके अर्थि निषेक रचनाके वीचिमें लकीर करनी तहां आवलीकी संहनानी च्यारिका अंक उत्कृष्ट निक्षेपविषै कर्म स्थितिकी संहनानी ऐसी (क) ताके आगैं ४८ इनकी सहनानी ऐसी (—) बहुरि ताके आगैं हीनका प्रमाण एक समय अधिक दोय आवली ४। २ लिखनी बहुरि ग्रह्या हूवा निषेक एक लिखना। बहुरि व्याघातविषै अतिस्थापन निक्षेप ताकी रचनाविषै तहां निक्षेप अतिस्थापन ग्रह्या हूवा निषेकका विभागके अर्थि वीचिमें लीककरि तहां निक्षेपका प्रमाण अंतः कोटाकोटि (अं को २) अतिस्थापनका प्रमाण कर्म स्थिति (क)

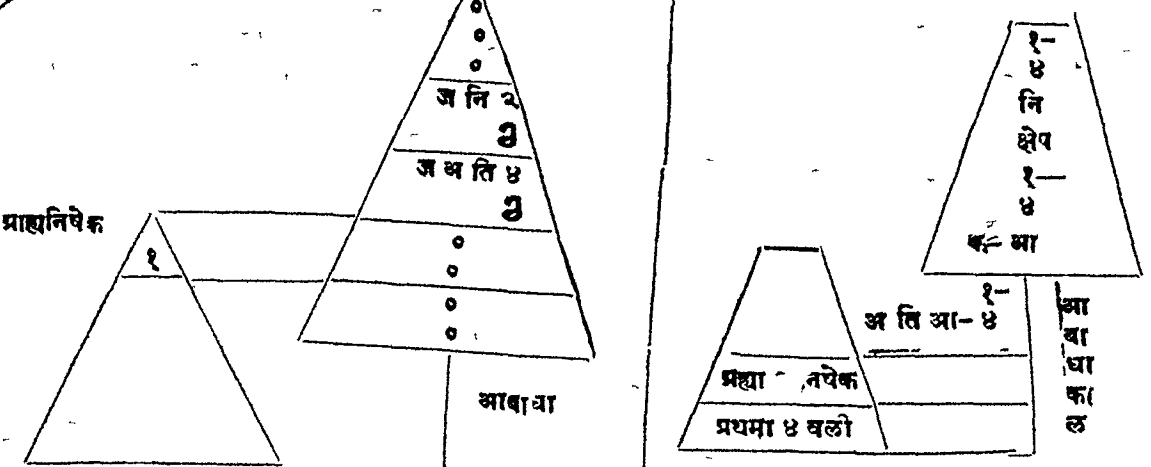
मैं घटावना (—) एक समय अधिक अंतः कोटाकोटि अं को २ अर ग्रह्या हूवा अंत निषेक एक औसैं कीएं अपकर्षणविषैं औसी संदृष्टि रचना हो है—



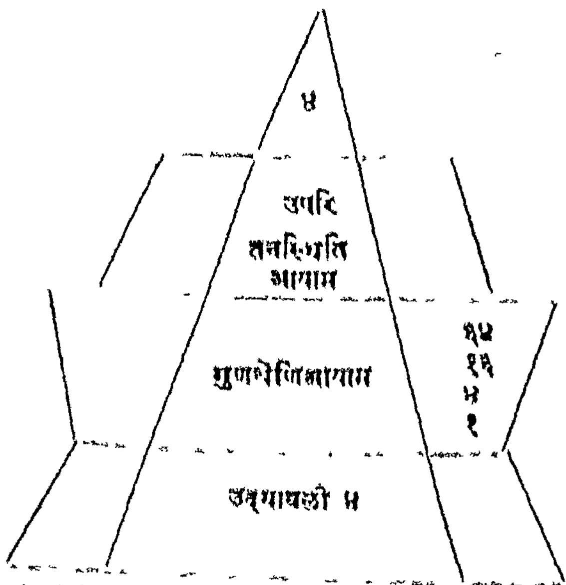
इहां ग्रह्या हूवा निषेकका द्रव्यग्रहि निक्षेपरूप निषेकनिविषैं दीजिए है। अतिस्थापनरूप निषेकनिविषैं न दीजिए है औसा जानना। बहुरि उत्कर्षण कथनविषै पूर्व सत्तारूप निषेकका द्रव्य नवीन बंध्या समयप्रबद्धका निषेकनिविषैं दीजिए है तातैं पूर्व सत्तारूप निषेकनिकी रचनाकरि ताके आगैं द्रव्य नवीन बंध्या सो समयप्रबद्ध ताकी नीचैं तौ आबाधाकी अर ऊपरि निषेकनिकी संदृष्टि लिखनी। तहां तौ पूर्व सत्ताका निषेकका ग्रहण कीया ताकैं अर नवीन बंध्या समयप्रबद्धकैं संबंध मिलावनेके अर्थि दोऊनिकौं अंतरालविषै लीककरि मिलाय देने। बहुरि नवीन समयप्रबद्धविषै अतिस्थापन निक्षेपका विभाग करनेके अर्थि वीचिमें लीक करनी। तहां पूर्व सत्ताका अन्त

निषेकका उत्कर्षण होतैं तहां जघन्य रचना हो है। ताका अतिस्थापनविषैं आवलीका असंख्यातवां भागकी सहनानी ऐसी ४/a निक्षेपविषैं आवलीका असंख्यातवां भागकी सहनानी ऐसी २/a बहुरि पूर्व सत्ताका उदयावलीतैं ऊपरि जो निषेक ताका उत्कर्षण होतैं उत्कृष्ट रचना हो है। ताका अतिस्थापनविषैं एक समय अधिक आवलीकरि हीन आबाधा काल ऐसा आ – १— ४। उत्कृष्ट निक्षेपविषै एक समय अर आवलीकरि युक्त जो आबाधाकाल तीहिंकरि हीन कर्म स्थितिमात्र काल ऐसा क– १— ४ ताके ऊपरि एक समय अधिक आवलीमात्र अंत निषेकनिविषैं न दीजिए है ते ऐसे ४ १— आ जानने। बहुरि ऐसा जानना—

जो जघन्यविषैं तौ पूर्वसत्ताका निषेक ग्रह्या सो जिससमय उदय होगा तिस समय आवने योग्य जो नवीन समयप्रबद्ध ताके ऊपरि अतिस्थापनके निषेक अर तिनके ऊपरि निक्षेपरूप निषेक जानने। बहुरि उत्कृष्टविषै पूर्व सत्ताका ग्रह्या निषेक वर्तमान समयतैं आवली काल पीछैं उदय आवने योग्य है। अर एक समय उस निषेकके उदय आवनेका है। अर नवीन समयप्रबद्धकी आबाधाका काल वर्तमान समयतैं लगाय है सो तातैं एक आवली एक समय घटाएं अतिस्थापन हो है। अर नवीन समय प्रबद्धके प्रथमादि निषेक निक्षेप रूप हो हैं, अन्त विषैं न दीजिये है। ऐसैं उत्कर्षणविषै ऐसी संदृष्टि रचना हो है——



बहुरि आचार्यनिके मतकी अपेक्षा विशेष कह्या है तिनकी संदृष्टि औसैं ही यथासंभव जानि लेनी। बहुरि इहां रचना पहिले निषेकानिकी नीचैं लिखिए है पिछले निषेकनिकी ऊपरि लिखी है। औसैं ही अन्यत्र जानि लेनी। बहुरि गुणश्रेणि निर्जराका कथनविषैं औसी रचना करनी—



इहां अपकर्षण कीएं पीछैं जो हीन क्रम लीएं निषेक रचना रही ताकी ऐसी ^ संदृष्टि करि बहुरि निक्षेपण कीया द्रव्यकी सहनानी दूसरी लकीरकरि रचना करी। तहां उदयावली पर्यंत निषेकनिविषैं हीन क्रम लीएं द्रव्य दीया तातैं हीन क्रम लीएं दूसरी लीक करी। अर ताके ऊपरि गुणश्रेणि कालविषैं असंख्यातगुणा अधिक क्रम लीएं द्रव्य दीया तातैं आधिक क्रम लीएं दूसरी लीक करी। ताके ऊपरि उपरितन स्थितिविषैं हीनक्रम लीएं द्रव्य दीया तातैं हीनक्रम लीएं दूसरी लीक करी। बहुरि ऊपरि अतिस्थापनावलीविषैं द्रव्य दीया ही नाही तातैं दूसरी लीक न करी। बहुरि इहां उदयावलीका अंत निषेकविषैं दीया द्रव्यतैं गुणश्रेणिका प्रथम निषेकविषै दीया द्रव्य बहुत है। अर गुणश्रेणिका अन्त-

विषे दीया द्रव्यतैं उपरितन स्थितिका प्रथम निषेकविषे दीया द्रव्य स्तोक है। तातैं दीया द्रव्यका हीनाधिक जाननेके अर्थि संकोच विस्ताररूप रचना करी है। ऐसैं ही आगैं भी रचना ऐसी आवे तहां ऐसा अर्थ समझ लेना। बारंबार लिखनेमें विस्तार होइ तातैं नाही लिखौंगा। बहुरि इन उदयावली आदिविषैं दीया द्रव्यका वा तिनके निषेकनिविषैं दीया द्रव्यका प्रमाणकी संदृष्टि गोम्मटसारका संदृष्टि अधिकारविषैं जो गुणस्थानाधिकार है ताविषे लिखी है तैसैं जाननी। बहुरि गुणश्रेणिविषैं दीया द्रव्यकौं अंकसंदृष्टि अपेक्षा पिच्यासीका भाग देइ क्रमतैं एक च्यारि सोलह चौंसठिकरि गुणैं प्रथमादि निषेक हो है तातैं गुणश्रेणिविषे एक आदि अंक लिखे हैं। आवलीकी सहनानी च्यारिका अंक है तातैं उदयावली अतिस्थापनावलीविषैं च्यारिका अंक लिख्या है ऐसैं गुणश्रेणि रचना जाननी। बहुरि स्थितिकांडकघातका व्याख्यानविषै कोई जीवकैं जघन्य स्थिति संख्यात पल्यमात्र ऐसी प १ बहुरि कोई जीवकैं तातैं संख्यातगुणी उत्कृष्ट स्थिति ऐसी प १ १ उत्कृष्टमैं जघन्य घटावनेके अर्थि आगिला संख्यातमैं एक घटाएं अर सर्वमैं एक अधिक कीएं नाना जीवनिके सर्व स्थितिभेद ऐसे प १ १ बहुरि याके संख्यातवे भागमात्र नाना जीवनिकैं स्थिति कांडकभेद ऐसे प १ १ / १ इहां स्थितिकांडक भेद प्रमाणराशि स्थितिभेद फलराशि इच्छाराशि एक कीएं संख्यात स्थिति भेदनिविषैं एक कांडक भेद आवै है ताकी रचना ऐसी——

पृष्ठ ९ (क) में देखो

इहां पूर्वै सत्तारूप क्रम हीन प्रमाण लीएं निषेकनिकी ऐसी △ संदृष्टिकरि तहां स्थितिकांडकविषै ऊपरले निषेक नष्ट कीए अर अवशेष नीचले निषेक राखे तिनका विभागके अर्थि वीचिमैं लीक कीएं ऐसी △ संदृष्टि भई। बहुरि कैसा स्थितिसत्वविषै कैसा स्थितिकांडकायाम संभवै ? ताके जाननेके अर्थि ऊपरि तौ कांडककरि घटाएं निषेकानिका प्रमाण लिख्या अर नीचैं जो स्थिति सत्व था ताका प्रमाण लिख्या। तहां पहलैं अंक संदृष्टिकरि सात आठ नव समय स्थितिविषैं स्थितिकांडकायाम एक समय प्रमाण है। अर दश ग्यारह बारह समय स्थिति सत्वविषै स्थितिकांडकायाम दोय समय प्रमाण है। ऐसैं ही अंत पर्यंत जानना। बहुरि अर्थ संदृष्टिकरि संख्यातपल्यमात्र जघन्य स्थिति अंतः कोटाकोटी सागरके संख्यातवे भागमात्र ताकी संदृष्टि ऐसी अं को २ ताविषै अर यातैं एक समय अधिक
४

स्थिति सत्वविषै स्थितिकांडकायाम पल्यके संख्यातवे भागमात्र है ताकी संदृष्टि ऐसी प
१

बहुरि बीचिमैं एक एक समय अधिक स्थिति सत्वविषैं तावन्मात्र स्थितिकांडकायाम जाननेके अर्थि विंदीकी संदृष्टि करि जघन्यतैं संख्यात समय अधिक स्थिति ऐसी १ अं को २ तामैं अर
४

यातैं एक समय अधिक स्थिति ऐसी १—१— १ अं को २ तामैं जघन्यतैं एक समय अधिक स्थिति कांडकायाम ऐसा हो है प १— बहुरि वीचिमैं स्थिति सत्वके स्थिति कांडकके बहुत मध्यभेद जाननेके अर्थि
४ १

विंदीकी संदृष्टिकरि संख्यात घाटि अंतः कोटाकोटि सागर घाटिमात्र स्थिति ऐसी अं को २-१ तातैं एक समय अधिक ऐसी अं को २-१ तामैं एक समय घाटि पृथक्त्व सागर प्रमाण स्थितिकांडकायाम ऐसा—सा। ७। ८ इहां पृथक्त्वकी सहनानी सात वा आठ जाननी। बहुरि वीचिमैं एक एक समय अधिक स्थिति सत्वविषै तावन्मात्र स्थिति कांडकायाम जाननेके अर्थि विंदीनिकी सहनानी करि एक घाटि अंतः कोटाकोटि सागर ऐसा—अं को २ संपूर्ण अंतः कोटाकोटि ऐसा अं को २ तामैं स्थिति कांडकायाम पृथक्त्व सागर प्रमाण ऐसा सा ७। ८ बहुरि अपूर्व करणकी आदिविषै स्थिति सत्व अंतः कोटाकोटि, स्थितिबंध तातैं असंख्यातवे भागमात्र है। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

अं को २।	अं को २ ४	अं को २ ४	अं को २ ४। ४

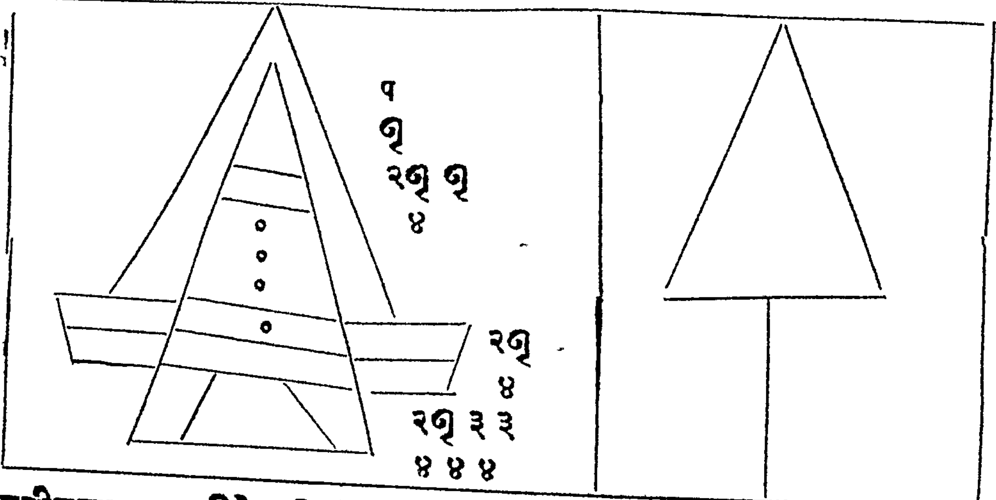
इहां संख्यातकी संदृष्टि च्यारिका अंक है। ऐसैं स्थितिकांडकविधानविषै संदृष्टि जाननी। बहुरि अनुभाग कांडकका व्याख्यानविषै जघन्य वर्गणाकौं स्पर्धक शलाका ऐसी ९ अर नानागुणहानि ऐसी। ना। ताकरि गुणैं अंत गुणहानिकी प्रथम वर्गणा होइ। तामैं अंक संदृष्टि अपेक्षा तीन अधिक कीएं अंत गुणहानिकी अंतवर्गणा संबंधी उत्कृष्ट अनुभाग ऐसा व। ९। ना। ताका अनंत बहुभागमात्र प्रथम कांडक ऐसा व। ९। ना ख/ख बहुरि अवशेष एक भागका अनंत बहुभागमात्र द्वितीय कांडक ऐसा व ९ ना ख/ख ख ऐसैं अंत

कांडक पर्यंत क्रम जानना। बहुरि एक गुणहानिके स्पर्धक संख्याकी संदृष्टि ऐसी ९ तातैं क्रमतैं अनंतगुणे वीचिके अतिस्थापनरूप स्पर्धक अर नीचेके निक्षेपरूप स्पर्धक अर ऊपरिके अनुभागकांडकायाम रूप स्पर्धक तिनकी संदृष्टि ऐसी जाननी—

स्पर्धक	अतिस्थापन	निक्षेप	अनुभागकांडक
९	९ ख	९ ख ख	९ ख ख ख

इहां अनुभागका कथन है तातैं आडी लीक करी है ऐसैं अपूर्व करणविषै भए कार्यनिकी संदृष्टि कही।

बहुरि अनिवृत्ति करणविषै अंतर करण हो है तहां रचना ऐसी—



इहां क्रमहीनरूप सत्व निषेकनिकी संदृष्टिकरि नीचैं उदयावलीकी ऊपरि गुणश्रेणि आयामकी ऊपरि उपरितन स्थितिकी संदृष्टि पूर्ववत्करि गुणश्रेणि आयामविषै गुणश्रेणिशीर्षकों जुदा दिखावनेके अर्थि वीचिमें लीक करी। अर उपरितन स्थितिविषैं अंतरायाम अर

ताके ऊपरि द्वितीय स्थितिका भागके अर्थि वीचिमैं लीक करी है तहां गुणश्रेणिशीर्षरूप निषेक तौ अंतर्मुहूर्तके संख्यातवे भागमात्र ताकी संदृष्टि ऐसी २ ꣹ ४ इहां संख्यातकी सहनानी च्यारिका अंक है। बहुरि ताके ऊपरि तातैं संख्यातगुणे उपरितन स्थितिके निषेक ऐसैं २ ꣹ ४ ꣹ इनकौं मिलाएं अंतर करणकरि शून्य कीए हैं निषेक ते ऐसे २ ꣹ ४ ꣹ तहां विंदीनिकी संदृष्टि करी है अर अंतरायामके नीचैं प्रथम स्थिति है सो अवशेष आनिवृत्ति करण कालका संख्यातवां भागमात्र गुणश्रेणि शीर्ष ऐसा २ ꣹ ४ ताका संख्यात बहुभागमात्र अंतर करनेका काल ऐसा २ ꣹ ४ । ३ ४ ताका संख्यात बहुभागमात्र है सो ऐसा २ ꣹ ४ । ३ ४ । ३ ४

ऐसैं रचनाकरि ताके आगैं जाविषैं अंतर द्रव्य दीया तिस नवीन बंध्या समय प्रबद्धकी आबाधा सहित रचना करी है। बहुरि उपशम कालविषै प्रथम उपशम फालि ऐसी
स ७ ꣹ ख १२— १७ गु इहां दर्शन मोहके द्रव्यकौं गुणसंक्रमका भागहार जानना। द्वितीयादि फालि असंख्यात गुणा क्रमतैं जाननी तहां अंत फालि ऐसी—स । ७ ꣹ । ख १२— । १७ ꣹ । गु २ ꣹ ४ । ३ ४ । ३ ४ इहां प्रथम फालिकौं एक घाटि प्रथम स्थितिमात्र असंख्यातका गुणकार जानना। सम्यक्त्वकी प्राप्ति भएं मिथ्यात्वकौं तीन प्रकार करै है। ताकी रचना ऐसी—

नाम	मिथ्यात्व	मिश्र	सम्यक्त्वमोहनी
निषेक			
द्रव्य	स ∂ १२– गु १ / ७ ख १७ गु ∂	स ∂ १२– ∂ / ७ ख १७ गु	स ∂ १२– १ / ७ ख १७ गु
अनुभाग	३ / वा ९ ना	३ / व ९ ना ख	३ / व ९ ना ख ख

इहां ऊपरि मिथ्यात्व मिश्र सम्यक्त्व प्रकृतिके निषेक क्रमहीन रूप हैं तिनकी संदृष्टि करि नीचैं तिनके द्रव्यका प्रमाण लिख्या। तहां किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्धमात्र सर्व कर्म परमाणूनिका प्रमाण ऐसा स ∂ १२ – ताकौं सातका भाग दीएं मोहका द्रव्य होइ। ताकौं अनंतका भाग दीएं सर्वघाती द्रव्य होइ ताकौं सतरहका भागदीए दर्शन मोहका द्रव्य ऐसा स ∂ १२ – होइ। याकौं गुणसंक्रम भागहारका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र मि
७। ख। १७
थ्यात्वका द्रव्य होइ। बहुरि तिस एक भागविषै एक अधिक असंख्यात था ताविषै एक रूप जुदा स्थापि अवशेष मिश्र मोहका द्रव्य होइ अर जुदा स्थाप्या एक रूपमात्र सम्यक्त्व मोहका द्रव्य हो है। इहां सदृष्टिविषै गुणकार भागहार कैसैं भए? ताका मोकौं नीकैं ज्ञान न भया है, विशेषज्ञानी जानियो।

बहुरि ताके नीचैं अनुभागका प्रमाण लिख्या सो जघन्य वर्गणाकौं एक गुणहानिविषै स्पर्धक संख्याकी संदृष्टि नवका अंक ताकरि अर नाना गुणहानिकरि गुणैं तामैं तीन अधिक कीएं उत्कृष्टरूप मिथ्यात्वका अनुभाग ऐसा— व।९।ना।ताकौं अनंतका भाग दीएं मिश्रका, ताकौं अनंतका भाग दीएं सम्यक्त्व मोहका अनुभाग हो है। बहुरि गुण संक्रम कालविषैं मिथ्यात्वका द्रव्य मिश्रमोह सम्यक्त्व मोहरूप परिणमै है ताकी संदृष्टि ऐसी—

पृष्ठ १५ (क) में देखो।

इहां गुणकार संक्रमका प्रथम समयविषैं पूर्वोक्त प्रकार मिथ्यात्व द्रव्य ऐसा स ३ १२—
७ ख १७

याकौं गुण संक्रमका भाग दीएं सम्यक्त्व मोहरूप परिणम्या द्रव्य हो है। तातैं असंख्यात गुणा मिश्ररूप परिणम्या द्रव्य है। तातैं द्वितीय समयविषै सम्यक्त्वरूप परिणम्या द्रव्य असंख्यात गुणा है। सो इहां गुणकार रूप दोयवार असंख्यातकी सहनानी करी। ऐसैं ही चतुर्थ समय पर्यंत रचना जाननी। तहां चौथे समय असंख्यातके आगैं छहका अर सातका अंक है सो छहवार वा सातवार असंख्यात जानना। बहुरि वीचि मध्य समयनिकी रचना की सहनानी विंदी जाननी बहुरि अंत समयविषै प्रथम समय सम्यक्त्व रूप परिणम्या द्रव्यकौं दोय घाटि अंतर्मुहूर्तका दूणाकरि तामैं दोय वधताकरि गुणित जो असंख्यात ताकरि गुणैं सम्यक्त्व प्रकृति रूप परिणम्या द्रव्यकी संदृष्टि है। अर तिसहीकौं एक घाटि अंतर्मुहूर्त दूणा एक अधिक ताकरि गुणित जो असंख्यात ताकरि गुणैं मिश्रमोहरूप परिणम्या द्रव्यकी संदृष्टि हो है। अर तहां सम्यक्त्व मोहनीतैं मिश्रमोहनीविषैं, मिश्रमोहनीतैं सम्यक्त्व मोह-

विषे गुणकार अपेक्षा गमन कल्पित सर्पकी चालवत् रचना करी है। बहुरि कालका अल्प बहुत्वविषे संदृष्टि सुगम है । तहां प्रथम पद अंतर्मुहूर्तमात्र ऐसा २ १ ताके आगैं संख्यातकी सहनानी च्यारिकरि जहां संख्यातवां भागमात्र अधिक होइ तहां पूर्व राशिकौं च्यारिका भाग पांचका गुणकार जानना । जहां संख्यातगुणा होइ तहां पूर्व राशिके आगैं च्यारि लिखना । बहुरि ग्यारह्वांतैं वारह्वां पद समय घाटि दोय आवलीमात्र अधिक है तहां ऊपरि ऐसी— ४ । २ जाननी । इहांआवलीकी संदृष्टि च्यारिका अंक है । बहुरि चौदह्वां पदविषे अपवर्तन कीएं संदृष्टि ऐसी २ १ यातैं संख्यातगुणा पंद्रह्वां पदविषे ऐसी २ १ १ यामैं ऐसा २ १ अर ऐसा — २ १ मिलाएं सोलह्वां पदविषे ऐसी २ १ १ । ४ यातैं आगैं पूर्वोक्त प्रकार । बहुरि वीसवां पदविषे पल्यका संख्यातवां भागकी ऐसी— प/१ इकईसवां पदविषे पृथक्त्व सागरकी ऐसी सा । ७ । ८ वाईसवां आदि पदनिविषे सागर अंतः कोटाकोटीकौं तीन दोय एकवार संख्यातका भाग दीएं पचीसवां पदविषे सागर अंतः कोटाकोटि की संदृष्टि जाननी । ऐसैं इनकी ऐसी संदृष्टि हो है—

पृष्ठ १६ (क) में देखो।

बहुरि प्रथमोपशम सम्यक्त्व काल समाप्त भएं उदय योग्य प्रकृतिका द्रव्य अपकर्षणकरि उदयावली अंतरायाम द्वितीय स्थितिविषैं निक्षेपण करै है । अनुदय प्रकृतिका उदयावली विना अन्यत्र निक्षेपण करै है । तहां दर्शनमोहके द्रव्यकौं गुणसंकमका भाग दीएं उदय योग्य सम्यक्त्व प्रकृतिका द्रव्य ऐसा स a १२— याकौं अपकर्षण भागहारकी
७ । ख । १७ । गु

संदृष्टि प्राकृत आदि अक्षर अपेक्षा असी (ओ) ताका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य असा स ३ । १२−
७ । ख । १७ । गु ओ
याकौं असंख्यात लोक ≡ ३ का भाग दीएं उदयावलीविषैं दीया द्रव्य असा− स ३ १२ −
७ । ख । १७ । गु । ओ ≡ ३
याका बहुभाग असा स ३ १२ − ≡ ३ (१−) इहां गुणकारविषैं एक घाटिकौं न गिणैं असा
७ । ख । १७ । गु । ओ ≡ ३
स ३ । १२ − बहुरि इस अपकर्षण भागहारका भाग दीएं तहां एक भागमात्र ग्रहण कीएं
७ । ख । १७ । गु ओ
जो द्रव्य बहुभागमात्र अवशेष रह्या सो असा स ३ । १२ − ओ इहां गुणकारविषैं एक
७ । ख । १७ । गु ओ
घाटिकौं न गिणें असा स ३ १२ −याकौं द्व्यर्ध गुण हानिकी संदृष्टि असी (१२) ताका भाग दीएं
७ । ख । १७ गु
द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकका द्रव्य असा स ३ १२ − भया याकौं अंतरायाम अं-
७ । ख । १७ । गु १२
तर्मुहूर्तमात्र ताकरि गुणैं अंतरायामका समपट्टिका द्रव्य असा स ३ १२ − २ १
७ । ख । १७ । गु १२
यामैं चयधन मिलावनेके अर्थि साधिककी असी (।) संदृष्टि ऊपरि कीएं इतना स । ३ १२−२ १
७ । ख । १७ । गु १२
द्रव्य भया । ताहि तिस अपकर्षण कीया द्रव्यतैं ग्रहि अंतरायामविषै दीएं अंतरायामके अ-
भाव कीए थे निषेक तिनका सद्भाव हो है । इसकौं घटाएं जो अपकृष्ट द्रव्य किंचित् ऊन
भया सो असा स ३ १२ −याकौं द्व्यर्ध गुणहानिका भाग दीएं प्रथम निषेक ताकौं अंतरायाम
७ । ख । १७ । गु । ओ

करि गुणें समपट्टिका द्रव्य ताकौं साधिक कीएं इतना द्रव्य स । ३ । १२ — २ ९ अंतरा-
७ । ब । १७ । गु । आ । १२
यामविषैं और दीया अवशेष अपकृष्ट द्रव्य ऐसा स ३ १२ — सो द्वितीय स्थिति
७ । ब । १७ । गु । ओ
विषैं अतिस्थापनावली छोडि क्रम हीन करि ऐसैं उदय योग्य प्रकृतिविषैं द्रव्य देनेका विधान है। बहुरि उदय अयोग्यका उदयावलीतैं बाह्य अंतरायाम अर द्वितीय स्थितिविषैं ही द्रव्य दीजिए है।

इति प्रथमोपशम सम्यक्त्वाधिकारसंदृष्टि समाप्त

अब क्षायिक सम्यक्त्वाधिकारविषैं संदृष्टि लिखिए है—तहां प्रथम अनंतानुबंधीका विसंयोजन है। तहां गुणश्रेणी आदिककी संदृष्टि पूर्ववत् जानना। अर तहां च्यारि पर्वनिकी वा तहां स्थिति कांडक प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी—

पर्वनिविषैं स्थिति	सातमध्ये ७ सागर १००० ८ १०० ५० २५	प	दूरापकृष्टि प ५ । ५ । ५ । ५	उच्छिष्टावली ४
कांडकायाम	प ३ ५ ३	प ४ ५	१ — प ३ ५ । ५ । ५ । ५ । ३	

इहां स्थितिविषैं पृथक्त्व लक्ष सागरकी वा मध्यविषैं सहस्र आदि सागरकी अर पल्यकी अर दूरापकृष्टिविषैं च्यारि वार संख्यातकरि भाजितकी अर उच्छिष्टावलीकी संदृष्टि प्रथमादि पर्वनिविषैं जानना। बहुरि तिनके वीचि स्थिति कांडकायामविषैं पल्यका संख्यातवां

भागकी पल्यका असंख्यात बहुभागकी दूरापकृष्टिका असंख्यात बहुभागकी सहष्टि जानना। बहुरि सर्व कर्मके द्रव्यकौं सात अर अनंत अर सतरहका भाग दीए अनंतानुबंधी क्रोध द्रव्य ऐसा स ∂ १२ – ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं जो अपकृष्ट द्रव्य
७ । ख । १७
भया ताकौं उदयावली आदिविषैं निक्षेपण करै है। अर तिसहीकौं संख्यातका भाग दीएं जो कांडक द्रव्य ऐसा स ∂ १२ – ताकौं गुण संक्रमका भाग दीएं प्रथम फालि ऐसा–
७ । ख । १७ । ९
स ∂ १२ – यातैं क्रमतैं असंख्यात गुणा द्वितीयादि फालि तिनकौं बारह कषाय नव
७ । ख । १७ । ९ । गु
नोकषाय तिनिरूप समय समय पारिनमावै है। उच्छिष्टावली मात्र द्रव्य रहैं ताकौं एक एक निषेककरि तिनिरूप पारिनमावै है। ऐसैं अनंतानुबंधीका विसंयोजन करि दर्शन मोहकी क्षपणा प्रारंभै है। तहां अन्य क्रिया होइ जहां असंख्यात समय प्रवद्धकी उदीरणा हो है। तहां सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्य ऐसा स ∂ १२ – याकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं
७ । ख । १७ । गु
ऐसा स ∂ १२ – याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग उपारितन स्थिति
७ । ख । १७ । गु । ओ
विषैं दीया शेष एक भागका पल्यकौं असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग गुणश्रेणि विषै एकभाग उदयावलीविषैं दीया तहां संदृष्टि ऐसी—

उपरितन स्थिति	१ — ‸ स ∂ १२ — प ७ । ख । १७ । गु । ओ । प । ∂ ∂
गुणश्रेणी आयाम	१ ‸ १ — ‸ स ∂ १२ — प । प ७ । ख । १७ । गु । ओ । प ∂ प ∂ ∂ ∂
उदयावली	१ — ‸ स∂ । १२ — प १ ७ । ख । गु । ओ । प ∂ प ∂ ∂

इहां वहुभागविषैं एक घाटि भागहारका गुणकार संपूर्ण भागहारका भाग जानना। बहुरि सम्यक्त्वमोहनीकी अष्ट वर्षमात्र स्थिति जिससमय हो है तिस समय विषै क्रिया करै है।

मिश्र सम्यक्त्वमोहका अंतफालिका द्रव्य किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानिमात्र है। कैसैं!

४ मिथ्यात्वका द्रव्य ऐसा—स ∂ १२ — गु (१ ‸ / ७ । ख । १७ । गु ∂ १ ‸ / १— ∂) ताविषै उच्छिष्टावलीविना अन्य द्रव्यकौं मिश्रमो-

हनीविषैं निक्षेपण कीएं मिश्रमोहका द्रव्य ऐसा स ∂ १२ — (७ । ख । १७) इहां दर्शन मोहका द्रव्यके

आगें किंचिदूनकी सहनानी ऐसी (—) जाननी। बहुरि याका असंख्यातवां भागमात्र इतर कांडक द्रव्य सम्यक मोहनीविषैं संक्रमण भएं अवशेष बहुभागमात्र मिश्रमोहका चरम कांडककी चरम फालिका द्रव्य ऐसा (स a । १२ – a १ ~)/(७ । ख । १७ । a) बहुरि सम्यक्त्व मोहका द्रव्य ऐसा— (स a १२ –)/(७ । ख । १७ । गु) इहां भी इतर कांडक द्रव्य याका असंख्यातवां भागमात्र नीचले निषेकनिविषै निक्षेपण कीएं अवशेष बहुभागमात्र सम्यक्त्व प्रकृतिकी चरमफालिका द्रव्य ऐसा— (स a । १२ – । a १ ~)/(७ । ख । १७ । गु । a) इनि दोऊनिकौं मिलाएं किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण मिश्रादिककी चरम फालिका द्रव्य किंचिदून दर्शन मोहका द्रव्यमात्र ऐसा— (स a । १२ –)/(७ । ख । १७)

याकौ पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भाग उदयादि गुणश्रेणी आयामविषै असंख्यात गुणा क्रम लीएं देना। तहां तिस द्रव्यकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पिच्यासीका भाग देइ पहला निषेकविषै च्यारि अर सोलहका, अंत निषेकविषै चौसठिका गुणकार कीएं ऐसी संदृष्टि—

अंतनिषेक	(स a । १२ — ६४)/(७ । ख । १७ । प । ८५ a)
मध्यनिषेक	० ० १६ ४
प्रथमनिषेक	(स a । १२ — १)/(७ । ख । १७ । प ८५ a)

बहुरि अवशेष बहुभागमात्र द्रव्य ऐसा स a । १२—प इहां गुणकारविषै एक घाटिकौं न गिणैं
७ । ख । १७ प a

ऐसा स a । १२-याकौं गुणश्रेणि आयाम मिलावनेके अर्थि अष्टवर्षनिविषैं किंचिदून कीएं गच्छ
७ । ख । १७

ऐसा व ८ — ताका भाग दीएं मध्यधन ऐसा स a १२ — याकौं एक घाटि गच्छका आधा
१ ७ । ख । १७ । व ८ —

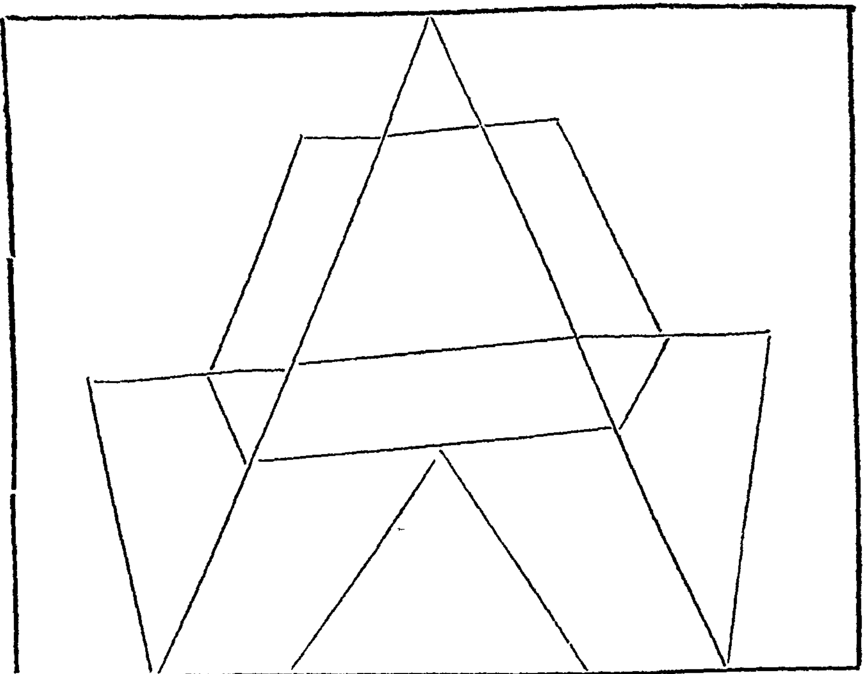
प्रमाणकरि हीन दोगुणहानि ऐसा १६ — व ८ — ताका भाग दीएं चयका प्रमाण ऐसा—
स a १२ — १ याकौं दोगुणहानि ऐसा (१६) ताकरि गुणैं प्रथम निषेक एक
७ । ख । १७ । व ८ — १६ — व ८/२ —

घाटि दोगुणहानि ऐसा १६ — १ ताकरि गुणैं द्वितीय निषेक इत्यादि क्रमतें एक घाटि ग-
१

च्छकरि हीन दोगुणहानि ऐसा १६ — व ८ — ताकरि गुणैं अंत निषेकविषै दीया द्रव्य है
तिनकी संदृष्टि ऐसी—

अंतनिषेक	स ∂ १२– १६– व १ ८– / ७ ख १७ व ८– १६ व– १ ८ / २
मध्य	० ० ०
चतुर्थ	स ∂ १२– १६– ३ १ / ७ ख १७ व ८– १६–व ८– / २
तृतीय	स ∂ १२– १६– २ १ / ७ ख १७ व ८– १६– व ८– / २
द्वितीय	स ∂ १२– १६– १ १ / ७ ख १७ व ८– १६–व ८– / २
प्रथमनिषेक	स ∂ १२– १६ १ / ७ ख १७ व ८– १६– व ८– / २

बहुरि इहां गुणश्रेणि आयामका वा उपरितन स्थितिकी संदृष्टि ऐसी



इहां क्रमहीन सत्तारूप निषेकनिकी रचनाकरि पूर्वै जो नीचैं उदयावलीविषै क्रमहीन रूप ताके ऊपरि गुणश्रेणि आयामविषै क्रम अधिक रूप निक्षेपण कीएं तिनकी रचनाकरि बहुरि तहां उदय रूप प्रथम समयतैं लगाय गुणश्रेणि आयामविषैं क्रम अधिक रूप अर ताके उपरितन स्थितिविषै अतिस्थापनावली छोडि क्रम हीन रूप द्रव्य निक्षेपण किया तिनके अनुसारि लकीरनिकी संदृष्टि क्रम हीन रूप वा अधिक रूप करी है। बहुरि इसही समय-विषै अनुभागका अनुसमयापवर्तन हो है। तहां पूर्वैं अनुभाग एक गुणहानिविषै स्पर्धक

शलाकाकौं नाना गुणहानिकरि गुणें औसा (९ ना) ताकौं अनंतका भाग दीएं द्वितीयावलीके प्रथम निषेकका अनुभाग औसा (९ ना) इहां अवशेष बहुभाग नष्ट कीएं ते औसें ९ ना ख ख। इहां नष्ट बहुरि ताकौं अनंतका भाग दीएं उदयावलीके अंत निषेकका अनुभाग औसा ९। ना। ख। ख कीएं बहुभाग औसा ९। ना। ख ख बहुरि ताकौं अनंतका भाग दीएं उदयावलीके प्रथम निषेकका अनुभाग औसा। ९ ना। इहां अवशेष बहुभाग नष्ट कीएं ते औसें ९ ना ख ख ख

निषेकका अनुभाग औसा। ९ ना। ख ख ख

औसें ही अनंत गुणहानि लीएं समय समय अनुभागापवर्तनका विधान जानना।

बहुरि जिस समयविषें सम्यक्त्व मोहनीकी स्थिति अष्ट वर्ष प्रमाण हो है तिस समय तैं पूर्व समयविषें विधान हो है ताकी संदृष्टि कहिए है—सम्यक्त्व प्रकृतिका द्रव्य औसा—स ० । १२— इहां गुणसंक्रम विधानतैं असंख्यात गुणा द्रव्य भया है। परंतु सामान्यतैं इतना ७। ख। १७। गु

लिख्या सो नानागुणहानिविषें वर्तें है। तहां तिस द्रव्यकौं द्व्यर्ध गुणहानि (१२) का भाग देइ ताकौं दोगुणहानि (१६) का भाग दीएं चय होइ। ताकौं दोगुणहानिकरि गुणें उदयावलीका प्रथम निषेक होइ। बहुरि दो गुणहानिमात्र गुणकारविषें क्रमतैं एक एक घटाएं मध्य निषेक होइ। एक घाटि आवली औसी १६ — ४ घटाएं ताका अंत निषेक होइ। बहुरि ताहीमैं आवली घटाएं गुणश्रेणिका आदि निषेक होइ। बहुरि तैसें ही मध्य निषेक होइ। ताहीमैं

एक घाटि अंतर्मुहूर्त ऐसा १६ — । २ ११ घटाएं ताका अंत निषेक होइ। बहुरि ताहीमैं अंतर्मुहूर्त घटाएं उपरितन स्थितिका आदि निषेक होइ। बहुरि तैसैं ही मध्य निषेक होइ। तिसहीविषैं एक घाटि किंचिदून आठवर्ष ऐसैं १६ — व ८ — घटाएं अंत निषेक होइ ऐसैं तौ पूर्व सत्व द्रव्य पाइए।

बहुरि इहां अपकर्षणकरि दीया द्रव्य पूर्वोक्त सम्यक्त्वप्रकृतिके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारके असंख्यातवां भागका भाग दीएं ऐसा स a । १२ — याकौं पल्यका असंख्यातवां

७ । ख । १७ । गु आ
a

भागका भाग दीएं बहुभागमात्र ऐसैं स a १२ — प उपरितन स्थितिविषैं दीया द्रव्य हो है।

a
७ । ख । १७ । गु ओ प
a a

तहां गुणकारविषैं एक हीनकौं न गिणैं अपवर्तन कीएं ऐसा स a १२ — याकौं ड्योढ

७ । ख । १७ । गु ओ

गुणहानि अर दो गुणहानिका भाग दीएं चय ऐसा स a । १२ — a

७ । ख । १७ । गु । ओ । १२ । १६
a

याकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेक अर दो गुणहानि गुणकार विषैं क्रमतैं एक एक घटाएं मध्य निषेक होइ। एक घाटि किंचिदून आठ वर्ष घटाएं अंत निषेक हो है। बहुरि एक भाग रह्या सो ऐसा स a । १२ — इहां पल्यका असंख्यातवां भागका

७ । ख । १७ । गु । ओ प
a a

भाग दीएं बहुभाग ऐसा स ā १२ – प (ऊपर १ –, नीचे a / ७ । ख । १७ । गु । ओ प प / a a a) गुणश्रेणिविषैं दीया द्रव्य इहां भी गुणकारविषैं एक घाटिकौं न गिणि अपवर्तन कीएं ऐसा स । ā । १२ – (नीचे ७ । ख । १७ । गु ओ प / a a) याकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पिच्यासीका भाग देइ एक करि गुणैं प्रथम निषेक, च्यारि सोलहकरि गुणैं मध्य निषेक, चौसठिकरि गुणैं अंत निषेक हो है। बहुरि अवशेष रह्या एक भाग ऐसा स ā १२ – (नीचे ७ । ख । १७ । गु । ओ प प / a a a) सो उदयावलीविषैं देना सो याकौं आवली अर एक घाटि आवलीका आधाकरि हीन दोगुणहानि ऐसा ४ । १६ – ४/२ (ऊपर १ –) ताका भाग दीएं चय होइ। याकौं दोगुणहानि करि गुणैं प्रथम निषेक अर इस गुणकारविषैं एक एक घटाएं मध्य निषेक होइ। एक घाटि आवली घटाएं अंत निषेक होइ ऐसैं दीया द्रव्य जानना। इनकी संदृष्टि ऐसी–

	पूर्वसत्त्व द्रव्य	दीया द्रव्य
उपरितनस्थिति	१ ^ स 2 १२– १६– व ८– ७ ख १७ गु १२ १६ ० ० ० स 2 १२– १६– २ए ७ ख १७ गु १२ १६	१ ^ स 2 १२– १६– व ८– ७ ख १७ गु ओ १२ १६ ० 2 ० ० स 2 १२– १६ ७ ख १७ गु ओ १२ १६ 2
गुणश्रेणि	१ ^ स 2 १२– १६– २ए ७ ख १७ गु १२ १६ ० ० ० स 2 १२– १६– ४ ७ ख १७ गु १२ १६	स 2 १२– ६४ ७ ख १७ गु ओ प ८५ ० 22 ० ० स 2 १२– १ ७ ख १७ गु ओ प ८५ 22
उदयावली	१ ^ स 2 १२– १६ ४ ७ ख १७ गु १२ १६ ० ० ० स 2 १२– १६ ७ ख १७ गु १२ १६	१ ^ १ ^ स 2 १२– १६– ४ ७ ख १७ गु ओ प प ४ १६– ४ ० 222 २ ० ० १ ^ स 2 १२– १६ ७ ख १७ गु ओ प प ४ १६– ४ 222 २

बहुरि इन दोऊनिका मिलाएं दृश्यमान द्रव्य हो है। तहां उदयावलीका तौ सत्त्व द्रव्य बहुत है अर दीया द्रव्य स्तोक है। तातैं तहां सत्त्व द्रव्यका संदृष्टिके ऊपरि ऐसी (।) संदृष्टि कीएं दृश्यमान द्रव्यकी संदृष्टि हो है। बहुरि गुणश्रेणिविषैं दीया द्रव्य बहुत है। सत्त्व द्रव्य स्तोक है तातैं दीया द्रव्यकी संदृष्टि ऊपरि अधिककी ऐसी (।) संदृष्टि कीएं दृश्यमान द्रव्यकी संदृष्टि हो है। बहुरि उपरितन स्थितिका प्रथम निषेकविषैं दोगुण हानिमात्र गुणकारविषैं अंतर्मुहूर्त घटाया था सो अंतर्मुहूर्तमात्र घटाएं जे चय तिनिरूप ऋण ऐसा स ‌a १२ – २ १ अर इस प्रथम निषेकविषैं दीया द्रव्यरूप धन ऐसा—

७। ब। १७। गु। १२। १६

स a। १२ – १६ सो इस धनविषैं ऋण घटावनेके अर्थि अन्य भागहार समान जानि

७। ब। १७ गु। ओ। १२। १६

a

अपकर्षण भाग हारका असंख्यातवां भागरूप भागहारकरि समच्छेद कीएं ऋण द्रव्य ऐसा स a। १२ – २ १ ओ अब इहां अन्य गुणकार भागहार समान जानि ऐसा २ १ ओ।

a a

७। ब। १८। गु। ओ। १२। १६

a

गुणकारकौं परस्पर गुणें जो असंख्यात भया ताकौं धन द्रव्यका दोगुणहानिविषैं घटाएं धन द्रव्य ऐसा भया स a १२ – १६ – a अब इहां उपरितन स्थितिका प्रथम निषेकविषैं

७। ब। १७। गु। ओ। १२। १६

स

जो अंतर्मुहूर्तमात्र चय घटाए थे ते तौ जुदे काढि धन द्रव्यविषैं घटाय दीएं तब दो गुणहानि

गुणित चयमात्र उपरि तन स्थितिका प्रथम निषेक ऐसा स a । १२ – १६ / ७ । ख । १७ । गु । १२ । १६ रह्या। तिस ऊपरि तिस ऋण रहित धन द्रव्य मिलावनेकौं आधिककी ऐसी (।) संदृष्टि कीएं उपरितन स्थितिका प्रथम निषककी संदृष्टि हो है। बहुरि दोगुण हानिका गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घटाएं द्वितीयादि निषेक होइ। तिसहीमें एक घाटि किंचिदून आठ वर्ष घटाएं अंत निषेक हो है ऐसैं दृश्यमान द्रव्य हो है ताकी रचना ऐसी—

उपरितनस्थिति	गुणश्रेणि	उदयावली
स a । १२ – १६ – ८ / ७ । ख । १७ । गु । १२ । १६ । १ ० ० ० स a । १२ – १६ / ७ । ख । १७ । गु । १२ । १६	स a । १२ – ८६ / ७ । ख । १७ । गु । औ । a a ० ० ० स a । १२ – १ / ७ । ख । १७ । गु । औ । a a	स a । १२ – १६ – ४ / ७ । ख । १७ । गु । १२ । १६ । १ ० ० ० स a । १२ – १६ / ७ । ख । १७ । गु । १२ । १६

बहुरि ताके अनंतरि सम्यक्त्व मोहनीका अष्ट वर्ष स्थिति होनेका समयविषैं अष्टवर्ष मात्र सम्यक्त्व मोहनीके निषेकनिका द्रव्य ऐसा स । a । १२ / ७ । ख । १७ । गु – ताकरि हीन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र मिश्र सम्यक्त्व मोहका चरम फालिका द्रव्य ताकौं गुण श्रेणि आ-

यामविषैं वा उपरितन स्थितिविषैं दीया द्रव्यका संदृष्टि पूर्वें कहि आए ही हैं। बहुरि ताके अनंतरि अष्ट वर्ष स्थिति करणका द्वितीय समय ता विषैं सर्व मोहनीके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भाग ऐसा स ७ १२ – १ अपकर्षणकरि ताकौं पल्यका असंख्यात
७ । ख । १७ । गु । ओ
वां भागका भाग देइ एक भाग गुणश्रेणि आयामविषैं असंख्यात गुणा क्रमकरि अर बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं हीन क्रमकरि पूर्वोक्त प्रकार देना। इहां उदयादि अवस्थितगुणश्रेणि आयाम है। तातैं पूर्वें गुणश्रेणि आयामविषैं एक समय उपरितन स्थितिका मिलावना तहां उपरितन स्थितिविषैं दीया द्रव्यका गुणकारविषैं एक घाटिकौं न गिणि अपवर्तन कीएं ऐसा स । ७ । १२ – ताकौं किंचिंदून आठवर्षमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका
७ । ख । १७ । गु ओ
आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय धन होइ। ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेक अर दोगुणहानिका गुणकारविषैं एक एक घटाएं अंत विषैं एक घाटि किंचिंदून आठ वर्ष घटाएं द्वितीयादि निषेक हो है। बहुरि गुणश्रेणिविषैं दीया द्रव्यकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पिच्यासीका भाग देइ एक करि गुणैं प्रथम निषेक, च्यारि सोलहकरि गुणैं मध्य निषेक, चौसाठिकरि गुणैं अंत निषेक ताकी रचना ऐसी—

स ३ । १२– । १६– । व ८–
७। ख १७ ओ व ८– । १६ । व । ८—
२

स । ३ । १२– । १६– । १
७ । ख । १७ । ओ–व ८–१६– । व ८–

स ३ । १२ । १६
७ । ख । १७ । ओ । व ८–१६–व ८–
२

स । ३ । १२– । ६४
७ । ख । १२ । ओ प ८५
३

स । ३ । १२ । —
७ । ख । १७ । ओ । प । प । ८५
३ । ३

बहुरि इसही समयविषैं सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यकौं संख्यातका भाग दीएं प्रथम कांडक द्रव्य होइ। ताकौं पल्यके अर्धच्छेदकौं दोयवार असंख्यातका भाग दीएं अधः प्रवृत्त भागहार ऐसा छे ३ ३ ताका भाग दीएं प्रथम फालिका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ − ७। ख। १७। छे छे ३ ३ सो अपकर्षण कीया द्रव्यकैं असंख्यातवे भागमात्र है अर देनेका विधान तैसैं ही है। तातैं अपकर्षणद्रव्यविषैं याके मिलावनेकौं अधिककी संदृष्टि करि देनी। बहुरि ऐसैंही द्वितीयादि समयनिविषैं रचना करनी। बहुरि प्रथमकांडककी अंत फालिका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ − ३ ७। ख। १७ ७। ३ कैसैं? सो कहिए है—

अंत फालिविना अन्य फालिनिका द्रव्य कांडक द्रव्यके असंख्यातवैं भागमात्र है। ताकौं घटाएं असंख्यात बहुभागमात्र अंत फालिका द्रव्य हो है। इहां गुणकारविषैं एक हीनकौं न गिणि अपवर्तनकरि बहुरि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणि आयामविषैं असंख्यात गुणां क्रमकरि बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं हीन क्रमकरि देना ताकी पूर्वोक्त प्रकार संदृष्टि ऐसी—

[स ३ । १२– । १६– । व ८– ।
७ । ख । १७ । ७ । व ८– । १६ । व ८– ।

स । ३ । १२– । १६
७ । ख । १७ । ७ । व ८– । १६ । व । ८– ।

स । ३ । १२—६४
७ । ख । १७ । ७ । प । ८४

स । ३ । १२– । १
७ । ख । १७ । ७ । प । ८४ ।

इहां कांडक द्रव्य बहुत है । तातैं याविषैं अपकृष्ट द्रव्यका साधिकपना जानना। बहुरि ऐसैं ही अन्य कांडकनिविषैं रचना जाननी। बहुरि मिश्रद्विककी चरम फालिका द्रव्य ऐसा स ∂। १२ – सो यहु द्रव्य इसके पतन समयतैं पूर्वसमयविषैं जो गुण संक्रमण
७। ख। १७
द्रव्य सहित सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्य ऐसा स ∂। १२ – ∂ तातैं असंख्यात गुणा है बहुरि
७। ख। १७ गु
अष्टवर्ष स्थिति करण समयविषैं जो सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्य है तातैं अष्ट वर्ष करणका द्वितीयादि प्रथम कांडककी द्विचरमफालि पतन समय पर्यंत तौ अपकर्षण कीया वा फालिका द्रव्य असंख्यातवै भागमात्र है अर चरम फालि पतन समयविषैं संख्यातवै भागमात्र है सो पूर्वोक्त भागहारतैं यहु संभवै है। बहुरि अष्टवर्ष करण समयविषैं जो उपरितन स्थिति के प्रथम निषेकका दृश्य द्रव्य ऐसा स। ∂। १२ – १६– १ ⁀ इहां यहु गुणश्रेणी शीर्ष
७। ख। १७। व ८ –१६ व ८–
२
कहिए ताका जो यहु द्रव्य सो यातैं पूर्व समयविषै जो गुणश्रेणि शीर्षका दृश्य द्रव्य ऐसा स। ∂। १२ – ६४ तातैं असंख्यात गुणा है। बहुरि अष्टवर्ष करणका प्रथम समयके गुण-
७ ख १७ प ८५
∂
श्रेणी शीर्ष द्रव्यतैं द्वितीय समयके गुणश्रेणी शीर्षका द्रव्य विशेष अधिक हो है गुणकार रूप है नाहीं कैसैं! सो कहिए है–

अष्टवर्ष स्थिति करणका प्रथम समयविषैं गुणश्रेणी शीर्षका दृश्य द्रव्य ऐसा–
स ∂ $_{१२}$ – १६ १ ⁀ याके द्वितीय समयविषैं आया धन ऐसा स। ∂। १२ – ६४
७। ख। १७। व ८–१६–व ८–   ७। ख। १७। ओ। प। ८५
२   ∂

बहुरि अष्टवर्षकी उपरितन स्थितिके द्वितीय निषेकका दृश्य द्रव्य ऐसा स। ३। १२–। १६–१
७। ख। १७। व ८—। १६–। व ८— २

यामें गुणकारमें एक घटाया है सो एक चयमात्र ऋण ऐसा स। ३। १२ – १
७। ख। १७। व ८—। १६—व ८— २

सो जुदा स्थापैं प्रथम समयका गुणश्रेणी शीर्ष द्रव्य अर यहु समान भया। बहुरि द्वितीय समयविषैं जो याविषैं द्रव्य दीया सो गुणश्रेणि शीर्षका धन ऐसा स ३। १२–१६
७। ख। १७। ओ। व ८–। १६ – व ८ २

यातैं पूर्वोक्त ऋण सो असंख्यात गुणा घाटि है। जातैं तहां दोगुणहानिका गुणकार नाही है। बहुरि द्वितीय समयका गुणश्रेणिके अंत निषेकका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ – ६४
७। ख। १७। ओ। प। ८ ३

जातैं तहां एक घाटि पल्यका असंख्यातवां भागका गुणकार था अर एक हीनकौं न गिणि अपवर्तन कीया था सो इहां नाही है। ऐसैं ऋण द्रव्य अर गुण श्रेणिका चरम निषेक द्रव्य घटावनेकौं तिस धन द्रव्यमैं किंचित् ऊनकरि बहुरि तहां दोगुणहानिका गुणकार था अर अपकर्षण भागहारका भाग था तिनका अपवर्तन कीएं असंख्यातका गुणकार ही रह्या भागहार दूरि भया तब ऐसा स। ३। १२ – ३ याकौं अष्टवर्ष करणका
७। ख। १७। व ८ — १६ — व ८— २

प्रथम समयका गुणश्रेणी शीर्ष समान जो ताके अनंतरि उपरितन स्थितिका निषेक तामैं

अधिक करना। ऐसैं प्रथम समयका गुणश्रेणि शीर्षतैं द्वितीय समयका गुणश्रेणि शीर्षका

द्रव्य द्रव्य साधिक ही है— स। ७। १२ – १६ १ – इहां एक साधिक पना

७। ज। १७। व ८ – । १६ – व ८ — २

आगैं था इतना यहु और साधिक भया ताके जाननेके अर्थि उपरि दूसरी ऊभी लीक [।]
करी। ऐसैं ही पूर्वतैं उत्तर गुणश्रेणि शीर्ष साधिक ही है इहां ए संदृष्टि कहीं हैं तिनका
स्वरूप पूर्वैं होय आया है तातैं इहां न कह्या है। बहुरि अवस्थित गुणश्रेण्यायाम अंतर्मुहूर्तमात्र
ऐसा २ १ ताकौं संख्यात ऐसा (४) ताका भाग दीएं बहुभाग ऐसा २१ ३ अर गलिताव-
४

शेष गुणश्रेणि आयामविषैं गुणश्रेणि शीर्ष ऐसा २ १ ताका असंख्यातवां भाग ऐसा २ १
४ ४। ४

ताके ऊपरि द्विचरम फालि कांडकतैं नीचैं अवशेष रहे निषेक ते ऐसैं २ १। ४। ४। ४
इनकौं मिलाएं चरम कांडक आयामका प्रमाण हो है। सो याकी प्रथम फालिका पतन स-
मयतैं लगाय द्विचरम फालिका पतन समय पर्यंत फालि द्रव्य वा अपकर्षण कीया द्रव्य
तीन पर्वनिविषैं देना। तहां अंतकांडककी प्रथम फालिका पतन समयविषैं जो गलिताव-
शेष गुणश्रेणि आयाम आरंभ्या ताका शीर्ष पर्यंत प्रथम पर्व, ताके ऊपरि पूर्वे जो अवस्थित
गुणश्रेणि आयाम था ताका शीर्षपर्यंत द्वितीयपर्व ताके उपरि उपरितन स्थितिका अंत
निषेक पर्यंत तृतीय पर्व तहां सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यविषैं पूर्वैं गले निषेकनिका द्रव्य ताके
असंख्यातवैं भागमात्र घटाएं किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र चरम कां-
डकका द्रव्य ऐसा स। ७। १२ – याकौं असंख्यातकरि भाजित अपकर्षण भागहारका
७। ज। १७

भाग दीएं एक भाग ऐसा स । a । १२ — याकौं पल्यके असंख्यातवां भागका भाग देइ
७ । ख । १७ । ओ
१ — a
बहुभाग ऐसै स a । १२ —प प्रथम पर्वविषैं असंख्यात गुणा क्रमकरि देना । तहां याकौं
a
७ । ख । १७ । ओ प
a a
अंक संदृष्टिकरि पिच्यासीका भाग देइ एककरि गुणैं प्रथम निषेक, च्यारि सोलहकरि गुणैं मध्य निषेक, चौंसठिकरि गुणैं अंत निषेक हो है । बहुरि ताका एक भाग ऐसा स । a । १२—
७ । ख । १७ । ओ । प
१ — a a
ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग ऐसा स । a । १२—प द्वितीय पर्व विषैं
a
७ । ख । १७ । ओ । प । प
a a a
हीनक्रमकरि देना । तहां याकौं गच्छ संख्यातकी सहनानी च्यारिकरि गुणित अंतर्मुहूर्त मात्र ऐसा २ ९ । ४ ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दो गुणहानि ऐसा—
१६ — २ ९ ९ ताका भाग दीएं चय होइ । याकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेक अर गुणकारविषैं एक एक घटाएं द्वितीयादि निषेक होइ । एक घाटि गच्छ घटाएं अंत निषेक होइ बहुरि अवशेष एक भाग ऐसा स । a । १२ — तीसरा पर्वविषैं हीन क्रम-
७ । ख । १७ । ओ । प । प
a a a
करि देना । तहां भी तैसैं ही विधान जानना । विशेष इतना—इहां गच्छका प्रमाण अंक संदृष्टि अपेक्षा चौसठि गुणा अंतर्मुहूर्त ऐसा २ ९ । ६४ जानना इनकी रचना ऐसी—

स a १२– १६– २ऌ ६४
७ ख १७ओ प २ऌ ६४ १६– २ऌ ६४
a a a   २ २

स a १२– १६
७ ख १७ओ प प २ऌ ६४ १६– २ऌ ६४
a a a a   २

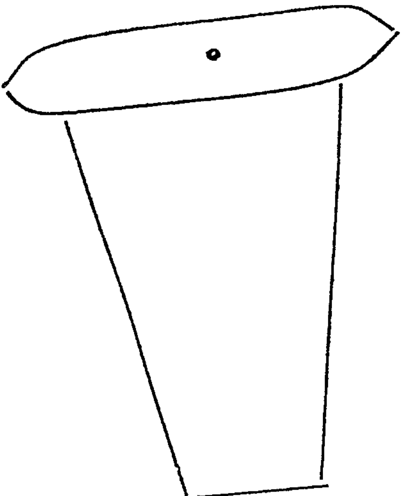
स a १२– प १६– २ऌ ४
a
७ ख १७ओ प प २ऌ ४ १६– २ऌ ४
a a a   २

स a १२ प १६
a
७ ख १७ओ प प २ऌ ४ १६– २ऌ ४
a a a   २

स a १२– प ६४
a
७ ख १७ओ प ८५
a a

स a १२– प १
७ ख १७ओ a प ८५
a a

इहां पूर्वावस्थित गुणश्रेणि आयाम था ताके दिखावनेकौं क्रम अधिकरूप संदृष्टिकरि तहां अब जो गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम भया ताके दिखावनेकौं तौ क्रम अधिकरूप अर ताके ऊपरि हीन क्रमरूप दीया द्रव्य ताके दिखावनेकौं हीनरूप संदृष्टि करी। बहुरि उपरितन स्थितिविषैं पूर्वैं भी हीन क्रम था अब भी हीन क्रमरूप द्रव्य दीया तातैं दोऊ हीनरूप लीककरि संदृष्टि करी है। बहुरि अनिवृत्तिकरणका अंतसमयविषै चरमकांडककी चरम फालिका पतन हो है। तहां गले पीछैं अवशेष रह्या उदयादि गुणश्रेणि आयाम सो कृतकृत्य वेदक कालमात्र है। ताके प्रथमादि निषेक द्विचरम निषेकपर्यंत प्रथम पर्व है। ताका अंतनिषेक द्वितीयपर्व है। सो गले निषेक अर कृतकृत्य कालके निषेक विना अवशेष चरम फालिका द्रव्य ऐसा— स ३। १२— ताकौं असंख्यातगुणा पल्यके वर्गमूलका
७। ख। १७
भाग देइ एक भाग प्रथम पर्वविषैं असंख्यातगुणा क्रमकरि देना। तहां पिच्यासीका भाग देइ एकादिकरि गुणैं प्रथमादि निषेकानिकी संदृष्टि हो है। बहुरि बहुभाग द्वितीयपर्वविषैं देना ताकी संदृष्टि ऐसी—

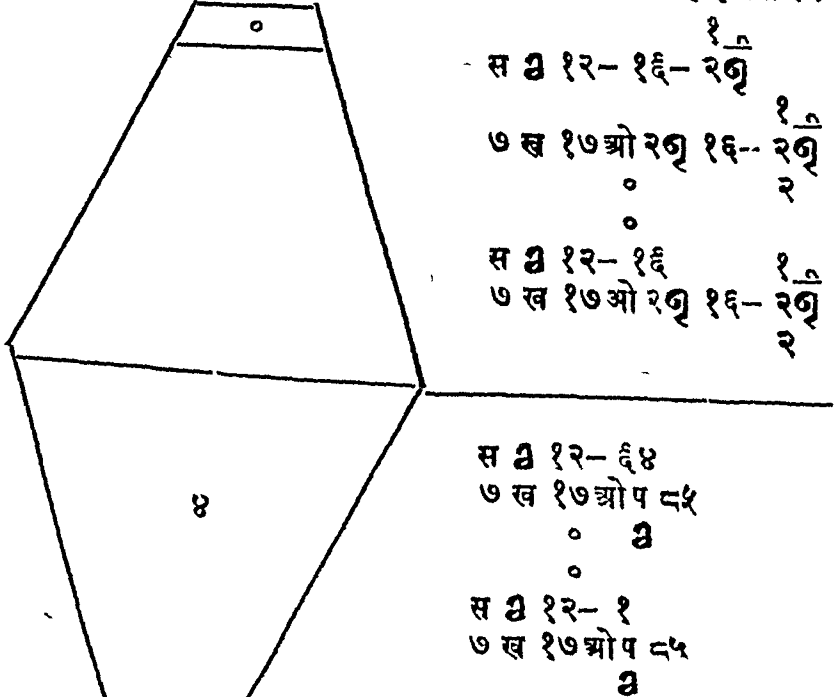


१ ७
स । ∂ १२– । मू ∂
७ । ख । १७ । मू । ∂
स । ∂ । १२– । ६४
७ ख १७ । मू । ∂ । ८५
० १६
० ४
म । ∂ । १२– १
७ । ख । १७ । मू । ∂ । ८५

इहां गुणश्रेणिका द्विचरम समय पर्यंत अधिक क्रमरूप लीककरि ऊपरि अंत निषेककी जुदी रचनाकरि संदृष्टि करी है। ताके आगैं दीया द्रव्य लिख्या है। बहुरि कृतकृत्य वेदक काल गुणश्रेणि शीर्षके संख्यात बहुभागमात्र ऐसा २ ७ । ३ [४ । ४] तहां सम्यक्त्व मोहका सत्व ऐसा स । ∂ । १२– [७ । ख । १७] ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एकभाग उदयावलीविषैं वाह्य निषेकानितैं ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग उदयावलीविषैं असंख्यातगुणा क्रमकरि देना। तहां पिच्यासीका भाग देइ एकादिकरि गुणैं प्रथमादि

६

निषेक हो हैं। बहुरि बहुभाग उपरितन स्थितिविषै अतिस्थापनावली छोडि द्रव्य देना। तहां ताके द्रव्यका गुणकारविषै एक हीनकौं न गिणि अपवर्तन कीएं द्रव्य ऐसा स a १२— / ७।ख।१७।ओ ताकौं गच्छ अंतर्मुहूर्तमात्र ऐसा २ ७ ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय धन होइ। ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेक अर गुणकारविषैं एक एक क्रमतैं घटाएं अन्तविषैं गच्छमात्र घटाएं द्वितीयादि निषेक होंइ तिनकी रचना ऐसी—



इहां नीचैं उदयावलीकी अधिक क्रमरूप उपरितन स्थितिकी हीन क्रमरूप संदृष्टि जाननी। ताके आगैं दीया द्रव्य लिख्या है। बहुरि कृतकृत्य वेदक कालविषै एक समय अधिक आवली अवशेष रहैं उदयावलीतैं उपरितन स्थितिविषैं निषेकका अपकर्षणकरि ताकौं आवलीविषै एक घाटि आवलीका दोय त्रिभाग अतिस्थापनरूप राखि एक अधिक आवलीका त्रिभागविषै दीजिए है। तहां तिस द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भाग प का भाग
a
देइ एक भाग उदयादि असंख्यात समय पर्यंत असंख्यातगुणा क्रमकरि दीजिए है इहां भाग ताके उपरिवर्ती अतिस्थापनाके नीचैं निषेक तिनविषैं हीनक्रमकरि दिजिये है इनके गच्छका प्रमाण यथासंभव असंख्यात ऐसा a इहां संदृष्टि ऐसी—

०

अतिस्थापना

स 𝟐 १२– १६– 𝟐 १

७ ख १७ ओ 𝟐 १६– 𝟐 १

स 𝟐 १२– १६

७ ख १७ ओ 𝟐 १६– 𝟐 १ / २

स 𝟐 १२– ६४

७ ख १७ ओ प ८५ / 𝟐

स 𝟐 १२–

७ ख १७ ओ प ८५ / 𝟐

वहुरि उदयावली अवशेष रहैं एक एक निषेक क्रमतैं गालि, क्षायिक सम्यग्दृष्टी हो है। वहुरि इहां कालका अल्पवहुत्वकी संदृष्टि सुगम है। सो उपशम सम्यक्त्वविषैं अल्पवहुत्व कह्या तिस प्रकार वा अन्य यथासंभव प्रकारकरि कथनके अनुसारि तेतीस अल्पवहुत्वके पदनिविषै ऐसी संदृष्टि हो है—

२गृ	२गृ५ ४	२गृ५४ ४	२गृ५४५	२गृगृ अपवर्तित	२गृगृ४	२गृगृ४४	२गृगृ४४४	२गृगृ४४४४
२गृ अपवर्तित	२गृ४	२गृ४४	२गृ४४४	२गृ४४४४	व८	प–व८ a aa	प aaa	
१– प a aaa	१– प a aa	प a	१– प a ५५५५a	प४ ५५५	प४ ५५	प गृगृ	प गृ	प४ ५
प	सा a प ८गृ	सा a ल ८	सा अं को २ ४ ४४	सा अं को २ ४४	सा अं को २ ४	सा अं को २		

ऐसैं क्षायिक सम्यक्त्व अधिकारविषैं संदृष्टि जाननी।

अथ देश चारित्राधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है— तहां अधःप्रवृत्त देश संयतविषैं चतुःस्थान पतित वृद्धि हानि लीएं अपकर्षण द्रव्य हो है। तहां सत्त्व द्रव्य ऐसा— स a। १२– ताकौं सातका भाग दीएं एक कर्म ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य ऐसा स a। १२ – ताकौं असंख्यात संख्यातका भाग देइ एक अधिक असंख्यात संख्यात करि गुणैं असंख्यात संख्यात भाग वृद्धि हो है। अर ताहीकौं संख्यात असंख्यातकरि गुणैं संख्यात असंख्यात गुणवृद्धि हो है। अर ताहीकौं असंख्यात संख्यातका भाग देइ अर एक घाटि असंख्यात संख्यातकरि गुणैं असंख्यात संख्यात भाग हानि हो है। अर ताहीकौं संख्यात असंख्यातका भाग दीएं संख्यात असंख्यात गुणहानि हो है। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

स । ३ । १२ — ३ (१—) ७ । ओ । ३	स । ३ । १२ — ३ (१—) ७ । ओ । ॼ	स । ३ । १२ — ॼ ७ । ओ	स । ३ । १२ — ३ ७ । ओ
स । ३ । १२ — ३ (१=) ७ । ओ ३	स । ३ । १२ — ॼ (१=) ७ । ओ । ॼ	स । ३ । १२ — ७ । ओ ॼ	स । ३ । १२ — ७ । ३ । ३

बहुरि तहां कालके अल्पबहुत्वकी संदृष्टि पूर्वोक्त प्रकारकरि वा अन्य यथा संभव प्रकार करि कथनके अनुसारि अठारह पदनिविषैं ऐसी जाननी—

२ ॼ	२ ॼ । ५ ४	२ ॼ । ५ । ४ ४	२ ॼ । ५ । ४ । ५ ४ । ४	२ ॼ । ॼ	२ ॼ । ॼ
२ ॼ ॼ । ४ । ४	२ ॼ ॼ । ४ । ४ । ४	२ ॼ । ॼ । ॼ । ॼ	२ ॼ ॼ ॼ ॼ । ४	प ॼ ॼ	प ॼ
प	सा । ७ ८	सा अं को २ ४ । ४ । ४	सा अं को २ ४ । ४	सा अं को २ ४	सा अं को २

बहुरि तहां जघन्य स्थानके अविभाग प्रतिच्छेद अनंत गुणीं जीव राशिमात्र ऐसैं १६ । ख । यातैं अनंत जीव राशिगुणा उत्कृष्ट स्थानके ऐसे १६ । ख । १६ । ख । सर्व स्थान असंख्यात लोकमात्र ऐसैं ≡ ३ इनविषैं एक अधिक आवलीका असंख्यातवां भागकौं पांचवार माडि $\frac{२}{३}$ $\frac{२}{३}$ $\frac{२}{३}$ $\frac{२}{३}$ $\frac{२}{३}$ (प्रत्येक पर १—) परस्पर गुणैं जेता होइ तिनविषैं एकवार षट्स्थानपतित

वृद्धि होइ तौ सर्व स्थाननिविषै केती होइ ऐसैं त्रैराशिक कीएं एतीवार होइ– ≡ a

१– १– १– १– १–
२ २ २ २ २
a। a। a। a। a

बहुरि तहां प्रतिपात प्रतिपद्यमान अनुभय स्थान क्रमतैं हैं इनके वीचि वीचि असंख्यात लोकमात्र स्वामी रहित अंतर स्थान हैं तिनकी संदृष्टि ऐसी ≡ a बहुरि तिन स्थाननि की संदृष्टिविषैं आदि जघन्य लिखि मध्य स्थाननिके अर्थि वीचिमें विंदी लिखि अंतविषैं उत्कृष्ट लिखना। बहुरि ए स्थान नारककैं तौ सर्व संभवै हैं अर तिर्यंचकै केते इक मध्यस्थान ही संभवै हैं तातैं तिनके आदि अक्षरकी संदृष्टि करनी। बहुरि जघन्यतैं लगाय मनुष्यहीकै संभवते अर मध्यविषैं तिर्यंचकैं संभवते अर अंतविषैं मनुष्यहीकैं संभवते स्थान प्रत्येक असंख्यात लोकमात्र हैं। तिनकी संदृष्टि ऐसी ≡ a ऐसैं कीएं तिन स्थाननिकी ऐसी संदृष्टि हो है–

प्रतिपातस्थान	अं	प्रतिपद्यमानस्थान	अं
ज ○ ○ ○ ○ ● ○ ○ ○ ○ ○ ○ उ न ≡ a ज ○ ○ ○ ○ उ ≡ a न ति ≡ a ति	a	ज ○ ○ ○ ○ ● ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ उ न ≡ a ज ○ ○ ○ ○ उ ≡ a न ति ≡ a ति	≡ a

अनुभय स्थान
ज ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ उ न ≡ a ज ○ ○ ○ ○ उ ≡ a न ति ≡ a ति

ऐसैं देश संयम लब्धि अधिकारविषैं संदृष्टि जाननी।

अथ सकलचारित्र अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है–तहां देश संयमविषैं जैसैं संदृष्टिनिका

स्वरूप कह्या है तैसें इहां भी यथा संभव जानना। तहां प्रतिपातादि स्थाननिविषैं विशेष है सो कहिए है—

मिथ्यादृष्टि असंयत देशसंयतविषैं पडनेवालेकी अपेक्षा प्रतिपातस्थान तीन प्रकार हैं। तहां जघन्यादिककी संदृष्टि पूर्ववत् करनी अर तिनके वीचि अंतराल रूप स्थान असंख्यात लोकमात्र है तिनकी संदृष्टि करनी। वहुरि प्रतिपद्यमान स्थाननिविषैं आर्य खंडके मनुष्यके संभवते सर्व स्थान हैं अर म्लेच्छ खंडके मनुष्यके संभवते वीचिके स्थान हैं। तातैं जैसें देश संयतविषैं मनुष्य तिर्यंचविषैं संभवते स्थाननिकी संदृष्टि करी थी तैसें इहां आर्य म्लेच्छ खंडनिके मनुष्यनिकैं संभवते स्थाननिकी रचना करनी। इहां इनकैं आदि अक्षर लिखने। वहुरि अनुभय स्थाननिविषैं सामायिक द्विकविषैं संभवते सर्व स्थाननिविषैं मध्यविषैं संभवते परिहार विशुद्धिके स्थान हैं। तातैं इहां भी पूर्ववत् संदृष्टि करनी। वहुरि ताके परे सूक्ष्मसांपरायके स्थान जघन्यादिरूप हैं। वहुरि ताके परैं यथाख्यातका एक ही स्थान है। इनके वीचि वीचि अंतराल स्थान हैं तिनकी संदृष्टि करनी। ऐसैं इनकी ऐसी संदृष्टि हो है

प्रतिपातस्थान					अ	प्रतिपद्यमान	अ
मिथ्यात्व	अं	अस	अं	देश			
ज ०००००उ	≡ a	ज ००००उ	≡ a	ज ००००उ	≡ a	ज ०००००००००००० उ आ ≡ a ज ००००उ ≡ a आ म्ले ≡ म्ले	≡ a

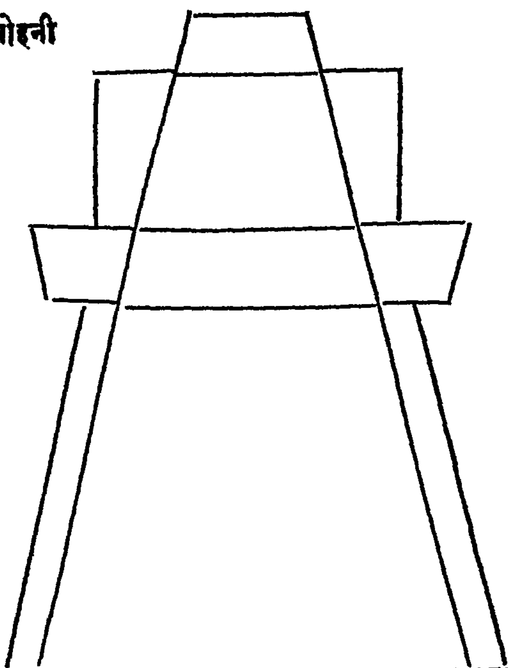
अनुभय	अं	सूक्ष्मसांपराय	अ	यथा
ज ०००००००००००|०उ सा ≡ a ज ००००००उ ≡ a सा प ≡ a प	≡ a	ज ००००००|उ	≡ a	१

बहुरि सर्वस्थान ऐसैं ≡ a इनकौं छोटा असंख्यात लोककी सहनानी नवका अंक ताका भाग देइ बहुभागमात्र अनुभय स्थान ऐसे $\equiv \frac{a।८}{९}$ बहुरि याकौं ताहीका भाग दीएं बहुभागमात्र प्रति पद्यमान स्थान ऐसे $\equiv \frac{a।८}{९।९}$ बहुरि एकभागमात्र प्रतिपात स्थान ऐसे जानने $\equiv \frac{a}{९।९}$ ऐसे सकलसंयमाधिकारविषैं संदृष्टि जाननी।

अथ चारित्रमोहका उपशमन अधिकारविषैं संदृष्टि कहिए है– तहां जो द्वितीयोपशमसम्यक्त्व सहित श्रेणी चढै ताकैं द्वितीयोपशम सम्यक्त्व सम्बन्धी अपूर्वकरणका प्रथम समयादि अनिवृत्तिकरणका बहुभाग पर्यंत गुणश्रेणिविषैं ऐसी रचना जाननी—

इहां तीनों दर्शन मोहके निषेकनिका क्रमरूप आकार लिखि ताके नीचें तिन तीनोंके द्रव्यकी संदृष्टि लिखी। द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्धकों सात अनंत सतरहका भाग दीएं दर्शन मोहका द्रव्य होइ ताविषैं किंचिदून कीएं मिथ्यात्वका अर ताहीकों गुणसंक्रमणका भाग देइ असंख्यातकरि गुणें मिश्रका अर ताहीकों गुणसंक्रमका भाग दीएं सम्यक्त्व प्रकृतिका द्रव्य हो है। बहुरि तिन तीनोंके निषेक रचनाविषैं उदयावली गुणश्रेणि उपरितन स्थिति दिखावनेकों क्रमहीन क्रम अधिक क्रम हीनरूप संदृष्टि करी। बहुरि तिनके आगें सम्यक्त्व मोहनीका द्रव्यकों अपकर्षण भागहार असा (ओ) ताका भाग देइ ताकों पल्यका असंख्यातवां भाग ऐसा $\frac{प}{a}$ ताका भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं दीया अवशेष एक भागकों असंख्यात लोक असा ≡ a ताका भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणि आयामविषै एकभाग उदयावलीविषैं दीया। तिनकी संदृष्टि लिखी। बहुरि अनिवृत्ति करण कालका संख्यातवां भाग रहैं सम्यक्त्व मोहनीका जो द्रव्य अपकर्षण कीया तिसविषै जहां असंख्यातलोकका भाग था तहां पल्यका असंख्यातवां भाग संभवै है। ताकी रचना असी—

सम्यक्त्वमोहनी



उपरितनद्रव्य

स ә १२– १/प ә

स ख १७ गु ओ प प ә ә

गुणश्रेणिद्रव्य

स ә १२– १/प ә

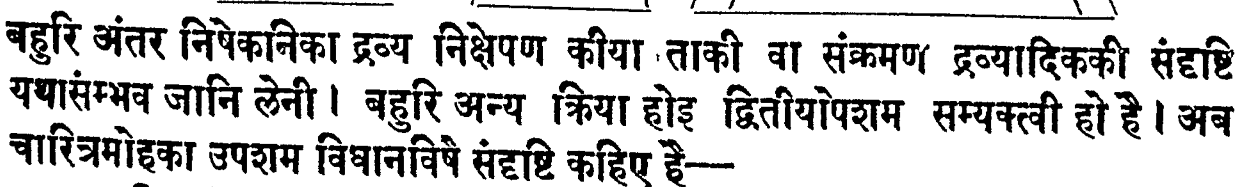
७ ख १७ गु ओ प प ә ә

उदयावलीद्रव्य

स ә १२–

७ ख १७ गु ओ प प ә ә

बहुरि अंतर्मुहूर्त काल गएं अंतर करै है। तहां मिथ्यात्व मिश्रमोहनीकी आवली ४। मात्र सम्यक्त्व मोहनीकी अंतर्मुहूर्तमात्र। २ १। नीचैं प्रथम स्थिति छोडि वीचिके निषेकानिका अभाव करि ऊपरि तीनोंकी द्वितीय स्थितिकी रचना समान हो है। तिनकी रचनाविषै नीचैं तीनोंकी उदयावली लिखी। ताके ऊपरि मिथ्यात्व मिश्रकैं तौ अभावरूप निषेकानिकी संदृष्टि अर सम्यक्त्व मोहनीके गुणश्रेणिरूप निषेक लिखि ताके ऊपरि अभावरूप निषेकनिकी संदृष्टि करनी। बहुरि तिन तीनोंके अभावरूप निषेकानिके उपरि द्वितीय स्थितिकी क्रम हीन संदृष्टि बरोबरि करनी। ऐसैं कीएं ऐसी रचना हो है—



बहुरि अंतर निषेकनिका द्रव्य निक्षेपण कीया ताकी वा संक्रमण द्रव्यादिककी संदृष्टि यथासंभव जानि लेनी। बहुरि अन्य क्रिया होइ द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी हो है। अब चारित्रमोहका उपशम विधानविषै संदृष्टि कहिए है—

बहुरि नपुंसक वेदादिकका सत्व द्रव्य इहांतैं लगाय यहु कथन तौ पाछैं लिखना। अर पुरुष वेदादिकका बंध द्रव्यकी रचना ऐसी—

पृष्ठ ५२ (क) देखो

इहां नपुंसक वेदादि क्रमतैं उपशमाइए है-तिनकी रचनाकरि आगैं अवशेष कर्म लिखे। बहुरि तिनके निषेकनिकी क्रम हीन संदृष्टिकरि वीचिमैं गुणश्रेणिआयामकी क्रम अधिक रूप संदृष्टि करी है। बहुरि इहां पुरुषवेदादिकका सत्व द्रव्यके आगैं बंध द्रव्यकी ऐसी ^ संदृष्टि जाननी। इहां नीचैं आबाधा ऊपरि निषेकनिकी रचना जाननी। बहुरि मोहका द्रव्य ऐसा स। ४ १२ – तामें सर्वघाती द्रव्य किंचित् घट्या ताकौं न गिणि ताकौं कषाय नोकषायका
७
भाग दीएं दोयका भाग होइ। अर नोकषायविषैं वेद हास्यद्विक रतिद्विक भय जुगुप्साका भागके अर्थि पांचका भाग होइ। दोयकौं पांचकरि गुणैं दशका भाग होइ ऐसैं वेदादिक का द्रव्य ऐसा—

वेद ३	हास्य २	रति २	भय १	जुगुप्सा १
३। १२— ७। १०	स। ३। १२— ७। १०	स ३। १२— ७। १०	स। ३ १२— ७। १०	स। ३। १२— ७। १०

बहुरि अंक संदृष्टि अपेक्षा तीनौं वेदनिविषैं तिनके द्रव्यकौं अठतालीसका भाग देइ वियालीस च्यारि दोयकरि क्रमतैं गुणैं नपुंसकवेद स्त्रीवेद पुरुषवेदका द्रव्य हो है। बहुरि हास्यद्विकके द्रव्यकौं तैसैं ही भाग देइ सोलह वत्तीसकरि गुणैं हास्य शोकका द्रव्य हो है। बहुरि रति द्विकके द्रव्यकौं तैसैं ही भाग देइ सोलह वत्तीसकरि गुणैं रति अरतिका द्रव्य हो है। इहां पुरुषवेदका काल अंतर्मुहूर्तमात्र है तातैं स्त्री अर हास्य अर अरति शोकका काल क्रमतैं संख्यात गुणा है अर नपुंसक वेदादिकका विशेष अधिक है। तिस अपेक्षा ऐसैं द्रव्य कह्या है। बहुरि मोहके द्रव्यकौं अनंत अर सतरहका भाग दीएं आठकरि गुणैं अप्रत्याख्यान प्रत्या-

स्त्यान कषाय आठका द्रव्य हो है। इहां यहु सर्वघाती द्रव्य है। बहुरि मोहके द्रव्यकौं आठका भाग देइ च्यारिकरि गुणैं संज्वलनकषायचतुष्कका द्रव्य हो है। इहां मोहका आधा द्रव्य जानना ऐसैं इनकी संदृष्टि ऐसी—

नपुं	स्त्री	हास्य	रति	अरति	शोक
स a १२– ४२ ७ १० ४८	a १२– ४ ७ १० ४८	स a १२– १६ ७ १० ४८	स a १२– १६ ७ १० ४८	स a १२– ३२ ७ १० ४८	स a १२ ३२ ७ १० ४८

भय	जुगुप्सा	पुरुष	अष्टकषाय	संज्वलनचतुष्क
स a १२– ७ १०	स a १२– ७ १०	स a १२–२ ७ १० ४८	स a १२– ८ ७ ख १७	स a १२– ४ ७ ८

इनिका ऐसा सत्व द्रव्य है। ताकौं अपकर्षणकरि गुणश्रेणि करै है। तहां अनुभाग कांडकविषैं एक कर्मका द्रव्य ऐसा— स। a। १२ — (स के नीचे ७) याकौं साधिक ड्योढ गुणहानि ऐसा- (१२) ताका भाग दीएं प्रथम निषेकका द्रव्य ऐसा स a। १२ — (नीचे ७। १२) याकौं अनुभाग संबंधी अनंत प्रमाण लीएं गुणहानि है सो इस साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणा का द्रव्य ऐसा स। a। १२ — (नीचे ७। १२। ख ३/२) याकौं आधा अन्योन्याभ्यस्त राशिका भाग दीएं अंत गुणहानिका प्रथम वर्गणाका द्रव्य ऐसा स a। १२ — (नीचे ७। १२। ख ३/२ अ/२) याकौं दो गुणहानिका भाग देइ एक

अधिक गुणहानि आयामकरि गुणें अंत गुणहानिकी अंतवर्गणाका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ -गु
७। १२। ख। ३ । ख। गु२
२ २

बहुरि ऐसें ही द्वितीयादि निषेकनिविषैं रचना करनी। तहां प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेकका द्रव्यकौं अपनी वर्गशलाकाकरि भाजित पल्यप्रमाण अन्योन्याभ्यस्तराशि ताका आधा ऐसा प ताका भाग दीएं अंतगुणहानिका प्रथम निषेकका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ –
व २ ७। १२ प
व २

याकौं दोगुणहानिका भाग दीएं एक अधिक गुणहानिकरि गुणें अंत निषेकका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ – गु याकौं अनुभाग संबंधी ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्ग-
७। १२। प। गु २
व २

णाका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ –गु इहां वर्ग शलाकाकरि भाजित पल्यकैं दोयका भा-
७। १२। प। गु। ख। ३
व २ २

गहार था ताकौं दो गुणहानिकैं दोयका गुणकार था ताकरि अपवर्तन कीया इहां एक अधिकपना न गिणि गुणहानिका भी अपवर्तन कीएं ऐसा स। ३। १२ — याकौं अनुभाग
७। १२ — प। ख ३
व २ २

संबंधी आधा अन्योन्याभ्यस्त राशिका भाग दीएं अनुभाग संबंधी अनंतगुणहानिकी प्रथम

वर्गणाका द्रव्य ऐसा— स । ३ । १२ — याकौं दोगुणहानिका भाग दीएं एक अधिक गु-
७ । १२ प ख । ३ । अ
व २ २ २
१—
णहानिकरि गुणैं अंत निषेककी अंत गुणहानिकी अंत वर्गणाका द्रव्य ऐसा स । ३ । १२ —गु
। ७ । १२ । प । ख । ३ । अ । गु २
व २ २ २

इहां भी पूर्ववत् अपवर्तन कीएं ऐसा स । ३ । १२ — ऐसैं सर्व निषेकनिविषैं अनुभाग
७ । १२ प ख ३ अ
व २ २

रचना जाननी । तहां एक गुणहानिविषैं स्पर्धकनिका प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी (९) ताकौं नानागुणहानिकरि गुणैं सर्व अनुभाग ऐसा ९ । ना ताकौं अनंतका भाग दीएं बहु भाग मात्र खंडकरि नष्ट कीया अनुभाग ऐसा १ — ९ ना ख ख अवशेष एक भागकौं अनंतका भाग दीए

एक भागमात्र अतिस्थापन ऐसा ९ । ना । ख ख बहुभागमात्र निक्षेपरूप अनुभाग ऐसा—
१ — १ —
९ ना । ख ख ख ख जानना ।

बहुरि अनिवृत्ति करणविषैं स्थितिबंध क्रमतैं हो है । तिनकी संदृष्टि आदि अक्षरादिरूप सुगम है बहुरि इहां इकईस प्रकृतिनिका अंतर करण हो है । तहां संदृष्टि दर्शनमोहका अंतरवत् जाननी । विशेष है सो विशेष जानि लेना । बहुरि नपुंसक वेदका उपशमनविषैं नपुंसकका

सत्व द्रव्य पूर्वोक्त प्रकार ऐसा स । ꣿ । १२ – ४२ ताकौं गुणसंक्रमका असंख्यातवां भाग
७ । १० । ४८

का भाग दीएं प्रथम फालि अर दोय आदि एक एक अधिकवार असंख्यातकरि भाजित गुण संक्रमका भाग दीएं द्वितीयादि फालि होइ तिनकी संदृष्टि ऐसी—

स । ꣿ । १२ — ४२ ७ । १० । ४८ । गु ꣿ
स । ꣿ । १२ — ४२ ७ । १० । ४८ । गु ꣿ ꣿ
स । ꣿ । १२ — ४२ ७ । १० । ४८ । गु ꣿ ꣿ ꣿ

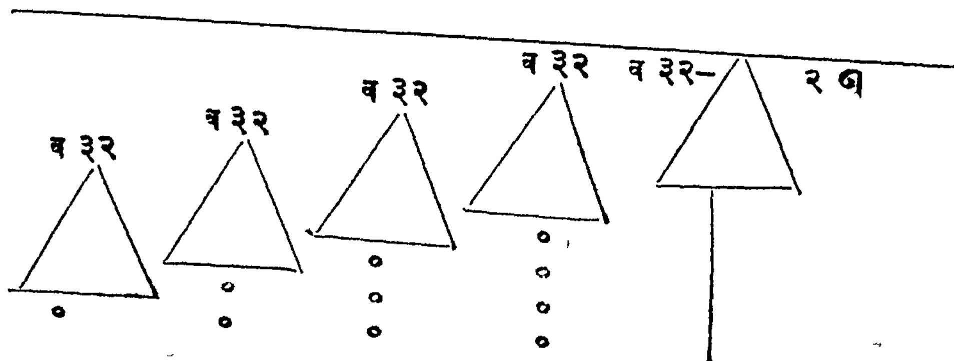
बहुरि इहां अल्प बहुत्वविषैं पुरुष वेदका पूर्वोक्त प्रकार सत्व द्रव्य ऐसा स ꣿ । १२—२
७ । १० । ४८

ताकौं अपकर्षण भागहारका असंख्यातवां भाग अर दोयवार पल्यका असंख्यातवां भाग दीएं उदयावलीविषैं दीया उदीरणा द्रव्य सो ऐसा स । ꣿ । १२ – २ बहुरि तिसहीकौं
७ । १० । ४८ । ३ । प । प
ꣿ ꣿ ꣿ

अपकर्षण भागहारके असंख्यातवां भागका अर पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं गुणश्रेणि द्रव्य ताकौं पिच्यासीका भाग दीएं ताका प्रथम निषेकरूप उदय द्रव्य ऐसा—
८

'स । ३ । १२ – २ / ७ । १० । ४८ । उ । प । ८५ / ३ ३ सो तातैं असंख्यात गुणा है। बहुरि नपुंसक द्रव्यकौं गुण संक्रमका भाग दीएं गुणसंक्रम द्रव्य ऐसा स ३ । १२–४२ / ७ । १० । ४८ । गु सो तातैं असंख्यात गुणा है। बहुरि ताका उपशम द्रव्य ऐसा स ३ । १२ – ४२ / ७ । १० । ४८ । गु / ३ सो तातैं असंख्यात गुणा है । इहां भागहारका भागहार राशिका गुणकार होइ। इस अपेक्षा गुण संक्रमका भागहार तिस राशिका गुणकार जानना। बहुरि जहां संख्यातगुणित हजार वर्ष प्रमाण स्थिति हो है तहां संदृष्टि ऐसी व १००० १ याका संख्यात बहुभागमात्र स्थिति बंधापसरण ऐसा व १००० १ । ४/५

इहां संख्यातकी सहनानी पांचका अंक है। ऐसैं ही यथासंभव अन्य संदृष्टि जाननी बहुरि पूर्वस्थिति बंधापसरण भएं बत्तीस वर्षमात्र स्थिति बंध प्रथमादि समयनिविषैं हो हैं। तिनकी संदृष्टि ऐसी—



इहां नीचैं एक दोय आदि व्यतीत भएं समयनिकी संदृष्टि विंदी लिखि ऊपरि बत्तीस वर्षमात्र स्थितिके निषेकनिकी क्रम हीन संदृष्टि करी। ऐसैं अंतर्मुहूर्त काल गएं पीछैं अंतर्मुहूर्त घाटि बत्तीस वर्षमात्र स्थिति बंध हो है। ताकी अंतविषैं संदृष्टि करी है

बहुरि अन्य विधान होइ पुरुषवेदके उपशम कालविषैं नवक समय प्रबद्ध एक घाटि दोय आवलीमात्र उपशम नाहीं तिनकी संदृष्टि ऐसी—

उच्छिष्टावली	०
	० १
	० १ २
	० १ २ ३
	० १ २ ३ ४
	० १ २ ३ ४ ४
	० १ २ ३ ५ ४ ४
उमशमना वली	० १ २ ३ ४ ४ ४ ४
	१ २ ३ ४ ४ ४ ४
	२ ३ ४ ४ ४ ४
	३ ४ ४ ४ ४
बंधावली	४ ४ ४ ४
	४ ४ ४
	४ ४
	४

इहां समय प्रबद्धकी च्यारि उपशम फालि कल्पि च्यारिका अंककी संदृष्टि करी अर आवलीका प्रमाण च्यारि समय कल्पना कीएं तहां बंधावली विषैं प्रथमादि समयविषैं एक

एक समय प्रवद्ध बंध्या ते तिनिविषैं क्रमतैं एक दोय तीन च्यारि समय प्रवद्ध अनुपशमरूप भए। बहुरि ता पीछैं उपशमनावलीका प्रथम समयविषैं जो बंधावलीका प्रथम समयविषै समय प्रवद्ध बंध्या था ताकी एक फालि उपशमाई तीन अवशेष रहीं अर बंधावलीके द्वितीयादि समय विषैं बंधे तीन समय प्रवद्ध अर उपशमनावलीका प्रथम समयविषैं बंध्या एक समय प्रवद्ध संपूर्ण अनुपशमरूप रहे। बहुरि उपशमनावलीका द्वितीय समयविषैं बंधावलीका प्रथम समयविषैं बंध्या समयकी दूसरी फालि अर द्वितीय समय बंध्याकी प्रथम फालि उपशमाई तातैं तिनिकी दोय अर तीन फालि अनुपशमरूप रहीं अर बंधावलीका द्वितीय तृतीय समय विषैं बंधे अर उपशमनावलीका प्रथम द्वितीय समयविषैं बंधे संपूर्ण दोय समय प्रवद्ध अनुपशमरूप रहे। ऐसैं ही क्रमतैं उपशमनावलीका अंत समयविषैं बंधावलीका प्रथम समयविषैं बंध्या समय प्रवद्ध सर्व उपशम्या ताकी संदृष्टि बिंदि लिखि ताके द्वितीयादि समयनिविषैं बंध समय प्रवद्धनिकी एक दोय तीन फालि अर उपशमनावलीके प्रथमादि समयनिविषैं बंध च्यारि समय प्रवद्धतैं अनुपशमरूप रहे। ए नवीन समय प्रवद्ध हैं तातैं फालिनिकौं भी समयप्रवद्ध कल्पैं एक घाटि दोय आवलीमात्र नवक समय प्रवद्ध अनुपशमरूप हैं। तिनिका उच्छिष्टावली मात्र सत्त्व रहैं पूर्वोक्त प्रकार एक एक फालिका उपशमन हो है। तहां प्रथम समयविषैं बंधावलीके द्वितीय समयविषैं बंध्या समयप्रवद्ध तौ सर्व उपशम्या तृतीयादि समयनिविषैं बंधेकी एक दोय फालि अनुपशमरूप रही उपशमनावलीका प्रथम समय विषैं बंध्याकी एक फालि उपशमी तातैं तीन फालि रहीं ताहीके द्वितीयादि समयनिविषैं बंधे संपूर्ण समय प्रवद्ध अनुपशमरूप रहे। ऐसे ही क्रमतैं एक घाटि दोय आवलीमात्र काल

विषैं तिन सर्वनिकै उपशमावै है। बहुरि इहां अपने अपने समय प्रवद्धकी फालि आदिकी रचना उपरि उपरि अपनी अपनी सूचिविषैं करी है। बहुरि पुरुषवेदके नवक समय प्रवद्धकी संदृष्टि ऐसी स ३। ४। २ (१— / ७। २) इहां समयप्रवद्धकौं सातका भाग दीएं मोहका बंध द्रव्य होइ ताकौं कषाय नोकषाय भागके अर्थि दोयका भाग दीएं इहां अन्योन्य कषायनिका बंध नाही है तातैं पुरुषवेदका बंध द्रव्य ऐसा स ३ १२— (७। २) ताकौं दोय आवली एक समय घाटि ऐसा ४ २ (१—) ताका गुणकार जानना। बहुरि इहां जाकी बंधावली व्यतीत भई ऐसा पुरुष वेदका एक समय प्रवद्ध ऐसा स ३ (७। २) ताकौं गुण संक्रमणका भाग दीएं अपगत वेदका प्रथम समयविषैं उपशमन द्रव्य हो है। बहुरि एक दोय आदिवार असंख्यातकरि भाजित गुणसंक्रम ताहीकौ भाग दीएं द्वितीयादि समयनिविषै उपशम द्रव्य हो है अंतविषैं एक घाटि आवलीकी संदृष्टि ऐसी ४ (१ ८—) सो इतनी वार असंख्यातकरि भाजित गुण संक्रमणका भाग हार जानना। ताकी संदृष्टि रचना ऐसी—

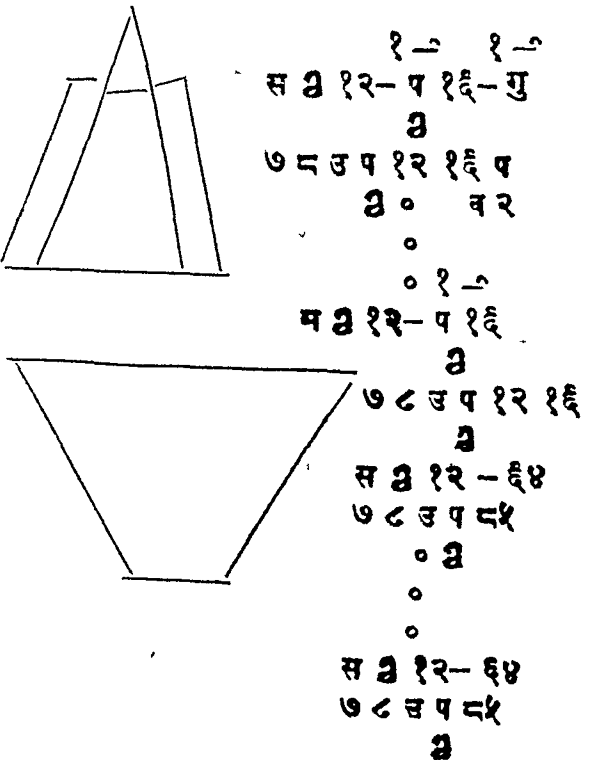
प्रथमफालि	द्वितीयफालि	तृतीयफालि	अंतफालि
स ३ ७। २। गु	स। ३ ७। २। गु ३	स ३ ७। २। गु ३ ३	स ३ ७। २। गु १ ८ ३ ४

इहां क्रमहीन रूप निषेकनिकी संदृष्टिकरि ताके वीचि एक फालिविषैं सर्व निषेकनिका केता इक द्रव्य उपशमाइए है तातैं ऊभी लीककी संदृष्टि करी अर नीचैं फालिनिका द्रव्यकी संदृष्टि लिखी। बहुरि पुरुष वेदके नवक समय प्रवद्धनिविषैं एक एक समय प्रबद्ध ऐसा स ३ / ७।२ याकौं अधः प्रवृत्त भागहारका भाग दीएं एक भागका अपगत वेदके प्रथम समयविषैं क्रोधरूप संक्रमण हो है अवशेष बहुभागकौं ताहीका भाग दीएं एक भागका द्वितीय समय विषैं संक्रमण हो है। अवशेष बहुभागकौं ताहीका भाग दीएं एक भागका तृतीय समय विषैं संक्रमण हो है। ऐसैं समय घाटि दोय आवली पर्यंत अनुक्रम जानना। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	प्रथम समय	द्वितीय समय	तृतीय समय
अवशेष बहुभागमात्र द्रव्य	१ ‒ / स। ३। अ / ७। २। अ	१ ‒ १ ‒ / स। ३। अ अ / ७। २। अ। अ	१ ‒ १ ‒ १ ‒ / स। ३। अ अ अ / ७। २। अ। अ। अ
संक्रमण रूप भया द्रव्य	स। ३ / ७। २। अ	१ ‒ / स। ३। अ / २। २। अ। अ	१ ‒ १ ‒ / स। ३। अ अ / ७। २। अ। अ अ

इहां अधः प्रवृत्तकी सहनानी अकार ताका भाग देइ बहुभागविषैं एक घाटि तिसही का गुणकार जानना। बहुरि पुरुषवेद अर क्रोधकौं उपशमाइ मानकौं उपशमावै है तहां मानकी द्वितीय स्थितिका द्रव्य ऐसा स। ३। १२ / ७। ८ — इहां सर्व कर्मका सत्व द्रव्यकौं सात

का भाग दीएं मोहका होइ, ताकौं दोयका भाग दीएं कषायनिका होइ, ताकौं च्यारिका भाग दीएं मानका होइ। सो दोयकौं च्यारिकरि गुणैं इहां आठका भागहार मोहके द्रव्य कौं दीया है। याकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भागकौं पल्यके असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग प्रथम स्थितिविषैं असंख्यात गुणा क्रमकरि देना। तहां ताकौं अंक संदृष्टिकरि पिच्यासीका भाग देइ एक आदिकरि गुणैं प्रथमादि निषेक हो हैं। बहुरि बहुभाग द्वितीय स्थितिविषैं हीन क्रमकरि देना। तहां तिस द्रव्यकौं साधिक ड्योढ गुणहानि ऐसा १२ ताका भाग दीएं प्रथम निषेक ताकौं दोगुणहानि ऐसा (१६) ताका भाग दीएं चय होइ। ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेक होइ। एक आदि घाटि दोगुणहानिकरि गुणैं द्वितीयादि निषेक होइ। ऐसैं क्रमतैं गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा होइ। गुणहानिका प्रथम निषेककौं वर्गशलाकाकरि भाजित पल्य प्रमाण जो अन्योन्याभ्यस्तराशि ताका आधा ऐसा प/व२ ताका भाग दीएं अंत गुणहानिका प्रथम निषेक होइ। तहां दोगुणहानिमात्र गुणकारविषैं एक घाटि गुणहान्यायाम ऐसा गु घटाएं अंत निषेककी संदृष्टि हो है। ऐसैं इनकी रचनाविषैं द्रव्य देनेकी अपेक्षा नीचैं प्रथम स्थिति की क्रम अधिकरूप संदृष्टिकरि ताके ऊपरि अंतरायामविषैं अभावरूप निषेकनिकी बिंदीकी संदृष्टिकरि ताके ऊपरि द्वितीय स्थितिकी क्रम हीन रूप संदृष्टि अर अंतविषैं अतिस्थापना-वलीकी संदृष्टिकरि रचना जाननी। तिनिके आगैं आदि अंत निषेकविषैं दीए द्रव्यकी संदृष्टि जाननी—



बहुरि अैसैं ही माया वेदकविषैं मायाके द्रव्य देनेकी संदृष्टि जाननी किछू विशेष नाही बहुरि लोभ वेदक काल संख्यात आवलीमात्र अैसा २ ९ ताकौं संख्यातका भाग देइ बहुभागके तीन भागकरि तीन जायगा स्थापने। बहुरि अवशेष एक भागका संख्यात बहुभाग द्वितीय स्थानविषैं एक भाग तृतीय स्थानविषैं मिलावना। तहां प्रथम स्थानरूप लोभ

वेदकका आधा काल है। दूसरा स्थानरूप कृष्टिकरण काल है। तीसरा स्थानरूप कृष्टिवेदक काल है। ते ऐसे संदृष्टिरूप जानने—

०	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
बहुभाग	१— २ । ७ । ७ / ७ । ३	१— स ७ । ७ / ७ । ३	१— २ ७ । ७ / ७ । ३
विशेष	१— २ । ७ । ७ / ७ । ७	१— स ७ । ७ / ७ । ७ । ७	१— २ ७ / ७ । ७ । ७

इहां प्रथमद्वितीय स्थानके मिलाए हुए बहु भाग ऐसैं २ १— ७ । ७ / ७ । ३ । इहां एक घाटि रूप ऋण ऐसा २ ७—२ / ७ । ३ जुदा राखि अवशेष विषैं संख्यातका अपवर्तन कीएं ऐसा २ ७ २ / ३ १— २ ७ । ७ इहां एक घाटिका ऋण ऐसा २ ७ / ७ । ७ । ७ बहुरि दूसरा स्थानका विशेष घन ऐसा २ ७ । ७ / ७ । ७ । ७ जुदा राखि अवशेषविषैं संख्यातका अपवर्तन कीएं ऐसा २ ७ / ७ ७ बहुरि प्रथम स्थानविषैं विशेष घन ऐसा २ १— ७ । ७ / ७ विषैं एक घाटिका ऋण ऐसा २ ७ / ७ । ७ सो एतावन्मात्र ही है। तातैं प्रथ-

मस्थानका विशेष विषैं याकौं मिलाएं प्रथम स्थानका विशेष धन ऐसा २ १ भया याकौं
१ १
तीनकरि समच्छेद कीएं ऐसा २ १ । ३ या विषैं प्रथम ऋण ऐसा २ १ । २ अर द्वितीय
१ । १ । ३ १ । ३
ऋण ऐसा २ १ घटाएं जो अवशेष रह्या ताका अधिकका प्रथम द्वितीय बहु भाग ऐसा—
१ । १ । १
२ १ । २ के उपरि ऐसा (।) संदृष्टि कीएं ऐसा २ १ । २ यामैं आवली मिलाएं बादरलो-
३ ३
भकी प्रथम स्थितिका काल हो है। बहुरि इहां प्रथम स्थानविषैं बहुभाग ऐसा २ १ । १
१ । ३
इहां ऋण ऐसा २ १ । १ जुदा कीएं अर संख्यातका अपवर्तन कीएं ऐसा २ १ बहुरि तहां
१ । ३ ३
विशेष धन ऐसा २ १ । १ इहां ऋण ऐसा २ १ जुदा कीएं संख्यातका अपवर्तन कीएं
१ । १ १ । १
ऐसा २ १ याकौं तीनकरि समच्छेद कीएं ऐसा २ १ । ३ याविषैं द्वितीय ऋणकरि अधिक
१ १ । ३
प्रथम ऋण ऐसा २ १ । १ घटाएं ऐसा २ १ । २— तिस बहुभागका धन ऐसा २ १ विषैं
१ । ३ १ । ३ ३
अधिक कीएं बादर लोभ कालका प्रथम अर्ध साधिक लोभ वेदक कालका तृतीय भागमात्र
ऐसा २ १ हो है। बहुरि कृष्टिकरण कालविषैं विधानकी संदृष्टि कहिए है—
३

जघन्यस्पर्धककी प्रथम वर्गणाकी एक परमाणूविषैं अनुभागके प्रातिच्छेद जीवराशितैं अनंत गुणें अैसे १६। ख तिनके समूहका नाम वर्ग है। ताकी संदृष्टि अैसी (व) बहुरि संज्वलन लोभका सत्त्व द्रव्य अैसा स। ∂। १२–याकौं अनुभाग संबंधी गुणहानि अनंत गुणित अनंत
७। ८

प्रमाण सो अैसी (ख। ख) साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणा अैसी स। ∂। १२
७। ८ ख। ख। ३/२

याकौं दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष अैसा स। ∂। १२ — इस विशेषकरि वर्गकौं
७।८। ख। ख। ३/२। ख। ख। २

गुणें लघु संदृष्टि अैसी (व वि) याकौं दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम वर्गणा अैसी व वि ख ख २ इहां अंकसंदृष्टिकरि एक गुणहानिका प्रमाण आठ कल्पि दोगुणहानिका प्रमाण सोलह स्थापैं अैसी व। वि। २६ संदृष्टि हो है। याकी लघु संदृष्टि अैसी (व) यहु वर्गणाका आदि अक्षर रूप जाननी। बहुरि याकौं अनुभाग संबंधी साधिक ड्योढ गुणहानिकरि गुणें लोभ

का सत्व द्रव्य अैसा व १२ याकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भाग ग्रह्या सो अैसा

व १२ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग अैसा व १२। प/∂ जुदा
ओ ओ प/∂

स्थापि एक भाग ऐसा ३ १२ ताकौं इहां एक स्पर्धकविषैं वर्गणा शलाकाकी संदृष्टि ऐसी
ओ प

(४)ताकौं अनंतका भाग दीएं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा ४ ख
ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानि ऐसा १६ – ४ ताका भाग दीएं
ख २

चय होइ। ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम कृष्टिका द्रव्य ऐसा व १२ १६ याका अ-
ओ। प। ४। १६ – ४
३ ख ख २

नुभाग पूर्व स्पर्धक वर्गकौं कृष्टिनिका प्रमाणमात्र वार अनंतका भाग दीएं हो है सो ऐसा–
व बहुरि प्रथम कृष्टिविषैं एक चय घटावनेकौं दोगुणहानिका गुणकारविषैं एक घटाएं द्वितीय
ख ४ ख

कृष्टिका द्रव्य ऐसा भया संदृष्टि व। १२। १६ – १ १ याका अनुभाग तिस अनुभागतैं
ओ। प। ४। १६ – ४
३ ख ख २

अनंतगुणा ऐसा व। ख १ ऐसैं ही क्रमतैं दो गुणहानिका गुणकारविषैं एक घाटि कृष्टि-
ख। ४ ख

निका प्रमाणकौं घटाएं अंत कृष्टिका द्रव्य ऐसा व। १२। १६ – ४ १ बहुरि प्रथम
ख
ओ। प। ४। १६ – ४
३ ख ख २

कृष्टिका अनुभागकौं एक घाटि कृष्टि प्रमाणमात्र वार अनंतकरि गुणें अंत कृष्टिका अनुभाग अैसा व। ख। ४ अपवर्तन कीएं वर्गणाके अनंतवे भागमात्र याका अनुभाग अैसा व जानना बहुरि जुदे स्थापें बहुभाग अैसा व। १२। प साधिक ड्योढ गुणहानिनिका अर दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताकौं दोगुणहानिकरि गुणें स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषैं दीया द्रव्य अैसा व। १२। प १६ बहुरि द्वितीयादि वर्गणाविषैं दोगुणहानिका गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घटाएं अंतविषैं एक घाटि गुणहानिमात्र घटाएं प्रथम गुणहानिकी अंत वर्गणा होइ। बहुरि गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा होइ। प्रथम गुणहानिके निषेकानिकौं एक घाटि नानागुणहानिका प्रमाणमात्र दूवा परस्पर गुणें अैसे (२ ना) तिनिका भाग दीएं अंतगुणहानिके प्रथमादि निषेक हो हैं। अैसें अंत वर्गणा अैसी हो है व। १२। प। १६। गु

ओ। प। १२। १६। २। ना

अैसें कृष्टिनिकी वा पूर्व स्पर्धकनिविषैं दीया द्रव्यकी संदृष्टि अैसी—

व
ख ४
ख

व
ख

व १२ १६ ००००० व १२ १६–४ १
ओ प ४ १६–४ ओ प ४ १६–४
a ख ख a ख ख

व

व
व ९ ना

व १२ प १६ ०००० व १२ प १६– गु
a a
ओ प १२ १६ ओ प १२ १६ २ ना
a a

इहां ऐसा जानना—निषेक तौ ऊपरि ऊपरि समयनिविषैं उदय आवने योग्य है तातैं निषेकनिकी तौ रचना वा ऊर्ध्वविषैं क्रमरूप कीजै थी अर इहां युगवत् उदय आवने योग्य एक निषेकके परमाणूनिविषैं अधिक हीन अनुभागकी रचना है तातैं आडी रचना करी है तहां ऊपरि तौ समपाट्टिकाकी संदृष्टि करी है। नीचैं चय घटता क्रमकी क्रम हीन रूप संदृष्टि करी है। तहां कृष्टि वा वर्गणानिविषैं कृष्टिनिविषैं आदि अंत कृष्टिनिके द्रव्यका अर स्पर्धकनिविषैं आदि अंत वर्गणानिविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। मध्यभेदनिके अर्थि वीचिमैं बिंदी लिखी है। बहुरि कृष्टि करण कालका द्वितीय समयविषैं अपकर्षण कीया हूवा द्रव्य प्रथम समय वालेतैं असंख्यात गुणा ऐसा है व । १२ । a याकौं पल्यका असं-

ख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग ऐसें व । १२ । ३ । प १० / ओ प ३ ३ जुदे राखि अवशेष एक भागमात्र

कृष्टि द्रव्य ऐसा व । १२ ३ / ओ । प ३ ताके विभाग करिए है—

तहां प्रथम समयका कृष्टि द्रव्यविषैं एक विशेषका प्रमाण कह्या सो ऐसा—

व १२ / ओ। प। ४। १६ — ४ / ३। ख ख २ १ — १० इहां इसहीकौं आदि उत्तर स्थापि एक घाटि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनि

का प्रमाण गच्छ ऐसा ४ / ख १० स्थापि पदमेगेण विहीणं इत्यादि सूत्रकरि गच्छतें एक घटाई

दोयका भाग दीएं ऐसा ४ / ख । २ याकरि तिस विशेषकौं गुणें ऐसा— व १२। ४ १० / ख २ १० / ओ। प। ४। १६ - ४ / ३ ख ख २ यामैं आदिका

प्रमाण तिस विशेषमात्र ताके मिलावनेके अर्थि आगिला गुणकारविषैं दोयकरि भाजित दोय ऋण था ताका एक भगा । अर इहां इस गुणकारविषैं एक ही मिलावना तातैं तिस

घाटिकौं दूर कीएं ऐसा व । १२ । ४ / ख २ १० / ओ । प । ४ । १६ — ४ / ३ ख ख याकौं तिस गच्छकरि गुणें ऐसा व १२ । ४ । ४ १० / ख २ ख १ / ओ । प । ४ । १६ — ४ / ३ ख ख २

चय धन भया सो यहु अधस्तन शीर्ष द्रव्य है । बहुरि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिविषैं आदि कृष्टिमात्र एक कृष्टि ऐसी व । १२ । १६ (ओ । प । ४ । १६ — ४ / ३ ख ख २) याकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाणकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं द्वितीय समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ (ख । ओ । ३) ताकरि गुणैं अधस्तन कृष्टि द्रव्य ऐसा व १२ । १६ । ४ (ख ओ ३ / ओ प । ४ । १६ — ४ / ३ ख ख)

बहुरि द्वितीय समय कृष्टिका द्रव्य ऐसा व । १२ ३ (ओ । प / ३) या विषै प्रथमसमयका कृष्टिद्रव्य ऐसा— व १२ (ओ प / ३) मिलावनेकौं आगिला असंख्यातकौं गुणकारविषैं एक अधिक कीएं ऐसा— व । १२ । ३ (ओ । प / ३) याकौं प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाणके ऊपरि द्वितीय समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाण मिलावनेके अर्थि

अधिकको ऐसी (।) संदृष्टि कीएं गच्छ ऐसा ४/ख ताका भाग दीएं मध्य धन ऐसा व । १२ । ० / ओ । प । ४ ख बहुरि याकों एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं उभय द्रव्यका एक विशेष ऐसा व । १२ । ० / ओ । प । ४ । १६ – ४ / ख ख २ इसकों आदि उत्तर स्थापि अर प्रथम द्वितीय समयकृत कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा ४/ख स्थापि 'पदमेगेण विहीणं' इत्यादि सूत्रकरि एक घाटि गच्छ दोयकरि भाजित ऐसी ४/ख २ याकरि तिस विशेषकों गुणि इसविषैं विशेषमात्र आदि मिलावनेकों आगिला गुणकार दोयकरि भाजित एक ऋण था तहां दोयकरि भाजित दोय मिलाएं एक घाटिकी जायगा एक अधिक होइ। बहुरि याकों तिस गच्छकरि गुणना। ऐसैं कीएं उभय द्रव्यविषैं विशेष द्रव्य ऐसा— व । १२ । ० । ४ । ४ / ओ । प । ४ । १६ – ४ / ख २ । ख / ख १० बहुरि कृष्टिविषै देने योग्य द्रव्य ऐसा था व । १२ । ० / ओ । प ताकों आगैं

पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेकौं ऐसी ≡ संदृष्टि कीएं ऐसा– व । १२ । ३ ≡ हो है। याकौं (नीचे: ओ, प, ३)

उभय कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४ (नीचे: ख) ताका भाग दीएं एक खण्डका द्रव्य ऐसा हो है—

व । १२ । ३ ≡ (नीचे: ओ, प । ४, ३, ख) याकौं तिस गच्छहीकरि गुणें मध्यधन खंडका द्रव्य ऐसा हो है—

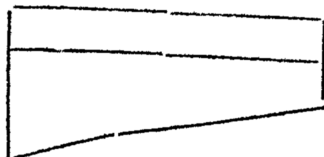
व । १२ । ३ ≡ । ४ (नीचे: ओ । प । ४, ३, ख, ख) बहुरि इहां अधस्तन शीर्षादिकका द्रव्यविषै गुणकार भागहारका

यथासंभव अपवर्तन कीएं ते च्यारयो द्रव्य ऐसे हो हैं—

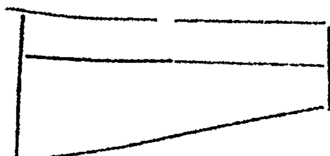
अधस्तन शीर्ष	। व १२ ओ प । ख । ख । ४ ३
उभय विशेष	। १— व । १२ । ३ ओ । प । ख । ख । ४ ३
अधस्तन कृष्टि	। व १२ ओ । प । ओ । ३ ३
मध्यम खंड	। व १२ ३ ≡ ओ प ३

इहां अधस्तन शीर्ष द्रव्यविषै ऐसा ४ तौ गुणकार भागहारविषैं समान जानि अप-
वर्तन कीया अर भागहारविषै दोगुणहानि अंक संदृष्टि अपेक्षा ऐसा १६ लिख्या था तहां
अर्थ संदृष्टि अपेक्षा ऐसा ख । ख २ करि गुणकारका ऐसा ४ याकौं दोयका भागहार था

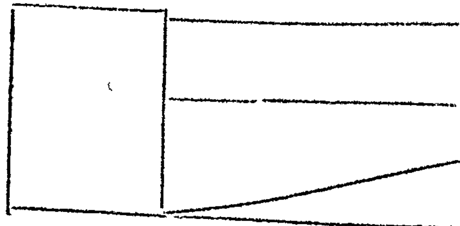
ताकरि गुणैं असा ख । ख । ४ भागहार भया । असा गुणकार वा दोगुणहानिविषैं घटाया ऋण तिनकौं किंचित् जानि न गिणि अपवर्तन कीया है । असैं ही यथासंभव औरनिविषैं अपवर्तन जानना । असैं इनिकौं जानि जिन जिन कृष्टिनिविषैं जो जो द्रव्य दीया तिनकी संदृष्टि जाननी । तहां समपट्टिकाकौं चयसंयुक्त कीएं पूर्वकृष्टि क्रम हीन द्रव्य लीएं असी—



थी तिनविषैं अधस्तन शीर्ष द्रव्य दीएं समान प्रमाण लीएं सर्वकृष्टिनिका प्रमाण समपट्टिकारूप असा हो है—



बहुरि याके नीचैं अधस्तन कृष्टि द्रव्यकरि नवीन करी कृष्टि याहीके समान प्रमाण लीएं स्थापैं असी कृष्टि हो है—



वहुरि कृष्टि द्रव्य करि न करी कृष्टि याविषैं मध्यम खंड द्रव्य मिलाएं समानरूप समपट्टिकारूप ऐसी—

याविषै उभय द्रव्य विशेष मिलाएं एक एक विशेष घटता क्रम लीएं सर्व पूर्व अपूर्वकृष्टिनिका क्रम हीनरूप एक गोपुच्छाकार ऐसी रचना हो है—

अपूर्वकृष्टि

पूर्वकृष्टि

अधस्तन शीर्ष

मध्यमखंड द्रव्य

उभय विशेष द्रव्य

इहां एक समय उदय आवने योग्य परमाणूनिकी अनुभाग अपेक्षा रचना है तातैं आडी लीककरि सहनानी करी है। तहां प्रथम कृष्टिविषैं एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्य ऐसा—

व। १२। १६ १ एक मध्यम खंडका द्रव्य ऐसा व। १२। ३ ≡ पूर्व अपूर्व कृष्टिका
ओ। प। ४। १६—४ ओ प ४
३ ख ख २ ३ ख

प्रमाणकरि गुणित उभय द्रव्य विशेष ऐसैं व । १२ । ३ ४ इन तीन द्रव्यकौं दीजिए है।
ओ । प । ४ । १६ — ४
३ ख ख २

द्वितीयादि कृष्टिनिविषैं एक एक उभय विशेष घटता द्रव्य नवीन करी कृष्टिनिका अंत पर्यंत दीजिए है। बहुरि पूर्व कृष्टिनिकी आदि कृष्टिविषैं एक मध्यम खंड अर पूर्व कृष्टि गुणित उभय विशेष द्रव्य दीजिए है। बहुरि द्वितीय कृष्टिविषैं एक अधस्तन शीर्ष विशेष

ऐसा व १२ १ एक मध्यम खंड एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण गुणित उभय द्रव्य
ओ । प । ४ । १६ — ४
३ ख ख

विशेष ऐसैं— व । १२ । ३ ४ दीजिए है। तृतीयादि कृष्टिनिविषैं एक एक अधस्तन शीर्ष
ओ । प । १६ — ४
३ ख ख २

बंधता एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता दीजिए है। ऐसैं दीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका एक गोपुच्छ हो है। तहां प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका द्रव्यविषैं अधस्तन शीर्ष विशेष का द्रव्य अर अधस्तन कृष्टिका द्रव्य दीएं पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका समपट्टिका द्रव्य पूर्व जघन्य कृष्टिकौं पूर्व अपूर्व प्रमाणकरि गुणैं ऐसा व १२ । १६ । ४ बहुरि उभय द्रव्य विशेषका द्रव्य
ओ । प । ४ । १६ — ४
३ ख ख

ऐसा व । १२ । ३ । ४ । ४ याविषैं असंख्यातका गुणकारके ऊपरि जो अधिक था ताका
ओ । प । ४ । १६ — ४
३ ख । ख २

प्रमाण ऐसा व । १२ । ४ । ४ ग्रह्या सो यहु सर्वकृष्टि द्रव्य संबंधी चय धन भया । तहां एक
ओ प । ४ । १६ — ४
३ ख ख । २

चयमात्र द्रव्य ऐसा व १२ याकौं पूर्व अपूर्व कृष्टिकरि गुणैं सर्व कृष्टिनिकी नीचली कृष्टि-
ओ प । ४ । १६—४
३ ख ख २

विषैं दीया द्रव्य ऐसा — व १२ ४ बहुरि द्वितीयादि कृष्टिनिविषैं एक एक चय घटता देइ
ओ प ४ १६— ४
३ ख ख

अंतविषैं एक चयमात्र दीया द्रव्य ऐसा व १२ ऐसैं प्रथम समय संबंधी
ओ । प । ४ । १६—४
३ । ख ख

द्रव्यके उपरि अधस्तन शीर्ष द्रव्य अर अधस्तन कृष्टि द्रव्य अर उभय विशेष द्रव्य
असंख्यातके ऊपरि एकका गुणकार था ताका द्रव्य ऐसैं तीन द्रव्य मिलावनेकौं तीन

उभी लीक रूप ऐसी (|||) संदृष्टि कीएं ऐसा भया व । १२ । १ ओ प a याकौं पूर्व अपूर्व कृष्टिमात्र अर

एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय ऐसा व । १२ । १ १ ओ । प । ४ । १६–४ a ख ख

याकौं दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम कृष्टिका द्रव्य भया अर इस गुणकारविषें क्रमतें एक एक घटाइ अंतविषें एक घाटि गच्छमात्र घटाएं द्वितीयादि कृष्टिका द्रव्य है तहां रचना ऐसी—

अपूर्वकृष्टि द्रव्य

पूर्वकृष्टि द्रव्य

उभयविशेष द्रव्य

अनन्तवां भाग

प्रथमकृष्टि

व १२ १ । १६ / ओ प ४ १६–४ a ख ख

अन्तकृष्टि

००००० व १२ १ १६–४ ख / ओ प ४ १६–४ a ख ख २

इहां रचनाविषैं लीकनिकी संदृष्टि पूर्ववत् जाननी। इहां मध्यम खंड रचना नाही करी है अर उभय द्रव्य विशेष स्तोक है। नीचैं द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। ऐसैं इहां एक गोपुच्छ भया। बहुरि मध्यम खंड द्रव्यका एक एक खंड समपाट्टिका रूप स्थापना। बहुरि द्वितीय समय संबंधी कृष्टि द्रव्यका विशेषका चय धन रूप द्रव्य सर्व उभय विशेषका द्रव्यविषैं असंख्यातका गुणकार उपरि एक अधिक था ताकौं जुदा कीएं ऐसा— व। १२। ३। ४। १६ (ख ख) ओ। प। ४। १६ — ४ (३ ख ख)

इहां एक चयका द्रव्य ऐसा व। १२। ३ १ — ओ। प। ४। १६ — ४ (३ ख ख। २) याकौं पूर्वापूर्व कृष्टि प्रमाणकरि गुणैं प्रथम कृष्टिविषैं दीया द्रव्य अर एक एक चय घाटि क्रमकरि अंतविषैं एक चयमात्र दीया द्रव्य हो है। ऐसैं इहां द्वितीय समय संबंधी कृष्टि द्रव्य ऐसा व। १२। ३ (ओ प ३) ताविषैं अधस्तन शीर्ष द्रव्य अधस्तन कृष्टि द्रव्य अर उभय द्रव्यका असंख्यातका गुणकारके ऊपरि एक अधिक था ताका द्रव्य इन तीनोंके घटावनेके आर्थि आगें ऐसी ≡ संदृष्टि कीएं ऐसा व। १२। ३ ≡ (आ प ३) याकौं पूर्वापूर्व कृष्टिमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि

हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम कृष्टिका द्रव्य इस गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घटाइ अंतविषैं एक घाटि गच्छमात्र घटावना तहां संदृष्टि ऐसी–

मध्यमखंड

उभयविशेष

प्रथमकृष्टि

व १२ ३ ≡ १६ / १ ८ ० ० ० ० व १२ ३ ≡ १६ – ४ / १ ८ ख

ओ प ४ १६ – ४ / ३ ख ख २ ओ प ४ १६ – ४ / ३ ख ख २

इहां मध्यम खंडकी समपट्टिका रूप अर नीचैं उभय विशेषकी क्रमहीन रूप संदृष्टि करी है ऐसैं यहु गोपुच्छ भया। याकौं पूर्व गोपुच्छके ऊपरि स्थापैं क्रमहीन रूप सर्व कृष्टिनिका एक गोपुच्छ हो है। ताकी रचना ऐसी–

असंख्यात गुणकारका उभयविशेष द्रव्य	
मध्यमखंड द्रव्य	
अधस्तनकृष्टि द्रव्य	पूर्वकृष्टि समपट्टिका द्रव्य
	पूर्वचय / अधस्तनशीर्ष
एक गुणकारका उभयविशेष द्रव्य	

प्रथमकृष्टि ... अंतकृष्टि

व १२ ३ १६ ० ० ० ० ० ० ० व १२ ३ १६– ४ ख

ओ प ४ १६– ४ ३ ख ख २ ... ओ प ख १६– ४ ३ ख २

इहां पहली रचनाके उपरि पाछिली रचना लिखि क्रम हीनरूप एक गोपुच्छ कीया है। तहां द्वितीय समय संबंधी कृष्टि द्रव्यका असंख्यातका गुणकारके ऊपरि पाहिला समय संबंधी द्रव्य मिलावनेकौं एक अधिककरि ताकौं पूर्वापूर्वकृष्टिमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकारिहीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ। ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथमकृष्टि का अर इस गुणकारविषैं एक एक क्रमतैं घाटि होइ एक घाटि गच्छमात्र घाटि भएं अंत कृष्टिका द्रव्य हो है ताकी संदृष्टि नीचैं लिखी है। बहुरि ऐसैं ही कृष्टि करण कालका तृती-

यादि समयनिविषैं यथासंभव संदृष्टि जाननी। बहुरि अन्य क्रिया होइ अनिवृत्ति करण का काल पूर्ण भएं सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषैं कृष्टिनिका द्रव्य अैसा—

| १—
स ३ । १२ — ३ । २ १
७ । ८ । ओ । प
३

इहां लोभके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका अर पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं कृष्टि करण कालका प्रथम समयका द्रव्य होइ। ताकौं एक घाटि अंतर्मुहूर्तके समयमात्र वार असंख्यातकरि गुणैं ताका अंति समयका द्रव्य हो है। ताविषैं पूर्व समयनिका द्रव्य मिलावनेकौं उपरि अधिककी संदृष्टि कीएं यहु संदृष्टि भई है। याकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग अैसा

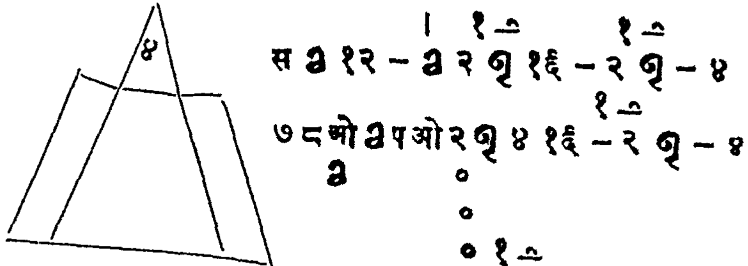
| | १—
स । ३ । १२—३ । २ १
७ । ८ । ओ । प । ओ । प
३ ३

ताकौं प्रथमस्थितिविषैं असंख्यात गुणा क्रमकरि देना। तहां याकौं पिच्यासीका भाग देइ एक च्यारि आदि करि गुणैं प्रथमादिनिषेक हो हैं। बहुरि बहुभाग अैसैं

| १— १—
स । ३ । १२ — ३ । २ १ । प
७ । ८ । ओ । प । ओ । प ३
३ ३

याकौं द्वितीय स्थितिविषैं हीन क्रमकरि देना। तहां याकी स्थिति अंतर्मुहूर्तमात्र तामैं अतिस्थापनावली घटाएं गच्छ अैसा २ ७ — ४ सो तिस द्रव्यविषैं एक हीनकौं न गिणि पल्यके असंख्यातवां भागका अपवर्तनकरि ताकौं गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ। ताकौं दोगुणहा-

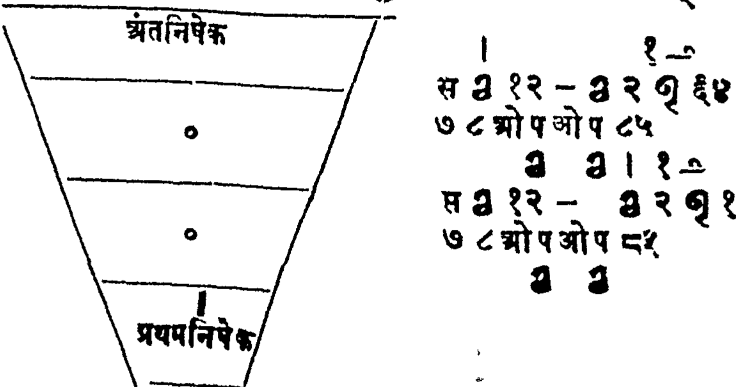
निकरि गुणैं प्रथम निषेक अर गुणकारविषैं क्रमतैं एक आदि घटाएं अंतविषैं एक घाटि गच्छमात्र घटाएं अन्य निषेकानिविषैं दीया द्रव्य हो है। तहां संदृष्टिविषैं नीचैं अधिक क्रम लीएं प्रथम स्थितिकी रचनाकरि ताके उपरि अंतरायामकी शून्यरूप संदृष्टिकरि ताके उपरि द्वितीय स्थितिकी वा तहां अंतस्थापनावलीकी संदृष्टि करी है। बहुरि आगैं प्रथम द्वितीय स्थितिके निषेकानिविषैं दीया द्रव्यकी संदृष्टि जाननी।



| १ -   १ -
स ə १२ - ə २ ∅ १६ - २ ∅ - ४

१ -
७ ८ ओ ə प ओ २ ∅ ४ १६ - २ ∅ - ४
ə

०
०
० १ -
स ə १२ - ə २ ∅ १६   १ -
७ ८ ओ प ओ २ ∅ - ४ १६ - २ ∅ - ४
ə   २



| १ -
स ə १२ - ə २ ∅ ६४
७ ८ ओ प ओ प ८५
ə ə | १ -
स ə १२ - ə २ ∅ १
७ ८ ओ प ओ प ८१
ə ə

बहुरि कृष्टि करणका प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाणविषैं अन्य समयनिविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाण मिलावनके अर्थि उपरि अधिककी ऐसी (।) संदृष्टि कीएं सर्वकृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग ऐसा
ख

। १ ^
४ प उदयरूप कृष्टिनिका प्रमाण है। अवशेष एक भाग ऐसा ४ याकौं पल्यका असंख्या-
ख a
प
a

।
ख प
a

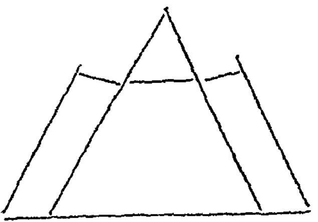
१ ^
।
तवां भागका भाग देइ बहु भाग ऐसे ४ प तिनिके आधे प्रमाण लीएं तौ कृष्टि करण
a
ख प प
a a

कालका अंत समयविषैं कीनी जे आदिकी जघन्यादि कृष्टि ते अनुदयरूप हैं। बहुरि

। १ ^ ।
आधे ऐसे ४ प याविषैं रह्या एक भाग ऐसा ४ मिलावनेकौं अगिला गुणकारविषैं
a
ख प प २
a a
ख प । प
a a

दोयकरि भाजित एक घाटि था तहां दोयकरि भाजित एक अधिक कीएं ऐसा ४ प/२ । १ – ख प प १/२ २

प्रमाण लीएं कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषैं कीनी अंतकी उत्कृष्ट पर्यंत कृष्टितैं अनुदयरूप हो है। इहां पल्यका असंख्यातवां भागकी सहनानी पांचका अंक कीएं जो एक भाग ऐसा ४ । ख प/२ । था ताकौं पांचका भाग देइ बहुभागके आधे ऐसे ४ । २ ख प । ५/२ अर इनिविषैं एक अवशेष भाग मिलाएं ऐसैं हो है ४ । ३ ख प । ५/२ ऐसैं सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषैं उदय अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण जानना। इहां रचना ऐसी—



अन्यनिषेक	अनुदय	उदय	अनुदय
प्रथमनिषेक	$\frac{४ २}{ख प ५ २}$	$\frac{१ १}{४ प ख २}$	$\frac{४ ३}{ख प ५ २}$

प / २

इहां प्रथम स्थिति अंतरायाम द्वितीय स्थितिका पूर्ववत् रचनाकरि प्रथम स्थितिका प्रथम समय संबंधी निषेकानिकी कृष्टिनिविषैं आदिकी जघन्यादि अनुदय कृष्टिका अर उभय आवने योग्य वीचिकी कृष्टिनिका अर अंतकी उत्कृष्ट पर्यंत अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण लिखा है। बहुरि सूक्ष्मसांपरायका द्वितीय समयविषैं पूर्वोक्त अंतकी अनुदय कृष्टिनिकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टि ऐसी $\frac{४ । ३}{ख । प । ५ । प / २ \; २}$ नवीन अनुदयरूप हो हैं। ते ए कृष्टि प्रथम समयकी उदय कृष्टिनिविषैं अंतकी कृष्टि जानना। ब-

हुरि पूर्वोक्त आदिकी अनुदय कृष्टिनिका पल्यका असंख्यातवां भागमात्र कृष्टि ऐसी—

४ । २ (व । प । ५ । प / ३ ३) नवीन उदय रूप कृष्टि हो हैं। ते ए कृष्टि प्रथम समयकी अनुदय कृष्टिनिविषैं अंत

की कृष्टि जाननी। बहुरि इहां नवीन अनुदय कृष्टिनिविषैं नवीन उदय कृष्टिनिका प्र-

माण घटाएं ऐसा ४ । १ (व । प । ५ । प / ३ ३) विशेषकरि घटता द्वितीय समयविषैं उदय कृष्टिनिका प्रमाण

हो है। ऐसैं ही तृतीयादि समयनिविषैं विधान जानना, तिनकी रचना कथन अनुसार ऐसी—

x x x			
अंतसमय	[illegible]	[illegible]	[illegible]
०	अनु	[illegible]	अनु
द्वितीयसमय	अनुदय	अ६५	अनुदय
प्रथमसमय	अनुदय	अ४५	अनुदय

इहां पूर्वोक्त प्रकार प्रथम स्थित्यादिककी संदृष्टिकरि तहां समय समय क्रमतैं आदिकै अनुदय कृष्टि घटती वीचिकी उदय कृष्टि विशेष हीन अंतकी अनुदय कृष्टि बधती अंतविषै

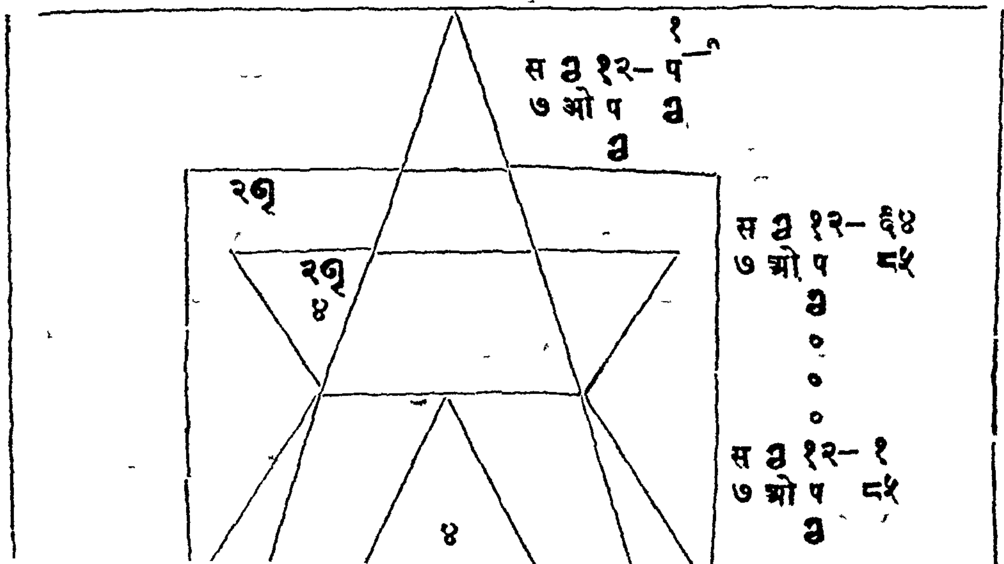
वा आदि विषैं भई तिनकी संदृष्टि करी है। तिनका प्रमाणकी संदृष्टि तहां यथा संभव लिखनी बहुरि सर्व कृष्टिनिका द्रव्य पूर्वोक्त प्रकार ऐसा स ३ । १२ – ३ २ ७ याकौं पल्यका ७ । ८ । ओ । प ३ असंख्यातवां भागका भाग दीएं प्रथम फालि, याकौं क्रमतैं असंख्यातकरि द्वितीयादि फालि होइ। द्विचरम फालि पर्यंत सर्व फालिनिका द्रव्य घटाएं तिस सर्व द्रव्यकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र अंत फालिका द्रव्य हो है। तिनकौं सूक्ष्मसांपरायका प्रथमादि समयविषैं उपशमावै है। तिनकी संदृष्टि रूप रचना ऐसी–

स । ३ । १२ – ३ । ८ ७ । प १ । ८ । क्षि । प ३ १ २ १ २	० ० ०	स । ३ । १२ – । ३ । ८ ७ । ३ १ । ८ । क्षि । प । प ३ ३ १ २	स । ३ । १२ – ३ । ८ ७ १ । ८ । क्षि । प । प ३ ३ १ २

बहुरि उपशांत कषायका प्रथमादि समयनिविषैं उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणि आयाम है। तहां प्रथम समयविषैं एक कर्मका द्रव्य ऐसा स ३ । १२–ताकौं अपकर्षण भाग
७

हारका भाग देइ एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भाग ऐसा— स। a। १२ – ७। ओ। प a ताकौं गुणस्थान काल अंतर्मुहूर्त ताका संख्यातवां भाग ऐसा २ ११ ताविषैं

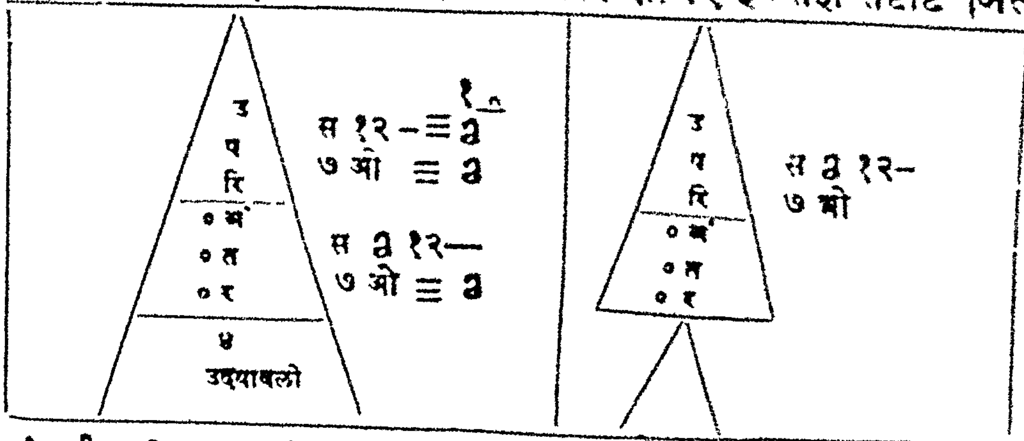
गुणश्रेणि विधानकरि द्रव्य देना। बहुरि बहुभाग ऐसे स। a। १२ – प (१ –) ७। ८। ओ। प a a उपरितन स्थिति विषैं विशेष घटता क्रमकरि देने तहां संदृष्टि ऐसी—



इहां पूर्वै उदयावली गुणश्रेणि थी तिनकी संदृष्टि नीचैं क्रमहीन रूप उपरि क्रम अधिकरूपकरि इहां भई, उदयादि गुणश्रेणिकी नीचैंहीतैं लगाय क्रम अधिक रूप संदृष्टि करी अर ताके उपरि उपरितन स्थितिकी संदृष्टि करी है अर तहां दीया द्रव्यको संदृष्टि आगैं करी है। बहुरि प्रथम समयविषैं कीनी गुणश्रेणिका अंत समयविषैं उत्कृष्ट प्रदेशोदय हो है। तहां प्रथम समय कृत गुणश्रेणीका अंत निषेक ऐसा स। ३। १२ – ६४ द्विती-
७। ओ। प। ८५
३
य समयकृत गुणश्रेणिका द्विचरम निषेक ऐसा स। ३। १२ – १६ ऐसैं क्रमतैं मिलैं गुण
७। ओ। प। ८५
३
श्रेणि मात्र द्रव्य ऐसा स। ३। १२ – याविषैं इस समय संबंधी गोपुच्छ द्रव्य ऐसा–
७। ओ। प
३
१२
स। ३। १२ – ७। १६ – ७ साधिक कीएं इहां उत्कृष्ट प्रदेशोदय हो है। ऐसैं उपशम
३। ७। ओ। १२। १६। ४
श्रेणी चढनेका विधान विषैं संदृष्टि कही। अब उतरनेका विधानविषैं संदृष्टि कहिए है–

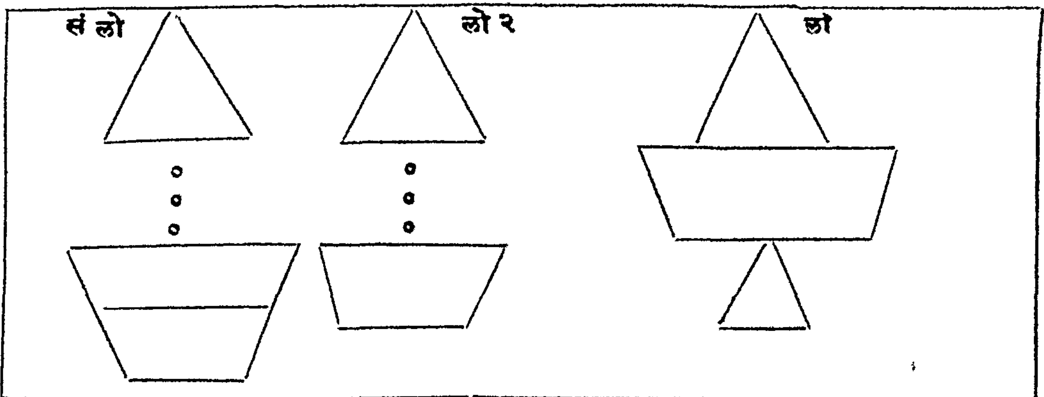
तहां भव क्षयतैं उपशांत कषायतैं पड्या देव असंयमी होइ। ताके प्रथम समयविषैं उदयरूप मोह प्रकृतिनिके कर्मका द्रव्य ऐसा स। ३ १२–ताका अपकर्षणकरि ताकौं असंख्यात
७
लोकका भाग देइ एक भागकौं उदयावलीविषैं देइ बहुभाग उदयावलीतैं बाह्य जो अंतरायाम अर द्वितीय स्थिति विषैं हीन क्रमकरि दीजिए है। बहुरि उदय रहित मोह प्रकृतिका

द्रव्य ऐसा स । ३ । १२ – ताकौं अपकर्षण करि उदयावलीतैं बाह्य निषेक अर अंतरायाम अर द्वितीय स्थितिविषैं पूर्वोक्त प्रकार हीन क्रमकरि दीजिए है । तहां संदृष्टि ऐसी—



इहां सर्वत्र हीन क्रमकरि द्रव्य दीया है । तातैं हीन क्रमरूप संदृष्टि करी । तहां उदयावली आदिका विभागके अर्थि बीचिमें लीककी संदृष्टि करी है । बहुरि अद्धाक्षय निमित्ततैं उपशांत कषायस्यों पडि सूक्ष्मसांपरायविषैं आवै तहां प्रथम समयविषैं उदयवान संज्वलन लोभका द्रव्यकौं अपकर्षणकरि ताका पल्यकौं असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भागकौं उदयादि गुणश्रेणि आयामविषैं गुणकार क्रमकरि देइ ताके उपरि अंतरायामविषैं न देइ ताके उपरि तिनके बहुभागानिकौं द्वितीय स्थितिविषैं विशेष हीन क्रमकरि दीजिए है । बहुरि उदय रहित अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान लोभका द्रव्य अपकर्षणकरि पूर्वोक्त प्रकार उदयावली बाह्य गुणश्रेणि आयामविषैं देना । अंतरायाम विषैं न देना। उपरितन स्थितिविषैं

देना। बहुरि ज्ञानावरणादि छह कर्मनिका द्रव्य अपकर्षण करि उदयावलीविषैं हीन क्रमकरि गुणश्रेणि आयामविषैं गुणकार क्रमकरि उपरितन स्थितिविषैं हीन क्रमकरि देना। ताकी संदृष्टि रचना ऐसी—



इहां दीया द्रव्यकी संदृष्टि यथा संभव जानि लेनी। बहुरि सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषैं सर्व कृष्टि ऐसी ४ (।/।२-) ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभागमात्र ऐसी ४ प (ख/२) उदयकृष्टि है। बहुरि एक भागकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पांचका भाग देइ दोय (ख प/२) भागमात्र आदि कृष्टिविषैं अनुदयरूप है। तीन भागमात्र अंत कृष्टिनिविषैं अनुदयरूप हैं ते ऐसी

४।२ / व।प।५ a ४।३ / व।प।५ a बहुरि द्वितीय समयविषैं आदि कृष्टिनिकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र उदय कृष्टिनिविषैं आदिकी नवीन कृष्टि अनुदयकृष्टिरूप हो है। बहुरि अंतकी अनुदय कृष्टिनिकौं तैसैं ही भाग दीएं एक भागमात्र अंतकी अनुदय कृष्टिनिविषैं नवीन कृष्टि उदयरूप हो हैं। इहां पूर्व उदय कृष्टिनिविषैं घटी कृष्टि ऐसी ४।२ / व।प।५।प a a अर बंधी कृष्टि ऐसी ४।३ / व।प।५।प a a बंधीमैं घटाएं इतनी ४।१ / व।प।५।प a a इहां पूर्व उदय कृष्टितैं अधिक इहां उदय कृष्टि जाननी। ऐसैं ही तृतीयादि समयनिविषैं क्रम जानना। तहां संदृष्टि रचना ऐसी—

आदिकी अनुदयकृष्टि	मध्यकी उदयकृष्टि	अन्तकी अनुदयकृष्टि

इहां आदि अनुदयकृष्टि अधिक क्रमरूप मध्य उदयकृष्टि विशेष अधिक रूप अंत

अनुदयकृष्टि हीन कूम रूप जाननी। बहुरि अनिवृत्ति करण लोभ वेदक कालादिविषैं गुणश्रेणि आदिकी सुगमसंदृष्टि है। बहुरि क्रोधवेदक कालका प्रथमसमयविषैं क्रोधका द्रव्य ऐसा स ƨ।१२–
७।८
ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसा स ƨ।१२– याकौं पल्यका असंख्यातवां
७।८।ओ
भागका भाग दीएं एक भाग ऐसा स।ƨ।१२– उदयादि गुणश्रेणि आयामविषैं गुणकार
७।८।ओ।प
ƨ
कूमकरि देना। तहां याकौं अंक संदृष्टिकरि पिच्यासीका भाग देइ एक आदिकरि गुणैं प्रथमादि निषेक हो हैं। बहुरि वहुभागनिविषैं केता इक द्रव्य देइ अंतरायामकौं पूरै है। तहां क्रोध द्रव्यकौं साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं द्वितीयादि स्थितिके प्रथम निषेकका द्रव्य ऐसा स।ƨ।१२– याकौं अंतरायामका गच्छ ऐसा २ १ करि गुणैं समपाट्टिका
७।८।१२
धन ऐसा स।ƨ।१२–।२ १ बहुरि तिस प्रथम निषेकका द्रव्यकौं दोगुणहानिका भाग
७।८।१२
दीएं चय होइ ताकौं दोगुणहानि कीएं तिसतैं नीचली गुणहानिका चय ऐसा स।ƨ।१२–२
७।८।१२।१६
याकौं एक अधिक गच्छकरि अर गच्छका आधाकरि गुणैं उत्तर धन ऐसा–
स।ƨ।१२–२।२ १।१ १ मिलावनेकौं समपाट्टिका धन उपरि साधिककी संदृष्टि ऐसी
७।८।१२।१६ २
१२

(।) कीएं अंतरायामविषैं दीया द्रव्य ऐसा स । a । १२ – २ १ याकौं गच्छ ऐसा २ १
७ । ८ । १२

ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेक अर तिस गुणकारविषैं एक एक क्रमतैं घटाइ अंतविषैं एक घाटि गच्छकौं घटाए अन्य निषेक हो है । बहुरि तिन बहुभागनिविषैं इतना द्रव्य घटावनेकौं आगैं ऐसी (—) संदृष्टि कीएं अवशेष उपरितन स्थितिविषैं दीया द्रव्य ऐसा—

स । a । १२ – प – इहां गुणकारका हीनपनाकौं न गिणि पल्यका असंख्यातवां भागका
७ । ८ । ओ । प a
a

अपवर्तन कीएं ऐसा स । a । १२ – याकौ साधिक ड्योढ गुणहानिका अर दोगुणहानिका
७ । ८ । ओ

भाग दीएं चय होइ ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेक अर याकौं आधा अन्योन्याभ्यस्तराशि ऐसा प का भाग दीएं अर तिस दोगुणहानिका गुणकार-
a २

विषैं एक घाटि गुणहानि आयाम ऐसा— ८ घटाएं अंत निषेकका द्रव्य हो है तहां संदृष्टि रचना ऐसी—

४

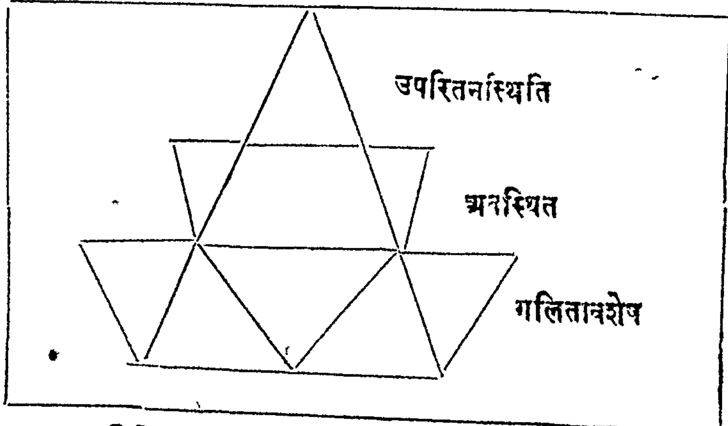
स ꣃ १२- १६- ८ १
७ ८ ओ १६ प १६
० ꣃ २
०
स ꣃ १२- १६
।
७ ८ ओ १२ १६
।
स ꣃ १२- २७ १६
७ ८ २७ १६- २७ १
० २
० ।
स ꣃ १२- २७ १६- २७ १
७ ८ २७ १६- २७ १
२

०
०
०
०

स ꣃ १२- ६४
७ ८ ओ प ८५
० ꣃ
०
स ꣃ १२- १
७ ८ ओ प ८५
ꣃ

इहां नीचैं गुणश्रेणिके वीचि अंतरायामका उपरितन स्थितिकी अंतविषैं अतिस्थाप-

नावलीकी संदृष्टिकरि आगें दीए द्रव्यनिकी संदृष्टि करी है । बहुरि संज्वलन मानादिक तीनका द्रव्य असा– स । ∂ । १२ – ३ ७ । ८ याविषें अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानका द्रव्य असा– स । ∂ । १२ – ८ ७ । ख । १७ मिलावनेकौं साधिककी संदृष्टि कीएं असा, स । ∂ । १२ — ३ ७ । ८ याकौं अपकर्षणकरि उदयावली वाह्य गुणश्रेणि आयामविषें अर अंतरायामविषें अर उपरितन स्थितिविषें दीया द्रव्य पूर्वोक्त विधान जानि संदृष्टि जाननी । बहुरि स्थिति बंधादिकी संदृष्टि सुगम है । तहां संख्यातकी सहनानीं पांचका अंक इत्यादि यथासंभव जानि लेना बहुरि उतरनेवाले सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषें प्रारंभी गलितावशेष गुणश्रेणिका आयामतें अधःकरणका प्रथम समयविषें आरंभी अवस्थित गुणश्रेणि आयाम संख्यात गुणी है तहां संदृष्टि असी–



इहां क्रम हीन रूप निषेकनिकी संदृष्टिकरि तहां स्तोक प्रमाण लीएं गलितावशेष अर

बहुत प्रमाण लीएं अवस्थित गुणश्रेणि आयामकी संदृष्टि अधिक क्रमरूप करी है । ऐसैं उपशम श्रेणिके उतरनेका विधानकी संदृष्टि कही।

बहुरि उपशम श्रेणि चढनेवालोंके क्रमतैं नपुंसकवेद स्त्रीवेद सप्त नोकषाय तीन क्रोध तीन मान तीन माया तीन लोभ एक सूक्ष्म लोभका उपशमावना क्रमतैं हो है । विशेष इतना — नपुंसक वेद सहित चढनेवालेकैं स्त्रीवेदका उपशमन कालविषैं नपुंसक वेदका भी उपशमावना हो है। तहां क्रोध सहित श्रेणि चढ्याकैं क्रोध पर्यंतकी प्रथम स्थिति पहलैं होइ। उपरि मानादिककी जुदी जुदी प्रथम स्थिति हो है। बहुरि मान माया लोभ सहित चढनेवालोंके क्रमतैं मान माया लोभ पर्यंतनिकी प्रथम स्थिति पहलैं होइ। उपरि अवशेषनिकी जुदी जुदी प्रथम स्थिति हो है। तहां प्रथम स्थितिविषैं अधिक क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। तातैं तिनकी अधिक क्रम लीएं ऐसी संदृष्टि रचना हो है—

			लो १	लो १	लो १	लो १
			लो ३	लो ३	लो ३	लो ३
			या ३	या ३	या ३	या ३
			मा ३	मा ३	मा ३	मा ३
			क्रो ३	क्रो ३	क्रो ३	क्रो ३
		नो ७	नो ७	नो ७	नो ७	नो ७
न स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री
न	न	न	न	न	न	न
न	स्त्री	पुं	क्रोधोदय	मानोदय	मायोदय	लोभोदय

बहुरि उपशम श्रेणिका चढनो वा पडनोका कालका अल्प बहुत्वविषैं संदृष्टि पूर्वोक्त प्रकार वा एकवार आदि अधिककी उपरि एक दोय आदिवार ऊभी लीकनैं आदि देकरि कथनके अनुसारि ऐसी संदृष्टि जाननी—

पृष्ठ १०२ (क) में देखो

ऐसैं उपशम चारित्राधिकारविषैं संदृष्टि जाननी।

इति श्री लब्धिसारटीका अनुसारि उपशम श्रेणिपर्यंत
व्याख्यानकी संदृष्टि संपूर्ण भई।

अथ क्षपणासारका अनुसारि लीएं क्षपक श्रेणिका व्याख्यानरूप लब्धिसारके सूत्र-निका अर्थकी संदृष्टि लिखिए है तहां अपूर्व करणविषैं गुणश्रेणि गुणसंक्रमण स्थितिकांडक अनुभाग कांडककी संदृष्टि उपशम श्रेणिवत् इहां अर विशेष हैं तिनकी यथा संभव संदृष्टि जाननी। इहां सत्व द्रव्य विषैं गुणश्रेणि आदि वा बंध द्रव्यकी संदृष्टि ऐसी—

पृष्ठ १०३ (क) में देखो

इहां प्रकृति अष्ट आदि क्रमतैं जैसैं क्षपै हैं तैसैं क्रमतैं तिनके सत्व रूप निषेकानिकी क्रम हीन संदृष्टिकरि तिनविषैं नीचैं उदयावलीकौं हीन क्रमरूप वीचि गुणश्रेणि आयामकी अधिक क्रमरूप उपरि उपरितन स्थितिकी हीनक्रमरूप रचना जाननी। बहुरि पुरुषवेद अर क्रोध की प्रथमस्थिति स्थापी ताकी जुदी हीन क्रमरूप संदृष्टि दिखाइए है। बहुरि इस रचनाके वीचि वीचि पुरुषवेद अर क्रोधादिकका बंध द्रव्यकी जुदी संदृष्टि ऐसी ^ दिखाई है। इहां नीचैं आवाधा उपरि निषेकानिकी संदृष्टि जाननी। बहुरि ताके आगैं अवशेष कर्मानिकी क्रमहीन रूप सत्व निषेक रचनाविषैं नीचैं उदयावली वीचि गुणश्रेणि उपरि उपरितन स्थितिकी रचना जाननी। बहुरि ताके आगैं अवशेष कर्मानिका बंध द्रव्यकी संदृष्टि है। तहां नीचैं आवाधा ऊपरि निषेकानिकी रचना जाननी। बहुरि अनिवृत्ति करणविषैं स्थिति बंधापसरणादिककी संदृष्टि सुगम है। बहुरि अष्ट कषाय सोलह प्रकृतिकी क्षपणा अंश देशघाति करण अंतर करण विषैं संदृष्टि पूर्वोक्त प्रकार वा विशेष है। ताकी संभवती संदृष्टि जाननी। बहुरि नपुंसक वेदका संक्रमण कालविषैं पूर्वोक्त प्रकार नपुंसक वेदका सत्व द्रव्य ऐसा स। a। १२ – ४२ / ७। १०। ४८ ताकौं गुण संक्रमका भाग दीएं पुरुषवेदविषैं संक्रमणरूप भया द्रव्यका प्रमाण हो है। अर

पूर्वोक्त प्रकार पुरुषवेदका सत्व द्रव्य ऐसा स । ३ । १२ – २ / ७ । १० । ४८ ताकौं अपकर्षण भागहार अर पल्यका असंख्यातवां भाग अर अंक संदृष्टि अपेक्षा पिच्यासीका भाग दीएं गुणश्रेणिका प्रथम निषेक होइ । तिसविषैं पूर्व सत्व निषेक साधिक कीएं पुरुषवेदका उदय द्रव्य हो है । बहुरि समय प्रबद्ध ऐसा स ३ ताकौं सातका भाग दीएं मोहका अर ताकौं दोयका भाग दीएं पुरुषवेदका बंध द्रव्य हो है । इनकी संदृष्टि ऐसी—

सक्रमण नपुसक द्रव्य	स । ३ । १२ – । ४२ / ७ । १० । ४८ । गु
उदयपुवेव द्रव्य	स । ३ । १२ – । २ / ७ । १० । ४८ । ओ । प ८५ ३
बधपुंवेद द्रव्य	स । ३ / ७ । २

बहुरि अश्वकर्ण विषैं अंक संदृष्टिकरि जैसैं व्याख्यानविषैं कथन कीया तैसैं इहां अर्थ संदृष्टिकरि पूर्व अनुभाग सत्व एक गुणहानि संबंधी स्पर्धक शलाका (९) कौं नानागुणहानिकरि गुणें मानके स्पर्धक ऐसे (९ । ना) याकौं अनंतका भाग देइ क्रमतैं एक दोय तीन अधिक अनंत करि गुणें क्रोध माया लोभके ऐसे ९ । ना । ख[१] । ९ ना ख[२] । ९ ना । ख[३] । बहुरि इहां क्रोधादिकका गुणकार उपरि एक दोय तीन अधिक थे तिनकौं जुदे कीएं ते ऐसे—

९ । ना । ९ ना २ । ९ ना ३ । मानकौ गुणकार विषैं अधिक है नहीं तहां शून्य लिखनी

बहुरि क्रोधका जुदा कीया अधिकका प्रमाण अर अधिक जुदेकरि अपवर्तन कीएं क्रोधके
१ ८
ऐसे ९ । ना स्पर्धकानिकौं अनंतका भाग देइ बहुभाग ऐसे ९ । ना । ख इनिकौं मिलाएं
ख
क्रोध कांडकका प्रमाण हो है। अवशेष एक भागमात्र ऐसा ९ । ना अवशेष सत्व क्रोधका रहै
ख
है । बहुरि तिस क्रोध संबंधी बहुभागानिका प्रमाण अर अवशेष एक भागका अनंत बहुभा-
१ ८
ग ऐसा ९ । ना । ख ख मिलाएं मान कांडकका प्रमाण हो है। अवशेष एक भागमात्र ऐसा—
ख ख
९ । ना अवशेष सत्व रहै है । बहुरि जुदा कीया मायाके अधिकका प्रमाण अर क्रोध संबंधी
ख ख
मान संबंधी कहे थे बहुभाग तिनिका प्रमाण अर मान संबंधी अवशेष सत्व एक भाग मात्र
१ ८
ताका अनंत बहु भागानिका प्रमाण ऐसा ९ ना ख । मिलाएं मायाकांडकका प्रमाण हो है
ख ख ख
अर अवशेष एक भाग ऐसा ९ । ना अवशेष सत्व रहै है । बहुरि जुदा कीया लोभका
ख ख ख
अधिकका प्रमाण अर क्रोध मान माया संबंधी कहे थे बहुभाग तिनका प्रमाण अर तिस
१ ८
मायाका अवशेष सत्व एक भागमात्र ताका अनंत बहुभागनिका प्रमाण ऐसा ९ । ना । ख
ख । ख । ख । ख

इनि सबनिकौं मिलाएं लोभ कांडकका प्रमाण हो है । अवशेष एक भागमात्र ऐसा ९ । ना / ख । ख । ख । ख अवशेष सत्व रहै है । ऐसैं इहां उपरि जुदे कीएं अधिकनिका प्रमाण लिखि नीचैं अन्य मिलाएं तिनका प्रमाण लिखना । तिनकौं जोडैं कांडक प्रमाण हो है ऐसैं समझना । बहुरि इस कांडक घात भएं पीछैं अश्वकरणविषैं अनंत गुणहानि लीएं क्रोधादिकके स्पर्धक क्रमरूप हो हैं । तिनका प्रमाण नीचै ही नीचै लिखना । ऐसैं कीएं ऐसी संदृष्टि हो है—

क्रो	मा	धा	लो
९ । ना । १ ख	० ०	९ । ना । २ ख	९ । ना । ३ ख
१ — ९ । ना । ख ख	१ — ९ । ना । ख ख	१ — ९ । ना । ख ख	१ — ९ । ना । ख ख
९ । ना ख	१ — ९ । ना । ख ख ख	१ — ९ । ना । ख ख ख	१ — ९ । ना । ख ख ख
	९ । ना ख । ख	१ — ९ । ना । ख ख । ख । ख	१ — ९ । ना । ख ख । ख । ख
		९ । ना ख । ख । ख	१ — ९ । ना । ख ख । ख । ख ख
			९ । ना ख । ख । ख । ख

बहुरि इस अपकर्षण सहित अपूर्व स्पर्धक क्रिया हो है । तहां एक परमाणूविषैं अविभाग प्रतिच्छेदका समूह वर्ग ताकी संदृष्टि ऐसी (व) याकौं वर्गणा वर्गणा प्रति जो चय ताका नाम विशेष है ताकरि गुणैं ऐसा (व। वि) बहुरि एक स्पर्धकविषैं जेती वर्गणा पाइए तिनका नाम वर्गणा शलाका है। ताकी संदृष्टि ऐसी (४) बहुरि एक गुणहानिविषैं स्पर्धकनिका प्रमाण ताका नाम स्पर्धक शलाका ताकी संदृष्टि ऐसी (९) इनि दोऊनिकौं परस्पर गुणैं गुणहानि आयाम होइ ताकी अंक संदृष्टि ऐसी (८) याकौं दोयकरि गुणैं दोगुणहानि की संदृष्टि ऐसी १६ याकरि तिस विशेषकौं गुणैं प्रथम स्पर्धककी ऐसी व वि १६ याकौं दूणा कीएं द्वितीय स्पर्धककी आदि वर्गणाकी ऐसी व वि १६ २ बहुरि तिसहीकौं तिगुणा कीएं तृतीय स्पर्धककी आदि वर्गणाकी संदृष्टि ऐसी व वि १६ ३ ऐसैंही क्रमतैं प्रथम समय विषैं कीएं अपूर्व स्पर्धकानिका प्रमाण स्पर्धक शलाकाकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं हो है सो ऐसा ९ याकरि गुणैं अंत स्पर्धककी आदि वर्गणाकी संदृष्टि ऐसी
ओ ३

व वि । १६ । ९ हो है । ऐसैं ही जानि अन्य कथनकी संदृष्टि यथा संभव जानि लेनी । ब-
ओ ३

हुरि क्रोधके अपूर्व स्पर्धकानिका प्रमाण पूर्वोक्त ऐसा ९ याकौं अनंतका भाग देइ क्रमतैं
ओ ३

एक दोय तीन अधिक करि गुणैं मान माया लोभके अपूर्व स्पर्धकानिका प्रमाण हो है ते ऐसे

१—	२—	३—
९ । ख	९ । ख	९ । ख
ओ ३ ख	ओ ३ ख	ओ ३ ख

बहुरि क्रोध कांडक अनंत प्रमाण ऐसा (ख) यातैं एक दोय तीन अधिक मानादिकका कांडक ऐसा १ । २ । ३ बहुरि पूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनिकौं अनंतका
ख । ख । ख

भाग दीएं अपूर्व स्पर्धककी अंत वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद च्यारयो कषायनिके समान हैं । तिनकी संदृष्टि ऐसी व याकौं अपने अपने अपूर्व स्पर्धकानिके प्रमाणका भाग दीएं आ-
ख

दिवर्गणा हो है । याहीकौं जघन्य वर्गणा कहिए । बहुरि याकौं दोय तीन आदि क्रमतैं एक एक बंधता गुणकार करि गुणैं जहां अपने अपने कांडक प्रमाणका गुणकार होइ तहां च्यारयो कषायनिकी वर्गणानिके समान अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं । बहुरि ताके ऊपरि तैसैं ही एक एक बंधता गुणकार रूप क्रमतैं तिन समान वर्गणानिके अविभाग प्रतिच्छेदनितैं दूणा प्रमाण भएं समान वर्गणा हो है । ऐसैं ही तिनतैं तिगुणा चौगुणा आदि एक घाटि अनंत गुणा पर्यंत प्रमाण होइ । ताके उपरि अंत स्पर्धकविषैं पूर्वोक्त ऐसा व च्यारयो कषाय-
ख

निकी आदि वर्गणानिविषैं समान अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं । तिनकी संदृष्टि ऐसी—

क्रो	मा	माया	लो
व ख ० ०	व ख ० ०	व ख ० ०	व ख ० ०
१ ८ ज ख । ख ० ०	१— १ ८ ज । ख ख ० ०	२— १ ८ ज । ख ख ० ०	३— १ ८ ज ख ख ० ०
ज । ख । २ ० ०	१— ज । ख २ ० ०	२— ज । ख २ ० ०	३— ज । ख २ ० ०
ज । ० ख ० व ख । ९ । ओ ३	१— ज । ख ० व ० १— ख । ६ । ख ओ ३ ख	२— ज । ख ० व ० २— ख ६ ख ओ ३ ख	३— ज । ख ० व ० ३— ख ९ ख ओ ३ ख

तहां मध्य भेदनिकी संदृष्टि विंदी जाननी ।

बहुरि प्रथम वर्गणाकौं अनुभाग संबंधी ड्योढ गुणहानिकरि गुणैं मोहका सत्त्व द्रव्य ऐसा व । १२ याकौं आवलीका असंख्यातवां भागकी सहनानी नवका अंक ताका भाग देइ एक भाग जुदा राखि बहुभागनिके दोय भाग करने । तहां एक भागविषैं जुदा राख्या भाग मिलाएं साधिक आधा द्रव्य कषायनिका ऐसा व १२/२ किंचिदून आधा द्रव्य नोकषाय

निका औसा— व । १२ — हो है । बहुरि कषायनिके द्रव्यविषैं सात्विक चौथा भागमात्र लोभ
२

का द्रव्य है । किंचिदून चौथा भागमात्र मायाका तातैं किंचिदून क्रोधका तातैं किंचिदून मानका द्रव्य है । इहां इस च्यारिका भागहारकौं पूर्व दोयका भागहार करि गुणें आठका भागहार हो है । बहुरि क्रोधका द्रव्यविषैं नोकषायनिका द्रव्य समच्छेदकरि मिलाएं क्रोधका द्रव्य पांच गुणा हो है । तिनकी संदृष्टि औसी— लो माया मा को. बहुरि

व १२ / ८ व १२ / ८ — व १२ / ८ = व १२ / ८ ≡ ५

इहां लोभके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य औसा व १२ / ओ तहां लोभकी पूर्व स्पर्धककी वर्गणाकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं औसा व / ओ औसैं ही दोय घाटि अपकर्षण भागमात्र पूर्व स्पर्धककी वर्गणानिका अपकर्षण कीया द्रव्य औसा व ओ — २ / ओ यामैं आदि वर्गणाका अपकृष्ट द्रव्य मिलावनेकौं दोय घाटिकी जायगा एक घाटि कीएं औसा व । ओ — १ / ओ इतना द्रव्य ग्रहि अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणा निपजाइए है । सो यहु पूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाके समान है । जातैं तहां भी तिस वर्गणाकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भाग ग्रहैं बहुभागमात्र द्रव्य अवशेष रहै है । सो इतना ही यहु है । बहुरि अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण औसा ९ / ओ । ४ अर एक स्पर्धकविषैं वर्गणानिका प्रमाण औसा [४]

इनकौं परस्पर गुणें सर्व अपूर्व स्पर्धकनिकी वर्गणाका प्रमाण ऐसा ९ । ४ भया । इहां स्प-
ओ । ३

र्धक शलाकाकी सहनानी नवका अंक अर वर्गणा शलाकाकी च्यारिका अंक तिनकौं पर-
स्पर गुणें गुणहानि होइ ताकी सहनानी आठका अंक कीएं ऐसी ८ संदृष्टि हो है।
ओ ३

याकरि तिस आदि वर्गणाकौं गुणें समपाट्टिका धन ऐसा व ओ – १ । ८ हो है। बहुरि पूर्व
ओ । ओ । ३

स्पर्धककी आदि वर्गणाकौं दोगुणहानिका भाग दीएं ताका चय होइ । तातैं दूना अपूर्व
स्पर्धकनिकी वर्गणानिविषैं चयका प्रमाण है। तातैं तिस आदि वर्गणाकौं एकगुणहानिकी
सहनानी आठका अंक ताका भाग दीएं इहां चय ऐसा व । ओ – १ याकौं आदि उत्तर
ओ । ८

स्थापि अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाणकौं गच्छ स्थापि जोडैं जो चय धन भया ताकौं मिला-
वनेके अर्थि तिस समपाट्टिका धनकी संदृष्टि उपरि साधिककी संदृष्टि कीएं ऐसा—

व । ओ – १ । ८ बहुरि याके गुणकार भागहारकौं ज्योढकरि गुणैं ऐसा व । १२ । ओ – १
ओ । ओ । ३ ओ । ओ । ३ । २

२

द्रव्यतौ अपूर्व स्पर्धकनिहीविषैं दूना बहुरि लोभका अपकर्षण कीया द्रव्य ऐसा व । १२
८ । ओ

इहां मोहका सर्व द्रव्यकी अपेक्षा आठका भागहार था अर लोभहीकी वर्गणाकौं ड्योढ
गुणहानिकरि गुणैं लोभका द्रव्य होइ। ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसी व १२
आ

संदृष्टि हो है । याविषैं पूर्वोक्त द्रव्य ऐसा व । १२ । ओ – १ घटावनेकौं ऐसा ओ । ३ । ३
ओ । ओ । ३ । ३ २
१

करि समच्छेद कीएं यहु ऐसा व । १२ । ओ । ३ ३ भया । बहुरि याकैं अर तिस घटावने
ओ । ओ । ३ ३ २
२

योग्य द्रव्यकैं अन्य समान जानि ऐसा ओ । ३ । ३ गुणकारविषैं ऐसा ओ – १ घटावनेकी
२

आगैं संदृष्टि कीएं घटाएं पीछैं अवशेष द्रव्यकी संदृष्टि ऐसी व । १२ । ओ । ३ । ३ ओ – १ संदृष्टि
ओ । ओ । ३ । ३ । २
२

हो है । बहुरि अपूर्व स्पर्धक वर्गणा संबंधी एक शलाका अर याका भाग पूर्व स्पर्धक वर्गणा शलाकाकौं देना । तहां गुणहानिकी संदृष्टि आठका अंक ताकौं ड्योढकरि गुणैं पूर्व स्पर्धक वर्गणा शलाका ऐसी ८ । ३ याकौं अपूर्व स्पर्धक वर्गणा शलाका ऐसी ८ का भाग दीएं ऐसा
२ ओ ३

८ । ३ इहां गुणहानिका अपवर्तन कीएं अर भागहारका भागहार ऐसा ओ ताकौं राशिका
– ३
८ । ३
ओ । ३

१—
गुणा कीएं ऐसी ओ । ३ । ३ अपूर्व स्पर्धक संबंधी शलाका भई । यामैं अपूर्व स्पर्धक शलाका
२
१—
एक अधिक कीएं उभय शलाका ऐसी ओ । ३ । ३ याका भाग तिस अवशेष द्रव्यकौं देइ
ओ । ३ २
३
२

अपनी अपनी शलाका करि गुणें पूर्व स्पर्धक संबंधी द्रव्य ऐसा—

$$\frac{व । १२ । ओ । a । \frac{३}{२} - ओ - १}{ओ । ओ । a । \frac{३}{२} । ओ । a । \frac{३}{२}}$$

याविषैं ऐसा ओ । a $\frac{३}{२}$ का अपवर्तन कीएं ऐसा—

$$\frac{व । १२ । ओ । a । \frac{३}{२} - ओ - १}{ओ । ओ । a । \frac{३}{२}}$$

हो है। बहुरि अपूर्व स्पर्धक संबंधी द्रव्य ऐसा—

$$\frac{व । १२ । ओ । a । \frac{३}{२} - ओ - १}{ओ । ओ । a । \frac{३}{२} । ओ । a । \frac{३}{२}}$$

याकौं पूर्वोक्त अपूर्व स्पर्धकविषैं देने योग्य द्रव्यविषैं मिलावना सो पूर्व द्रव्य ऐसा $\frac{व । १२ । ओ - १}{ओ । ओ । a । \frac{३}{२}}$ सो याविषैं गुणकाररूप अपकर्षण भागहारके आगैं एक घाटि था सो दूरिकरि भागहाररूप जो अपकर्षण भागहार था ताका गुणकार ऐसा a । $\frac{३}{२}$ विषैं एक अधिक कीएं ऐसा $\frac{व । १२ । ओ । }{ओ । ओ । a । \frac{३}{२}}$ याविषैं पीछैं मिलावने योग्य द्रव्यका साधिकपना जानना। बहुरि याकौं अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाण ऐसा $\frac{८}{ओ \ a}$ ताका भाग देना तहां गुणकारविषैं ड्योढ गुणहानि ऐसा $\frac{१२}{१५}$ था ताका गुणहानि ऐसा ८ का भागहारकरि

अपवर्तन् कीएं गुणकारविषैं ड्योढ रह्या अर भागहारका भागहार ऐसा–ओ। ८ था ताकौं राशिका गुणकार करना। ऐसैं कीएं मध्य धन ऐसा व। ओ। ओ। ८। ३ भया। याकौं

१— २
ओ। ओ। ८। ३
२

एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ सो ऐसा– व। ओ। ओ ८। ३ याकौं दोगुणहानि ऐसा १६ करि गुणैं। प्रथम वर्गणाविषैं दीया द्रव्य

१— २ १
ओ। ओ। ८। ३। १६–८ओ। ८। ३
२ २

होइ अर इस गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घाटि गच्छ ऐसा ८ अंत वर्गणाविषैं दीया द्रव्य

ओ ८

हो है। ऐसैं तौ अपूर्व स्पर्धक संबंधी दीया द्रव्यकी संदृष्टि हो है।

बहुरि पूर्व स्पर्धक संबंधी दीया द्रव्य ऐसा व। १२। ओ। ८। ३ – ओ – १ याकौं

१— २
ओ। ओ। ८। ३
२

ड्योढ गुणहानि ऐसा १२ का भाग देइ याहीका अपवर्तन कीएं आदि वर्गणाविषैं दीया द्रव्य हो है। बहुरि याकौं दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ ताकी लघु संदृष्टि ऐसी (वि) ताकौं दोगुणहानिकरि गुणि तामैं एक एक घाटि प्रथम गुणहानि पर्यंत अर गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा क्रम कीएं अंत वर्गणाविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण विशेषकौं एक घाटि गुणहानिकरि हीन दोगुणहानि करि गुणैं अर एक घाटि नाना गुणहानि प्रमाण दूवा निका भाग दीएं हो है। इनकी संदृष्टि ऐसी–

पूर्वस्पर्धक

अपूर्वस्पर्धक

इहां नीचैं अपूर्वस्पर्धक उपरि अपूर्व स्पर्धककी रचनाकरि ताके आगे तिनकी वर्गणाविषैं दीया द्रव्यके प्रमाणकी संदृष्टि जाननी। अैसें तो दीया द्रव्यकी संदृष्टि है। अर पूर्व स्पर्धककी वर्गणानिकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां बहुभागमात्र पुरातन द्रव्य है सो अैसा—

व। ओ — १ इस पुरातन द्रव्य अर दीया द्रव्यकौं मिलाएं पूर्व अपूर्व स्पर्धकानिका चय घ-
ओ

टता क्रम लीएं एक गोपुच्छ हो है ऐसा जाननां। बहुरि इहां क्षेत्र रचना करि इस अर्थ कौं दिखाया है सो टीका विषैं लिखा ही है। तहां संदृष्टि सुगम हैं। बहुरि पूर्व स्पर्धक ड्योढ गुणहानिमात्र ऐसे (१२) तिनकी नीचैं प्रथम समयविषैं कीएं अपूर्व स्पर्धक गुणहानिके असंख्यातवे भागमात्र ऐसे ८/a तिनके नीचैं तिनके असंख्यातवे भागमात्र द्वितीय समयविषैं कीएं अपूर्व स्पर्धक ऐसे ८/aa इनिकी रचना ऐसी—

१२		१२		१२		१२	
८/a		८/a		८/a		८/a	
८/aa		८/aa		८/aa		८/aa	

इहां स्पर्धकनिकी रचनाकरि वीचिमैं पूर्व स्पर्धकादिकका विभाग करनेके आर्थि लीक करी है। ऐसैं ही तृतीयादि समयनिविषैं नीचैं नीचैं असंख्यात गुणा घटता क्रम लीएं अपूर्व स्पर्धकनिकी रचना करनी। बहुरि प्रथम अनुभाग कांडक घात भएं अनुभागका अल्प बहुत्वविषैं क्रोध मान माया लोभके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाणकी प्रथम समयविषैं कीएं अपूर्व स्पर्धकनिकी संदृष्टिके ऊपरि अन्य समयनिविषैं कीएं मिलावनेके आर्थि आधिक की संदृष्टि कीएं संदृष्टि हो है। अर एक गुणहानिविषैं स्पर्धक शलाकाकी अर एक स्पर्धक

विषैं वर्गणा शलाकाकी तौ पूर्वोक्त संदृष्टि जाननी अर क्रोधादिकके अपूर्व स्पर्धकनिके आगैं वर्गणा शलाकाकी संदृष्टि कीएं तिनकी वर्गणाकी संदृष्टि हो है। अर नानागुणहानि गुणित स्पर्धक शलाकाकौं क्रमतैं च्यारि तीन दोय एकवार अनंतका भाग दीएं लोभ माया मान क्रोधके पूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण हो है। तिनकौं वर्गणा शलाकाकरि गुणैं अपना अपना वर्गणानिका प्रमाण हो है। ऐसैं ए कहे तिनकी संदृष्टि ऐसी है। —

क्रो अ पू	मा अ पू	या अ	लो अ	गु स्प	स्प व	क्रो व	मा व	या व
। ९ ओ ३	। १_ ९ ख ओ ३ ख	। २_ ९ ख ओ ३ ख	३_ ९ ख ओ ३ ख	९	४	९ ४ ओ ३	१_ ९ ख ४ ओ ३ ख	। २_ ९ ख ४ ओ ३ ख
लो व	**लो पू**	**लो पू व**	**या पू**	**या पू व**	**मा पू**	**मा पू व**	**क्रो पू**	**क्रो पू व**
३_ ९ ख ४ ओ ३ ख	९ ना ख ख ख ख	९ ना ४ ख ख ख ख	९ ना ख ख ख	९ ना ४ ख ख ख	९ ना ख ख	९ ना ४ ख ख	९ ना ख	९ ना ४ ख

बहुरि इहां क्रोधादिकनिके पूर्वस्पर्धकनिका प्रमाणकौं अनंतका भाग दीएं बहुभाग मात्र तौ द्वितीय कांडक करि घात कीजिए है। एक भागमात्र अवशेष रहै है। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	क्रो	मा	या	लो
घातकीए स्पर्धक	१ ‿ ९ । ना । ख ख ख	१ ‿ ९ । ना । ख ख । ख । ख	१ ‿ ९ । ना । ख ख । ख । ख । ख	१ ‿ ९ । ना । ख ख । ख । ख । ख ख
अवशेष स्पर्धक	९ । ना ख ख	९ । ना ख । ख । ख	९ । ना ख । ख । ख । ख	९ । ना ख । ख । ख । ख ख

ऐसैं ही तृतीयादि कांडकविषैं क्रम जानना। बहुरि तहां अनुभागकी यथा संभव संदृष्टि जाननी ऐसैं अपूर्व स्पर्धक क्रिया विधानविषैं संदृष्टि कही। अब बादर कृष्टि करण विधानविषैं संदृष्टि कहिए है—

तहां अंतर्मुहूर्तमात्र कालकौं संख्यातका भाग देइ बहुभागानिके तीन समान भागकरि अवशेष एक भागका संख्यात बहुभाग प्रथम समान भागविषैं मिलाएं अश्वकरण काल है। अवशेष एक भागका संख्यात बहुभाग द्वितीय समान भागविषैं मिलाएं कृष्टि करण काल है। अवशेष एक भाग तृतीय समान भागविषैं मिलाएं कृष्टि वेदक काल है तिनकी संदृष्टि रचना ऐसी—

नाम	अश्वकरण	कृष्टिकरण	कृष्टिवेदक
समभाग	१ – २।७।७ ७।३	१ – २।७।७ ७।३	१ – २।७।७ ७।३
देयभाग	१ – २।७।७ ७।७	१ – २।७।७ ७।७।७	२।७ ७।७।७

बहुरि ग्यारह्यो कषायनिकी बारह संदृष्टि हो हैं। तिनका अनुभाग जाननेकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पूर्वैं टीकामैं कथन किया है। बहुरि मोहका द्रव्य ऐसा व १२ याकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य ऐसा व १२ बहुरि वर्गणा शलाकाके अनंतवे

भागमात्र प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ तहां इनकौं आठका भाग देइ एक भाग च्यारयो कषायनिका द्रव्य वा कृष्टिका प्रमाण हो है। तहां लोभविषैं साधिक मायाविषैं किंचिदून तातैं भी क्रोधविषैं किंचिदून तातैं मानविषैं किंचिदूनपना जानना। बहुरि च्यारिभागमात्र नोकषाय संबंधी कृष्टि क्रोधविषैं मिलाएं तहां पांच भाग हो हैं। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
द्रव्य	। व। १२ / ८। ओ	। व।१२– / ८। ओ	। व।१२ ≡ / ८। ओ	। व।१२=५ / ८। ओ
कृष्टि	४ / ख।८	४– / ख। ८	४ ≡ / ख।८	४ = ५ / ख।८

बहुरि अपना अपना द्रव्यका वा कृष्टि प्रमाणकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभागके तीन समान भाग करने। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग प्रथम समान भागविषैं मिलाएं प्रथम संग्रहकृष्टिविषैं द्रव्यका वा कृष्टिका प्रमाण हो है अर अवशेष एक भागकौं तैसैं ही भाग देइ बहुभाग द्वितीय समान भागविषैं मिलाएं द्वितीय संग्रहविषैं तिनिका प्रमाण हो है। अवशेष एक भाग तृतीय समान भागविषैं मिलाएं तृतीय संग्रहविषैं तिनका प्रमाण हो है। सो लोभका इस विधानकी ऐसी संदृष्टि हो है—

लोभका	प्रथमसंग्रह	द्वितीयसंग्रह	तृतीयसंग्रह
समानभाग द्रव्य	। व । १२ । प– १ २४ओ । a प a	। व । १२ । प– १ २४ । ओ a प a	। व । १२ । प– १ २४ । ओ a प a
देयभाग द्रव्य	। व । १२ । प– १ ८ । ओ । प a प a a	। व । १२ । प– १ ८ । ओ । प a प प a a a	। व । १२ ८ । ओ प । प । प a a a
समानभाग कृष्टि	४ । प– १ १— a ख २४ । प a	४ । प– १ ख । २४ । प a	४ । प– १ a ख । २४ प a
देयभाग कृष्टि	४ प– १ a ख । ८ । प । प a a	४ । प– १ ख । ८ । प । प । प a a a	४ ख । ८ । प । प । प a a a

इहां बहुभागनिविषैं आठका अर तीनका भागहारकौं गुणि चौईसका भागहार लिख्या है। ऐसैं ही अन्य कषायनिकी जाननी । बहुरि तहां किंचित् हीन अधिक न गिणि अपना अपना सर्व द्रव्यका वा सर्व कृष्टिका प्रमाणकौं तीनका भाग देइ आठका भाग आगैं था ताकरि गुणैं चौईसका भाग हो है। तहां ग्यारह संग्रहविषैं तौ एक एक भागमात्र प्रमाण हो है। अर क्रोधकी तृतीय संग्रहविषैं नोकषाय संबंधी द्रव्यका संक्रमण भया है तातैं ताविषैं तेरह भागमात्र तिनिका प्रमाण हो है तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभ			माया			मान			क्रोध		
संग्रह	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ
द्रव्य	। व १२ २४ ओ	। व १२ २४ ओ	। व १२ २४ ओ	। व १२– २४ ओ	। व १२ २४ ओ	। व १२– २४ ओ	व १२≡ २४ ओ	व १२≡ २४ ओ	व १२≡ २४ ओ	व १२= २४ ओ	व १२= २४ ओ	व १२=१३ २४ ओ
कृष्टि	। ४ ख २४	। ४ ख २४	। ४ ख २४	। ४– ख २४	। ४– ख २४	। ४– ख २४	४≡ ख २४	४≡ ख २४	४≡ ख २४	४= ख २४	४= ख २४	४=१३ ख २४

बहुरि प्रथम समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्य ऐसा व । १२ (ओ) ताकौं कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष हो है । सो ऐसा—

व । १२ / ओ । ४ । १६—४ (१ / २) / ख । ख याकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम कृष्टिविषैं दीया द्रव्य होइ । बहुरि विशेष का जो दो गुणहानिका गुणकार ताविषैं क्रमतैं एक एक घटाइ एक घाटि गच्छमात्र घटैं अंत कृष्टिविषैं दीया द्रव्य हो है । तिनकी संदृष्टि ऐसी—

प्रथमकृष्टि	मध्यकृष्टि	अंतकृष्टि
व । १२ । १६ १ ─ ओ । ४ । १६−४ ख ख २	वि १६ − १००००००००००००	१ ─ व । १२ । १६ − ४ ख १ ─ ओ । ४ । १६−४ ख ख २

बहुरि स्पर्धक संबंधी द्रव्यकौं ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणाविषैं एक एक विशेष घटता द्वितीयादि वर्गणाविषैं बहुरि आधा आधा गुणहानिविषैं द्रव्य दीजिए है। ताकी संदृष्टि सुगम है। बहुरि कृष्टिकारकका द्वितीय समयविषैं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाणकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं नवीन करी कृष्टानिका प्रमाण हो है। अर प्रथम समयविषैं जो द्रव्यविषैं अपकर्षण भागहारका भाग था तहां अपकर्षण भागहारके असंख्यातवै भागमात्र भागहारका भाग दीएं अपकर्षण कीया द्रव्य हो है। तिनकी संदृष्टि असी−

नाम	लोभ			माया		
संग्रह	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ
कृष्टि	। ४ ख २४ ओ a	। ४ ख २४ ओ a	। ४ ख २४ ओ a	। ४– ख २४ ओ a	। ४– ख २४ ओ a	। ४– ख २४ ओ a
द्रव्य	। व १२ ओ २४ a	। व १२ ओ २४ a	। व १२ ओ २४ a	। व १२– ओ २४ a	। व १२ ओ २७ a	। व १२– ओ a
नाम	माया			क्रोध		
संग्रह	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ
कृष्टि	४≡ । ख २४ ओ a	४≡ । ख २४ ओ a	४≡ । ख २४ ओ a	४= । ख २४ ओ a	४= । ख २४ ओ a	४= १३ । ख २४ ओ a
द्रव्य	व १२≡ ओ २४ a	व १२≡ ओ २४ a	व १२≡ ओ २४ a	व १२= ओ २४ a	व १२= ओ २४ a	व १२= १३ ओ २४ a

बहुरि द्वितीय समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्यविषैं अधस्तन शीर्ष अधस्तन कृष्टि उभय द्रव्य विशेष मध्यम खंड रूप च्यारि विभाग हो हैं । तहां प्रथम समय संबंधी पूर्वोक्त विशेष ऐसा है व १२ याकी आदि अक्षर रूप ऐसी (वि) लघु संदृष्टिकरि याकौं

मो । ४ । १६ – ५ (१० ख ख २)

आदि उत्तर स्थापना अर एक घाटि लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ (१० ख । २४)

ताकौं गच्छ स्थापना । तहां एक घाटि गच्छका आधाकौं उत्तरकरि गुणि तामैं आदि मिलाय ताकौं गच्छकरि गुणैं लोभका प्रथम संग्रहविषैं अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो है। बहुरि लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि स्थापि एक विशेष उत्तर स्थापि अपनी कृष्टिनिका प्रमाण गच्छ स्थापि पूर्वोक्त विधान कीएं लोभका द्वितीय संग्रहविषैं अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो है। ऐसैं ही क्रोधका तृतीय संग्रह पर्यंत विधान जानना। विशेष इतना– जो आयतैं नीचैं जे कृष्टि पाइए तिनका प्रमाण विशेष आदि स्थापने । अन्य विधान पूर्ववत जानना। तिनकी संदृष्टि ऐसी–

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीय संग्रह	१ ⌒ ४ वि ४५ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ ११ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ १७ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ ४ ५५ ख २४ ख २४ २
द्वितीय संग्रह	१ ⌒ ४ वि ४३ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४९ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ १५ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ २१ ख २४ ख २४ २
प्रथम संग्रह	१ ⌒ ४ वि ४१ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४७ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ १३ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ १९ ख २४ ख २४ २

१ ⌒
इहां लोभका प्रथम संग्रहविषैं एक घाटि गच्छ ऐसा ४ ताकौं आधा कीएं ऐसा—
१ ⌒ १ ⌒ ख । २४
४ ताकौं उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें ऐसा ४ वि । यामैं एक विशेषमात्र आदि मिला-
ख । २४ । २ ख । २४ । २
वनेके अर्थि विशेषका गुण्यविषैं दोयकरि भाजित दोय घाटिथे तिनकौं दूरि कीएं ऐसा—
१ ⌒
४ । २ । वि । बहुरि याकौं गच्छ ऐसा ४ करि गुणना सो इस गुणकारकौं गुण्य कीएं संक-
ख । २४ । २ १ ⌒ ख । २४
लन धन ऐसा हो है । ४ वि । ४ बहुरि लोभका द्वितीय संग्रहविषैं एक घाटि गच्छका आधाकौं
ख । २४ । ख । २४ । २ १ ⌒
उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें ऐसा ४ । वि । यामैं प्रथम संग्रहका गच्छमात्र विशेष ऐसा
१ ⌒ ख । २४ । २ १ ⌒
४ वि । मिलावना सो याकौं दोयकरि समच्छेद कीयें यहु ऐसा — ४ वि २ भया । याकौं अर
ख २४ ख । २४ । २

वाकौं अन्य सर्व समान जानि दोय का गुणकारविषैं एक गुणकाररूप वाकौं स्थापि मिलाएं

१ ≏
ऐसा ४ । वि । ३ याकौं गच्छ ऐसा ४ करि गुणैं गुणकार गुण्यनिकौं आगैं पीछैं लिखें
ख । २४ । २ १ ≏ ख । २४

द्वितीय संग्रहविषैं संकलन धन ऐसा ४ । वि । ४ । ३ बहुरि लोभका तृतीय संग्रह विषैं एक घाटि
ख । २४ । २ । ख । २४ । २

१ ≏
गच्छका आधा उत्तर करि गुणित ऐसा ४ । वि । याविषैं प्रथम द्वितीय संग्रहका गच्छमात्र विशेष
१ ≏ ख । २४ । २ १ ≏
रूप आदि मिलावना सो ऐसा ४ । २ याकौं दोय करि समच्छेद कीएं ऐसा ४ । ४ याका
ख । २४ । २ ख । २४ । २

च्यारिका गुणकारविषैं वाका एक गुणकार मिलाएं तृतीय संग्रहविषैं संकलन धन ऐसा—

१ ≏
४ । वि । ४ । ५ याही प्रकार मायाकी प्रथमादि संग्रहनिविषैं विधान कीएं भाज्य
ख । २४ । ख । २४ । २

राशिका गुणकारविषैं दोय दोय अधिकका अनुक्रम हो है । बहुरि क्रोधकी तृतीय संग्रह
विषैं गच्छ ऐसा ४ । १३ यामैं एक घटाइ ताका आधाकौं विशेष करि गुणैं ऐसा—
ख । २४

१ ≏
४ । १३ । वि । याविषैं पूर्वं ग्यारह संग्रह तातैं एक संग्रहका गच्छकौं ग्यारहकरि गुणैं अर
ख । २४ । २ १ ≏
ताकौं विशेषकरि गुणि तिनिका गच्छमात्र विशेष ऐसा ४ । ११ । वि । याकौं दोयकरि सम-
ख । २४

१ —
च्छेद कीएं ऐसा ४ । २२ । वि । इनिके मिलावनेकौं अन्य समान जानि तेरह अर वाईसका
ख । २४ । २ १ ८

गुणकारकौं मिलाएं ऐसा ४ । ३५ । वि । बहुरि याकौं गच्छ ऐसा ४ । १३ करि गुणें ऐसा
१ ८ ख । २४ । २ ख । २४

४ । ३५ । वि । ४ । १३ इहां पैंतीस अर तेरहका गुणकारकौं परस्पर गुणें क्रोधकी तृतीय
ख । २४ । २ । ख । २४ १ ८

संग्रहविषैं च्यारिसै पचावनका गुणकार हो है । सो ऐसा ४ । वि । ४ । ४५५ इहां गुण्य गु-
ख । २४ । ख । २४ । २

णकारादिविषैं एक हीन वा अधिककौं न गिणि संदृष्टि स्थापी है । ऐसा जानना । बहुरि
१ ८

इस सबकौं मिलाएं एक घाटि सर्व कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४ ताका आधाकौं विशेषकरि गुणें
ख १ ८

तामैं एक विशेष मिलाय गच्छकरि गुणें सर्व अधस्तन शीर्ष द्रव्य ऐसा वि । ४ । ४ इहां गुण्य
ख । ख । २

गुणकार पीछैं आगैं लिखे हैं । बहुरि लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिका पूर्वोक्त प्रकार द्रव्य ऐसा
व । १२ । १६ इहां भागहारविषैं दोगुणहानिका ऋणकौं न गिणि अपवर्तन कीएं ऐसा व
१ ८
ओ । ४ । १६ — ४ ओ ४
ख । २४ । ख । २४ । २ ख २४

याकौं अपनी अपनी द्वितीय समयविषैं कीनी नवीन कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणें अपना अ-
पना अधस्तन कृष्टि द्रव्य हो है । ताकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीयसंग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४	व १२ ४ १३ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४
द्वितीयसंग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४	व १२ ४। ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४
प्रथमसंग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ ३ ख २४

बहुरि तिसही लोभकी प्रथम कृष्टिकौं सर्व नवीन कृष्टिका प्रमाणकरि गुणें सर्व अधस्तन कृष्टि द्रव्य ऐसा व। १२ । ४ बहुरि प्रथम समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्य ऐसा व १२
ओ। ४। ख ओ। ३ ओ
ख। २४

यातैं असंख्यात गुणा द्वितिय समयविषैं द्रव्य अपकर्षण कीया सो ऐसा व। १२। ३ याका
ओ १—

असंख्यातका गुणकार ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि कीएं उभय द्रव्य ऐसा व । १२ । ३।
ओ

याकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि ऐसी ४ याके ऊपरि द्वितीय समयविषैं कीनी। कृष्टिनिका
ख

प्रमाण मिलावनेकौं अधिककी ऐसी (।) संदृष्टि कीएं उभयमात्र द्रव्य ऐसा ४ ताका अर
ख

एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं उभय द्रव्यका विशेष ऐसा

व । १२ । ८ याकी लघु संदृष्टि ऐसी (वि) याकौं आदि उत्तर स्थापना अर क्रोधकी तृतीय
। १
ओ । ४ । १६ – ४
ख । ख २

संग्रहकी उभयद्रव्य कृष्टिमात्र गच्छ स्थापना तहां पूर्वोक्त प्रकार एक घाटि गच्छका आधाकौं विशेषकरि गुणि तामैं आदि मिलाय गच्छकरि गुणैं क्रोधकी तृतीय कृष्टिविषैं उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है । बहुरि क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर एक घाटि अपनी उभय कृष्टिमात्र गच्छ स्थापैं संकलन धनमात्र क्रोधकी द्वितीय कृष्टिविषैं उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। ऐसैं ही लोभका प्रथम संग्रह पर्यंत क्रम जानना । विशेष इतना—

अपनी अपनी एक अधिक पहिली कृष्टिका प्रमाणमात्र विशेष आदि स्थापन करना तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीयसंग्रह	। वि ४ ४ ४३ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ३७ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ३१ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ १६९ ख २४ ख २४ २
द्वितीयसंग्रह	। वि ४ ४ ४५ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ३९ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ३३ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ २७ ख २४ ख २४ २
प्रथमसंग्रह	। वि ४ ४ ४७ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ४१ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ३५ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ २९ ख २४ ख २४ २

इहां क्रोधकी तृतीय संग्रहविषैं गच्छ ऐसा— ४ । १३ (ख । २४) यामैं एक घटाय ताका आधाकौं उत्तर जो विशेष ताकरि गुणैं ऐसा ४ । १३ वि । (ख । २४ । २) यामैं आदि एक विशेष मिलावनेकौं दोय करि भाजित एक हीनकी जायगा एक अधिक चाहिए सो न गिणैं ऐसा ४ । १३ । वि । (ख । २४ । २) याकौं गच्छकरि गुणैं ऐसा ४ । १३ । वि । ४ । १३ (ख । २४ । २ । ख । २४) इहां भाज्यविषैं तेरह तेरहके दोय गुणकारनिकौं परस्पर गुणैं अर गुण्य गुणकारनिकौं आगैं पीछैं लिखैं क्रोधकी तृतीय संग्रह विषैं ऐसी ४ । ४ । १६९ (ख । २४ । ख । २४ । २) बहुरि क्रोधकी द्वितीय संग्रहविषैं गच्छ ऐसा ४ (ख । २४) तामैं एक घटाइ ताका आधाकौं विशेषकरि गुणैं ऐसा ४ । वि । (ख । २४ । २) यामैं एक अधिक क्रोधकी तृतीय संग्रहका गच्छमात्र विशेष आदि मिलावना सो ऐसा ४ । १३ । वि । (ख । २४) याकौं दोयकरि समच्छेद कीएं ऐसा ४ । २६ । वि । (ख । २४) बहुरि याकैं अर वाकैं एक अधिक हीनकौं न गिणि अन्य समानता जानि याका छवीसका गुणकारविषैं एक गुणकार वाका मिलाएं क्रोधकी द्वितीय सं

विषैं ऐसा वि । ४ । ४। २७ बहुरि क्रोधकी प्रथम संग्रहविषैं एक घाटि गच्छका आधा विशेष
ख । २४ । ख । २४ । २
१ ⌂
करि गुणित ऐसा ४ । वि । याविषैं एक अधिक क्रोधकी प्रथम द्वितीयका मिलाया हूवा
ख । २४ १ ⌂
गच्छमात्र विशेष आदि सो ऐसा— ४ । ४ याकौं दोयकरि समच्छेदकरि पूर्वोक्त प्रकार
ख । २४
मिलाएं संकलन धन ऐसा वि ४ । ४ २९ ऐसैं ही विधान कीएं मानकी प्रथम संग्रह आदि
ख । २४ । ख । २४ । २
लोभकी तृतीय संग्रह पर्यंत भाज्यराशिका गुणकारविषैं दोय दोय अधिकका क्रम हो है। बहुरि तिस विशेषप्रमाण आदि उत्तर स्थापि सर्व उभय कृष्टिमात्र गच्छ स्थापैं सर्व उभय द्रव्य ऐसा—
१ ⌂
वि । ४ । ४ बहुरि अपना अपना द्वितिय समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्यका भागहार अ-
ख । ख
संख्यात ताके आगैं पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेके अर्थि तीनवार किंचिदूनकी ऐसी—(≡) संदृष्टि कीएं अर अपनी अपनी उभय कृष्टिका गुणकार ताहीका भागहार कीएं अपना अपना मध्य खंड द्रव्यकी संदृष्टि ऐसी हो है—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीय संग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ १३ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४
द्वितीय संग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४
प्रथम संग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४

बहुरि अपकृष्ट द्रव्यविषैं तैसैं ही संदृष्टि कीएं सर्व मध्यम खंड द्रव्यकी ऐसी— व । १२ ४ हो है । बहुरि इस च्यारि प्रकार द्रव्य देनेका विधान जानि तहां यथा संभव संदृ-

ओ । ४ ख
a ≡ । ख

ष्टि जाननी । बहुरि यहु दीया द्रव्य पूर्व कृष्टितैं अपूर्वकृष्टिविषैं असंख्यात भाग वृद्धि रूप दीजिए है । सो ऐसैं ग्यारह स्थान हैं । बहुरि अपूर्व कृष्टितैं पूर्व कृष्टिविषैं असंख्यात भाग हानि लीएं द्रव्य दीजिए है सो ऐसैं बारह स्थान हैं । अवशेष स्थाननिविषैं अनंत-

भाग हानि लीएं द्रव्य दीजिए है सो इनकी तेवीस ऊंट कूटानिके समान रचना हो है। सो यथा संभव जाननी। बहुरि इहां अपूर्व कृष्टिनिकी रचना ऐसी है। —

पृ० नं० १३३ (क) में देखो

इहां नीचैं लोभकी प्रथम कृष्टि ताविषैं नीचैं अपूर्व कृष्टिनिविषैं अधस्तन कृष्टि दीया ताकी संदृष्टि ऐसी (८) बहुरि तिनके उपरि पूर्वकृष्टि तिनाविषैं समपाट्टिकारूप द्रव्य विशेष सहित था ताकी संदृष्टि ऐसी ताविषैं अधस्तन शीर्ष विषैं द्रव्य दीया ताकी संदृष्टि ऐसी ऐसैं भएं पूर्व अपूर्व कृष्टिनिकी समपाट्टिका भई ऐसैं ही लोभकी द्वितीयादि क्रोध- की तृतीय पर्यंत विधान जानने। बहुरि इन सवनिविषैं समानरूप मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी समलकीररूप सहनानी जाननी। बहुरि इन सवनिविषैं एक एक विशेष घटता उभय द्रव्य विषैं विशेष द्रव्य दीया था ताकी क्रमहीन लकीररूप सहनानी जाननी। ऐसैंही कृष्टि करण कालका तृतीयादि अंत समय पर्यंत विधान जानना। बहुरि कृष्टि करण काल समाप्त भएं कृष्टि वेदक कालका प्रथम समयविषैं जो सर्व द्रव्य कृष्टिरूप परिनमि तीन कृष्टिनिविषैं गोपुच्छाकार भया ताकी संदृष्टि कृष्टि कारक विधानविषैं कही थी तैसैं ऐसी जाननी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
द्रव्य	। व १२ ७।८	। व १२ ७।८	व १२ ≡ ५ ७।८	व १२ = ५ ७।८

बहुरि सर्व द्रव्य ऐसा व १२ याकौं चौइसका भाग देइ अन्य संग्रह विषैं एक एक भाग क्रो-

।
४ । १३ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग ऐसैं ४ । १३ । प कृष्टि
ख । २४ ख । २४ । प a

वेदकका प्रथम समयविषैं बंध उदय रूप जे वीचिकी उभय कृष्टि तिनका प्रमाण है। बहुरि एक भाग ऐसा ४ । १३ (ख । २४ । प a) ताकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा शलाकानिका जोड सोलहका अंक ताका भाग देइ दोय शलाकाकरि गुणें तो नीचैकी बंध उदय रहित अनुभय कृष्टिनिका अर तीन शलाकानिकरि गुणें तिनके उपरि जे नीचेकी उदय कृष्टि तिनिका च्यारि शलाकानिकरि गुणें उपरिका अनुभय कृष्टिनिका सात शलाकानिकरि गुणें तिनके नीचैं जे उपरिकी उदय कृष्टि तिनका प्रमाण है। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

अनुभय	उदय	उभय	उदय	अनुभय
४ । १३ । २ / ख । २४ । प । १६ a	४ । १३ । ३ / ख । २४ । प । १६ a	४ । १३ । प a / ख । २४ । प । १६ a	४ । १३ । ७ / ख । २४ । प । १६ a	४ । १३ । ४ / ख । २४ । प । १६ a

इहां युगपत् उदय आवने योग्य एक निषेकविषैं ऐसा अनुभाग है। तातैं आडी रचना करी है। तहां नीचेंतैं प्रथमादि कृष्टिनिकी क्रमतैं रचना जाननी। तिनविषैं अनुभय उदय

उभय अनुभय कृष्टि क्रमतैं पाइए है तिनका प्रमाण लिख्या है। बहुरि द्वितीय समयविषैं नीचली उदय कृष्टि थी सो तौ उदय रूप भई। अर नीचली अनुभय कृष्टि थी ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग ऐसा ४ । १३ । २ ख । २४ । प । १६ । प a a ताकौं अंक संदृष्टिकरि पांचका भाग देइ तहां दोय भागप्रमाण जघन्यादि कृष्टि तौ अनुभय रूप हो हैं। अर ताके उपरि तीन भाग प्रमाण कृष्टि उदय रूप हो हैं। अर ताके उपरि बहुभागमात्र कृष्टि ऐसी ४ । १३ । प a ख । २४ । प । १६ । प a a उभय रूप हो हैं। बहुरि जे उभय कृष्टि थीं तिनिविषैं पूर्वैं जे उदय कृष्टि थीं तिनकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टि इहां उदय रूप अर अनुभ(द)य रूप भई ऐसी— ४ । १३ । ७ ख । २४ । प । १६ । प a a ४ । १३ । ४ ख । २४ । प । १६ । प a a इनिकौं मिलाएं ऐसा ४ । १३ । ११ ख । २४ प । १६ । प a a याकौं पूर्वैं उभय कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । १३ । प ख । २४ । प a a तामैं घटावना सो अन्य भागहार समान जानि ऐसा १६ प a भागहारकरि समच्छेद कीएं ऐसा—

१८

भया सर्व द्रव्य ऐसा (व । १२)ताकौं सर्व कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४ ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दो गुणहानिका भाग दीएं पूर्व विशेष ऐसा व १२ याकी लघु

४ । १६—४
ख । ख २

संदृष्टि ऐसी (वि) बहुरि इहां गच्छका प्रमाण सर्व कृष्टिमात्र स्थापि जैसें कृष्टिकारकका द्वितीय समयविषैं विधान कह्या है तैसें अधस्तनशीर्षविशेषकी संदृष्टि हो है। विशेष इतना—

तहां ताकौं प्रथम संग्रह कृष्टि कही थी ताकौं इहां तृतीय संग्रह कहनी। तृतीय कही थी ताकौं प्रथम कहनी। बहुरि लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टि ऐसी। व। १२ इहां

४
ख

सर्व द्रव्यकौं सर्व कृष्टिके प्रमाणका भाग दीएं मध्यम धन होइ। ताविषैं विशेषका आधिक-पना कीएं जघन्य कृष्टि भई है। बहुरि याकौं दोयवार असंख्यातकरि गुणित अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक मध्यम खंड ऐसा व । १२ याकौं अपनी अपनी संग्रहके कृष्टि

४ । ओ । a a
ख

का प्रमाणकरि गुणैं अपना अपना मध्यम खंड द्रव्य हो है। बहुरि लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिविषैं एक मध्यम खंड मिलावनेकौं साधिककी संग्रह कृष्टि कीएं ऐसा व । १२

४
ख

बहुरि अपनी अपनी संग्रहके नीचे संक्रमण द्रव्यकरि करीं जे नवीन कृष्टि तिनिका प्रमाण अपनी पूर्व कृष्टिनिकौं असंख्यात गुणां अपकर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसा ४ । ख । ओ । ० भागहारका गुण्य गुणकारानिकौं आगैं पीछैं लिखैं ऐसा ४ ख । ० । ख ताकरि तिस लोभकी जघन्य कृष्टि समान द्रव्यकौं गुणैं अपना अपना संग्रहके नीचैं संक्रमण द्रव्यकरि भई नवीन कृष्टि संबंधी समान द्रव्य हो है । तहां क्रोधकी प्रथम कृष्टिविषैं यहु द्रव्य नाहीं संभवै है । तहां शून्य जाननी । बहुरि पूर्व उत्तर द्रव्यकौं पुरातन नूतन कृष्टिमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं एक उभय द्रव्य विशेष होइ ताकी लघु संदृष्टि ऐसी (वि) स्थापि जैसें कृष्टिकारकका द्वितीय समयविषैं विधान कह्या था तैसें इहां उभय द्रव्यविशेष कीएं संदृष्टि हो है । विशेष इहां मध्यम खंडवत् जानना । बहुरि एक मध्यम खंड सहित लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिका द्रव्य ऐसा व ॥ १२ ४ ख ताकी एक शलाका होइ तौ लोभकी तृतीय संग्रहका आय द्रव्य विषैं पूर्वोक्त च्यारि द्रव्य घटावने कौं आगैं किंचिदूनकी संदृष्टि कीएं ऐसा व । १२ । २ – २४ ओ सो इतने द्रव्यकी केती शलाका होइ ? ऐसैं त्रैराशिक कीएं लब्धिराशि ऐसा व । १२ । २– २४ । ओ । ७ । १२ ४ ख इहां किंचित् हीन अधिक न गिणि ।

होइ । तहां मानका स्तोक तातैं क्रोध माया लोभका क्रम अधिक है तिनकी संदृष्टि रचना ऐसी— मान स/४ क्रोध स/४ माया स/४ लोभ स/४ बहुरि मध्यम खंड सहित लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिका द्रव्य ड्योढ गुणहानि गुणित समय प्रवद्धकौं सर्व कृष्टिका भाग देइ साधिक कीएं ऐसी स १२ / ४ ख सो इतने द्रव्यकी एक कृष्टिरूप एक शलाका होइ तो पूर्वोक्त मानका द्रव्यकी केती होइ ! ऐसैं त्रैराशिक कीए लब्धिराशि मानविषैं ऐसी स ४ / स १२ / ४ ख इहां समयप्रवद्धका अपवर्तन कीएं अर भागहारका भाग ऐसा ४ / ख ताकौं भाज्य कीएं अर भागहारविषैं च्यारि अर ड्योढ गुणहानि ऐसा (१२) इनिकौं परस्परगुणैं छह गुणहानि भई। तहां गुणहानिकी संदृष्टि आठका अंक करि ताके आगैं छहका गुणकार कीएं संदृष्टि हो है। बहुरि क्रोधादिक विषैं ऐसी ही अधिक क्रमरूप संदृष्टि हो है। ऐसैं बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी—

मान	क्रोध	माया	लोभ
४ / ख ८।६	४ / ख ८।६	४ / ख ८।६	४ / ख ८।६

बहुरि इनि बंध कृष्टिनिके वीचि पाइए हैं जे अंतर कृष्टि तिनका प्रमाण गुणहानिके चौथा भागमात्र है। तहां क्रोधविषै नोकषाय द्रव्य संबंधी कृष्टि मिलनेतैं तेरहका गुणकार जानना। तिन

की संदृष्टि ऐसी लो मा या क्रो एक एक कषायकी एक एक संग्रह बंधरूप होइ सो
८ ८ ८ ८ १३
४ ४ ४ ४

इहां चार्यो कषायनिकी पहली संग्रह बंधरूप हो है। सो इहां नवीन बंधरूप भया समयप्रबद्ध
। ॥ ॥।
च्यारो कषायनिका ऐसा— स स स स। इनिकौं अनंतका भाग देइ एक भाग तौ जुदा
४ ४ ४ ४

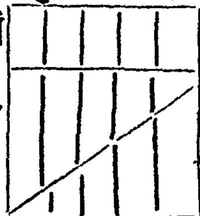
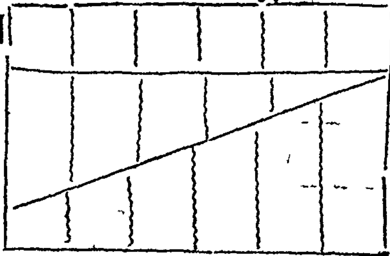
राखि अर बहुभागनिकरि नवीन बंधांतर कृष्टि निपजाइए है। तहां अंत कृष्टितैं लगाय जेथवी अतका नवीन कृष्टि होइ तितने विशेष तौ आदि अर अपना अपना अंतरालरूप कृष्टिनिका पूर्वोक्त प्रमाणमात्र विशेष उत्तर अर अपनी अपनी बंधातर कृष्टिनिका पूर्वोक्त प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलनधन कीएं बंधांतर कृष्टि विशेषद्रव्य हो है। सो अन्य कृष्टिनिविषैं तौ उभय द्रव्य विशेष द्रव्य देना जहां कह्या था तहां बंध कृष्टिनिविषैं इस द्रव्यकौं देना। सो इहां क्रोध मान माया लोभकी प्रथम संग्रहके बंधांतर विशेष विषैं आदि उत्तर गच्छकी अर संकलन कीया धनकी ऐसी संदृष्टि हो है—

नाम	क्रोध प्र०	मान प्र०	माया प्र०	लोभ प्र०
संकलित धन	। वि।४।१३।४ ख।२४।२।ख८।६	। वि।४।३१।४ ख।२४।२।ख८।६	। वि।४।४३।४ ख।२४।२।ख८।६	। वि।४।४३।४ ख।२४।२।ख८।६
गच्छ	४ ख।८।६	४ ख।८।६	४ ख।८।६	४ ख।८।६
उत्तर	१— वि।८।१२ ४	१— वि।८ ४	१— वि।८ ४	१— वि।८ ४
आदि	। वि।४।१२ ख।२४	। वि।४।१५ ख।२४	। वि।४।१८ ख।२४	वि।४।२१ ख।२४

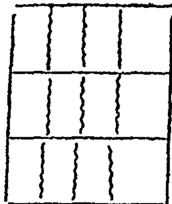
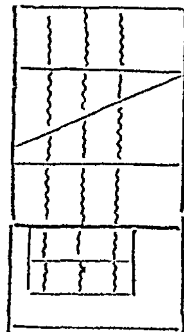
बहुरि बहुभागनिविषैं इतना द्रव्य घटाएं अवशेष द्रव्य जो रह्या ताकौं अपना अपना बंधांतर कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं एकका कृष्टिका द्रव्य होइ। ताकौं तिसही प्रमाणकरि गुणैं बंधांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य होइ। याकरि लोभकी जघन्य कृष्टिके समान बंध कृष्टि निपजै है। बहुरि एक भाग जुदा राख्या था तिसविषैं दोय भाग करने। तहां तिस एक भागकौं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि प्रमाण गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ सो एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर सर्व कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलन धन कीएं बंध विशेषद्रव्य हो है। सो याकौं सर्व बंध कृष्टिनिविषैं जहां उभय द्रव्य विशेषविषैं घटता द्रव्य देना कह्या तहां याकौं देइ पूर्ण करना। बहुरि तिस एक भागविषैं याकौं घटाएं जो अवशेष रह्या ताकौं अपनी अपनी सर्वकृष्टि प्रमाण का भाग दीएं एक खंड होइ ताकौं तिसहीकरि गुणैं सर्व मध्यम खंड द्रव्य होइ। ऐसैं बंध द्रव्यविषैं च्यारि प्रकार कहे। इनिकी संदृष्टिनिका मोकौं नीकैं ज्ञान न भया तातैं इहां नाही लिखी है। बहुरि इनि द्रव्यनिके देनेका विधान पूर्वैं व्याख्यानविषैं कहि आए हैं। बहुरि इहां अनंती जायगा पहलैं बहुत पीछैं घाटि पीछैं बाधि बाधि द्रव्य दीए हैं तातैं अनंत उष्ट्रकूट रचना हो है। बहुरि बारह संग्रहनिविषैं नीचैं नवीन भई कृष्टि अर पूर्व अर अपूर्व वीचि वीचि संक्रमण द्रव्यकरि निपजीं नवीन कृष्टि अर च्यारि संग्रहनिविषैं बंध रचना ऐसी जाननी। —

पृ० सं० १५६ (क) में देखो।

...भागकी रचना युगवत् कालविषैं संभवै है तातैं आडी रचना करी है। तहां नीचैं ...निविषैं नीचैं नवीन कृष्टिनिकी रचना ऐसी ☐ तिनके उपरि

पूर्व कृष्टिनिकी रचना ऐसी ▭ याविषैं समपट्टिकाकी समान लीक अर विशेष घटता क्रमकी क्रम हीन रूप लीक अर तिनविषैं अधस्तन शीर्ष विशेषका द्रव्य दीया ताका क्रम अधिक रूप लीककी संदृष्टि कीएं ऐसी  ऐसैं कीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिकी समपट्टिका भई। ऐसैं ही लोभकी द्वितीयादिविषैं संदृष्टि जाननी। तहां क्रोधकी तृतीय संग्रहविषैं नीचैं नवीन कृष्टि नाही भई तातैं तिनकी रचना नाही करी है। पूर्व कृष्टिनिही की रचना करी है। बहुरि इनि पूर्व कृष्टिनिके वीचि संक्रमण द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी सूधी ऊभी लीकरूप संदृष्टि अर बंध द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी वांकी ऊभी लीकरूप संदृष्टि जाननी। तहां लोभादिक च्यारयो कषायनिकी तृतीय द्वितीय संग्रहविषैं तौ संक्रमण द्रव्यहीकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी संदृष्टि ऐसी 

अर लोभ माया मानकी प्रथम संग्रहविषैं संक्रमण द्रव्यकरि अर बंध द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी संदृष्टि ऐसी अर क्रोधकी प्रथम संग्रहविषैं बंध द्रव्य-

हीकरि नवीन कृष्टि भईं तिनकी संदृष्टि ऐसी  जाननी । बहुरि इन सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषैं मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी समानरूप लीककी संदृष्टि जाननी । बहुरि इन सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषैं क्रम हीन रूप उभय द्रव्य विशेष द्रव्य दीया ताकी क्रम हीन रूप लीक संदृष्टि जाननी । बहुरि बंध होने योग्य पूर्व कृष्टिनिका उभय द्रव्य विशेष द्रव्यविषैं वा बंध द्रव्यकरि निपजी नवीन कृष्टिका बंधांतर विशेष द्रव्यविषैं घटता द्रव्य दीया तहां बंध विशेष द्रव्य दीया अर बंध द्रव्यका मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी उभय द्रव्य विशेष द्रव्यकी संदृष्टि  ऐसी जाननी । ऐसैं इहां रचना जाननी

बहुरि क्रोधकी प्रथम संग्रहका द्रव्य ऐसा— व १२ १३ / २४ । सो द्वितीय संग्रह रूप भया । अर द्वितीय संग्रहका द्रव्य पूर्वैं ऐसा व । १२ । १ / २५ था ही सो मिलि द्वितीय संग्रहका द्रव्य ऐसा

व । १२ । $\frac{१४}{२४}$ । भया । ऐसैं ही अन्य संग्रहविषैं लोभकी द्वितीय संग्रह पर्यंत पूर्व पूर्व संग्रहका द्रव्य अपने द्रव्यविषैं मिलनेतैं अपना अपना द्रव्य हो है । सो जानना ताकी संदृष्टि रचना ऐसी—

नाम	क्रोध			मान			माया			लोभ		
संग्रह	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ
द्रव्य	व १२ $\frac{१३}{२४}$	व १२ $\frac{१४}{२४}$	व १२ $\frac{१५}{२४}$	व १२ $\frac{१६}{२४}$	व १२ $\frac{१७}{२४}$	व १२ $\frac{१८}{२४}$	व १२ $\frac{१९}{२४}$	व १२ $\frac{२०}{२४}$	व १२ $\frac{२१}{२४}$	व १२ $\frac{२२}{२४}$	व १२ $\frac{२३}{२४}$	व १२ $\frac{२४}{२४}$

तहां अपने अपने द्रव्यका अपकर्षणकरि प्रथम स्थितिविषैं गुणकार क्रमकरि द्वितीय स्थितिविषैं विशेष हीन क्रमकरि देनेका विधान पूर्ववत् जानना । बहुरि आयुद्रव्य आदि यथासंभव जानि तिनकी संदृष्टि पूर्ववत् जाननी । बहुरि तहां संक्रमण द्रव्य बंध द्रव्यका विधान यथासंभव जानि तिनकी संदृष्टि पूर्ववत् जाननी । विशेष होइ सो विशेष जानि लेना । बहुरि क्रोध मान माया लोभ वेदककैं क्रमतैं च्यारि तीन दोय एक कषायनिका बंध है । तहां जिस कषायकी जिस संग्रहकौं वेदै है तिस कषायकी तौ तिसही संग्रहका बंध है । अन्यकषायकी प्रथम संग्रहका बंध है । तिस बंधांतर कृष्टि शलाकाविषैं क्रोध वेदकके कृष्टि प्रमाणकौं छह गुणहानिका भागहार कह्या था । मान माया लोभ वेदककैं क्रमतैं साढा च्यारि तीन ड्योढ गुणहानिका भागहार जानना । तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
क्रोधवेदक	४ ख । ८ । ६	४ ख । ८ । ६	४ ख । ८ । ६	४ ख । ८ । ६
मानवेदक	४ ख । ८ । ९ २	४ ख । ८ । ९ २	४ ख । ८ । ९ २	
मायावेदक	४ ख । ८ । ३	४ ख । ८ । ३		
लोभवेदक	४ ख । ८ । ३ २			

बहुरि बधांतर कृष्टिनिके वीचि जे अन्तर कृष्टि तिनिका प्रमाण क्रोधका प्रथमसंग्रहका वेदकविषैं अन्यकषायानिकी गुणहानिका चौथा भागमात्र क्रोधका तातैं तेरह गुणा कह्या था। बहुरि ताकरि द्वितीय तृतीय कृष्टि वेदकविषैं अन्य कषायनिका पूर्ववत् अर क्रोधका चौदह पंद्रह गुणा जानना। बहुरि मानकी प्रथमादि संग्रह वेदककै अन्यकषायानिका गुणहानिकैं तीन सोलहवां भागमात्र मानका तातैं सोलह सतरह अठारह गुणा क्रमतैं जानना। बहुरि मायाकी प्रथमादि संग्रह वेदककैं लोभका गुणहानिका दोय सोलहवां भागमात्र, माया का तातैं उगणीस वीस इकईस गुणा कमतैं जानना लोभकी प्रथमादि संग्रह वेदकके लोभका गुणहानिका सोलहवां भाग वाईस तेईस चौवीस गुणा जानना। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम क्रोध वेदक	लोभ ८/४	माया ८/४	मान ८/४	क्रोध ८ । १३ । १४ । १५ / ४
मानवेदक	८ । ३ / १६	८ । ३ / १६	८ । ३ । १६ / १६	१७ । १८
मायावेदक	८ । २ / १६	८ । १८ / १६	२० । २१	
लोभवेदक	८ । २२ / १६	२३ । २४		

बहुरि द्वितीय संग्रहका द्रव्य ऐसा व । १२ । २३ / २४ याकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ पचीस भागमात्र संक्रमण द्रव्य ऐसा व । १२ । ५७५ / २४ । ओ तिसविषैं एक भागमात्र तृतीय संग्रहरूप परिणया द्रव्य ऐसा— व । १२ । २३ / २४ । ओ अर चौईस भागमात्र सूक्ष्मकृष्टिरूप परिणया द्रव्य ऐसा व । १२ । ५५२ / २४ । ओ बहुरि तृतीय संग्रहका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भाग सूक्ष्मकृष्टिरूप परिणया ऐसा व । १२ । १ / २४ । ओ इनिकौं मिलाएँ सर्व सूक्ष्म कृष्टिरूप परिणया द्रव्य ऐसा व । १२ । ५५३ / २४ । ओ इतने द्रव्यकरि सर्व सूक्ष्मकृष्टि करण कालका प्रथम समय विषैं बादरकृष्टिनिके नीचैं सूक्ष्मकृष्टि करिए है । तिनिका प्रमाण कहिए है—

कोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि ऐसी ४ । १३ / ख । २४ बहुरि पूर्व पूर्व संग्रह उत्तर उत्तर संग्रहरूप

होइ परिनमैं है तातैं पूर्व प्रमाणकौं विवक्षित संग्रहकृष्टिका प्रमाणविषैं मिलाएं अपना अपना वेदक कालविषैं कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा–

नाम	क्रोध			मान			माया			लोभ		
संग्रह	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	सूक्ष्मकृष्टि
कृष्टिप्रमाण	४ १३ ख २४	४ १४ ख २४	४ १५ ख २४	४ १६ ख २४	४ १७ ख २४	४ १८ ख २४	४ १९ ख २५	४ २० ख २४	४ २१ ख २५	४ २२ ख २५	४ २३ ख २५	४ २४ ख २५

हो है। तहां सूक्ष्मकृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । २४ / ख । २४ अपवर्तन कीएं ऐसा ४ / ख हो है। बहुरि इहां लोभका द्वितीय संग्रहविषैं आय द्रव्यका तौ अभाव है। तृतीय संग्रहरूप भया व्यय द्रव्य ऐसा हो है व । ७२ । २३ / २४ । ओ सोई तृतीय संग्रहका आय द्रव्य है। इसहीका नाम संक्रमण द्रव्य है। बहुरि लोभकी द्वितीय तृतीय संग्रहविषैं अपनी अपनी कृष्टि प्रमाणकौं अपकर्षण भागहारका असंख्यातवां भागका भाग दीएं अपना अपना घात कृष्टिका प्रमाण हो है। ताकरि अपनी अपनी अंत कृष्टिका द्रव्यकौं गुणि किछू साधिक कीएं अपना अपना घात द्रव्य हो है। तहां घात द्रव्यकौं यथा संभव दीएं स्वस्थान परस्थान गोपुच्छरूप होइ कृष्टि हो है। तिनविषैं संक्रमण द्रव्य वा घात द्रव्यका विभाग कहिए है–

एक विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर एक घाटि घात कीएं पीछैं रहीं अपनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापें संकलन धनमात्र द्रव्य तृतीय संग्रहविषैं आय द्रव्यतैं ग्रहि स्थापना। अर तृतीय संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर घात कीएं

पीछैं रही अपनी कृष्टिमात्र गच्छ स्थापैं संकलन घनमात्र द्वितीय संग्रहविषैं घात द्रव्यतैं ग्रहि स्थापने। इसका नाम वादर कृष्टि संबंधी अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य है। इहां 'पदमेगेण विहीणं' इत्यादि सूत्रकरि संकलन घन काहिए है—

तृतीय संग्रहविषैं गच्छ ऐसा ४ ख।२४ इहां घात कृष्टिनिका वा एक घाटिका किंचिदूनपनाकौं नाहीं गिण्या है। यामैं एक घटाइ दोयका भाग दीएं ताकरि ऐसा ४ ख।२४।२ याकरि उत्तर जो विशेष ताकौं गुणैं ऐसा वि ४ ख।२४।२ यामैं आदि एक विशेष मिलावनेकौं एक घाटि था तहां एक अधिककरि ताकौं गच्छ ऐसा ४ ख।२४ करि गुणि तहां गुण्य गुणकारनिकौं आगैं पीछैं लिखैं संकलन घन ऐसा वि।४।४ ख।२४।ख२४।२ हो है। बहुरि द्वितीय संग्रहविषैं गच्छ ऐसा—

४।२३ यामैं एक घटाइ दोयका भाग देइ ताकरि उत्तर जो विशेष ताकौं गुणैं ऐसा—

वि।४।२३ ख।२४।२ यामैं आदि ऐसा वि ४ ख२४ मिलावना सो याकौं दोयकरि समच्छेद कीएं ऐसा—

वि।४।२ ख।२४।२ अर याकैं वाकैं अन्य समान देखि तेईसका गुणकारविषैं दोयका गुणकार मिलाएं ऐसा वि।४।२५ ख।२४।२ याकौं गच्छ ऐसा ४।२३ ख।२४ करि गुणैं ऐसा वि।४।२५।४२३ ख।२४।२।ख२४।

इहां पचीस अर तेइसकौं परस्पर गुणैं पांचसे पिचहत्तरिका गुणकार कीएं अर गुण्य गुण-

कार आगैं पीछैं लिखैं संकलन धन ऐसा । वि । ४ । ४ । ५७५ हो है । इहां एक अधिक
ख । २४ । म २४ २
हीनकौं न गिणि संदृष्टि करी है ऐसा जानना । बहुरि तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टि ऐसी व १२ याकौं असंख्यात गुणां अपकर्षण भागहार ऐसा (ओ a) ताका भाग देइ ताकौं
४
ख
तृतीय संग्रहविषैं कृष्टि प्रमाण ऐसा ४ अर द्वितीय संग्रहविषैं कृष्टि प्रमाण ऐसा ४ । २३
ख । २४ ख । २४
सो इनकरि गुणैं अपना अपना वादर कृष्टि संबंधी मध्यम खंड द्रव्य हो है । बहुरि एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी पूर्व कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां जेता संकलन धन भया ताविषैं एक विशेषका अनंतवां भाग घटाएं जो होइ सो द्वितीय संग्रह का घात द्रव्यतैं ग्रहि स्थापना । इहां एक विशेषका अनंतवांभाग घटाया है । तहां बंध द्रव्य देइ पूर्ण करिए है ऐसा जानना । बहुरि एक अधिक द्वितीय संग्रहकी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर संक्रमण द्रव्यकरि निपजी कृष्टि सहित अपनी पुरातन कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन धनमात्र तृतीय संग्रहका आय द्रव्यतैं ग्रहि स्थापना इसका नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है । इहां 'पदमेगेण विहीणं' इत्यादि सूत्रकरि द्वितीय संग्रहविषैं गच्छ ऐसा ४ । २३ तामैं एक घटाइ ताकौं दोयका भाग
ख । २४
देइ ताकरि उत्तर जो विशेष ताकौं गुणैं ऐसा वि । ४ । २३ बहुरि आदि एक विशेष मिलावनेक
ख । २४ । २

एक हीनकी जायगा एक अधिककरि ताकौं गच्छकरि गुणें औसा वि ४ २३ ४ २१ [ख २५ २ ख २४] बहुरि इहां ते ईसकरि तेइसकौं गुणि पांचसे गुणतीसका गुणकार कीएं अर गुण्य गुणकारनिकौं आगें पीछें लिखें संकलन घन औसा वि। ४। ४। ५२९ [ख।२५। ख। २५।२] हो है। बहुरि तृतीय संग्रहविषें गच्छ औसा—

४ [ख।२४] यामैं एक घटाइ दोयका भाग देइ ताकरि उत्तर जो विशेष ताकौं गुणें औसा वि ४। ४ [ख।२५।२] यामें आदि औसा वि। ४। २३ [ख।२५।] मिलावना सो याकौं दोयकरि समच्छेद कीएं यहु औसा— वि। ४। ४६ [ख। २३। २] अर याके वाकें अन्य समान देखि याका छयालीसका गुणकारविषें वाका एक गुणकार मिलाएं औसा वि। ४। ४७ [ख।२४। २] बहुरि याकौं गच्छ औसा ४ [ख।२४] करि गुणें गुण्य गुणकारनिकौं आगें पीछें लिखें संकलन घन औसा वि। ४। ४। ४७ [ख।२४। ख। २४।२] इहां घात कृष्टि-निका हीनपना वा संक्रमण कृष्टिनिका अधिकपना वा एकका आधिक हीनपनाकौं न गिणि संदृष्टि करी है। औसा जानना। बहुरि इस तीन प्रकार द्रव्यकरि हीन तृतीय संग्रहका आय द्रव्य औसा व। १२। २३ [२४। ओ] ≡ तहां किंचिदूनको न गिणि ताका मध्यम खंड साहित तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टि औसी व। १२ [४ ख] ताका भाग देइ अपकर्षण कीएं वा भागहारका भागहारकौं

राशि कीएं संक्रमण द्रव्यकरि वीचि वीचिमें भई नई कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । २३ / ख । २४ । ओ बहुरि इसका भाग अपनी सर्व कृष्टिनिका प्रमाणकौं दीएं संक्रमणांतर कृष्टिनिके वीचि जे कृष्टि पाइए तिनका प्रमाण ऐसा ४ / ख । २४ । ४ । २३ / ख । २४ । ओ इहां अपवर्तन कीएं वा भागहारका भागहारकौं राशि कीएं ऐसा ओ / २३ बहुरि पूर्वोक्त संक्रमणांतर कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । २३ / ख । २४ । ओ ताका भाग अवशेष आय द्रव्यकौं दीएं एक खंड होइ ताकौं तिसहीकरि गुणें अपने अवशेष आय द्रव्यमात्र संक्रमणांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य हो है। द्वितीय संग्रहविषैं आय द्रव्यके अभावतैं ऐसा द्रव्य नाहीं है। तहां शून्य जाननी। इनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभकी तृतीय सग्रह	लोभकी द्वितीय संग्रह
अधस्तन शीर्ष पूर्वविशेष द्रव्य	१— वि । ४ । ४ ख । २४ । ख । २४ । २	१— वि । ४ । ४ । ५७५ ख । २४ । ख । २४ । २
मध्यम खंड	व । १२ ४ ४ । ओ । ३ । ख । २४ ख	व । १२ । ४ । २३ ४ । ओ । ३ । ख । २४ ख
उभय द्रव्य विशेष द्रव्य	१— वि । ४ । ४ । ४७ ख । २४ । ख । २४ । २	१— वि । ४ । ४ । ५२६ ख । २४ । ख । २४ । २
संक्रमणांतरकृष्टि संबंधीसमानद्रव्य	व १२ । २३ २४ । ओ ।	०

बहुरि बंध द्रव्यविषैं विभाग कहिए है—

अंतकी बंधातर कृष्टि सहित याके ऊपरि पूर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष आदि ऐसा— वि । ४ । २३ । १ अर एक अधिक गुणहानिका सोलह्वां भागकरि हीन ड्योढ गुण-
ख । २४ । ५ । १६
३

हानिमात्र विशेष ऐसे— वि । ८ । २३ । सो उत्तर अर पूर्व सर्व कृष्टि प्रमाणकौं द्व्यर्ध गुणहानि
१६

का भाग दीएं सर्व नवीन भई बंधांतर कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४ । ८ । ३ इहां गुणहानिकी
ख । २

संदृष्टि आठका अंक है। ऐसैं स्थापि तहां संकलन घनमात्र बंधांतर कृष्टि विशेष नामा द्रव्य हो है। सो इसकी संदृष्टिके विधानका मोकौं ज्ञान न भया तातैं नाही लिख्या है। बहुरि समय प्रबद्धका अनंतवां भाग जुदा जुदा स्थापैं अवशेष किंचिदून समय प्रबद्ध ऐसा (स —) ताकौं द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र द्रव्यकौं कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं एक बंधांतर कृष्टिका द्रव्य ऐसा स १२ ताका भाग दीएं बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा
४
ख

स — इहां किंचिदून न गिणि समय प्रबद्धका अपवर्तन कीएं अर ऐसा ४ जो भागहारका
स १२ — ख
४
ख

भागहार था ताकौं राशि कीएं ऐसी नवीन निपजी कृष्टिनिका प्रमाण ४ भया बहुरि
ख । १२

याका भाग सर्व कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । २३ ताकौं दीएं ऐसा ४ । २३ इहां ऐसे का
ख । २४ — ख । २४ । ४
ख । १२

अपवर्तन कीएं ४/ख अर भागहारका भागहार ऐसा (१२) कौं राशि कीएं तहां ड्योढकरि अपवर्तन कीएं ड्योढ गुणहानि ऐसा (१२) ड्योढ गुणहानिमात्र भाज्य था ताका तौ एक गुणहानिमात्र ऐसा (८) भाज्य भया। अर चौईसका भागहार था सो सोलहका भागहार भया तब ऐसा ८।२३/१ नवीन निपजी बंध कृष्टिनिके वीचि जे कृष्टि तिनका प्रमाण हो है

बहुरि पूर्वोक्त बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४/ख।१२ ताका भाग किंचिदून समय प्रबद्ध ऐसा (स —) ताकौं दीएं एक खंड होइ। ताकौं तिसही करि गुणें बंधांतर कृष्टि संबंधी समान खंड हो है। बहुरि जो समय प्रबद्धका अनंतवां भाग जुदा राख्या था ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व बंध कृष्टि प्रमाण गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ सो सर्व बंध कृष्टि प्रमाण गच्छका संकलन धनमात्र विशेष तिस जुदा राख्या भागविषैं ग्रहणकरि स्थापना। सो इहां एक विशेष ऐसा (वि) आदि एक विशेष उत्तर अर सर्व कृष्टिनिका प्रमाणविषैं अनुभय उदय कृष्टिका प्रमाण घटाएं बंध कृष्टि हो है। सो

तिस प्रमाणकौं किंचित् जानि न गिण्या। तब बंध कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४।२३/ख।१४। इहां गच्छ में एक घटाइ ताकौं दोयका भाग देइ उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें ऐसा वि।४।२३ (१०/ख।२४।२) यामें एक विशेष आदि मिलावनेकौं एक हीनकी जायगा एक अधिक भया ताकौं न गिणि

बहुरि गच्छकरि गुणैं ऐसा वि । ४ । २३ । ४ । २३ इहां तेईस तेईसकौं परस्पर गुणि पांचसै
ख । २४ । २ । ख । २४ ।

गुणतीस कीएं अर गुण्य गुणकार आगे पीछैं लिखें ऐसा भया वि । ४ । ४ । ५२९ याका
ख । २४ । ख । २४ । २

नाम बंध विशेष है। बहुरि जुदा स्थाप्याविषैं याकौं घटाएं अवशेष समय प्रबद्धका अनंतवां भाग ऐसा स/ख ताकौं सर्व बंध कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं एक खंड होइ ताकौं तिसहीकरि गुणैं बंध मध्यम खड द्रव्य होइ। ऐसै बंध द्रव्यका विधान कह्या ताकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभाद्वितीयसंग्रह
बंधातर कृष्टि विशेषद्रव्य	वि । ४ । २३ । ४ ख । २४ । २ । ख । ८ । ३/२
बधातरसंबधी समान खंड	स — ४ ख । २४ । ख । १२
बंधविशेष खड	वि । ४ । ४ । ५२९ ख । २४ । ख । २४ । २
बंधमध्यम खंड	स । ४ । २३ ख । ४ । २३ । ख । २४ ख । २४

इहां द्वितीय संग्रह हीका बंध है। तातैं तिसहीविषैं ऐसा विधान जानना। बहुरि संक्रमण द्रव्यकरि निपजी सूक्ष्म कृष्टिनिका द्रव्यविषैं विभाग कहिए है—

सूक्ष्मकृष्टि संबंधी द्रव्य पूर्वोक्त ऐसा व । १२ । ५५३ ताकौं प्रथम समयविषैं कीनी
२४ । ओ

सूक्ष्मकृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा ४/ख ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष ऐसा (व । १२ । ५५३ । १⌒) / (२४ । ओ । ४ । १६/ख − ४/ख २) गच्छ अर संपूर्ण गच्छकौं दोय अर एकका भाग दीएं एक वार संकलन धन होइ तिहिंकरि तिस विशेषकौं गुणैं सूक्ष्मकृष्टि संबंधी विशेष द्रव्य हो है । बहुरि याकरि हीन सूक्ष्मकृष्टिका द्रव्यकौं सूक्ष्मकृष्टि प्रमाण ऐसा ४/ख का भाग दीएं एक खंड ताकौं तिसही करि गुणैं सूक्ष्मकृष्टि संबंधी समान द्रव्य हो है । तिनकी संदृष्टि ऐसी—

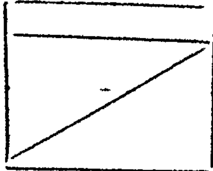
नाम	सूक्ष्मकृष्टि
विशेष द्रव्य	(व । १२ । ५५३ । ४ । ४ । १⌒) / (२४ । ओ । ४ । १६/ख − ४/ख २ । ख । ख । २)
समान खंड द्रव्य	(व । १२ । ५५३ । ४ । ४) / (२४ । ओ । ख । ख)

बहुरि सूक्ष्मकृष्टि संबंधी विशेष ऐसा (व । १२ । ५५३ । १⌒) / (२४ । ओ । ४ । १६/ख − ४/ख) याकौं दोगुणहानिकरि गुणैं

प्रथम कृष्टिका द्रव्य होइ। इस गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घटाइ एकघाटि सूक्ष्मकृष्टिमात्र घटैं अंत कृष्टिका द्रव्य हो है। इनि सवानिकी रचना ऐसी–

सूक्ष्मकृष्टि	लोभकी तृतीयसंग्रह	लोभकी द्वितीयसंग्रह
४ / ख	४ / ख / २४	४ २३ / ख २४
व १२ ५५२ १६००० व १२ ५५२ १६– ४ / १ ⁀ ; २४ ओ ४ / ख १६– ४ / ख २ / १ ⁀ २४ ओ ४ / ख १६ ४ / ख २ / १ ⁀ ख	४७	५२९

इहां अनुभागकी रचना है। तातैं आडी सहनानी करी है। तहां नीचैं सूक्ष्मकृष्टि लिखी है। ताकी समपट्टिका अर विशेष घटता क्रमकी संदृष्टिकरि नीचैं आदि अंत कृष्टिनिके द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। बहुरि ताके उपरि लोभकी तृतीय कृष्टि अर ताके उपरि द्वितीय कृष्टि लिखी है। तहां समपट्टिका पूर्व विशेष अधस्तन कृष्टि उभय द्रव्य विशेष की संदृष्टि पूर्वोक्त प्रकार करी है। बहुरि तिन कृष्टिनिके वीचि जे नवीन कृष्टि भई तिन

की संदृष्टि बीचिमें लीककरी है । तहां संक्रमण द्रव्यकरि निपजीकी तौ सूधी लीक अर बंध द्रव्यकरि निपजी कृष्टिनिकी वक्र कहिए वाकी लीक करी है । बहुरि द्वितीय कृष्टिकी जिनि पुरातन नूतन बंध कृष्टिनिविषैं बंधांतर कृष्टि विशेष बंध मध्यम खंडरूप बंध द्रव्य दीजिये है । तहां उभय द्रव्य विशेषविषैं इतना द्रव्य घटना दीया है ताकी संदृष्टि उभय द्रव्य की रचनाविषैं ऐसी  करी है । बहुरि सूक्ष्म कृष्टिकारक कालका द्वितीय स-मयविषैं प्रथम समयविषैं जेती कृष्टि कीनी तिनके असंख्यातवे भागमात्र नवीन कृष्टिकारिए है तिनकी संदृष्टि ४ तिनविषैं पूर्व कृष्टिनिके नीचैं जे कृष्टि करिए है तिनके असं-
ख ३

ख्यातवे भागमात्र ऐसी ४ अर पूर्व कृष्टिनिके वीचि करिए है ते बहुभागमात्र ऐसी ४ । ३ १—
ख ३ ३

इहां गुणकारका एक हीनपनांकौं न गिणि अपवर्तन कीएं ऐसी ४ हो है । बहुरि इस
ख ३ ३ ख ३

समयविषैं द्रव्य असंख्यात गुणा अपकर्षण करिए है । ताकी संदृष्टि ऐसी व । १२ । ५५३
२४ ओ ३

इहां असंख्यातका गुणकारकौं अपकर्षण भागहारका भाग कीया है । बहुरि याविषैं एक पूर्व विशेष आदि एक विशेष उत्तर एक घाटि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ

ऐसा ४ (ऊपर १८, नीचे व) करि तहां संकलन सूत्रके अनुसारि गच्छ अर एक अधिक गच्छकौं दोयका भाग दीएं संकलन धन हो है। सो इतने विशेषमात्र द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम अधस्तन शीर्ष विशेष है। बहुरि प्रथमसमय संबंधी सूक्ष्म कृष्टि द्रव्यकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं अर विशेष अधिक है। तिनिकौं न गिणैं तिनकी जघन्य कृष्टि का द्रव्य ऐसा व। १२ (नीचे २४। ओ। ४) ताकौं द्वितीय समयविषैं पूर्व कृष्टिनिके नीचैं करी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ (नीचे व) ताकरि गुणैं नीचैं निपजाईं अपूर्व कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य हो है। (व। ३। ३)

बहुरि ताहीकौं वीचि करी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ (नीचे व। ३) ताकरि गुणैं वीचि निपजाईं अपूर्व कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य हो है बहुरि प्रथम द्वितीय समय संबंधी सूक्ष्म कृष्टिका द्रव्यकौं मिलाय ताकौं प्रथम द्वितीय समय संबंधी सर्व सूक्ष्म कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं एक उभय विशेष होइ ताकी संदृष्टि ऐसी [वि] ताकौं प्रथम समय संबंधी कृष्टि प्रमाणविषैं द्वितीय समय संबंधी कृष्टि प्रमाण मिलावनेकौं अधिककी संदृष्टि कीएं गच्छ ऐसा ४ (नीचे वि) ताकरि अर एक अधिककरि गुणि दोयका भाग दीएं संकलन धनमात्र उभय विशेष द्रव्य हो है। बहुरि इस च्यारि प्रकारका द्रव्य घटावनेकौं सर्व द्रव्यके आगैं किंचिदूनकी संदृष्टिकरि ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि प-

माण ऐसा $\frac{४}{ख}$ ताका भाग दीएं एक खंड होइ। याकौं तिसही गच्छकरि गुणें सर्व मध्यम खंड द्रव्य हो है। ऐसें द्वितीय समयविषैं सूक्ष्म कृष्टि संबंधी द्रव्यविषैं पांच प्रकार द्रव्य कहे तिन की संदृष्टि ऐसी—

नाम	द्रव्य
अधस्तन शीर्ष	वि । ४ । ४ (१–) / ख । ख । २
अधस्तन कृष्टि समान खंड	व । १२ । ५४३ । ४ / २४ । को । ४ । ख २ ३ / ख
मध्यम अपूर्व कृष्टि समान खंड	व । १२ । ५४३ । ४ / २४ । को । ४ । ख २
उभय द्रव्य विशेष	वि । ४ । ४ (१–) / ख ख २
मध्यम खंड	व । १२ । ५४३ = ४ / २४ को ४ ख / ख

बहुरि बादर कृष्टि संबंधी च्यारि प्रकार संक्रमण द्रव्य अर द्वितीय कृष्टिविषैं च्यारि प्रकार बंध द्रव्य अर तीन प्रकार घात द्रव्य देनेका पूर्ववत् विधान जानना। इहां तिनकी रचना ऐसी—

अपूर्व अधस्तनकृष्टि	पूर्व अपूर्व सूक्ष्मकृष्टि	तृतीयसंग्रह	द्वितीयसंग्रह
४ ख a a			

इहां पहलैं द्वितीय समयविषैं नवीन करी नीचली कृष्टिनिकी रचना करी। ताके ऊपरि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिकी रचना करी । तहां समपाट्टिका पूर्व विशेष अधस्तन कृष्टिकी रचना करी। अर वीचि वीचि नवीन भई कृष्टिनिकी ऊभी लीककी सहनानी करी बहुरि तिन दोऊ रचनानिके मध्यम खंड अर उभय द्रव्य विशेषकी समरूप क्रम हीन

रूप सहनानी करी । बहुरि ताके उपरि तृतीय द्वितीय संग्रहकी रचना करी ताका विधान प्रथम समयवत् जानना । औसैं ही आडी रचना इहां करी है । बहुरि औसैं ही सूक्ष्म कृष्टिकारक का तृतीयादि अनिवृत्तिकरणका अंतसमय पर्यंत विधानकी रचना यथासंभव जाननी । बहुरि ताके अनंतरि सूक्ष्म सांपराय हो है । तहां प्रथम समयविषैं सर्व मोहनीयका सत्त्व द्रव्य औसा स । a । १२ इहां उत्कृष्ट समय प्रबद्धकौं द्व्यर्ध गुणहानिकरि गुणैं सर्व सत्त्व द्रव्य होइ
७

ताकौं सातका भाग दीएं मोहका सत्त्व द्रव्य जानना । याकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य औसा स a । १२ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक
७ ओ

भाग औसा स । a । १२ ताकौं सूक्ष्म सांपरायका कालतैं किछू अधिक जो अवस्थित गुण-
७ । ओ प
a

श्रेणि आयाम ताविषैं गुणकार क्रमकरि देना । तहां अंक संदृष्टि अपेक्षा पिच्यासीका भाग ताकौं देइ एककरि गुणैं प्रथम निषेकविषैं चौसठिकरि गुणैं अंत निषेकविषैं दीया द्रव्य हो है ।

बहुरि बहुभाग औसैं स a । १२—प इहां गुणकारविषैं एक हीनकौं न गिणि पल्यके असंख्या-
७ । ओ । प a
a

तवे भागका अपवर्तन कीएं औसा स a । १२ बहुरि अंतरायामका प्रमाण संख्यात गुणा
७ । ओ

अंतर्मुहूर्तमात्र औसा २ १ । ४ यातैं संख्यात गुणा स्थिति कांडकायाम औसा २ १ । ४ । ४

यातैं संख्यात गुणी कांडकके नीचैं अवशेष रही स्थिति सो ऐसी २ १। ४ । ४ । ४ इहां गुणकारनिकौं परस्पर गुणैं कांडकायाम ऐसा २ १ । १६ अर अवशेष स्थिति ऐसी— २ १। ६४ इनिकौं मिलाएं द्वितीय स्थितिका प्रमाण ऐसा २ १। ८० याकौं अंतरायाम का भाग दीएं वीस पाए ताका भाग तिस बहुभागकौं देइ च्यारितो अंतरायामविषैं दीएं तिनकी संदृष्टि ऐसी स । ३ । १२ । ४ अर सोलह भाग प्रमाण द्रव्य द्वितीय स्थितिविषैं
७ । ओ । २०

दीया ताकी संदृष्टि ऐसी स ३ । १२ । १६ इहां यथा योग्य संख्यातकी सहनानी च्यारिका
७ । ओ । २०

अंककरि ऐसी संदृष्टि करी है। बहुरि अपना अपना द्रव्यकौं अपना अपना आयाममात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ। ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेकविषैं अर तिस गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घटाइ एक घाटि अपने गच्छमात्र घटैं अंत निषेकविषैं दीया द्रव्य हो है। इहां अंतरायामका गच्छ ऐसा २ १। ४ अर द्वितीय स्थितिका गच्छ ऐसा २ १। ८० जानना। तहां द्वितीय स्थितिविषैं अंतकी अतिस्थापनावलीविषैं द्रव्य दीजिए है। तातैं तिस गच्छविषैं इतना घाटि है। तथापि ताकौं किंचित् जानि संदृष्टिविषैं नाहीं गिन्या है। इनकी संदृष्टि ऐसी—

सूक्ष्मसांपराय प्रथम कांडक प्रथम समय रचना

इहां नीचें गुणश्रेणि आयामकी क्रम अधिक रूप उपरि अंतरायामकी ताके उपरि द्वितीय स्थितिकी क्रम हीन रूप संदृष्टि करि तहां आदि अंत निषेकाविषैं दीया द्रव्य आगे

लिख्या है। मध्य निषेकनिकी बिंदी सहनानी करी है। इनिके उपरि अतिस्थापनावलीकी सहनानी च्यारिका अंक कीया है। अर इहां अंतरायामविषैं पूर्वें द्रव्यका अभाव था नवीन ही द्रव्य दीया तातैं दो बडी लीक करी। द्वितीय स्थितिविषैं पूर्वें द्रव्य था नवीन ही दीया तातैं दो बड़ी लीक करी। बहुरि द्वितीयादि समयविषैं भी ऐसा क्रम जानना।

बहुरि प्रथम स्थितिकांडककी अंत फालिका पतनसमयविषैं विधान कहिए है—द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकविषैं एक घाटि द्वितीय स्थितिमात्र विशेष घटाएं चरम फालिका अंत निषेक ऐसा स। ३। १२ इहां सत्व द्रव्यकौं द्वितीय स्थितिका भाग दीएं मध्य निषेक हो
७। २ ९। ४। २०
है। ताविषैं जो विशेष हीन है तिनकौं द्रव्यका प्रमाण किंचित जानि नाही गिन्या है बहुरि ताकौं अंतरायाममात्र जो चरम फालिके निषेकनिका प्रमाण ताकरि गुणैं चरम फालिका सर्व द्रव्य ऐसा स। ३। १२। २ ९। ४। ४ इहां विशेष अधिक है तिनिका द्रव्यकौं कि-
७। २ ९। ४। २०
चित जानि नाही गिन्या है। इहां ऐसैं २ ९। ४ का अपवर्तन कीएं ऐसा स। ३। १२। ४
७। २०
याविषैं गुणश्रेणिके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य मिलावना ताकौं किंचित् जानि संदृष्टिविषैं नाही गिन्या है। बहुरि याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग ऐसा—स। ३। १२। ४ गुणश्रेणि आयामविषैं पूर्वोक्त प्रकार क्रमरूप देना। बहुरि बहुभाग ऐसा
७। २०। प
३
८२

स। a। १२। ४। प (ऊपर: १—; नीचे: ७। २०। प a / a) इहां गुणकारविषैं एक हीनकौं न गिणि पल्यके असंख्यातवे भागका अपवर्तन कीएं ऐसा स। a। १२। ४ (नीचे: ७। २०।) याविषैं अंतरायामविषैं दीया द्रव्य ऐसा स a। १२। ३० (नीचे: ७। २०। १७) अर द्वितीय स्थितिविषैं दीया द्रव्य ऐसा स a। १२। ३। १३ (नीचे: ७। २०। १७) इनि दीए दोऊ द्रव्यनिविषैं ऐसा गुणकार भागहार कैसैं भया ताका मोकौं नीकैं ज्ञान नाहीं भया तातैं विधान नाही लिख्या है। बहुरि अंतरायामका गच्छ ऐसा २ १। ४ अर कांडक घात इहां संपूर्ण भया तातैं कांडकायाम सहित अवशेष द्वितीय स्थितिका गच्छ ऐसा २ १। ४। ४ सो अपने अपने गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेक इस गुणकारविषैं एक घाटि गच्छ घटाएं अंत निषेक हो है। इनकी रचना ऐसी—

सूक्ष्मसांपरायविषै प्रथमकांडक अन्तफालि पतनसमय रचना ।

अतिस्थापनावली

४

स ∂ १२ । ३ । १६ । १६–२७ृ ६४
७ २० १७ २७ृ ६४ १६— २७ृ ६४ / २

द्वितीयस्थितिः

स ∂ १२ ३ १६ १६ १
७ २० २७ृ ६४ १६— २७ृ ६४ / २

अंतरायाम

स ∂ १२ २० १६— २७ृ ४
७ २० २७ृ ४ १६— २७ृ ४ / २

स ∂ १२ २० १६ १
७ २० २७ृ ४ १६— २७ृ ४ / २

गुणश्रेणि

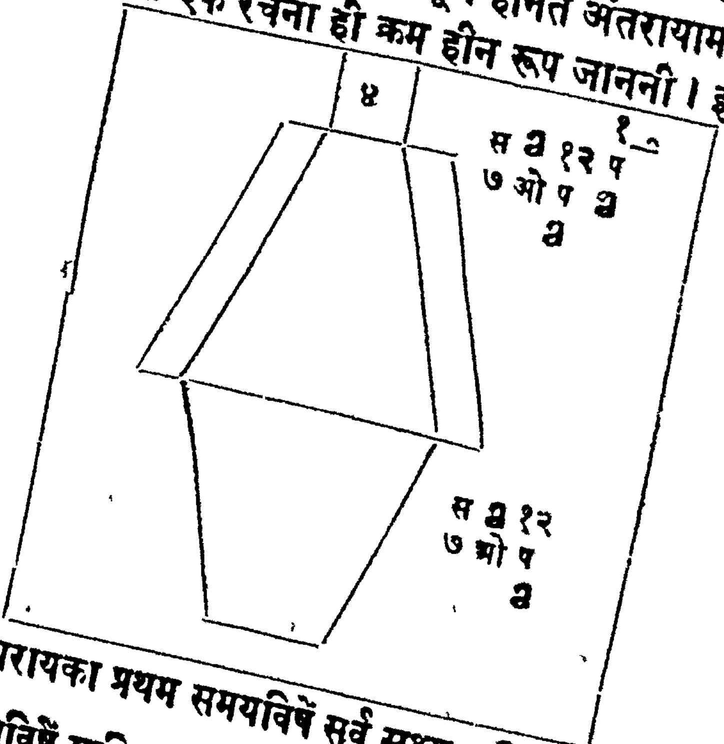
स ∂ १२ ४ ६४
७ २० ८५

०
०

स ∂ १२ ४
७ २० ८५

इहां रचना पूर्वोक्त प्रकार जाननी । अंतरायामविषैं पूर्वै भी द्रव्य था तातैं इहां दो खडी लीक करी हैं । बहुरि द्वितीय कांडकका प्रथम फालि पतन समयविषैं सर्व द्रव्यकौं अप-

कर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसा स । ə । १२ द्रव्य आहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां
७ । ओ
भागका भाग देइ एक भाग गुणश्रेणि आयामविषैं बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं अतिस्थापनावली छोड दीजिए है। इहां अंतरायाम पूर्ण होनेतैं अंतरायाम अर द्वितीय स्थितिका एक गोपुच्छ भया। तातैं एक रचना ही क्रम हीन रूप जाननी। इनिकी संदृष्टि ऐसी—



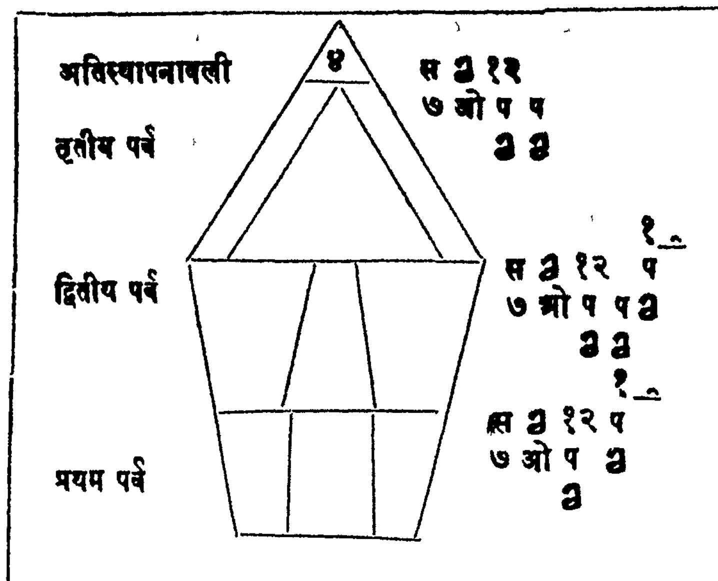
बहुरि सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषैं सर्व सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रथम समयविषैं कीनी सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाणविषैं साधिक कीएं ऐसा ४ ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका

भाग दीएं बहुभागमात्र मध्य कृष्टि उदय रूप हो हैं। एक भागकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पांचका भाग देइ तहां दोय भागमात्र नीचली तीन भागमात्र उपरिकी कृष्टि अनुदय रूप हो हैं। बहुरि द्वितीयादि समयनिविषैं नीचली कृष्टि नवीन उदय रूप भई। ऊपरिली कृष्टि नवीन अनुदय रूप भई। तिनिका प्रमाण पूर्वं नीचली ऊपरली अनुदय कृष्टिनिकैं असंख्यातवां भागमात्र क्रमतैं है। मध्य उदय कृष्टि किंचित हीन क्रम लीएं है । तिनकी संदृष्टि ऐसी—

	अनुदय	उदय	अनुदय
	० ० ० ०		
तृतीय	२ / a a	४ ≡ / ख	३ / a a
द्वितीय	२ / a	४ = / ख	३ / a
प्रथम	। / ४ २ / ख । प ५ / a	। १ — / ४ प / ख a प / a	। / ४ ३ / ख प ५ / a

इहां क्रम हीन रूप प्रथमादि समयनिविषैं उदय आवने योग्य प्रथमादि निषेक तिनकी

ऊर्ध्व रचनाकरि तहां प्रथमादि निषेकनिविषैं नीचली अनुदय मध्यकी ऊपरली अनुदय कृष्टिनिकी आडी रचना करी है। अर तिनिका प्रमाण लिख्या है। तहां द्वितीयादि निषेकनिविषैं नीचली ऊपरली कृष्टिनिविषैं दोय तीन भाग थे तिनकी संदृष्टि दोय तीनका अंककरि ताकौं क्रमतैं एक दोय आदि वार असंख्यातका भाग देइ नवीन उदय अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण लिख्या है। वीचिमैं सर्व कृष्टिनिकौं दोय तीन आदि करि किंचिद्की सहनानीकरि उदय कृष्टिनिका प्रमाण लिख्या है ऐसा जानना। बहुरि सूक्ष्म सांपरायका अंतकांडका द्रव्य ऐसा—स ३ । १२ इहां किंचित् ऊन है ताकौं न गिण्या है। याकौं अपकर्षण
७
भागहारका भाग दीएं ऐसा—स । ३ । १२ प्रथम फालिका द्रव्य हो है। याकौं पल्यका असं-
७ । ओ
ख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग सूक्ष्मसांपरायका अंतसमयपर्यंत गुणकार क्रमकरि दीजिए है। इहां यहु गुणश्रेणि शीर्ष है। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग पुरातन गुण श्रेणिका अंतपर्यंत विशेष घटता क्रमकरि दीजिए है बहुरि अवशेष एक भाग ताके उपरि स्थितिविषैं अतिस्थापनावली छोडि विशेष घटता क्रमकरि दीजिए है। ऐसैं तीन पर्वनिविषैं द्रव्य दीजिए है ताकी रचना ऐसी—



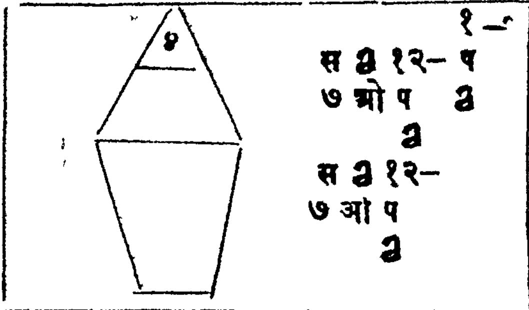
इहां नीचैं अधिक क्रमरूप पुरातन गुणश्रेणिकी रचनाकरि तात्रिषैं दीया द्रव्यकी दूसरी लीक नीचैं प्रथम पर्वकी अधिक क्रमरूप ताके उपरि द्वितीय पर्वकी क्रमहीनरूप संदृष्टि करी है। बहुरि ताके उपरि तृतीय पर्वका पुरातन नवीन द्रव्यकी दोऊ लीक क्रमहीन रूप करी हैं। इनके आगें दीया द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। उपरि अतिस्थापनावली लिखी है ऐसा जानना। बहुरि ऐसैं ही द्वितीयादि फालिविषैं विधान जानना। बहुरि अंतफालिका द्रव्य किंचिदून द्व्यर्धगुणहानि गुणित समय प्रवद्ध प्रमाण ऐसा स। ə। १२ ताकौं पल्यका असंख्यात वर्गमूलमात्र असंख्यातका भाग देइ एक भागमात्र ताकौं सूक्ष्मसांपरायका द्वि-

चरम समय पर्यंत प्रथम पर्वविषैं असंख्यातगुणा क्रमकरि देना। तहां ताकौं अंक संदृष्टि करि पिच्यासीका भाग देइ एक च्यारि सोलह चौंसठिकरि गुणैं प्रथमादिनिषेक हो हैं। बहुरि बहुभाग सूक्ष्मसांपरायका अंत समय संबंधी निषेकविषैं दीजिए है। यह दूसरा पर्व है इनकी संदृष्टि रचना ऐसी—

द्वितीयपर्व ०	स a १२ — मू a / ७ मू a ; १ ^
प्रथमपर्व	स a १२ — ६४ / ७ a ८५
	स a १२ — १६ / ७ a ८५
	स a १२ — ४ / ७ a ८५
	स a १२ — १ / ७ a ८५

इहां नीचैं प्रथम पर्वकी अधिक क्रम रूप संदृष्टि करी है। ताके आगैं प्रथमादि निषेकका द्रव्य लिख्या है। ताके उपरि एक निषेक वडा लिख्या है। ताके आगें तहांही दिया द्रव्य लिख्या है ऐसैं कृष्टि वेदनाधिकारका विधानविषैं संदृष्टि जाननी। बहुरि क्षीणकषायविषैं छह कर्मनिविषैं विवक्षित एक कर्मका सत्त्व द्रव्य ऐसा स। a/७। १२ ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भाग गुणश्रेणि आयाम

विषैं गुणकार क्रमकरि बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं अतिस्थापनावली छोडि विशेष घटता क्रमकरि देना तिनकी संदृष्टि ऐसी—



बहुरि निद्रादिक चौदह घातियानिका अंतकांडकविषैं प्रथमादि फालिनिका वा अंत फालिका द्रव्य देनेका विधान जैसैं सूक्ष्म सांपरायविषैं मोहका कह्या तैसैं ही जानना। तिनकी रचना पूर्वोक्त प्रकार ऐसी—

निद्रादिक प्रथमादिफालि	चौदह घातियानिकी प्रथमादिफालि	निद्रादिककी अंतफालि	चौदह घातियानिकी अन्तफालि
४	४	०	०

बहुरि तीन वेद च्यारि कषायनिविषैं एक सहित चढनेकी अपेक्षा क्षपक जीव बारह प्रकार हैं। तहां पुरुष वेद क्रोध सहित चढनेवालेकैं नपुंसक स्त्री सात नोकषाय क्षपणा अश्वकरण कृष्टिकरण क्रोध मान माया लोभ क्षपणा क्रमतैं हो है बहुरि मान माया लोभ सहित चढ्याकैं नोकषाय क्षपणा पर्यंत तौ समान है पीछैं क्रोधकी अर क्रोध मानकी अर क्रोध

मायाकी क्रमतैं क्षपणा हो है। पीछैं अश्वकरण कृष्टिकरण हो है पीछे क्रमतैं अवशेष कषायनि-की क्षपणा हो है बहुरि अंतकरण पीछैं कृष्टि करण पर्यंत तौ जिस कषाय सहित चढ्या ताकी प्रथम स्थिति स्थापै है । पीछैं अवशेष कषायनिकी जुदी जुदी प्रथम स्थिति स्थापै है सो प्रथम स्थिति गुणश्रेण्यायाम रूप है तातैं तिनकी अधिक क्रम रूप रचना जाननी। बहुरि नपुंसक स्त्रीवेद सहित चढ्या जीवकैं स्त्रीवेदका क्षपणा कालविषैं दोऊ वेदनिकी क्षपणा हो है। इहां जिस वेद सहित चढ्या ताहीकी प्रथम स्थिति स्थापै है। ऐसा जानना। ऐसैं ए नव कालके प्रत्येक यथायोग्य अंतर्मुहूर्तमात्र जानने तिनकी संदृष्टि रचना ऐसी—

२७				लो ख	लो ख	लो ख	लोख
२७				या ख	या ख	या ख	कि का
२७				मा ख	मा ख	कि का	अस्स
२७				को ख	कि का	अस्स	या ख
२७				कि का	अस्स	मा ख	मा ख
२७				अस्स	को ख	को ख	को ख
२७			नो ७	नो ७	नो ७	नो ७	नो ७
२७	न इ	न इ	इ	इ	इ	इ	इ
२७	न	म	न	न	न	न	न
	न	इ	स्त्री	को	मा	या	लो

इहां इनका प्राकृत नामका आदि अक्षरकी संदृष्टि जाननी। बहुरि अवशेष तीन

घाति कर्मनिका नाशकरि सयोग केवली हो है। तहां प्रथमादि समयविषैं आयुविना तीन घातियानिका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ उदयादि गुणश्रेणि आयामविषैं गुणकार क्रमकरि उपरितन स्थितिविषैं विशेष घटता क्रमकरि आतिस्थापनावली छोड दीजिए है। ताकी संदृष्टि सुगम है। इहां स्वस्थान केवलीतैं आवर्जित करणविषैं अपकर्षण द्रव्य असंख्यात गुणा, गुणश्रेणि काल संख्यातवे भागमात्र जानना। बहुरि दंड कपाट प्रतरलोक पुरणविषैं स्थिति सत्व घात कीया ताका प्रमाण दंडविषैं पल्यका असंख्यातवां भागकौं असंख्यातका भाग देइ बहुभागमात्र अर कपाटविषैं अवशेष एक भागकौं तैसैं ही भाग देइ बहुभागमात्र बहुरि प्रतरविषैं अवशेष एक भागकौं तैसैं ही भाग देइ बहुभागमात्र अर लोकपूरणविषैं अवशेष एक भाग संख्यात गुणा अंतर्मुहूर्तकरि हीन जानना। ऐसैं समय समय घात भएं अवशेष स्थिति संख्यात गुणा अंतर्मुहूर्तमात्र रहै है। ताका संख्यात बहुभाग आयाम रूप कांडक विधानकरि क्रमतैं घात कीएं आयुके समान तीन घातियानिकी अंतर्मुहूर्तमात्र स्थिति रहै है ताकी संदृष्टि ऐसी—

	तीनघातिया	तीनघातिया	आयु
दंड कपाट प्रतर लोकपूरण	१ ॰ प ३ ३ ३ १ ॰ प ३ ३ ३ ३ १ ॰ प ३ ३ ३ ३ ३ प २ ११ ३ ३ ३ ३ २ ७ ७	२७ २७ ७	२ ७

इहां क्रम हीन रूप निषेकनिकी संदृष्टि रचना जाननी। बहुरि सयोगी जिनकैं पूर्व स्पर्धक अपूर्व स्पर्धक सूक्ष्म कृष्टि रूप योग अनुक्रमतैं हो हैं। तहां एक जीव प्रदेशविषैं असंख्यात लोक प्रमाण अविभाग प्रतिच्छेद हैं। याहीका नाम वर्ग है ताकी संदृष्टि ऐसी [व] बहुरि समान अविभाग प्रतिच्छेद लीएं वर्गनिका समूह रूप वर्गणा ताविषैं वर्गनिका प्रमाण असंख्यात जगत्प्रतर प्रमाण है। बहुरि वर्गणा समूह रूप एक स्पर्धक तीहिविषैं वर्गणा श्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र है। याहीका नाम वर्गणा शलाका है। याकी संदृष्टि च्यारिका अंक है। बहुरि स्पर्धक समूह रूप गुणहानि तीहिविषैं स्पर्धकनिका प्रमाण असंख्यात है

याहीका नाम स्पर्धक शलाका है। ताकी संदृष्टि नवका अंक है (९) बहुरि गुणहानि समूहरूप एक स्थान तीहिविषैं गुणहानिका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र है। याहीका नाम नानागुणहानि है। ताकी संदृष्टि ऐसी (ना) ऐसैं जघन्य स्थान हो है। इनके प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी जाननी—

अवि	वर्ग	वर्गणा	स्पर्धक	गुणहानि	नानागुणहानि
≡	≡ a	a	a a	प a	१

बहुरि स्थान स्थान प्रति सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग प्रमाण मात्र जघन्य स्पर्धक बंधे है। ऐसैं उत्कृष्ट परिणाम योग पर्यंत क्रम है ऐसैं पूर्वस्पर्धकविषै विधान है। तहां पूर्वस्पर्धकका जघन्य वर्गके आविभाग प्रतिच्छेदनिकी संदृष्टि ऐसी (व) याकौं स्पर्धक शलाका अर नाना गुणहानिकरि गुणै अंत स्पर्धकका प्रथम वर्गकी संदृष्टि होइ। तामैं अंक संदृष्टि अपेक्षा वर्गणा शलाकाका प्रमाण च्यारि तामैं एक घटाएं तीन होइ सो अधिक कीएं पूर्व स्पर्धकका उत्कृष्ट वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनिकी संदृष्टि ऐसी— व। ९। ना ३— बहुरि इनके नीचैं अपूर्वस्पर्धक हो है तिनका प्रमाण स्पर्धकशलाकाकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र हो है सो ऐसा — $\frac{९}{ओ\ a}$ याका उत्कृष्ट वर्गविषै आविभाग प्रतिच्छेद पूर्वस्पर्धकका जघन्य वर्गके असंख्यातवे भागमात्र है सो ऐसा $\frac{व}{a}$ याकौं अपूर्व स्पर्धक प्रमाणका भाग अपूर्वस्पर्धकके जघन्यवर्गका अविभाग प्रतिच्छेद हो है। सो

ऐसा—व ९ बहुरि सर्व प्रदेशनिकौं द्व्यर्ध गुणहानिका भाग दीएं पूर्वस्पर्धककी प्रथम
a ओ a

वर्गणाका द्रव्य हो है। याकौं दोगुण हानिका भाग दीएं एक विशेष हो है। बहुरि प्रथम-वर्गणातैं द्वितीयादि अंतवर्गणा पर्यंत एक एक विशेष घटता द्रव्य प्रथम गुणहानिविषैं हो है। बहुरि द्वितीयादि गुणहानिविषैं आधा आधा क्रम अंत गुणहानि पर्यंत जानना। बहुरि आदि वर्गणाकौं द्व्यर्द्ध गुणहानिकरि गुणें सर्व प्रदेश प्रमाण ऐसा (व १२) ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भागमात्र द्रव्य ग्रहि ताकौं अपूर्व पूर्व स्पर्धकनिविषैं यथा योग्य दीजिए है। इनकी संदृष्टि यथासंभव जानि लेनी। पूर्व अपूर्वस्पर्धकनिकी रचना ऐसी—

पूर्वस्पर्धक ९ ना अपूर्वस्पर्धक ९ ओ a			३— व ९ ना यहां द्रव्यकी संदृष्टि यथा संभव जाननी व व a व ९ a ओ a

इहां रचना ऊभी लीक करी है । बहुरि द्वितीय समयविषैं प्रथम समयतैं असंख्यात गुणा द्रव्य अपकर्षण करे है सो ऐसा—व १२ इहां गुणकारकौं भागहारका भागहार कीया
ओ
a

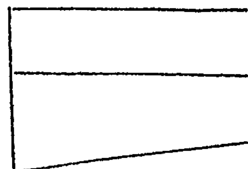
है। बहुरि प्रथम समयविषैं कीने अपूर्वस्पर्धकनिके नीचैं नवीन अपूर्वस्पर्धक करिए है । तिनका प्रमाण प्रथम समय संबंधी स्पर्धकनिके असंख्यातवे भागमात्र है सो ऐसा—९ इहां
a a a

संदृष्टि रचना ऐसी—

९ ना	पूर्वस्पर्धक			३— व ९ ना व व a व ७ ६ ओ a व । ६ a। ओ । a।a
९ ओ a	प्रथमसमयअपूर्व स्पर्धक			
९ ओ a a	द्वितीयसमयअपूर्व स्पर्धक			

इहां सर्व स्पर्धकनिकी वर्गणाकी संदृष्टिविषैं समपट्टिका करि आगैं विशेष घटता क्रम की संदृष्टि करी है । तहां उपरि पूर्व स्पर्धक नीचैं प्रथम समयविषैं कीने, अपूर्व स्पर्धक नीचैं द्वितीय समयविषैं कीने। अपूर्व स्पर्धककी रचना जाननी । ऐसैं ही अपूर्वस्पर्धक करणकाल

का अंत समय पर्यंत जानना। बहुरि कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषैं सर्व पूर्व अपूर्व स्पर्धक संबंधी जीव प्रदेश ऐसे—व १२। इनिकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र ऐसा व। १२। आहि प्रथम समयविषैं कीनी प्रथमादि कृष्टिनिविषैं अर अपूर्व स्पर्धककी प्रथ-
ओ
मादि वर्गणानिविषैं द्रव्य दीजिए है। इहां कीनी कृष्टिनिका प्रमाण वर्गणा शलाकाके अ-संख्यातवे भागमात्र ऐसा ४ इनकी रचना ऐसी—
a



इहां कृष्टिकी समपट्टिकारूप संदृष्टिकरि नीचैं विशेष घटता क्रमकी संदृष्टि करी है बहुरि द्वितीय समयविषैं पूर्व द्रव्यतैं असंख्यातगुणा द्रव्य ऐसा व। १२ आहि ताकौं प्रथम समय
ओ
a
विषैं कीनी कृष्टि प्रमाणकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र ऐसा ४ तिनके नीचैं नवीन कृष्टि करै है। तिनविषैं अर प्रथम समय संबंधी प्रथम कृष्टिकौं
aa
आदि देय अंत कृष्टि पर्यंत कृष्टिनिविषैं निक्षेपण करै है। इनकी रचना ऐसी—

इहां नीचें नवीन कृष्टिनिकी उपरि पुरातन कृष्टिकी संदृष्टि करी है। तहां पुरातन कृष्टिविषैं समपाट्टिका अर विशेष घटता क्रमकी संदृष्टि करी है। बहुरि पुरातन कृष्टिविषैं अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य दीएं सर्वकृष्टिकी समपट्टिका भई ताकी सर्व कृष्टिनिविषैं मध्यम खंड द्रव्य दीएं समपाट्टिका रही ताकी अर उभय द्रव्य विशेष द्रव्य दीएं विशेष घटतौं क्रम भया ताकी रचना करी है। इहां ऐसैं आडी रचना करी है। बहुरि इहां प्रथम समयविषैं प्रथम द्रव्य ऐसा व । १२ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं कृष्टि संबंधी द्रव्य ऐसा
ओ
व । १२ अवशेष बहुभागमात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिविषैं दीजिए है। बहुरि कृष्टिसंबंधी
ओ a
a
द्रव्यकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा ४ ताका अर किंचिदून दोगुण
a

हानि ऐसा १६— ताका भाग दीएं प्रथम समय संबंधी विशेष होइ सो ऐसा व । १२ ताकौं
ओ प ४ १६—
a a
दोगुणहानि करि गुणैं प्रथमवर्गणा ऐसी व । १२ । १६ ताकौं द्वितीय समयविषैं कीनी
ओ प ४ १६—
a a
कृष्टि प्रमाण ऐसा—४ ओ a । ताकरि गुणैं अधस्तन कृष्टिका द्रव्य हो है । बहुरि प्रथम समय संबंधी विशेष ऐसा—व । १२ ताकौं एक घाटि प्रथम समय संबंधी कृष्टि प्रमाण गच्छ अर
ओ प ४ १६—
a a
तातैं एक अधिक प्रमाणकौं दोयका भाग दीएं तिस गच्छका संकलन धन होइ सो ऐसा—
४ । ४ याकरि गुणैं अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य हो है । बहुरि द्वितीय समयविषैं द्रव्य ऐसा
a a २
व १२ ओ इहां भागहारका भागहारकौं राशिका गुणकार कीएं ऐसा व १२ । a याकौं
a ओ
पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं कृष्टि संबंधी द्रव्य ऐसा व । १२ । a याविषैं प्रथम
ओ प
a
समय संबंधी कृष्टि संबंधी द्रव्य मिलावनेकौं आगिला असंख्यातका गुणकार उपरि एक अधिक कीएं उभय संबंधी कृष्टि द्रव्य ऐसा व । १२ a याकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि
ओ । प
a

प्रमाण विषैं द्वितीय समय संबंधी कृष्टि मिलावनेकौं साधिक कीएं उभय समय संबंधी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा ४ ताका अर किंचिदून दोगुणहानिका भाग दीएं उभय द्रव्य विशेष ऐसा व १२ ३ (१– ३) याकौं उभयकृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ अर तातैं एक अधिक प्रमाणकौं

ओ ५ ४ १६–
३ ३

दोयका भाग दीएं तिस गच्छका संकलन घन ऐसा ४ । ४ (३ । ३ । २) ताकरि गुणैं उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। बहुरि द्वितीय समय संबंधी द्रव्यविषैं पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेकी आगैं ऐसी (≡) संदृष्टि कीएं अवशेष द्रव्य ऐसा व । १२ । ३ । ≡ (ओ । ५ / ३) याकौं उभय संबंधी कृष्टिनिका भाग दीएं एक खंड होइ। ताकौं तिस ही करि गुणैं सर्व मध्यम खंड द्रव्य हो है। इनकी संदृष्टि ऐसी–

अधस्तन कृष्टि	व । १२ । १६ । ४ ओ प । ४ । १६ — a । ओ a a a
अधस्तन शीर्ष	१ ⌒ व । १२ । ४ । ४ ओ । प । ४ १६ — a a । २ a a
उभय द्रव्य विशेष	१ ⌒ १ ⌒ व । १२ । a । ४ । ४ ओ । प । ४ । १६ — a a । २ a a
मध्यम खंड	। व । १२ । a ≡ । ४ ओ । प । ४ a a a

बहुरि अंत कृष्टि करण कालका तृतीयादि समयनिविषैं यथा संभव रचना जाननी। इहां अपूर्व स्पर्धकनिका वा सूक्ष्म कृष्टिका विधान अनिवृत्तिकरणवत् जानना। तहां कर्मपरमाणूनिविषैं अनुभाग शक्ति अपेक्षा कथन है। इहां जीव प्रदेशनिविषैं योग शक्तिका निरूपण है तहां प्रमाणादिकका विशेष है सो विशेष जानना। बहुरि कृष्टि वेदक कालका प्रथम समयविषैं विधान कहिए है—

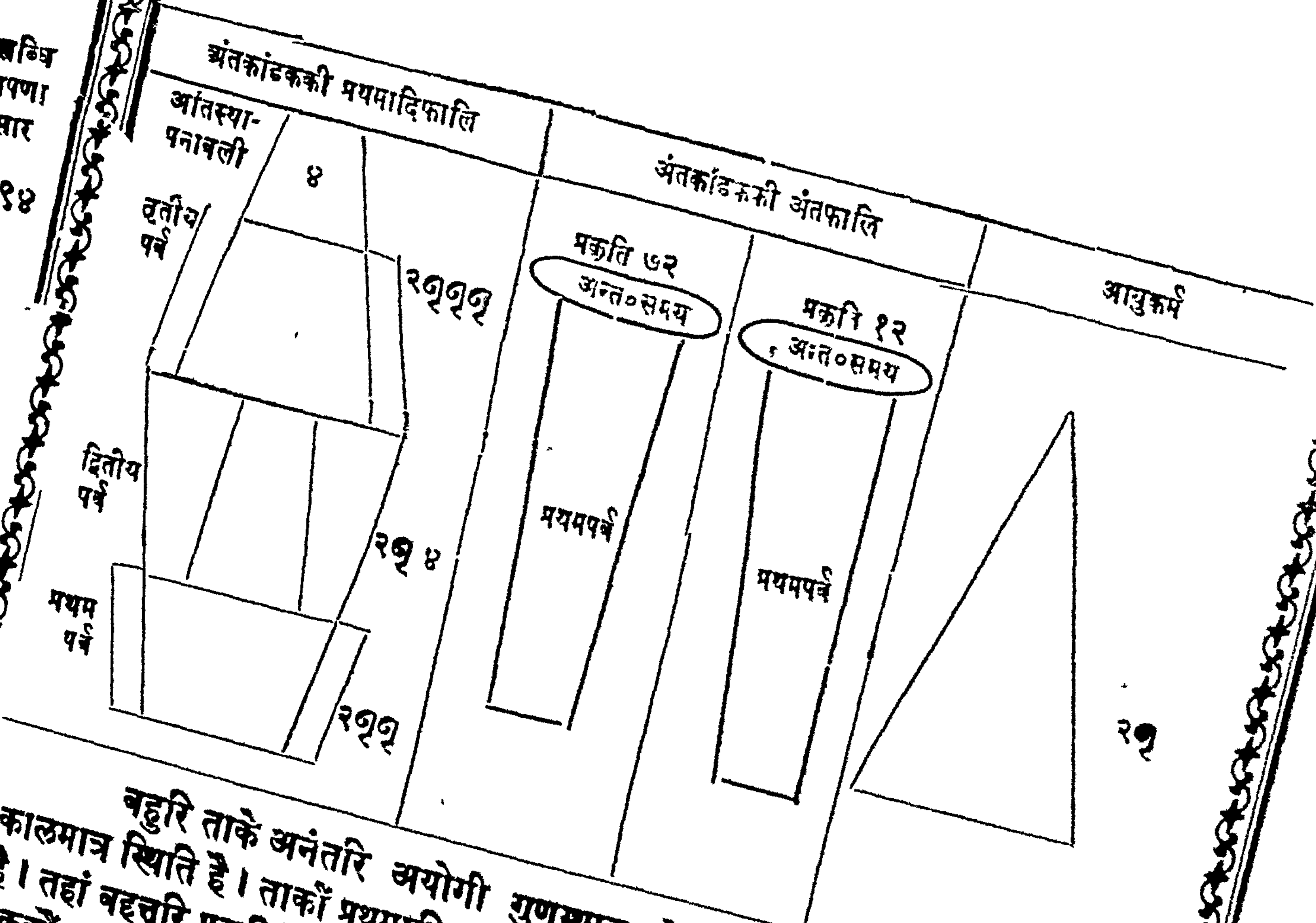
कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाणविषैं अन्य समयविषैं कीनी

कृष्टि प्रमाण मिलावनेकौं अधिककी संदृष्टि कीएं सर्व कृष्टि प्रमाण ऐसा ४/a ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग ऐसा ४/a । प/a १० प/a वीचिकी उदय कृष्टिनिका प्रमाण है बहुरि एक भाग ऐसा ४/a । प/a ताकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पांचका भाग देइ दोय भागमात्र नीचेकी तीन भागमात्र ऊपरिकी अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण जानना। बहुरि द्वितीय समय विषैं नीचेकी अनुदय कृष्टिनिविषैं तिनके असंख्यातवे भागमात्र उदय रूप हो हैं । अर उपरिकी अनुदय कृष्टिनिविषैं तिनके असंख्यातवे भागमात्र उदय कृष्टि हैं । ते अनुदय रूप हो हैं। ऐसैं ही तृतीयादि समयनिविषैं विधान जानना। इस सूक्ष्म कृष्टि वेदक काल-विषैं सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती शुक्लध्यान हो है। ताकी संदृष्टि ऐसी—

	० ० ०		
द्वितीयसमय	अनुदय	उदय	अनुदय
	। ४ २ a a प ५ a	४=	। ४ ३ a a प ५ a a
प्रथमसमय	अनुदय	उदय	अनुदय
	। ४ २ a प ५ a	। १ ४ प a प a a	। ४ ३ a प ५ a

इहां प्रथमादि समयनिकी रचनाकरि तहां कृष्टिनिकी रचना आगैं करी है । तहां समपाट्टिका विशेष घटता क्रमरूप संदृष्टि करी है अर अनुदय उदय अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण लिख्या है बहुरि सयोगीविषैं अंतर्मुहूर्त काल अवशेष रहैं वेदनीय नाम गोत्रका अंत कांडककी प्रथम फालिका पतन हो है । तहां ताके द्रव्यकौं ग्रहि स्थिति कांडक घात कीएं

पीछैं अवशेष जो स्थिति रहैगी ताविषैं असंख्यातगुणा क्रमकरि अर ताके उपरि पुरातन गुणश्रेणि आयामका अंत पर्यंत चय घटता क्रमकरि अर ताके उपरि अतिस्थापनावली छोडि उपरितन स्थितिविषैं चय घटता क्रमकरि द्रव्य दीजिए है। ऐसैं इहां तीन पर्व जानने ऐसैं ही ताकी द्वितीयादि चरमफालि पतन समय पर्यंत विधान जानना। बहुरि अंत फालि पतन समयविषैं अवशेष स्थितिका द्विचरम समय पर्यंत एक पर्व अर अंत समयरूप द्वितीय पर्व ऐसैं दोय पर्वनिविषैं द्रव्य दीजिए है। इहां पिच्यासी प्रकृतिनिका सत्त्वविषैं बहत्तरि प्रकृति तो अयोगीका द्विचरम समयविषैं अर तेरह प्रकृति ताका अंत समयविषैं खिपैंगी तातैं जुदी जुदी रचना करिए है। अर तेरह प्रकृतिनिविषैं मनुष्यायुका स्थिति कांडक घात नाहीं। तातैं इहां बारह प्रकृतिनिका ग्रहण कीया है। सो इहां जैसैं क्षीण कषायविषैं ज्ञानावरणादिकनिका अंत कांडकविषैं विधान वा सम्यग्दृष्टिका स्वरूप कह्या था तैसैं इहां जानना। बहुरि आयुकी अंतर्मुहूर्तमात्र स्थिति रही ताकी घटता क्रम लीएं निषेकनिकी रचना जाननी। ऐसैं इनकी संदृष्टि ऐसी हो है—



बहुरि ताकै अनंतरि अयोगी गुणस्थान हो है तहां पांच लघु अक्षर उच्चारण कालमात्र स्थिति है। ताकौं प्रथमादि समयनिविषैं तिन पर्वनिका एक एक निषेककौं गलावै है। तहां बहत्तरि प्रकृतिनिका द्विचरम समयविषैं तेरह प्रकृतिनिका अंत समयविषैं अंत निषेककौं गलावै है। सो इहां अयोगी कालका अंक संदृष्टिकरि च्यारि समय मानि बहत्तरि

प्रकृतिनिकी तीन निषेक रूप अर बारह प्रकृतिनिकी च्यारि निषेक रूप रचना ऐसी जाननी

प्रकृति ७२	प्रकृति १२
०	०
०	०
०	•
	•

अर निषेक घटते क्रम लीएं हैं अर अधोगलन रूप जुदे जुदे हैं तातैं तिनकी जुदी जुदी रचना घटता क्रम लीएं करी है ऐसैं सर्व कर्मनिका क्षयकरि ताका अनंतर समयविषैं पर द्रव्य संबंधी रहित केवल आत्मा ऊर्ध्व गमनकरि लोकका अग्रभागविषैं जाइ विराजमान हो है। तहां अनंत काल पर्यंत तैसैं ही रहै है तातैं कृतकृत्य अवस्थाकौं प्राप्त भए तातैं तिनकौं सिद्ध कहिए। सो सिद्ध भगवान परम मंगलकारी होऊ। ऐसैं श्रीलब्धिसार नामा शास्त्र अर इसहीविषैं क्षपणासार शास्त्रका अर्थ गर्भित है। ताविषैं अर्थनिकी संदृष्टि अर तिन संदृष्टिनिका स्वरूप निरूपण किया है। तहां जो चूक होइ सो विशेष ज्ञानी संवारि शुद्ध करियो मोकौं अल्पज्ञ मानि क्षमा करियो।

श्लोक—

गर्भितक्षपणासारं लब्धिसारश्रुतं महत् ।
तत्संदृष्टिसमाख्यातिः पूर्णजातार्थभासिका ॥ १ ॥
मगलं मलहंतार्हन् सिद्धात्मा शुद्धमंगलं ।
मंगलं साधुसंघस्तद्धर्मो मंगलमुत्तमं ॥ २ ॥

इति क्षपणासार अर्थगर्भित लब्धिसारके अर्थनिकी संदृष्टिनिका वर्णन संपूर्ण भया, याकौं संपूर्ण होतैं यहु ग्रंथ समाप्त भया, ग्रंथ समाप्त होतैं प्रारंभ कीया कार्यकी सिद्धि होनेकरि हम आपकौं कृतकृत्य मानि इस कार्य करनेकी आकुलता रहित होइ सुखी भए याके प्रसादतै सर्व आकुलता दूरि होइ हमारैं शीघ्र ही स्वात्मज सिद्धि जानित परमानंदकी प्राप्ति होउ ।



अथ ग्रंथप्रशस्तिवर्णन ।

श्रीमत लब्धिसार वा क्षपणासार सहित श्रुत गोम्मटसार
ताकी सम्यग्ज्ञान चंद्रिका भाषामय टीका सुखकार ।
प्रारंभी अर पूरण भई अब भए समस्त मंगलाचार
सफल मनोरथ भयो हमारो पायो ज्ञानानंद अपार ॥ १ ॥

दोहा—

आप अर्थमय शब्दजुत ग्रंथ उदधि गंभीर । अवगाहैं ही जानिये याकी महिमा धीर ॥ १ ॥
षट्कारक या ग्रंथके निश्चय अर व्यवहार । जानहु जानत होत है जातैं सत्य विचार ॥ २ ॥

सवैया—

सिद्ध श्रुत शब्द सोई है स्वतंत्र करतार भया यहु ग्रंथ सोई कर्म पहिचानिए ।
ग्रंथरूप जुरनेकी शक्ति सो करण जैन शासनके अर्थि ऐसो संप्रदान जानिए ।
ग्रंथहीतैं भयो ग्रंथ यहु अपादान जैन श्रुतविषैं यहु अधिकरण प्रमानिए ।
स्वाश्रित स्वरूप षट्कारक विचारो ऐसैं निश्चय करि आनको विधान न वखानिये ॥
जिन गन इंद नेमि इंदु आदि करतार भयो ग्रंथ काज सोई कर्म शर्म थान है ।
याके होत भए जे सहाई हैं करण तेई भव्यनिके अर्थि किया ऐसैं संप्रदान है ।
आन काज छूटनेतैं भयो यहु काज सोई अपादान नाम ऐसैं जानत सुजान हैं ।
भयो क्षेत्रविषैं अधः करण कहावे सोई ऐसैं व्यवहार षट्कारक विधान है ॥ ५ ॥

दोहा—

ग्रंथ होंनके जे भए समाचार सुखकार । तिनकौं जानहु कहत हो जाने जाने सार ॥ ६ ॥

सवैया ॥ ३१॥

वर्धमान केवलीके देहरूप पुद्गल ते जीव नाहि प्रेरै तोऊ उपकार करै हैं।
मेघवत् अक्षर रहित दिव्य ध्वनि करि धर्मामृत वरसाय भवताप हरै हैं।
ताहीका निमित्त पाइ आन स्कंध पुद्गलके नानाविध भाषारूप होइ विसतरे है।
जाकौं जैसो इष्ट सो सुने है सो सत्य अर्थ सभा माहि ऐसौ जिन महिमा अनुसरे है॥
गनधर गौतम जु च्यारि ज्ञानधारी आप महा रुचि धारि तिनकौं तहां सुने है।
तिनकौं निमित्त अर श्रुतज्ञान शक्तिसेती साचे नाना अर्थिनिकौं नीकी भांति मुने है।
राग अंश उदै होत भई उपकार बुद्धि तातैं ग्रंथ गुथनेकौं भले वर्ण चुने हैं।
अंग अंग बाह्यरूप रचना बनाई ताकौं करिके अभ्यास भव्य सर्व कर्म धुने हैं॥ ८ ॥
बुद्धि ऋद्धि धारी कोई संपूरण जानि ताहिकोई ताके अंग अंश जानि अर्थ पायो है।
केई ताके अनुसार ग्रंथ जोरे हैं नवीन करिकैं संक्षेप सोई अर्थ तहां गायो है।
गणधरके गूंथे ग्रंथ तिनकौं न पाठी अब ऐसो कलिकाल दोष आपको दिखायो है।
अनुसारी ग्रंथनितैं शिव पंथ पाइ भव्य अबहू करि साधन स्वभाव भाव भायो है ॥
मुनि भूतबलि यति वृषभ प्रमुख भए तिनि हूनैं तीन ग्रंथ कीने सुखकार हैं।
प्रथम धवल अर दूजो है जयधवल तीजो महाधवल प्रसिद्ध नाम धार हैं।
श्लोक तो हैं लाखो अर अर्थ है कठिन घनो तातैं बुद्धिमान विनु जानै नाहि सार है।

दक्षिणमें गोम्मट निकटि मूलविद्रपुर तहां ठीक कीए ग्रंथ पाइए अवार है ॥
दक्षिण दिशामें नेमिचंद्र आदि मुनिराज भये तिनहूंकें भयो तिनकौं अभ्यास है।
जैनी राजमल्ल राजा ताको मंत्री आप राजा भयो है चामुंडराय तहां ताकौं वास है।
तींहि कीनी प्रश्न तब धवलादि शास्त्रनिके अनुसारि कीयो इस ग्रंथको उजास है।
बंधकादि संग्रहतैं नाम पंचसंग्रह है अथवा गोम्मटसार नामको प्रकाश है ॥ ११ ॥

दोहा—

बहुत सूत्रके करनतैं नेमिचंद गुनधार। मुख्यपने यों ग्रंथके कहिए है करतार ॥

चौपई।

कनकनंदि फुनि माधवचन्द। प्रमुख भए मुनि बहु गुन कंद।
तिनहूको है यामैं सीर। सूत्र कितेक किए गंभीर ॥ १२ ॥
मौक्तिक रत्न सूत्रमें पोय। गूंथ्या ग्रंथ हार सम सोय।
अर्थ प्रकाशक अमल अनूप। हृदय धरे सो है सुखरूप ॥ १४ ॥
नेमिचंद जिन शुभपद धारि। जैसे तीर्थ कियो गिरिनारि।
तैसैं नेमिचंद मुनिराय। ग्रंथ कियो है तरण उपाय ॥ १५ ॥
देशनिमें सुप्रसिद्ध महान। पूज्य भयो है यात्रा थान।
यामैं गमन करे जो कोय। उच्चपना पावत है सोय ॥ १६ ॥
गमन करणकौं गली समान। कर्णाटक टीका अमलान।
ताकौं अनुसरती शुभ भई। टीका सुंदर संस्कृतमई ॥ १७ ॥

केशववर्णी बुद्धि निधान । संस्कृत टीकाकार सुजान ।
मार्ग कियो तिहिं जुत विस्तार । जहं स्थूलनिकौं भी संचार ॥ १८ ॥
हमहू करिके तहां प्रवेश । पायो तारन कारण देश ।
चितवन करि अर्थनिकौं सार । ऐसैं कीनो बहुरि विचारि ॥ १९ ॥
संस्कृत संदृष्टिनिकौं ज्ञान । नाहि जिनके ते बाल समान ।
गमन करणकौं अति तरफरें । बल बिनु नाहि पदनिकौं धरें ॥ २० ॥
तिनि जीवनिकौं गमन उपाय । भाषा टीका दई बनाय ।
वाहन सम यहु सुगम उपाव । याकरि सफल करो निज भाव ॥ २१ ॥
पूर्व कहे सिद्धान्त महान । तिनहीमैं जयधवल प्रधान ।
ताका पंच दशम अधिकार । ताकरि करिके अर्थ विचार ॥ २२ ॥
नेमिचंद नामा मुनिराय । लब्धिसार श्रुतसार बनाय ।
वर सम्यक्त्व चरित्र वखान । करिके प्रगट किए गुणथान ॥ २३ ॥
उपशम श्रेणि कथन पर्यंत । ताकी टीका संस्कृतवंत ।
देखी देखे शास्त्रनि माहि । संपूरण हम देखी नाहि ॥ २४ ॥
माधवचंद यती कृत ग्रंथ । देख्यो क्षपणासार सुपंथ ।
संस्कृत धारामय सुखकार । क्षपक श्रेणि वर्णनयुत सार ॥ २५ ॥
वह टीका यह शास्त्र विचार । तिनि करि किछू अर्थ अवधार ।
लब्धिसारकी टीका करी । भाषामय अर्थनसौं भरी ॥ २६ ॥

ऐसैं ग्रंथ दोयकी बनी। भाषा टीका सुंदर घनी
इनिमैं जेसैं कियो वखान। क्रमतैं जानो ताहि सुजान ॥ २७ ॥

सवैया।

करिकैं पीठबंध जीवकांड भाषा कीनी तामैं
गुणथान आदि दोय वीस अधिकार हैं।
प्रकृति समुत्कीर्तन आदि नव ग्रंथनिकौ
समुदाय कर्मकांड ताकी भाषा सार है।
ऐसैं अनुक्रम सेती पीछैं लिख्यो इनिहीकी
संदृष्टीनिकौ स्वरूप जहां अर्थभार है।
पूरण गोम्मटसार ग्रंथ भाषा टीका भई
याकौं अवगाहैं भव्य पावैं भव पार हैं ॥ २८ ॥
समकित उपशम क्षायिकको है वखान
पीछे देश सकल चारित्रको बखान है।
उपशम क्षपक श्रेणी दोय तिनहूकौ
कीयो है वखान ताकौं जानै गुणवान हैं।
सयोगी अयोगी जिन सिद्धानिकौ वर्णनकरि
लब्धिसार ग्रंथ भयो पूरण प्रमान है।
इनकी संदृष्टिनिकौं लिखिकैं स्वरूप ताकी

संपूरण भाषा टीका कीनी भयो ज्ञान है ॥ २९ ॥
याविध गोम्मटसार लब्धिसार ग्रंथनिकी
भिन्न भिन्न भाषा टीका कीनी अर्थ गायकैं ।
इनिकैं परस्पर सहायपनो देख्यो तातैं
एक करि दई हम तिनिकी मिलायकैं ।
सम्यग्ज्ञान चंद्रिका धरयो है याकौ नाम
सो ही होत है सफल ज्ञानानंद उपजायकैं ।
कलिकाल रजनीमैं अर्थकौ प्रकाश करे
यातैं निज काज कीने इष्ट भाव भायकैं ॥ ३० ॥
संशयादि ज्ञाननिकौं हेतुभूत जीवनिकैं
तथाविध कर्मकौ क्षयोपशम जानिए ।
ताकरि हमारैं किछू संशय विपर्यय वा
अनध्यवसाय भया होसी ऐसैं मानिये ।
तिनकरि ग्रंथविषैं कहीं लिए संशयकौं
कहीं विपरीत कहीं स्पष्ट न वखानिये ।
लिख्यो होइ अर्थ ताकौं मेरो वश नाहि तातैं
क्षमा करो गुनी, शुद्ध करो चूक मानिये ॥ ३१ ॥

दोहा ।

संशयादि होते किछू जो न कीजिए ग्रंथ ।

तौ छद्मस्थनिकैं मिटै ग्रंथ करनको पंथ ॥ ३२ ॥
जो कषाय उपजायकैं धरै अर्थ विपरीत ।
तौ पापी है आप ही आज्ञा भंग अभीत ॥ ३३ ॥
आज्ञा अनुसारी भए अर्थ लिखे या मांहि ।
धरि कषाय करि कल्पना हम किछु कीन्हीं नाहि ॥ ३४ ॥

चौपई ।

सम्यग्ज्ञान चंद्रिका नाम, भाषामय टीका अभिराम ।
भई भले अर्थनिकरि युक्त, जाविध सो सुनिये अब उक्त ॥ ३५ ॥

सवैया ।

मैं हौं जीव द्रव्य नित्य चेतना स्वरूप मेरौ
लग्यो है अनादितैं कलंक कर्ममलको ।
ताहीकौं निमित्त पाय रागादिक भाव भए
भयो है शरीरको मिलाप जैसो खलको ।
रागादिक भावनिकौं पायकैं निमित्त फुनि
होत कर्मबंध ऐसो है बनाव कलको ।
ऐसैं ही भ्रमत भयो मानुष शरीर जोग
बनै तौ बनै इहां उपाव निज थलको ॥ ३६ ॥

दोहा ।

रमापति स्तुत गुन जनक जाको जोगी दास ।

सोई मेरो प्रान है धारै प्रगट प्रकाश ॥ ३७ ॥

चौपई ।

मैं आतम अर पुद्गल स्कंध । मिलिकैं भयो परस्पर बंध ।
सो असमान जाति पर्याय । उपज्यो मानुष नाम कहाय ॥ ३८ ॥
मातगर्भमैं सो पर्याय । करिकैं पूरण अंग सुभाय ।
बाहिर निकसि प्रगट जब भयो । तब कुटुंबको भेलो थयो ॥ ३९ ॥
नाम धर्‍यो तिनि हरषित होइ । टोडरमल्ल कहै सब कोय ।
ऐसो यहु मानुष पर्याय । वधत भयो निज काल गमाय ॥ ४० ॥
देश ढूंढाहडमांहि महान । नगर सवाई जयपुर थान ।
तामैं ताकौं रहनो घनो । थोरो रहनो औंढै बनो ॥ ४१ ॥
तिस पर्यायविषैं जो कोय । देखन जानन हारो सोय ।
मैं हौं जीव द्रव्य गुन भूप । एक अनादि अनंत अरूप ॥ ४२ ॥
कर्म उदयको कारण पाय । रागादिक हो है द्रव्य दाय ।
ते मेरे औपाधिक भाव । इनिकौं विनशैं मैं शिवराव ॥ ४३ ॥
वचनादिक लिखनादिक क्रिया । वर्णादिक अर इंद्रिय हिया ।
ए सब हैं पुद्गलका खेल । इनिमैं नाहि हमारो मेल ॥ ४४ ॥
रागादिक वचनादिक घना । इनके कारण कारिजपना ।
तातैं भिन्न न देखै कोय । विनु विवेक जन अंधा होइ ॥ ४५ ॥

सवैया ॥

कर्मको क्षयोपशम होत भयो मेरे किछू
बुद्धिको विकास तातैं विद्याभ्यास कर्यो है।
होनहार नीको तातैं अैसा ही बनाव बन्यो
नाना जैन ग्रंथनिमैं ज्ञान विस्तर्यो है।
सार्थक गोम्मटसार लब्धिसार शास्त्रनिकौं
अर्थ अवभास्यो तब अैसो भाव धर्यो है।
इनिकी जो भाषा टीका ह्वै तौ तुच्छबुद्धि घनी
जानैं सार अर्थ जो प्रमाण अनुसर्यो है॥ ४६ ॥

चौपई।

रायमल्ल साधर्मी एक। धर्म सधैया सहित विवेक।
सो नानाविध प्रेरक भयो। तब यहु उत्तिम कारज थयो॥ ४७ ॥
ज्ञान राग तौ मेरो मिल्यो। लिखनौ करनौ तनकौं मिल्यो।
कागदमांहि अक्षर आकारि। लिखि या अर्थ प्रकाशन हार॥ ४८ ॥
अैसैं पुस्तक भयो महान। जानै जाने अर्थ सुजान।
यद्यपि यहु पुद्गलको स्कंध। है तथापि श्रुतज्ञान निबंध॥ ४९ ॥
संवतसर अष्टादश युक्त। अष्टादश शत लौकिक युक्त।
माघ शुक्ल पंचम दिन होत। भयो ग्रंथ पूरन उद्योत॥ ५० ॥

मस्थानका विशेष विषैं याकौं मिलाएं प्रथम स्थानका विशेष धन ऐसा २ ७ भया याकौं
७ ७
तीनकरि समच्छेद कीएं ऐसा २ ७ । ३ या विषैं प्रथम ऋण ऐसा २ ७ । २ अर द्वितीय
७ । ७ । ३ ७ । ३
ऋण ऐसा २ ७ घटाएं जो अवशेष रह्या ताका अधिकका प्रथम द्वितीय बहु भाग ऐसा—
७ । ७ । ७
२ ७ । २ के उपरि ऐसा (।) संदृष्टि कीएं ऐसा २ ७ । २ यामैं आवली मिलाएं बादरलो-
३ ३
भकी प्रथम स्थितिका काल हो है। बहुरि इहां प्रथम स्थानविषैं बहुभाग ऐसा २ ७ । ७
७ । ३
इहां ऋण ऐसा २ ७ । ७ जुदा कीएं अर संख्यातका अपवर्तन कीएं ऐसा २ ७ बहुरि तहां
७ । ३ ३
विशेष धन ऐसा २ ७ । ७ इहां ऋण ऐसा २ ७ जुदा कीएं संख्यातका अपवर्तन कीएं
७ । ७ ७ । ७
ऐसा २ ७ याकौं तीनकरि समच्छेद कीएं ऐसा २ ७ । ३ याविषैं द्वितीय ऋणकरि अधिक
७ ७ । ३
प्रथम ऋण ऐसा २ ७ । ७ घटाएं ऐसा २ ७ । २— तिस बहुभागका धन ऐसा २ ७ विषैं
७ । ३ ७ । ३ ३
अधिक कीएं बादर लोभ कालका प्रथम अर्ध साधिक लोभ वेदक कालका तृतीय भागमात्र
ऐसा २ ७ हो है। बहुरि कृष्टिकरण कालविषैं विधानकी संदृष्टि कहिए है—
३

जघन्यस्पर्धककी प्रथम वर्गणाकी एक परमाणूविषैं अनुभागके प्रतिच्छेद जीवराशितैं अनंत गुणें औसे १६। ख तिनके समूहका नाम वर्ग है। ताकी संदृष्टि औसी (व) बहुरि संज्वलन लोभका सत्त्व द्रव्य औसा स। ə। १२–याकौं अनुभाग संबंधी गुणहानि अनंत गुणित अनंत
७। ८
प्रमाण सो औसी (ख। ख) साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणा औसी स। ə। १२
७। ८ ख। ख। ३
२
याकौं दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष औसा स। ə। १२ — इस विशेषकरि वर्गकौं
७। ८। ख। ख। ३। ख। ख। २
२
गुणें लघु संदृष्टि औसी (व वि) याकौं दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम वर्गणा औसी व वि ख ख २ इहां अंकसंदृष्टिकरि एक गुणहानिका प्रमाण आठ कल्पि दोगुणहानिका प्रमाण सोलह स्थापैं औसी व। वि। २६ संदृष्टि हो है। याकी लघु संदृष्टि औसी (व) यहु वर्गणाका आदि अक्षर रूप जाननी। बहुरि याकौं अनुभाग संबंधी साधिक ड्योढ गुणहानिकरि गुणें लोभ का सत्व द्रव्य औसा व १२ याकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भाग ग्रह्या सो औसा
व १२ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग औसा व १२। प ə जुदा
ओ ओ प ə

स्थापि एक भाग ऐसा ३ १२ / ओ प ताकौं इहां एक स्पर्धकविषैं वर्गणा शलाकाकी संदृष्टि ऐसी ३

(४)ताकौं अनंतका भाग दीएं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा ४/ख ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानि ऐसा १६ – ४ १– / ख २ ताका भाग दीएं चय होइ। ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम कृष्टिका द्रव्य ऐसा व १२ १६ / ओ। प। ४। १६ – ४ १– / ३ ख ख २ याका अनुभाग पूर्व स्पर्धक वर्गकौं कृष्टिनिका प्रमाणमात्र वार अनंतका भाग दीएं हो है सो ऐसा— व / ख ४/ख बहुरि प्रथम कृष्टिविषैं एक चय घटावनेकौं दोगुणहानिका गुणकारविषैं एक घटाएं द्वितीय कृष्टिका द्रव्य ऐसा भया संदृष्टि व। १२। १६–१ १– / ओ। प। ४। १६ – ४ / ३ ख ख २ याका अनुभाग तिस अनुभागतैं अनंतगुणा ऐसा व। ख १ / ख। ४/ख ऐसैं ही क्रमतैं दो गुणहानिका गुणकारविषैं एक घाटि कृष्टिनिका प्रमाणकौं घटाएं अंत कृष्टिका द्रव्य ऐसा व। १२। १६ – ४/ख १– / ओ। प। ४। १६ – ४ / ३ ख ख २ बहुरि प्रथम

कृष्टिका अनुभागकों एक घाटि कृष्टि प्रमाणमात्र वार अनंतकरि गुणें अंत कृष्टिका अनुभाग अैसा व । ख । ४ अपवर्तन कीएं वर्गणाके अनंतवे भागमात्र याका अनुभाग अैसा व जानना बहुरि जुदे स्थापें बहुभाग अैसा व । १२ । प साधिक ड्योढ गुणहानिनिका अर दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताकौं दोगुणहानिकरि गुणें स्पर्धककी प्रथम वर्गणाविषैं दीया द्रव्य अैसा व । १२ । प १६ बहुरि द्वितीयादि वर्गणाविषैं दोगुणहानिका गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घटाएं अंतविषैं एक घाटि गुणहानिमात्र घटाएं प्रथम गुणहानिकी अंत वर्गणा होइ। बहुरि गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा होइ। प्रथम गुणहानिके निषेकानिकौं एक घाटि नानागुणहानिका प्रमाणमात्र हूवा परस्पर गुणें अैसे (२ ना) तिनिका भाग दीएं अंतगुणहानिके प्रथमादि निषेक हो हैं। अैसैं अंत वर्गणा अैसी हो है व । १२ । प । १६ । गु

ओ । प । १२ । १६ । २ । ना

अैसैं कृष्टिनिकी वा पूर्व स्पर्धकनिविषैं दीया द्रव्यकी संदृष्टि अैसी—

व
ख ४
ख
व
ख

व १२ १६ ००००० व १२ १६–४ १
ओ प ४ १६–४ ओ प ४ १६–४ ख
a ख ख a ख ख

व
व
व ९ ना

व १२ प १६ ०००० व १२ प १६– गु
a a
ओ प १२ १६ ओ प १२ १६ २ ना
a a

इहां ऐसा जानना—निषेक तौ ऊपरि ऊपरि समयनिविषैं उदय आवने योग्य है तातैं निषेकनिकी तौ रचना वा ऊर्ध्वविषैं क्रमरूप कीजै थी अर इहां युगवत् उदय आवने योग्य एक निषेकके परमाणूनिविषैं अधिक हीन अनुभागकी रचना है तातैं आडी रचना करी है तहां ऊपरि तो समपाट्टिकाकी संदृष्टि करी है। नीचैं चय घटता क्रमकी क्रम हीन रूप संदृष्टि करी है। तहां कृष्टि वा वर्गणानिविषैं कृष्टिनिविषैं आदि अंत कृष्टिनिके द्रव्यका अर स्पर्धकनिविषैं आदि अंत वर्गणानिविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। मध्यभेदनिके अर्थि वीचिमैं बिंदी लिखी है। बहुरि कृष्टि करण कालका द्वितीय समयविषैं अपकर्षण कीया हूवा द्रव्य प्रथम समय वालेतैं असंख्यात गुणा ऐसा है व। १२। a याकौं पल्यका असं-

ख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग ऐसें व । १२ । ३ । प ओ प ३ जुदे राखि अवशेष एक भागमात्र कृष्टि द्रव्य ऐसा व । १२ ३ ओ । प ३ ताके विभाग करिए है—

तहां प्रथम समयका कृष्टि द्रव्यविषें एक विशेषका प्रमाण कह्या सो ऐसा—

व १२ ओ।प।४।१६ — ४ ३।ख ख२ १— १— इहां इसहीकौं आदि उत्तर स्थापि एक घाटि प्रथम समयविषें कीनी कृष्टिनि का प्रमाण गच्छ ऐसा ४ ख १— स्थापि पदमेगेण विहीणं इत्यादि सूत्रकरि गच्छतैं एक घटाई दोयका भाग दीएं ऐसा ४ ख।२ याकरि तिस विशेषकौं गुणें ऐसा— व १२ । ४ ख२ १— ओ।प।४।१६ - ४ ३ ख ख२ यामैं आदिका प्रमाण तिस विशेषमात्र ताके मिलावनेके अर्थि आगिला गुणकारविषें दोयकरि भाजित दोय ऋण था ताका एक भगा । अर इहां इस गुणकारविषें एक ही मिलावना तातैं तिस घाटिकौं दूर कीएं ऐसा व । १२ । ४ ख२ १— ओ।प। ४ । १६ — ४ ३ ख ख याकौं तिस गच्छकरि गुणें ऐसा व १२ । ४ । ४ ख२ ख १— ओ । प । ४ । १६ — ४ ३ ख ख २

चय धन भया सो यहु अधस्तन शीर्ष द्रव्य है । बहुरि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिविषैं आदि कृष्टिमात्र एक कृष्टि ऐसी व । १२ । १६ / ओ । प । ४ । १६ — ४ (१-) / a ख ख २ याकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाणकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं द्वितीय समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ / ख । ओ । a ताकरि गुणैं अधस्तन कृष्टि द्रव्य ऐसा व १२ । १६ । ४ / ख ओ a / ओ प । ४ । १६ — ४ (१-) / a ख ख

बहुरि द्वितीय समय कृष्टिका द्रव्य ऐसा व । १२ a / ओ । प / a या विषै प्रथमसमयका कृष्टिद्रव्य ऐसा— व १२ / ओ प / a मिलावनेकौं आगिला असंख्यातकौं गुणकारविषैं एक अधिक कीएं ऐसा— व । १२ । a (१-) / ओ । प / a याकौं प्रथम समयविषै कीनी कृष्टिनिका प्रमाणके ऊपरि द्वितीय समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाण मिलावनेके अर्थि

अधिकको ऐसी (।) संदृष्टि कीएं गच्छ ऐसा ४/ख ताका भाग दीएं मध्य धन ऐसा

व । १२ । २ बहुरि याकौं एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग
ओ । प । ४ ख

दीएं उभय द्रव्यका एक विशेष ऐसा व । १२ । २ इसकौं आदि उत्तर स्थापि अर
ओ । प । ४ । १६-४
२ ख ख २

प्रथम द्वितीय समयकृत कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा ४/ख स्थापि 'पदमेगेण विहीणं'

इत्यादि सूत्रकरि एक घाटि गच्छ दोयकरि भाजित ऐसी ४/ख २ याकरि तिस विशेषकौं

गुणि इसविषैं विशेषमात्र आदि मिलावनेकौं आगिला गुणकार दोयकरि भाजित एक

ऋण था तहां दोयकरि भाजित दोय मिलाएं एक घाटिकी जायगा एक अधिक होइ।

बहुरि याकौं तिस गच्छकरि गुणना। ऐसैं कीएं उभय द्रव्यविषैं विशेष द्रव्य ऐसा—

व । १२ । २ । ४ । ४ बहुरि कृष्टिविषै देने योग्य द्रव्य ऐसा था व । १२ । २ ताकौं आगैं
ख २ । ख ओ । प
ओ । प । ४ । १६-४ २
२ । ख ख
१०

पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेकौं ऐसी ≡ संदृष्टि कीएं ऐसा— व । १२ । ३ ≡ हो है। याकौं
ओ प
३

उभय कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४ ताका भाग दीएं एक खण्डका द्रव्य ऐसा हो है—
ख

व । १२ । ३ ≡ याकौं तिस गच्छहीकरि गुणैं मध्यधन खंडका द्रव्य ऐसा हो है—
ओ प । ४
३ ख

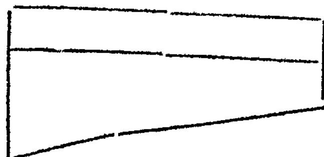
व । १२ । ३ ≡ । ४ बहुरि इहां अधस्तन शीर्षादिकका द्रव्यविषैं गुणकार भागहारका
ओ । प । ४ ख
३ ख

यथासंभव अपवर्तन कीएं ते न्यारयो द्रव्य ऐसे हो हैं—

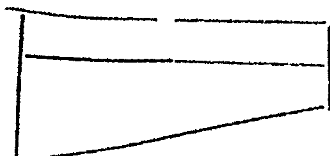
अधस्तन शीर्ष	। व १२ ओ प । ख । ख । ४ २
उभय विशेष	। १— व । १२ । २ ओ । प । ख । ख । ४ २
अधस्तन कृष्टि	। व १२ ओ । प । ओ । २ २
मध्यम खंड	। व १२ २ ≡ ओ प २

इहां अधस्तन शीर्ष द्रव्यविषै अैसा ४ तो गुणकार भागहारविषैं समान जानि अप-
वर्तन कीया अर भागहारविषै दोगुणहानि अंक संदृष्टि अपेक्षा अैसा १६ लिख्या था तहां
अर्थ संदृष्टि अपेक्षा अैसा ख । ख २ करि गुणकारका अैसा ४ याकौं दोयका भागहार था

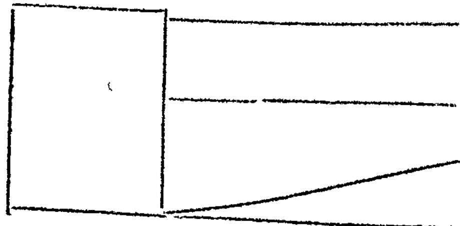
ताकरि गुणें ऐसा ख । ख । ४ भागहार भया । ऐसा गुणकार वा दोगुणहानिविषें घटाया ऋण तिनकौं किंचित् जानि न गिणि अपवर्तन कीया है । ऐसें ही यथासंभव औरनिविषें अपवर्तन जानना । ऐसें इनिकौं जानि जिन जिन कृष्टिनिविषें जो जो द्रव्य दीया तिनकी संदृष्टि जाननी । तहां समपट्टिकाकौं चयसंयुक्त कीएं पूर्वकृष्टि क्रम हीन द्रव्य लीएं ऐसी—



थी तिनविषें अधस्तन शीर्ष द्रव्य दीएं समान प्रमाण लीएं सर्वकृष्टिनिका प्रमाण समपट्टिकारूप ऐसा हो है—



बहुरि याके नीचें अधस्तन कृष्टि द्रव्यकरि नवीन करी कृष्टि याहीके समान प्रमाण लीएं स्थापें ऐसी कृष्टि हो है—



बहुरि कृष्टि द्रव्य करि न करी कृष्टि याविषैं मध्यम खंड द्रव्य मिलाएं समानरूप समपट्टिकारूप असी—

याविषै उभय द्रव्य विशेष मिलाएं एक एक विशेष घटता क्रम लीएं सर्व पूर्व अपूर्वकृष्टिनिका क्रम हीनरूप एक गोपुच्छाकार असी रचना हो है—

अपूर्वकृष्टि

पूर्वकृष्टि

अधस्तन शीर्ष

मध्यमखंड द्रव्य

उभय विशेष द्रव्य

इहां एक समय उदय आवने योग्य परमाणूनिकी अनुभाग अपेक्षा रचना है तातैं आडी लीककरि सहनानी करी है। तहां प्रथम कृष्टिविषैं एक अधस्तन कृष्टिका द्रव्य असा—

व । १२ । १६ १ — एक मध्यम खंडका द्रव्य असा व । १२ । ३ ≡ पूर्व अपूर्व कृष्टिका
ओ । प । ४ । १६—४ ओ प ४
३ ख ख २ ३ ख

प्रमाणकरि गुणित उभय द्रव्य विशेष ऐसैं व । १२ । ३ ४ इन तीन द्रव्यकौं दीजिए है।

ओ । प । ४ । १६ — ४
३ ख ख २

द्वितीयादि कृष्टिनिविषैं एक एक उभय विशेष घटता द्रव्य नवीन करी कृष्टिनिका अंत पर्यंत दीजिए है। बहुरि पूर्व कृष्टिनिकी आदि कृष्टिविषैं एक मध्यम खंड अर पूर्व कृष्टि गुणित उभय विशेष द्रव्य दीजिए है। बहुरि द्वितीय कृष्टिविषैं एक अधस्तन शीर्ष विशेष

ऐसा व १२ १ एक मध्यम खंड एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण गुणित उभय द्रव्य

ओ । प । ४ । १६ — ४
३ ख ख

विशेष ऐसैं— व । १२ । ३ ४ दीजिए है। तृतीयादि कृष्टिनिविषैं एक एक अधस्तन शीर्ष

ओ । प । १६ — ४
३ ख ख २

बंधता एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता दीजिए है। ऐसैं दीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका एक गोपुच्छ हो है। तहां प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका द्रव्यविषैं अधस्तन शीर्ष विशेष का द्रव्य अर अधस्तन कृष्टिका द्रव्य दीएं पूर्व अपूर्व कृष्टिनिका समपट्टिका द्रव्य पूर्व जघन्य कृष्टिकौं पूर्व अपूर्व प्रमाणकरि गुणैं ऐसा व १२ । १६ । ४ बहुरि उभय द्रव्य विशेषका द्रव्य

ओ । प । ४ । १६ — ४
३ ख ख

ऐसा व।१२।३।२।४ यावि‍षैं असंख्यातका गुणकारके ऊपरि जो अधिक था ताका

ओ।प।४।१६—४ । ख २

प्रमाण ऐसा व।१२।४।४ भया सो यहु सर्वकृष्टि द्रव्य संबंधी चय धन भया। तहां एक

ओ प।४।१६— ४ ख।२

चयमात्र द्रव्य ऐसा व १२ याकौं पूर्व अपूर्व कृष्टिकरि गुणैं सर्व कृष्टिनिकी नीचली कृष्टि-

ओ प।४।१६—४ ख २

विषैं दीया द्रव्य ऐसा — व १२ ४ बहुरि द्वितीयादि कृष्टिनिविषैं एक एक चय घटता दे‍इ

ओ प ४ १६—४ ख ख

अंतविषैं एक चयमात्र दीया द्रव्य ऐसा व १२ ऐसैं प्रथम समय संबंधी

ओ।प।४।१६—४ ख ख

द्रव्यके उपरि अधस्तन शीर्ष द्रव्य अर अधस्तन कृष्टि द्रव्य अर उभय विशेष द्रव्य असंख्यातके ऊपरि एकका गुणकार था ताका द्रव्य ऐसैं तीन द्रव्य मिलावनेकौं तीन

उभी लीक रूप ऐसी (।।।) संदृष्टि कीएं ऐसा भया व । १२ । १ याकौं पूर्व अपूर्व कृष्टिमात्रै अर
ओ प
३

एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय ऐसा व । १२ । १ १ ‸
ओ । प । ४ । १६–४
३ ख ख

याकौं दोगुणहानिकरि गुणें प्रथम कृष्टिका द्रव्य भया अर इस गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घटाइ अंतविषैं एक घाटि गच्छमात्र घटाएं द्वितीयादि कृष्टिका द्रव्य है तहां रचना ऐसी—

अपूर्वकृष्टि द्रव्य	पूर्वकृष्टि द्रव्य
उभयविशेष द्रव्य	अनन्तन शाँर

प्रथमकृष्टि		अन्तकृष्टि
व १२ १ । १६ / ओ प ४ १६– ४ / ३ ख ख	०००००	व १२ १ १६– ४ / ख / ओ प ४ १६– ४ / ३ ख ख २

इहां रचनाविषैं लीकनिकी संदृष्टि पूर्ववत् जाननी। इहां मध्यम खंड रचना नाही करी है अर उभय द्रव्य विशेष स्तोक है। नीचैं द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। ऐसैं इहां एक गोपुच्छ भया। बहुरि मध्यम खंड द्रव्यका एक एक खंड समपाट्टिका रूप स्थापना। बहुरि द्वितीय समय संबंधी कृष्टि द्रव्यका विशेषका चय धन रूप द्रव्य सर्व उभय विशेषका द्रव्यविषैं असंख्यातका गुणकार उपरि एक अधिक था ताकौं जुदा कीएं ऐसा— व। १२। ३। ४। ९ ख ख १ ओ। प। ४। १६ — ४ ३ ख ख

इहां एक चयका द्रव्य ऐसा व। १२। ३ ओ। प। ४। १६ — ४ ३ ख ख। २ १ याकौं पूर्वापूर्व कृष्टि प्रमाणकरि गुणैं प्रथम कृष्टिविषैं दीया द्रव्य अर एक एक चय घाटि क्रमकरि अंतविषैं एक चयमात्र दीया द्रव्य हो है। ऐसैं इहां द्वितीय समय संबंधी कृष्टि द्रव्य ऐसा व। १२। ३ ओ प ३ ताविषैं अधस्तन शीर्ष द्रव्य अधस्तन कृष्टि द्रव्य अर उभय द्रव्यका असंख्यातका गुणकारके ऊपरि एक अधिक था ताका द्रव्य इन तीनोंके घटावनेके आर्थि आगैं ऐसी ≡ संदृष्टि कीएं ऐसा व। १२। ३ ≡ आ प ३ ११ याकौं पूर्वापूर्व कृष्टिमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि

हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम कृष्टिका द्रव्य इस गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घटाइ अंतविषैं एक घाटि गच्छमात्र घटावना तहां संदृष्टि ऐसी–

व १२ ३ ≡ १६ / १ ० ... ओ प ४ १६ – ४ / ३ ख ख २   ० ० ० ०   व १२ ३ ≡ १६ – ४ / १ ० ख ... ओ प ४ १६ – ४ / ३ ख ख २

इहां मध्यम खंडकी समपट्टिका रूप अर नीचैं उभय विशेषकी क्रमहीन रूप संदृष्टि करी है ऐसैं यहु गोपुच्छ भया। याकौं पूर्व गोपुच्छके ऊपरि स्थापैं क्रमहीन रूप सर्व कृष्टिनिका एक गोपुच्छ हो है। ताकी रचना ऐसी–

असंख्यात गुणकारका उभयविशेष द्रव्य
मध्यमखंड द्रव्य
पूर्वकृष्टि समपट्टिका द्रव्य
अधस्तनकृष्टि द्रव्य
पूर्वचय
अधस्तनशीर्ष
एक गुणकारका उभयविशेष द्रव्य

प्रथमकृष्टि — अंतकृष्टि

व १२ ८ १६ ० ० ० ० ० ० ० व १२ ८ १६ – ४ ख

ओ प ४ १६ – ४ / ८ ख ख २ — ओ प ख १६ – ४ / ८ ख २

इहां पहली रचनाके उपरि पाछिली रचना लिखि क्रम हीनरूप एक गोपुच्छ कीया है। तहां द्वितीय समय संबंधी कृष्टि द्रव्यका असंख्यातका गुणकारके ऊपरि पाहिला समय संबंधी द्रव्य मिलावनेकौं एक आधिककरि ताकौं पूर्वापूर्वकृष्टिमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकारिहीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ। ताकौं दोगुणहानिकरि गुणें प्रथमकृष्टि का अर इस गुणकारविषैं एक एक क्रमतें घाटि होइ एक घाटि गच्छमात्र घाटि भएं अंत कृष्टिका द्रव्य हो है ताकी संदृष्टि नीचैं लिखी है। बहुरि ऐसैं ही कृष्टि करण कालका तृती-

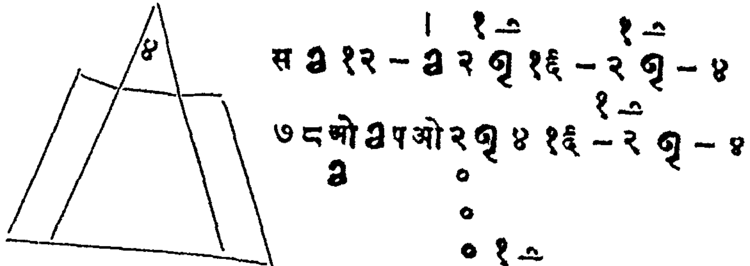
यादि समयनिविषैं यथासंभव संदृष्टि जाननी। बहुरि अन्य किया होइ अनिवृत्ति करण का काल पूर्ण भएं सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषैं कृष्टिनिका द्रव्य ऐसा—

स ३।१२ – ३ । २ १ (७।८।ओ।प ३) इहां लोभके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका अर पल्यका असं-ख्यातवां भागका भाग दीएं कृष्टि करण कालका प्रथम समयका द्रव्य होइ। ताकौं एक घाटि अंतर्मुहूर्तके समयमात्र वार असंख्यातकरि गुणें ताका अंति समयका द्रव्य हो है। ताविषैं पूर्व समयनिका द्रव्य मिलावनेकौं उपरि अधिककी संदृष्टि कीएं यहु संदृष्टि भई है। याकौं अपक-र्षण भागहारका भाग देइ एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग ऐसा

स।३।१२–३। २ १ (७।८।ओ।प ३।ओ।प ३) ताकौं प्रथमस्थितिविषैं असंख्यात गुणा क्रमकरि देना। तहां याकौं पिच्यासीका भाग देइ एक च्यारि आदि करि गुणें प्रथमादिनिषेक हो हैं। बहुरि बहुभाग

ऐसैं स।३।१२ – ३। २ १।प (७।८।ओ।प ३।ओ।प ३ ३) याकौं द्वितीय स्थितिविषैं हीन क्रमकरि देना। तहां याकी स्थिति अंतर्मुहूर्तमात्र तामैं अतिस्थापनावली घटाएं गच्छ ऐसा २ १ – ४ सो तिस द्रव्यविषैं एक हीनकौं न गिणि पल्यके असंख्यातवां भागका अपवर्तनकरि ताकौं गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ। ताकौं दोगुणहा-

निकरि गुणैं प्रथम निषेक अर गुणकारविषैं क्रमतैं एक आदि घटाएं अंतविषैं एक घाटि गच्छमात्र घटाएं अन्य निषेकानिविषैं दीया द्रव्य हो है। तहां संदृष्टिविषैं नीचैं आधिक क्रम लीएं प्रथम स्थितिकी रचनाकारि ताके उपरि अंतरायामकी शून्यरूप संदृष्टिकरि ताके उपरि द्वितीय स्थितिकी वा तहां अंतस्थापनावलीकी संदृष्टि करी है। बहुरि आगैं प्रथम द्वितीय स्थितिके निषेकानिविषैं दीया द्रव्यकी संदृष्टि जाननी।



स a १२ - a २ गृ १६ - २ गृ - ४

७ ८ओ a प ओ २ गृ ४ १६ - २ गृ - ४

a

०

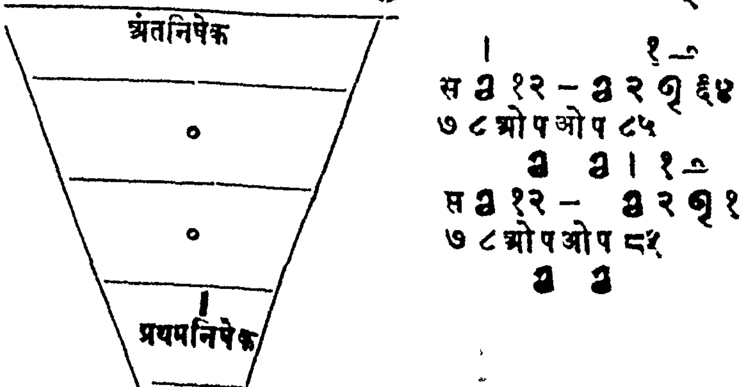
०

०

स a १२ - a २ गृ १६

७ ८ ओ प ओ २ गृ - ४ १६ - २ गृ - ४

a २



स a १२ - a २ गृ ६४

७ ८ ओ प ओ प ८५

a a

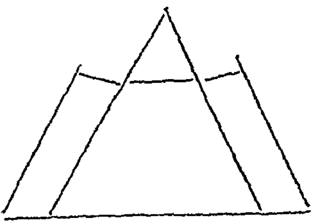
स a १२ - a २ गृ १

७ ८ ओ प ओ प ८१

a a

बहुरि कृष्टि करणका प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाणविषैं अन्य समयनिविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाण मिलावनके अर्थि उपरि अधिककी ऐसी (।) संदृष्टि कीएं सर्वकृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ।/४ ख याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग ऐसा । १ ^ / ४ प ख a प a उदयरूप कृष्टिनिका प्रमाण है। अवशेष एक भाग ऐसा । / ४ ख प a याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहु भाग ऐसे १ ^ । / ४ प a ख प प a a तिनिके आधे प्रमाण लीएं तौ कृष्टि करण कालका अंत समयविषैं कीनी जे आदिकी जघन्यादि कृष्टि ते अनुदयरूप हैं। बहुरि आधे ऐसे । १ ^ / ४ प a ख प प २ a a याविषैं रह्या एक भाग ऐसा । / ४ ख प । प a a मिलावनेकौं अगिला गुणकारविषैं

दोयकरि भाजित एक घाटि था तहां दोयकरि भाजित एक अधिक कीएं ऐसा ४ प | १ ... / ३ / ख प प १ / २ ३ प्रमाण लीएं कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषैं कीनी अंतकी उत्कृष्ट पर्यंत कृष्टितैं अनुदयरूप हो है। इहां पल्यका असंख्यातवां भागकी सहनानी पांचका अंक कीएं जो एक भाग ऐसा ४ । / ख प / ३ था ताकौं पांचका भाग देइ बहुभागके आधे ऐसे ४ । २ / ख प । ५ / ३ अर इनिविषैं एक अवशेष भाग मिलाएं ऐसैं हो है ४ । ३ / ख प । ५ / ३ ऐसैं सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषैं उदय अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण जानना। इहां रचना ऐसी—



अन्यनिषेक	अनुदय	उदय	अनुदय
प्रथमनिषेक	। ४ २ ख प ५ २	। १ ४ प ख २	। ४ ३ ख प ५ २

प
२

इहां प्रथम स्थिति अंतरायाम द्वितीय स्थितिका पूर्ववत् रचनाकरि प्रथम स्थितिका प्रथम समय संबंधी निषेकानिकी कृष्टिनिविषैं आदिकी जघन्यादि अनुदय कृष्टिका अर उभय आवने योग्य वीचिकी कृष्टिनिका अर अंतकी उत्कृष्ट पर्यंत अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण लिखा है। बहुरि सूक्ष्मसांपरायका द्वितीय समयविषैं पूर्वोक्त अंतकी अनुदय कृष्टिनिकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टि ऐसी ४।३ / ख।प।५।प / २ २ नवीन अनुदयरूप हो हैं। ते ए कृष्टि प्रथम समयकी उदय कृष्टिनिविषैं अंतकी कृष्टि जानना। ब-

हुरि पूर्वोक्त आदिकी अनुदय कृष्टिनिका पल्यका असंख्यातवां भागमात्र कृष्टि ऐसी–

४ । २ (बा । प । ५ । प / ३ ३) नवीन उदय रूप कृष्टि हो हैं । ते ए कृष्टि प्रथम समयकी अनुदय कृष्टिनिविषैं अंत की कृष्टि जाननी । बहुरि इहां नवीन अनुदय कृष्टिनिविषैं नवीन उदय कृष्टिनिका प्रमाण घटाएं ऐसा ४ । १ (बा । प । ५ । प / ३ ३) विशेषकरि घटता द्वितीय समयविषैं उदय कृष्टिनिका प्रमाण हो है । ऐसैं ही तृतीयादि समयनिविषैं विधान जानना, तिनकी रचना कथन अनुसार ऐसी–

x x x			
अंतसमय	४	४	४
०	अनु	४	अनु
द्वितीयसमय	अनुदय	अ५	अनुदय
प्रथमसमय	अनुदय	अ४	अनुदय

इहां पूर्वोक्त प्रकार प्रथम स्थित्यादिककी संदृष्टिकरि तहां समय समय क्रमतैं आदिकी अनुदय कृष्टि घटती बीचिकी उदय कृष्टि विशेष हीन अंतकी अनुदय कृष्टि बंधती अंतविं.

वा आदि विषैं भई तिनकी संदृष्टि करी है। तिनका प्रमाणकी संदृष्टि तहां यथा संभव लिखनी बहुरि सर्व कृष्टिनिका द्रव्य पूर्वोक्त प्रकार ऐसा स a। १२ – a २ ७ यार्कों पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं प्रथम फालि, याकों क्रमतें असंख्यातकरि द्वितीयादि फालि होइ। द्विचरम फालि पर्यंत सर्व फालिनिका द्रव्य घटाएं तिस सर्व द्रव्यकों पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं तहां बहुभागमात्र अंत फालिका द्रव्य हो है। तिनकों सूक्षमसांपरायका प्रथमादि समयविषैं उपशमावै है। तिनकी संदृष्टि रूप रचना ऐसी–

(१ ~ ; ७। ८। ओ। प ; a)

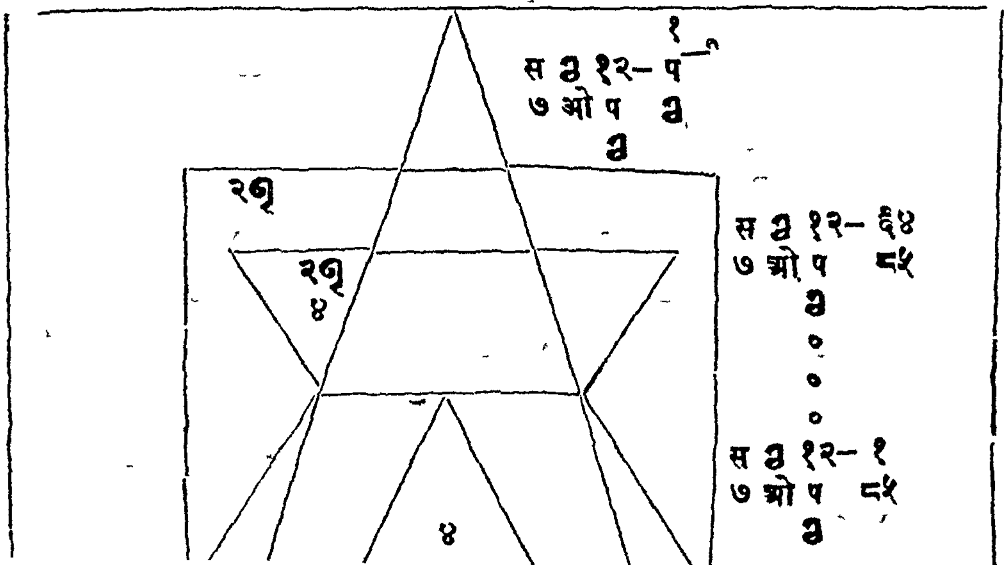
स। a। १२ – a। ८ ७ ७। ८। क्रि। प। प a a	स। a। १२ – a। ८ ७। a ७। ८। क्रि। प। प a a	० ० ०	स। a। १२ – a। ८ ७। प ७। ८। क्रि। प a

बहुरि उपशांत कषायका प्रथमादि समयनिविषैं उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणि आयाम है। तहां प्रथम समयविषैं एक कर्मका द्रव्य ऐसा स a। १२–ताकों अपकर्षण भाग

हारका भाग देइ एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भाग ऐसा— स । a । १२ — / ७ । ओ । प / a ताकौं गुणस्थान काल अंतर्मुहूर्त ताका संख्यातवां भाग ऐसा २ ११ ताविषैं

गुणश्रेणि विधानकरि द्रव्य देना । बहुरि बहुभाग ऐसे स । a । १२ — प (१—) / ७ । ८ । ओ । प / a (a) उपरितन स्थिति

विषैं विशेष घटता क्रमकरि देने तहां संदृष्टि ऐसी—



इहां पूर्वें उदयावली गुणश्रेणि थी तिनकी संदृष्टि नीचैं क्रमहीन रूप उपरि क्रम अधिकरूपकरि इहां भई, उदयादि गुणश्रेणिकी नीचैंहीतैं लगाय क्रम अधिक रूप संदृष्टि करी अर ताके उपरि उपरितन स्थितिकी संदृष्टि करी है अर तहां दीया द्रव्यको संदृष्टि आगैं करी है। बहुरि प्रथम समयविषैं कीनी गुणश्रेणिका अंत समयविषैं उत्कृष्ट प्रदेशोदय हो है। तहां प्रथम समय कृत गुणश्रेणीका अंत निषेक असा स। ३। १२ – ६४ द्वितीय

७। ओ। प। ८५
३

समयकृत गुणश्रेणिका द्विचरम निषेक असा स। ३। १२ – १६ असैं क्रमतैं मिलैं गुण

७। ओ। प। ८५
३

श्रेणि मात्र द्रव्य असा स। ३। १२ – याविषैं इस समय संबंधी गोपुच्छ द्रव्य असा–

७। ओ। प
३

स। ३। १२ – १। १६ – १ साधिक कीएं इहां उत्कृष्ट प्रदेशोदय हो है। असैं उपशम

३। १। ओ। १२। १६। ४

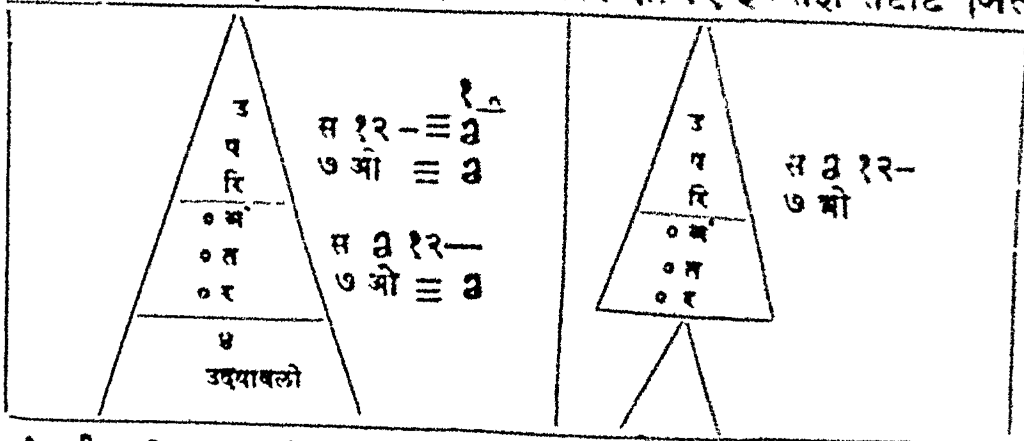
श्रेणी चढनेका विधान विषैं संदृष्टि कही। अब उतरनेका विधानविषैं संदृष्टि कहिए है–

तहां भव क्षयतैं उपशांत कषायतैं पड्या देव असंयमी होइ। ताके प्रथम समयविषैं उदयरूप मोह प्रकृतिनिके कर्मका द्रव्य असा स। ३ १२—ताका अपकर्षणकरि ताकौं असंख्यात

७

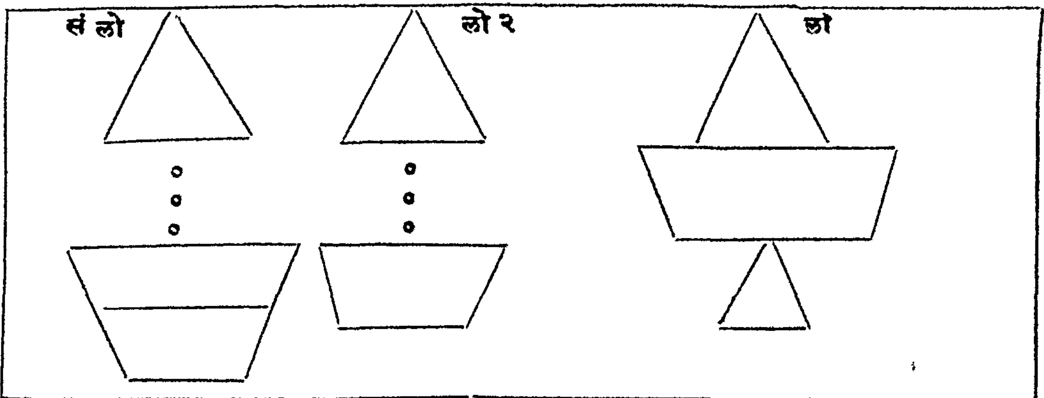
लोकका भाग देइ एक भागकौं उदयावलीविषैं देइ बहुभाग उदयावलीतैं बाह्य जो अंतरायाम अर द्वितीय स्थिति विषैं हीन क्रमकरि दीजिए है। बहुरि उदय रहित मोह प्रकृतिका

द्रव्य ऐसा स । ३ । १२ – ताकौं अपकर्षण करि उदयावलीतैं बाह्य निषेक अर अंतरायाम अर द्वितीय स्थितिविषैं पूर्वोक्त प्रकार हीन क्रमकरि दीजिए है। तहां संदृष्टि ऐसी—



इहां सर्वत्र हीन क्रमकरि द्रव्य दीया है। तातैं हीन क्रमरूप संदृष्टि करी। तहां उदयावली आदिका विभागके अर्थि बीचिमैं लीककी संदृष्टि करी है। बहुरि अद्धाक्षय निमित्ततैं उपशांत कषायस्यों पडि सूक्ष्मसांपरायविषैं आवै तहां प्रथम समयविषैं उदयवान संज्वलन लोभका द्रव्यकौं अपकर्षणकरि ताका पल्यकौं असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भागकौं उदयादि गुणश्रेणि आयामविषैं गुणकार क्रमकरि देइ ताके उपरि अंतरायामविषैं न देइ ताके उपरि तिनके बहुभागनिकौं द्वितीय स्थितिविषैं विशेष हीन क्रमकरि दीजिए है। बहुरि उदय रहित अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान लोभका द्रव्य अपकर्षणकरि पूर्वोक्त प्रकार उदयावली बाह्य गुणश्रेणि आयामविषैं देना। अंतरायाम विषैं न देना। उपरितन स्थितिविषैं

देना। बहुरि ज्ञानावरणादि छह कर्मनिका द्रव्य अपकर्षण करि उदयावलीविषैं हीन क्रमकरि गुणश्रेणि आयामविषैं गुणकार क्रमकरि उपरितन स्थितिविषैं हीन क्रमकरि देना। ताकी संदृष्टि रचना ऐसी—



इहां दीया द्रव्यकी संदृष्टि यथा संभव जानि लेनी। बहुरि सूक्ष्मसांपरायका प्रथम समयविषैं सर्व कृष्टि ऐसी ४ ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभागमात्र ऐसी ४ प उदयकृष्टि है। बहुरि एक भागकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पांचका भाग देइ दोय भागमात्र आदि कृष्टिविषैं अनुदयरूप है। तीन भागमात्र अंत कृष्टिविषैं अनुदयरूप हैं ते ऐसी

(interlinear notation: । ; । १ ० ; ख ; ३ ; ख प ; ३)

४ । २ ४ । ३ (ख । प । ५ ख । प । ५ / a a) बहुरि द्वितीय समयविषैं आदि कृष्टिनिकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र उदय कृष्टिनिविषैं आदिकी नवीन कृष्टि अनुदयकृष्टिरूप हो है। बहुरि अंतकी अनुदय कृष्टिनिकौं तैसैं ही भाग दीएं एक भागमात्र अंतकी अनुदय कृष्टिनिविषैं नवीन कृष्टि उदयरूप हो हैं। इहां पूर्व उदय कृष्टिनिविषैं घटी कृष्टि ऐसी ४ । २ (ख । प । ५ । प / a a) अर बंधी कृष्टि ऐसी ४ । ३ (ख । प । ५ । प / a a) बंधीमैं घटाएं इतनी ४ । १ (ख । प । ५ । प / a a) इहां पूर्व उदय कृष्टितैं अधिक इहां उदय कृष्टि जाननी। ऐसैं ही तृतीयादि समयनिविषैं क्रम जानना। तहां संदृष्टि रचना ऐसी—

आदिकी अनुदयकृष्टि	मध्यकी उदयकृष्टि	अन्तकी अनुदयकृष्टि

इहां आदि अनुदयकृष्टि अधिक क्रमरूप मध्य उदयकृष्टि विशेष अधिक रूप अंत

अनुदयकृष्टि हीन क्रम रूप जाननी। बहुरि अनिवृत्ति करण लोभ वेदक कालादिविषैं गुणश्रेणि आदिकी सुगमसंदृष्टि है। बहुरि क्रोधवेदक कालका प्रथमसमयविषैं क्रोधका द्रव्य ऐसा स ३।१२–
७।८

ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसा स ३।१२– याकौं पल्यका असंख्यातवां
७।८।ओ

भागका भाग दीएं एक भाग ऐसा स।३।१२– उदयादि गुणश्रेणि आयामविषैं गुणकार
७।८।ओ।प
३

क्रमकरि देना। तहां याकौं अंक संदृष्टिकरि पिच्यासीका भाग देइ एक आदिकरि गुणैं प्रथमादि निषेक हो हैं। बहुरि बहुभागनिविषैं केता इक द्रव्य देइ अंतरायामकौं पूरै है। तहां क्रोध द्रव्यकौं साधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं द्वितीयादि स्थितिके प्रथम निषेकका द्रव्य ऐसा स।३।१२– याकौं अंतरायामका गच्छ ऐसा २ १ करि गुणैं समपट्टिका
७।८।१२

धन ऐसा स।३।१२–।२ १ बहुरि तिस प्रथम निषेकका द्रव्यकौं दोगुणहानिका भाग
७।८।१२

दीएं चय होइ ताकौं दोगुणहानि कीएं तिसतैं नीचली गुणहानिका चय ऐसा स।३।१२–२
७।८।१२।१६

याकौं एक अधिक गच्छकरि अर गच्छका आधाकरि गुणैं उत्तर धन ऐसा–
१

स।३।१२–२।२ १।१ १ मिलावनेकौं समपट्टिका धन उपरि साधिककी संदृष्टि ऐसी
७।८।१२।१६ २
१२

(।) कीएं अंतरायामविषैं दीया द्रव्य ऐसा स । ɜ । १२ – २ १ याकौं गच्छ ऐसा २ १
७ । ८ । १२

ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेक अर तिस गुणकारविषैं एक एक क्रमतैं घटाइ अंतविषैं एक घाटि गच्छकौं घटाए अन्य निषेक हो है । बहुरि तिन बहुभागनिविषैं इतना द्रव्य घटावनेकौं आगैं ऐसी (–) संदृष्टि कीएं अवशेष उपरितन स्थितिविषैं दीया द्रव्य ऐसा–

स । ɜ । १२ – प १८ – इहां गुणकारका हीनपनाकौं न गिणि पल्यका असंख्यातवां भागका
७ । ८ । ओ । प ɜ
ɜ

अपवर्तन कीएं ऐसा स । ɜ । १२ – याकौ साधिक ड्योढ गुणहानिका अर दोगुणहानिका
७ । ८ । ओ

भाग दीएं चय होइ ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम गुणहानिका प्रथम निषेक अर याकौं आधा अन्योन्याभ्यस्तराशि ऐसा प ɜ २ का भाग दीएं अर तिस दोगुणहानिका गुणकारविषैं एक घाटि गुणहानि आयाम ऐसा– ८ १८ घटाएं अंत निषेकका द्रव्य हो है तहां संदृष्टि रचना ऐसी–

४

स ३ १२- १६- ८ 1/^

७ ८ ओ १६ प १६

० ३ २

०

स ३ १२- १६

७ ८ ओ १२ १६

स ३ १२- २७ १६

७ ८ २७ १६- २७ 1/^ /२

० ०

स ३ १२- २७ १६- २७ 1/^

७ ८ २७ १६- २७ 1/^ /२

० ० ० ०

स ३ १२- ६४

७ ८ ओ प ८५

० ३

०

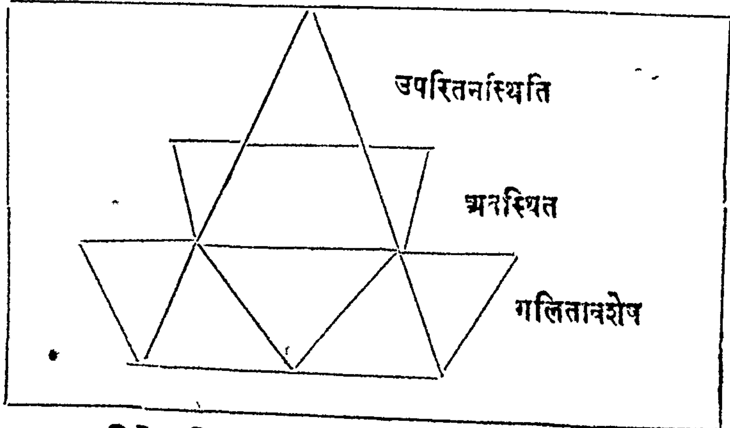
स ३ १२- १

७ ८ ओ प ८५

३

इहां नीचैं गुणश्रेणिके वीचि अंतरायामका उपरितन स्थितिकी अंतविषैं अतिस्थाप-

नावलीकी संदृष्टिकरि आगें दीए द्रव्यनिकी संदृष्टि करी है । बहुरि संज्वलन मानादिक तीनका द्रव्य ऐसा— $\frac{\text{स । ३ । १२ — ३}}{\text{७ । ८}}$ याविषैं अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानका द्रव्य ऐसा— $\frac{\text{स । ३ । १२ — ८}}{\text{७ । ख । १७}}$ मिलावनेकौं साधिककी संदृष्टि कीएं ऐसा, $\frac{\text{स । ३ । १२ — ३}}{\text{७ । ८}}$ याकौं अपकर्षणकरि उदयावली बाह्य गुणश्रेणि आयामविषैं अर अंतरायामविषैं अर उपरितन स्थितिविषैं दीया द्रव्य पूर्वोक्त विधान जानि संदृष्टि जाननी । बहुरि स्थिति बंधादिकी संदृष्टि सुगम है । तहां संख्यातकी सहनानी पांचका अंक इत्यादि यथासंभव जानि लेना बहुरि उतरनेवाले सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषैं प्रारंभी गलितावशेष गुणश्रेणिका आयामतैं अधःकरणका प्रथम समयविषैं आरंभी अवस्थित गुणश्रेणि आयाम संख्यात गुणी है तहां संदृष्टि ऐसी—



इहां क्रम हीन रूप निषेकनिकी संदृष्टिकरि तहां स्तोक प्रमाण लीएं गलितावशेष अर

बहुत प्रमाण लीएं अवस्थित गुणश्रेणि आयामकी संदृष्टि अधिक क्रमरूप करी है । ऐसैं उपशम श्रेणिके उतरनेका विधानकी संदृष्टि कही ।

बहुरि उपशम श्रेणि चढनेवालोंके क्रमतैं नपुंसकवेद स्त्रीवेद सप्त नोकषाय तीन क्रोध तीन मान तीन माया तीन लोभ एक सूक्ष्म लोभका उपशमावना क्रमतैं हो है । विशेष इतना — नपुंसक वेद सहित चढनेवालेकैं स्त्रीवेदका उपशमन कालविषैं नपुंसक वेदका भी उपशमावना हो है । तहां क्रोध सहित श्रेणि चढ्याकैं क्रोध पर्यंतकी प्रथम स्थिति पहलैं होइ । उपरि मानादिककी जुदी जुदी प्रथम स्थिति हो है । बहुरि मान माया लोभ सहित चढनेवालोंके क्रमतैं मान माया लोभ पर्यंतनिकी प्रथम स्थिति पहलैं होइ । उपरि अवशेषनिकी जुदी जुदी प्रथम स्थिति हो है । तहां प्रथम स्थितिविषैं अधिक क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है । तातैं तिनकी अधिक क्रम लीएं ऐसी संदृष्टि रचना हो है—

न	स्त्री	पुं	क्रोधोदय	मानोदय	मायोदय	लोभोदय
			लो १	लो १	लो १	लो १
			लो ३	लो ३	लो ३	लो ३
			या ३	या ३	मा ३	या ३
			मा ३	मा ३	मा ३	मा ३
			क्रो ३	क्रो ३	क्रो ३	क्रो ३
		नो ७	नो ७	नो ७	नो ७	नो ७
न स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री
न	न	न	न	न	न	न

बहुरि उपशम श्रेणिका चढनो वा पडनोका कालका अल्प बहुत्वविषैं संदृष्टि पूर्वोक्त प्रकार वा एकवार आदि अधिककी उपरि एक दोय आदिवार ऊभी लीकनैं आदि देकरि कथनके अनुसारि ऐसी संदृष्टि जाननी—

पृष्ठ १०२ (क) में देखो

ऐसैं उपशम चारित्राधिकारविषैं संदृष्टि जाननी।

इति श्री लब्धिसारटीका अनुसारि उपशम श्रेणिपर्यंत व्याख्यानकी संदृष्टि संपूर्ण भई।

अथ क्षपणासारका अनुसारि लीएं क्षपक श्रेणिका व्याख्यानरूप लब्धिसारके सूत्रनिका अर्थकी संदृष्टि लिखिए है तहां अपूर्व करणविषैं गुणश्रेणि गुणसंक्रमण स्थितिकांडक अनुभाग कांडककी संदृष्टि उपशम श्रेणिवत् इहां अर विशेष है तिनकी यथा संभव संदृष्टि जाननी। इहां सत्व द्रव्य विषैं गुणश्रेणि आदि वा बंध द्रव्यकी संदृष्टि ऐसी—

पृष्ठ १०३ (क) में देखो

इहां प्रकृति अष्ट आदि क्रमतैं जैसैं क्षपै हैं तैसैं क्रमतैं तिनके सत्व रूप निषेकानिकी क्रम हीन संदृष्टिकरि तिनविषैं नीचैं उदयावलीकौं हीन क्रमरूप वीचि गुणश्रेणि आयामकी अधिक क्रमरूप उपरि उपरितन स्थितिकी हीनक्रमरूप रचना जाननी। वहुरि पुरुषवेद अर क्रोध की प्रथमस्थिति स्थापी ताकी जुदी हीन क्रमरूप संदृष्टि दिखाइए है। बहुरि इस रचनाके वीचि वीचि पुरुषवेद अर क्रोधादिकका बंध द्रव्यकी जुदी संदृष्टि ऐसी ^ दिखाई है। इहां नीचैं आवाधा उपरि निषेकानिकी संदृष्टि जाननी। वहुरि ताके आगैं अवशेष कर्मनिकी क्रमहीन रूप सत्व निषेक रचनाविषैं नीचैं उदयावली वीचि गुणश्रेणि उपरि उपरितन स्थितिकी रचना जाननी। वहुरि ताके आगैं अवशेष कर्मनिका बंध द्रव्यकी संदृष्टि है। तहां नीचैं आवाधा ऊपरि निषेकानिकी रचना जाननी। वहुरि अनिवृत्ति करणविषैं स्थिति बंधापसरणादिककी संदृष्टि सुगम है। बहुरि अष्ट कषाय सोलह प्रकृतिकी क्षपणा अंश देशघाति करण अंतर करण विषैं संदृष्टि पूर्वोक्त प्रकार वा विशेष है। ताकी संभवती संदृष्टि जाननी। बहुरि नपुंसक वेदका संक्रमण कालविषैं पूर्वोक्त प्रकार नपुंसक वेदका सत्व द्रव्य ऐसा स। ३। १२ – ४२ / ७। १०। ४८ ताकौं गुण संक्रमका भाग दीएं पुरुषवेदविषैं संक्रमणरूप भया द्रव्यका प्रमाण हो है। अर

पूर्वोक्त प्रकार पुरुषवेदका सत्व द्रव्य ऐसा स । ३ । १२ – २ ताकौं अपकर्षण भागहार अर
७ । १० । ४८
पल्यका असंख्यातवां भाग अर अंक संदृष्टि अपेक्षा पिच्यासीका भाग दीएं गुणश्रेणिका प्रथम निषेक होइ । तिसविषैं पूर्व सत्व निषेक साधिक कीएं पुरुषवेदका उदय द्रव्य हो है । बहुरि समय प्रबद्ध ऐसा स ३ ताकौं सातका भाग दीएं मोहका अर ताकौं दोयका भाग दीएं पुरुषवेदका बंध द्रव्य हो है । इनकी संदृष्टि ऐसी–

सक्रमण नपुंसक द्रव्य	स । ३ । १२ – । ४२ ७ । १० । ४८ । गु
उदयपुवेद द्रव्य	स । ३ । १२ – । २ ७ । १० । ४८ । ओ । प ८५ ३
बंधपुंवेद द्रव्य	स । ३ ७ । २

बहुरि अश्वकर्ण विषैं अंक संदृष्टिकरि जैसैं व्याख्यानविषैं कथन कीया तैसैं इहां अर्थ संदृष्टि-करि पूर्व अनुभाग सत्व एक गुणहानि संबंधी स्पर्धक शलाका (९) कौं नानागुणहानिकरि गुणें मानके स्पर्धक ऐसे (९ । ना) याकौं अनंतका भाग देइ क्रमतैं एक दोय तीन अधिक अनंत करि गुणें क्रोध माया लोभके ऐसे ९ । ना । ख १ । ९ ना ख २ । ९ ना । ख ३ । बहुरि इहां क्रोधादिकका गुणकार उपरि एक दोय तीन अधिक थे तिनकौं जुदे कीएं ते ऐसे–
९ । ना । ९ ना २ । ९ ना ३ । मानकौ गुणकार विषैं अधिक है नहीं तहां शून्य लिखनी

बहुरि क्रोधका जुदा कीया अधिकका प्रमाण अर अधिक जुदेकरि अपवर्तन कीएं क्रोधके
१ –
ऐसे ९ । ना स्पर्धकानिकौं अनंतका भाग देइ बहुभाग ऐसे ९ । ना । ख इनिकौं मिलाएं
ख
क्रोध कांडकका प्रमाण हो है । अवशेष एक भागमात्र ऐसा ९ । ना अवशेष सत्व क्रोधका रहै
ख
है । बहुरि तिस क्रोध संबंधी बहुभागनिका प्रमाण अर अवशेष एक भागका अनंत बहुभा-
१ –
ग ऐसा ९ । ना । ख ख मिलाएं मान कांडकका प्रमाण हो है । अवशेष एक भागमात्र ऐसा—
ख ख
९ । ना अवशेष सत्व रहै है । बहुरि जुदा कीया मायाके अधिकका प्रमाण अर क्रोध संबंधी
ख ख
मान संबंधी कहे थे बहुभाग तिनिका प्रमाण अर मान संबंधी अवशेष सत्व एक भाग मात्र
१ –
ताका अनंत बहु भागनिका प्रमाण ऐसा ९ ना ख । मिलाएं मायाकांडकका प्रमाण हो है
ख ख ख
अर अवशेष एक भाग ऐसा ९ । ना अवशेष सत्व रहै है । बहुरि जुदा कीया लोभका
ख ख ख
अधिकका प्रमाण अर क्रोध मान माया संबंधी कहे थे बहुभाग तिनका प्रमाण अर तिस
१ –
मायाका अवशेष सत्व एक भागमात्र ताका अनंत बहुभागनिका प्रमाण ऐसा ९ । ना । ख
ख । ख । ख । ख

इनि सबनिकौं मिलाएं लोभ कांडकका प्रमाण हो है । अवशेष एक भागमात्र ऐसा ९ । ना
 ख । ख । ख । ख

अवशेष सत्व रहै है । ऐसैं इहां उपरि जुदे कीएं अधिकानिका प्रमाण लिखि नीचैं अन्य मिलाएं तिनका प्रमाण लिखना । तिनकौं जोडै कांडक प्रमाण हो है ऐसैं समझना । बहुरि इस कांडक घात भएं पीछैं अश्वकरणविषैं अनंत गुणहानि लीएं क्रोधादिकके स्पर्धक क्रमरूप हो हैं । तिनका प्रमाण नीचै ही नीचै लिखना । ऐसैं कीएं ऐसी संदृष्टि हो है—

क्रो	मा	मा	लो
९ । ना । १ ख	० ०	९ । ना । २ ख	९ । ना । ३ ख
१ — ९ । ना । ख ख	१ — ९ । ना । ख ख	१ — ९ । ना । ख ख	१ — ९ । ना । ख ख
९ । ना ख	१ — ९ । ना । ख ख ख	१ — ९ । ना । ख ख ख	१ — ९ । ना । ख ख ख
	९ । ना ख । ख	१ — ९ । ना । ख ख । ख । ख	१ — ९ । ना । ख ख । ख । ख
		९ । ना ख । ख । ख	१ — ९ । ना । ख ख । ख । ख ख
			९ । ना ख । ख । ख । ख

बहुरि इस अपकर्षण सहित अपूर्व स्पर्धक क्रिया हो है । तहां एक परमाणूविषैं अविभाग प्रतिच्छेदका समूह वर्ग ताकी संदृष्टि ऐसी (व) याकौं वर्गणा वर्गणा प्रति जो चय ताका नाम विशेष है ताकरि गुणैं ऐसा (व । वि) बहुरि एक स्पर्धकविषैं जेती वर्गणा पाइए तिनका नाम वर्गणा शलाका है । ताकी संदृष्टि ऐसी (४) बहुरि एक गुणहानिविषैं स्पर्धकनिका प्रमाण ताका नाम स्पर्धक शलाका ताकी संदृष्टि ऐसी (९) इनि दोऊनिकौं परस्पर गुणैं गुणहानि आयाम होइ ताकी अंक संदृष्टि ऐसी (८) याकौं दोयकरि गुणैं दोगुणहानि की संदृष्टि ऐसी १६ याकरि तिस विशेषकौं गुणैं प्रथम स्पर्धककी ऐसी व वि १६ याकौं दूणा कीएं द्वितीय स्पर्धककी आदि वर्गणाकी ऐसी व वि १६ २ बहुरि तिसहीकौं तिगुणा कीएं तृतीय स्पर्धककी आदि वर्गणाकी संदृष्टि ऐसी व वि १६ ३ ऐसैंही क्रमतैं प्रथम समय विषैं कीएं अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण स्पर्धक शलाकाकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं हो है सो ऐसा ९ याकरि गुणैं अंत स्पर्धककी आदि वर्गणाकी संदृष्टि ऐसी
ओ ३

व वि । १६ । ९ हो है । ऐसैं ही जानि अन्य कथनकी संदृष्टि यथा संभव जानि लेनी । ब-
ओ ३

हुरि क्रोधके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण पूर्वोक्त ऐसा ९ याकौं अनंतका भाग देइ क्रमतैं
ओ ३

एक दोय तीन अधिक करि गुणैं मान माया लोभके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण हो है ते ऐसे

१—	२—	३—
९ । ख	९ । ख	९ । ख
ओ ३ ख	ओ ३ ख	ओ ३ ख

बहुरि क्रोध कांडक अनंत प्रमाण ऐसा (ख) यातैं एक दोय तीन अधिक मानादिकका कांडक ऐसा १ । २ । ३ बहुरि पूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेदनिकौं अनंतका
ख । ख । ख

भाग दीएं अपूर्व स्पर्धककी अंत वर्गणाके अविभाग प्रतिच्छेद च्यारयो कषायनिके समान हैं । तिनकी संदृष्टि ऐसी व याकौं अपने अपने अपूर्व स्पर्धकानिके प्रमाणका भाग दीएं आ-
ख

दिवर्गणा हो है । याहीकौं जघन्य वर्गणा कहिए । बहुरि याकौं दोय तीन आदि क्रमतैं एक एक बंधता गुणकार करि गुणैं जहां अपने अपने कांडक प्रमाणका गुणकार होइ तहां च्यारयो कषायनिकी वर्गणानिके समान अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं । बहुरि ताके ऊपरि तैसैं ही एक एक बंधता गुणकार रूप क्रमतैं तिन समान वर्गणानिके अविभाग प्रतिच्छेदानितैं दूणा प्रमाण भएं समान वर्गणा हो है । ऐसैं ही तिनतैं तिगुणा चौगुणा आदि एक घाटि अनंत गुणा पर्यंत प्रमाण होइ । ताके उपरि अंत स्पर्धकविषैं पूर्वोक्त ऐसा व च्यारयो कषाय-
ख

निकी आदि वर्गणानिविषैं समान अविभाग प्रतिच्छेद हो हैं । तिनकी संदृष्टि ऐसी—

क्रो व ख ० ०	मा व ख ० ०	माया व ख ० ०	लो व ख ० ०
१ ८ ज ख । ख ० ०	१— १ ८ ज । ख ख ० ०	२— १ ८ ज । ख ख ० ०	३– १ ८ ज ख ख ० ०
ज । ख । २ ० ०	१— ज । ख २ ० ०	२_ ज । ख २ ० ०	३_ ज । ख ९ ० ०
ज । ० ख ० व ख । ९ । ओ ३	१_ ज । ख ० व ० १— ख । ६ । ख ओ ३ ख	२_ ज । ख ० व ० २— ख ६ ख ओ ३ ख	३_ ज । ख ० व ० ३— ख ९ ख ओ ३ ख

तहां मध्य भेदनिकी संदृष्टि विंदी जाननी ।

बहुरि प्रथम वर्गणाकौं अनुभाग संबंधी ड्योढ गुणहानिकरि गुणैं मोहका सत्त्व द्रव्य ऐसा व । १२ याकौं आवलीका असंख्यातवां भागकी सहनानी नवका अंक ताका भाग देइ एक भाग जुदा राखि बहुभागनिके दोय भाग करने । तहां एक भागविषैं जुदा राख्या भाग मिलाएं साधिक आधा द्रव्य कषायनिका ऐसा व १२/२ किंचिदून आधा द्रव्य नोकषाय

निका ऐसा– व । १२/२ – हो है । बहुरि कषायनिके द्रव्यविषैं सात्विक चौथा भागमात्र लोभका द्रव्य है । किंचिदून चौथा भागमात्र मायाका तातैं किंचिदून क्रोधका तातैं किंचिदून मानका द्रव्य है । इहां इस च्यारिका भागहारकौं पूर्व दोयका भागहार करि गुणें आठका भागहार हो है । बहुरि क्रोधका द्रव्यविषैं नोकषायनिका द्रव्य समच्छेदकरि मिलाएं क्रोधका द्रव्य पांच गुणा हो है । तिनकी संदृष्टि ऐसी– लो माया मा को. बहुरि

व १२/८ व १२/८ – व १२/८ = व १२/८ ≡ ५

इहां लोभके द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य ऐसा व १२/ओ तहां लोभकी पूर्व स्पर्धककी वर्गणाकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसा व/ओ ऐसैं ही दोय घाटि अपकर्षण भागमात्र पूर्व स्पर्धककी वर्गणानिका अपकर्षण कीया द्रव्य ऐसा व ओ – २/ओ यामैं आदि वर्गणाका अपकृष्ट द्रव्य मिलावनेकौं दोय घाटिकी जायगा एक घाटि कीएं ऐसा व । ओ – १/ओ इतना द्रव्य ग्रहि अपूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणा निपजाइए है । सो यहु पूर्व स्पर्धककी आदि वर्गणाके समान है । जातैं तहां भी तिस वर्गणाकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भाग ग्रहैं बहुभागमात्र द्रव्य अवशेष रहै है । सो इतना ही यहु है । बहुरि अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण ऐसा ९ अर एक स्पर्धकविषैं वर्गणानिका प्रमाण ऐसा [४]
ओ । ३

इनकौं परस्पर गुणैं सर्व अपूर्व स्पर्धकनिकी वर्गणाका प्रमाण ऐसा ९ । ४ भया । इहां स्प-
ओ । ३

र्धक शलाकाकी सहनानी नवका अंक अर वर्गणा शलाकाकी च्यारिका अंक तिनकौं पर-
स्पर गुणैं गुणहानि होइ ताकी सहनानी आठका अंक कीएं ऐसी ८ संदृष्टि हो है।
ओ ३

याकरि तिस आदि वर्गणाकौं गुणैं समपाट्टिका धन ऐसा व ओ − १ । ८ हो है। बहुरि पूर्व
ओ । ओ । ३

स्पर्धककी आदि वर्गणाकौं दोगुणहानिका भाग दीएं ताका चय होइ । तातैं दूना अपूर्व स्पर्धकनिकी वर्गणानिविषैं चयका प्रमाण है। तातैं तिस आदि वर्गणाकौं एकगुणहानिकी सहनानी आठका अंक ताका भाग दीएं इहां चय ऐसा व । ओ −१ याकौं आदि उत्तर
ओ । ८

स्थापि अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाणकौं गच्छ स्थापि जोडैं जो चय धन भया ताकौं मिला-
वनेके अर्थि तिस समपाट्टिका धनकी संदृष्टि उपरि साधिककी संदृष्टि कीएं ऐसा—

व । ओ − १ । ८ बहुरि याके गुणकार भागहारकौं ड्योढकारि गुणैं ऐसा व । १२ । ओ − १
ओ । ओ । ३ ओ । ओ । ३ । २
२

द्रव्यतौ अपूर्व स्पर्धकनिहीविषैं दूना बहुरि लोभका अपकर्षण कीया द्रव्य ऐसा व । १२
८ । ओ

इहां मोहका सर्व द्रव्यकी अपेक्षा आठका भागहार था अर लोभहीकी वर्गणाकौं ड्योढ गुणहानिकरि गुणैं लोभका द्रव्य होइ । ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसी व १२
आ

संदृष्टि हो है। याविषैं पूर्वोक्त द्रव्य ऐसा व । १२ । ओ – १ घटावनेकौं ऐसा ओ । ३ । ३/२
ओ । ओ । ३ । ३/२

करि समच्छेद कीएं यहु ऐसा व । १२ । ओ । ३ ३/२ भया। बहुरि याकैं अर तिस घटावने
ओ । ओ । ३ ३/२

योग्य द्रव्यकैं अन्य समान जानि ऐसा ओ । ३ । ३/२ गुणकारविषैं ऐसा ओ – १ घटावनेकी

आगैं संदृष्टि कीएं घटाएं पीछें अवशेष द्रव्यकी संदृष्टि ऐसी व । १२ । ओ । ३ । ३ ओ – १ संदृष्टि
ओ । ओ । ३ । ३/२ । २

हो है। बहुरि अपूर्व स्पर्धक वर्गणा संबंधी एक शलाका अर याका भाग पूर्व स्पर्धक वर्गणा शलाकाकौं देना। तहां गुणहानिकी संदृष्टि आठका अंक ताकौं ड्योढकरि गुणैं पूर्व स्पर्धक वर्गणा शलाका ऐसी ८ । ३/२ याकौं अपूर्व स्पर्धक वर्गणा शलाका ऐसी ८/ओ ३ का भाग दीएं ऐसा

८ । ३/२ इहां गुणहानिका अपवर्तन कीएं अर भागहारका भागहार ऐसा ओ/३ ताकौं राशिका
८ । ३
ओ । ३

गुणा कीएं ऐसी ओ । ३ । ३/२ अपूर्व स्पर्धक संबंधी शलाका भई। यामैं अपूर्व स्पर्धक शलाका

एक अधिक कीएं उभय शलाका ऐसी ओ । ३ । ३/२ याका भाग तिस अवशेष द्रव्यकौं देइ
ओ । ३ ३/२

अपनी अपनी शलाका करि गुणें पूर्व स्पर्धक संबंधी द्रव्य ऐसा—

व । १२ । ओ । ७ । ३ २ — ओ — १ ओ ७ ३ २ याविषैं ऐसा ओ । ७ । ३ २ का अपवर्तन कीएं ऐसा—

ओ । ओ । ७ । ३ २ । ओ । ७ । ३ २

व । १२ । ओ । ७ । ३ २ — ओ — १ हो है । बहुरि अपूर्व स्पर्धक संबंधी द्रव्य ऐसा—

ओ । ओ । ७ । ३ २

व । १२ । ओ । ७ । ३ २ — ओ — १ याकौं पूर्वोक्त अपूर्व स्पर्धकविषैं देने योग्य द्रव्यविषैं

ओ । ओ । ७ । ३ २ । ओ । ७ । ३ २

मिलावना सो पूर्व द्रव्य ऐसा व । १२ । ओ — १ सो याविषैं गुणकाररूप अपकर्षण भागहारके

ओ । ओ । ७ । ३ २

आगैं एक घाटि था सो दूरिकरि भागहाररूप जो अपकर्षण भागहार था ताका गुणकार ऐसा ७ । ३ २ विषैं एक अधिक कीएं ऐसा व । १२ । ओ । याविषैं पीछैं मिलावने योग्य द्रव्यका

ओ । ओ । ७ । ३ २

साधिकपना जानना । बहुरि याकौं अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाण ऐसा ८ ओ ७ ताका भाग देना

तहां गुणकारविषैं ड्योढ गुणहानि ऐसा १२ या ताका गुणहानि ऐसा ८ का भागहारकरि

१५

अपवर्तन् कीएं गुणकारविषैं ड्योढ रह्या अर भागहारका भागहार ऐसा–ओ। ३था ताकौं राशिका गुणकार करना। ऐसैं कीएं मध्य धन ऐसा व। ओ। ओ। ३। ३ भया। याकौं
१— २
ओ। ओ। ३। ३
२

एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं चय होइ सो ऐसा– व। ओ। ओ ३। ३ याकौं दोगुणहानि ऐसा १६ करि गुणें। प्रथम वर्गणाविषैं दीया द्रव्य
१— २ १०
ओ। ओ। ३। ३। १६–८ओ। ३। ३
२ २

होइ अर इस गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घाटि गच्छ ऐसा ८ अंत वर्गणाविषैं दीया द्रव्य
१ ०
ओ ३

हो है। ऐसैं तौ अपूर्व स्पर्धक संबंधी दीया द्रव्यकी संदृष्टि हो है।

बहुरि पूर्व स्पर्धक संबंधी दीया द्रव्य ऐसा व। १२। ओ। ३। ३ – ओ – १ याकौं
१— २
ओ। ओ। ३। ३
२

ड्योढ गुणहानि ऐसा १२ का भाग देइ याहीका अपवर्तन कीएं आदि वर्गणाविषैं दीया द्रव्य हो है। बहुरि याकौं दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ ताकी लघु संदृष्टि ऐसी (वि) ताकौं दोगुणहानिकरि गुणि तामैं एक एक घाटि प्रथम गुणहानि पर्यंत अर गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा क्रम कीएं अंत वर्गणाविषैं दीया द्रव्यका प्रमाण विशेषकौं एक घाटि गुणहानिकरि हीन दोगुणहानि करि गुणें अर एक घाटि नाना गुणहानि प्रमाण दूवानिका भाग दीएं हो है। इनकी संदृष्टि ऐसी–

पूर्वस्पर्धक　१२　अपूर्वस्पर्धक

इहां नीचैं अपूर्वस्पर्धक उपरि अपूर्व स्पर्धककी रचनाकरि ताके आगे तिनकी वर्गणाविषैं दीया द्रव्यके प्रमाणकी संदृष्टि जाननी । अैसें तो दीया द्रव्यकी संदृष्टि है । अर पूर्व स्पर्धककी वर्गणानिकौ अपकर्षण भागहारका भाग देइ तहां बहुभागमात्र पुरातन द्रव्य है सो अैसा—

व । ओ — १ इस पुरातन द्रव्य अर दीया द्रव्यकौं मिलाएं पूर्व अपूर्व स्पर्धकानिका चय घ-
ओ

टता क्रम लीएं एक गोपुच्छ हो है ऐसा जानना। बहुरि इहां क्षेत्र रचना करि इस अर्थ कौं दिखाया है सो टीका विषैं लिखा ही है। तहां संदृष्टि सुगम है। बहुरि पूर्व स्पर्धक ड्योढ गुणहानिमात्र ऐसे (१२) तिनकी नीचैं प्रथम समयविषैं कीएं अपूर्व स्पर्धक गुणहानिके असंख्यातवे भागमात्र ऐसे $\frac{८}{a}$ तिनके नीचैं तिनके असंख्यातवे भागमात्र द्वितीय समयविषैं कीएं अपूर्व स्पर्धक ऐसे $\frac{८}{aa}$ इनिकी रचना ऐसी–

१२			१२			१२			१२	
$\frac{८}{a}$			$\frac{८}{a}$			$\frac{८}{a}$			$\frac{८}{a}$	
$\frac{८}{aa}$			$\frac{८}{aa}$			$\frac{८}{aa}$			$\frac{८}{aa}$	

इहां स्पर्धकनिकी रचनाकरि वीचिमैं पूर्व स्पर्धकादिकका विभाग करनेके अर्थि लीक करी है। ऐसैं ही तृतीयादि समयनिविषैं नीचैं नीचैं असंख्यात गुणा घटता क्रम लीएं अपूर्व स्पर्धकनिकी रचना करनी। बहुरि प्रथम अनुभाग कांडक घात भएं अनुभागका अल्प बहुत्वविषैं क्रोध मान माया लोभके अपूर्व स्पर्धकनिका प्रमाणकी प्रथम समयविषैं कीएं अपूर्व स्पर्धकनिकी संदृष्टिके ऊपरि अन्य समयनिविषैं कीएं मिलावनेके अर्थि आधिक की संदृष्टि कीएं संदृष्टि हो है। अर एक गुणहानिविषैं स्पर्धक शलाकाकी अर एक स्पर्धक

विषैं वगर्णा शलाकाकी तौ पूर्वोक्त संदृष्टि जाननी अर क्रोधादिकके अपूर्व स्पर्धकनिके आगैं वर्गणा शलाकाकी संदृष्टि कीएं तिनकी वर्गणाकी संदृष्टि हो है। अर नानागुणहानि गुणित स्पर्धक शलाकाकौं क्रमतैं च्यारि तीन दोय एकवार अनंतका भाग दीएं लोभ माया मान क्रोधके पूर्व स्पर्धकनिका प्रमाण हो है। तिनकौं वर्गणा शलाकाकरि गुणैं अपना अपना वर्गणानिका प्रमाण हो है। ऐसैं ए कहे तिनकी संदृष्टि ऐसी है। —

क्रो अ पू	मा अ पू	मा अ	लो अ	गु स्प	स्प व	क्रो व	मा व	या व
। ९ ओ ३	। १_ ९ ख ओ ३ ख	। २_ ९ ख ओ ३ ख	३_ ९ ख ओ ३ ख	९	४	९ ४ ओ ३	१_ ९ ख ४ ओ ३ ख	। २_ ९ ख ४ ओ ३ ख
लो व	**लो पू**	**लो पू व**	**या पू**	**या पू व**	**मा पू**	**मा पू व**	**क्रो पू**	**क्रो पू व**
३_ ९ ख ४ ओ ३ ख	९ ना ख ख ख ख	९ ना ४ ख ख ख ख	९ ना ख ख ख	९ ना ४ ख ख ख	९ ना ख ख	९ ना ४ ख ख	९ ना ख	९ ना ४ ख

बहुरि इहां क्रोधादिकनिके पूर्वस्पर्धकानिका प्रमाणकौं अनंतका भाग दीएं बहुभाग मात्र तौ द्वितीय कांडक करि घात कीजिए है। एक भागमात्र अवशेष रहै है। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	क्रो	मा	या	लो
घातकीए स्पर्धक	१ ९ । ना । ख ख ख	१ ९ । ना । ख ख । ख । ख	१ ९ । ना । ख ख । ख । ख । ख	१ ९ । ना । ख ख । ख । ख । ख ख
अवशेष स्पर्धक	९ । ना ख ख	९ । ना ख । ख । ख	९ । ना ख । ख । ख । ख	९ । ना ख । ख । ख । ख ख

ऐसैं ही तृतीयादि कांडकविषैं क्रम जानना। बहुरि तहां अनुभागकी यथा संभव संदृष्टि जाननी ऐसैं अपूर्व स्पर्धक क्रिया विधानविषैं संदृष्टि कही। अब बादर कृष्टि करण विधानविषैं संदृष्टि कहिए है—

तहां अंतर्मुहूर्तमात्र कालकौं संख्यातका भाग देइ बहुभागानिके तीन समान भागकरि अवशेष एक भागका संख्यात बहुभाग प्रथम समान भागविषैं मिलाएं अश्वकरण काल है। अवशेष एक भागका संख्यात बहुभाग द्वितीय समान भागविषैं मिलाएं कृष्टि करण काल है। अवशेष एक भाग तृतीय समान भागविषैं मिलाएं कृष्टि वेदक काल है तिनकी संदृष्टि रचना ऐसी—

नाम	अश्वकरण	कृष्टिकरण	कृष्टिवेदक
समभाग	१ — २ । ७ । ७ ७ । ३	१ — २ । ७ । ७ ७ । ३	१ — २ । ७ । ७ ७ । ३
देयभाग	१ — २ । ७ । ७ ७ । ७	१ — २ । ७ । ७ ७ । ७ । ७	२ । ७ ७ । ७ । ७

बहुरि ग्यारह्यो कषायनिकी बारह संदृष्टि हो हैं। तिनका अनुभाग जाननेकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पूर्वैं टीकामैं कथन किया है। बहुरि मोहका द्रव्य ऐसा व १२ याकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य ऐसा व १२ बहुरि वर्गणा शलाकाके अनंतवे

भागमात्र प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४/ख तहां इनकौं आठका भाग देइ एक भाग च्यारयो कषायनिका द्रव्य वा कृष्टिका प्रमाण हो है। तहां लोभविषैं साधिक मायाविषैं किंचिदून तातैं भी क्रोधविषैं किंचिदून तातैं मानविषैं किंचिदूनपना जानना। बहुरि च्यारिभागमात्र नोकषाय संबंधी कृष्टि क्रोधविषैं मिलाएं तहां पांच भाग हो हैं। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
द्रव्य	। व । १२ ८। ओ	। व । १२ – ८। ओ	। व । १२ ≡ ८ । ओ	। व । १२ = ५ ८ । ओ
कृष्टि	४ ख । ८	४ – ख । ८	४ ≡ ख । ८	४ = ५ ख । ८

बहुरि अपना अपना द्रव्यका वा कृष्टि प्रमाणकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां बहुभागके तीन समान भाग करने। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग प्रथम समान भागविषैं मिलाएं प्रथम संग्रहकृष्टिविषैं द्रव्यका वा कृष्टिका प्रमाण हो है अर अवशेष एक भागकौं तैसैं ही भाग देइ बहुभाग द्वितीय समान भागविषैं मिलाएं द्वितीय संग्रहविषैं तिनिका प्रमाण हो है। अवशेष एक भाग तृतीय समान भागविषैं मिलाएं तृतीय संग्रहविषैं तिनका प्रमाण हो है। सो लोभका इस विधानकी ऐसी संदृष्टि हो है—

लोभका	प्रथमसंग्रह	द्वितीयसंग्रह	तृतीयसंग्रह
समानभाग द्रव्य	| व । १२ । प– १ २४ओ । a प a	| व । १२ । प– १ २४ । ओ a प a	| व । १२ । प– १ २४ । ओ a प a
देयभाग द्रव्य	| व । १२ । प– १ ८ । ओ । प a प a a	| व । १२ । प– १ ८ । ओ । प a प प a a a	| व । १२ ८ । ओ प । प । प a a a
समानभाग कृष्टि	४ । प– १ १— a ख २४ । प a	४ । प– १ ख । २४ । प a	४ । प– १ a ख । २४ प a
देयभाग कृष्टि	४ प– १ a ख । ८ । प । प a a	४ । प– १ ख । ८ । प । प । प a a a	४ ख । ८ । प । प । प a a a

इहां बहुभागनिविषैं आठका अर तीनका भागहारकौं गुणि चौईसका भागहार लिख्या है। औसैं ही अन्य कषायनिकी जाननी । बहुरि तहां किंचित् हीन अधिक न गिणि अपना अपना सर्व द्रव्यका वा सर्व कृष्टिका प्रमाणकौं तीनका भाग देइ आठका भाग आगैं था ताकरि गुणें चौईसका भाग हो है। तहां ग्यारह संग्रहविषैं तौ एक एक भागमात्र प्रमाण हो है। अर क्रोधकी तृतीय संग्रहविषैं नोकषाय संबंधी द्रव्यका संक्रमण भया है तातैं ताविषैं तेरह भागमात्र तिनिका प्रमाण हो है तिनकी संदृष्टि औसी—

नाम	लोभ			माया			मान			क्रोध		
समग्र	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ
द्रव्य	। व १२ २४ ओ	। व १२ २४ ओ	। व १२ २४ ओ	। व १२– २४ ओ	। व १२ २४ ओ	। व १२– २४ ओ	व १२≡ २४ ओ	व १२≡ २४ ओ	व १२≡ २४ ओ	व १२= २४ ओ	व १२= २४ ओ	व १२=१३ २४ ओ
कृष्टि	। ४ ख २४	। ४ ख २४	। ४ ख २४	। ४– ख २४	। ४– ख २४	। ४– ख २४	४≡ ख २४	४≡ ख २४	४≡ ख २४	४= ख २४	४= ख २४	४= १३ ख २४

बहुरि प्रथम समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्य असा व । १२ ओ ताकौं कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधा प्रमाणकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष हो है । सो असा— व । १२ ओ । ४ । १६—४/२ १△ ख । ख याकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम कृष्टिविषैं दीया द्रव्य होइ । बहुरि विशेष का जो दो गुणहानिका गुणकार ताविषैं क्रमतैं एक एक घटाइ एक घाटि गच्छमात्र घटैं अंत कृष्टिविषैं दीया द्रव्य हो है । तिनकी संदृष्टि असी—

प्रथमकृष्टि	मध्यकृष्टि	अंतकृष्टि
व । १२ । १६ १ ‿ ओ । ४ । १६–४ ख ख २	वि १६ – १००००००००००००	व । १२ । १६ – ४ १ ‿ ख ओ । ४ । १६–४ १ ‿ ख ख २

बहुरि स्पर्धक संबंधी द्रव्यकौं ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं प्रथम वर्गणाविषैं एक एक विशेष घटता द्वितीयादि वर्गणाविषैं बहुरि आधा आधा गुणहानिविषैं द्रव्य दीजिए है। ताकी संदृष्टि सुगम है। बहुरि कृष्टिकारकका द्वितीय समयविषैं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिका प्रमाणकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं नवीन करी कृष्टिनिका प्रमाण हो है। अर प्रथम समयविषैं जो द्रव्यविषैं अपकर्षण भागहारका भाग था तहां अपकर्षण भागहारके असंख्यातवै भागमात्र भागहारका भाग दीएं अपकर्षण कीया द्रव्य हो है। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभ			माया		
संग्रह	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ
कृष्टि	। ४ ख २४ ओ a	। ४ ख २४ ओ a	। ४ ख २४ ओ a	। ४– ख २४ ओ a	। ४– ख २४ ओ a	। ४– ख २४ ओ a
द्रव्य	। व १२ ओ २४ a	। व १२ ओ २४ a	। व १२ ओ २४ a	। व १२– ओ २४ a	। व १२ ओ २४ a	। व १२– ओ a
नाम	माया			क्रोध		
संग्रह	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ
कृष्टि	४≡ । ख २४ ओ a	४≡ । ख २४ ओ a	४≡ । ख २४ ओ a	४= । ख २४ ओ a	४= । ख २४ ओ a	४= १३ । ख २४ ओ a
द्रव्य	व १२≡ ओ २४ a	व १२≡ ओ २४ a	व १२≡ ओ २४ a	व १२= ओ २४ a	व १२= ओ २४ a	व १२= १३ ओ २४ a

बहुरि द्वितीय समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्यविषैं अधस्तन शीर्ष अधस्तन कृष्टि उभय द्रव्य विशेष मध्यम खंड रूप च्यारि विभाग हो हैं । तहां प्रथम समय संबंधी पूर्वोक्त विशेष अैसा है व १२ याकी आदि अक्षर रूप अैसी (वि) लघु संदृष्टिकरि याकौं

मो । ४ । १६ – ५ / ख ख २ (१२)

आदि उत्तर स्थापना अर एक घाटि लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिनिका प्रमाण अैसा ४ (१२) / ख । २४

ताकौं गच्छ स्थापना । तहां एक घाटि गच्छका आधाकौं उत्तरकरि गुणि तामैं आदि मिलाय ताकौं गच्छकरि गुणैं लोभका प्रथम संग्रहविषैं अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो है । बहुरि लोभकी प्रथम संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि स्थापि एक विशेष उत्तर स्थापि अपनी कृष्टिनिका प्रमाण गच्छ स्थापि पूर्वोक्त विधान कीएं लोभका द्वितीय संग्रहविषैं अधस्तन शीर्ष द्रव्य हो है । अैसैं ही क्रोधका तृतीय संग्रह पर्यंत विधान जानना । विशेष इतना– जो आयतैं नीचैं जे कृष्टि पाइए तिनका प्रमाण विशेष आदि स्थापने । अन्य विधान पूर्ववत् जानना । तिनकी संदृष्टि अैसी–

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीय संग्रह	१ ⌒ ४ वि ४५ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ ११ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ १७ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ ४ ५५ ख २४ ख २४ २
द्वितीय संग्रह	१ ⌒ ४ वि ४३ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४९ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ १५ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ २१ ख २४ ख २४ २
प्रथम संग्रह	१ ⌒ ४ वि ४१ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४७ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ १३ ख २४ ख २४ २	१ ⌒ ४ वि ४ १९ ख २४ ख २४ २

इहां लोभका प्रथम संग्रहविषैं एक घाटि गच्छ ऐसा (१⌒ ४ / ख।२४) ताकौं आधा कीएं ऐसा— (१⌒ ४ / ख।२४।२) ताकौं उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें ऐसा (१⌒ ४ वि / ख।२४।२)। यामैं एक विशेषमात्र आदि मिलावनेके अर्थि विशेषका गुण्यविषैं दोयकरि भाजित दोय घाटि थे तिनकौं दूरि कीएं ऐसा— (१⌒ ४।२।वि / ख।२४।२)। बहुरि याकौं गच्छ ऐसा (१⌒ ४ / ख।२४) करि गुणना सो इस गुणकारकौं गुण्य कीएं संकलन धन ऐसा हो है। (४ वि।४ / ख।२४।ख।२४।२) बहुरि लोभका द्वितीय संग्रहविषैं एक घाटि गच्छका आधाकौं उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें ऐसा (१⌒ ४।वि / ख।२४।२)। यामैं प्रथम संग्रहका गच्छमात्र विशेष ऐसा (१⌒ ४ वि / ख २४)। मिलावना सो याकौं दोयकरि समच्छेद कीये यहु ऐसा — (१⌒ ४ वि २ / ख।२४।२) भया। याकौं अर

वाकौं अन्य सर्व समान जानि दोय का गुणकारविषैं एक गुणकाररूप वाकौं स्थापि मिलाएं
१ ॒
ऐसा ४। वि। ३ याकौं गच्छ ऐसा ४ करि गुणैं गुणकार गुण्यनिकौं आगैं पीछैं लिखैं
ख। २४। २ १ ॒ ख। २४
द्वितीय संग्रहविषैं संकलन धन ऐसा ४। वि। ४। ३ बहुरि लोभका तृतीय संग्रह विषैं एक घाटि
ख। २४। २। ख। २४। २
१ ॒
गच्छका आधा उत्तर करि गुणित ऐसा ४। वि। याविषैं प्रथम द्वितीय संग्रहका गच्छमात्र विशेष
१ ॒ ख। २४। २ १ ॒
रूप आदि मिलावना सो ऐसा ४। २ याकौं दोय करि समच्छेद कीएं ऐसा ४। ४ याका
ख। २४। २ ख। २४। २
च्यारिका गुणकारविषैं वाका एक गुणकार मिलाएं तृतीय संग्रहविषैं संकलन धन ऐसा—
१ ॒
४। वि। ४। ५ . याही प्रकार मायाकी प्रथमादि संग्रहनिविषैं विधान कीएं भाज्य
ख। २४। ख। २४। २
राशिका गुणकारविषैं दोय दोय अधिकका अनुक्रम हो है। बहुरि क्रोधकी तृतीय संग्रह
विषैं गच्छ ऐसा ४। १३ यामैं एक घटाइ ताका आधाकौं विशेष करि गुणैं ऐसा—
ख। २४
१ ॒
४। १३। वि। याविषैं पूर्वं ग्यारह संग्रह तातैं एक संग्रहका गच्छकौं ग्यारहकरि गुणैं अर
ख। २४। २ १ ॒
ताकौं विशेषकरि गुणि तिनिका गच्छमात्र विशेष ऐसा ४। ११। वि। याकौं दोयकरि सम-
ख। २४

१—
च्छेद कीएं ऐसा ४ । २२ । वि। इनिके मिलावनेकौं अन्य समान जानि तेरह अर बाईसका
ख । २४ । २ १—

गुणकारकौं मिलाएं ऐसा ४ । ३५ । वि। बहुरि याकौं गच्छ ऐसा ४ । १३ करि गुणें ऐसा
१— ख । २४ । २ ख । २४

४ । ३५ । वि । ४ । १३ इहां पैंतीस अर तेरहका गुणकारकौं परस्पर गुणें क्रोधकी तृतीय
ख । २४ । २ । ख । २४ १—

संग्रहविषैं च्यारिसै पचावनका गुणकार हो है। सो ऐसा ४ । वि । ४ । ४५५ इहां गुण्य गु-
ख । २४ । ख । २४ । २

णकारादिविषैं एक हीन वा अधिककौं न गिणि संदृष्टि स्थापी है। ऐसा जानना । बहुरि
१—

इस सबकौं मिलाएं एक घाटि सर्व कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४ ताका आधाकौं विशेषकरि गुणें
ख १—

तामैं एक विशेष मिलाय गच्छकरि गुणें सर्व अधस्तन शीर्ष द्रव्य ऐसा वि । ४ । ४ इहां गुण्य
ख । ख । २

गुणकार पीछैं आगैं लिखे हैं। बहुरि लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिका पूर्वोक्त प्रकार द्रव्य ऐसा
व । १२ । १६ इहां भागहारविषैं दोगुणहानिका ऋणकौं न गिणि अपवर्तन कीएं ऐसा व
१—
ओ । ४ । १६—४ ओ ४
ख । २४ । ख । २४ । २ ख २४

याकौं अपनी अपनी द्वितीय समयविषैं कीनी नवीन कृष्टिनिका प्रमाणकरि गुणें अपना अ-
पना अधस्तन कृष्टि द्रव्य हो है। ताकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीयसंग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४	व १२ ४ १३ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४
द्वितीयसंग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४	व १२ ४ । ओ ४ ख २४ ओ a ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४
प्रथमसंग्रह	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४	व १२ ४ ओ ४ ख २४ ओ a ख २४

बहुरि तिसही लोभकी प्रथम कृष्टिकों सर्व नवीन कृष्टिका प्रमाणकरि गुणें सर्व अधस्तन कृष्टि द्रव्य ऐसा व । १२ । ४ बहुरि प्रथम समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्य ऐसा व १२

ओ। ४ । ख ओ । a
ख । २४ ओ

यातैं असंख्यात गुणा द्वितीय समयविषैं द्रव्य अपकर्षण कीया सो ऐसा व । १२ । a याका

ओ १—

असंख्यातका गुणकार ऊपरि एक अधिककी संदृष्टि कीएं उभय द्रव्य ऐसा व । १२ । a ।

ओ

याकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि ऐसी ४ याके ऊपरि द्वितीय समयविषैं कीनी कृष्टिनिका

ख ।

प्रमाण मिलावनेकौं अधिककी ऐसी (।) संदृष्टि कीएं उभयमात्र द्रव्य ऐसा ४ ताका अर

ख

एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं उभय द्रव्यका विशेष ऐसा

व । १२ । ३ याकी लघु संदृष्टि ऐसी (वि) याकौं आदि उत्तर स्थापना अर क्रोधकी तृतीय
को । ४ । १६ – ४
ख । ख २

संग्रहकी उभयद्रव्य कृष्टिमात्र गच्छ स्थापना तहां पूर्वोक्त प्रकार एक घाटि गच्छका आधाकौं विशेषकरि गुणि तामैं आदि मिलाय गच्छकरि गुणें क्रोधकी तृतीय कृष्टिविषैं उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। बहुरि क्रोधकी तृतीय संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर एक घाटि अपनी उभय कृष्टिमात्र गच्छ स्थापैं संकलन धनमात्र क्रोधकी द्वितीय कृष्टिविषैं उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। ऐसैं ही लोभका प्रथम संग्रह पर्यंत क्रम जानना। विशेष इतना—

अपनी अपनी एक अधिक पहिली कृष्टिका प्रमाणमात्र विशेष आदि स्थापन करना तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीयसंग्रह	। वि ४ ४ ४३ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ३७ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ३१ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ १६९ ख २४ ख २४ २
द्वितीयसंग्रह	। वि ४ ४ ४५ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ३९ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ३३ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ २७ ख २४ ख २४ २
प्रथमसंग्रह	। वि ४ ४ ४७ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ४१ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ ३५ ख २४ ख २४ २	। वि ४ ४ २९ ख २४ ख २४ २

इहां क्रोधकी तृतीय संग्रहविषै गच्छ ऐसा— ४ । १३ ख । २४ यामैं एक घटाय ताका आधाकों उत्तर जो विशेष ताकरि गुणैं ऐसा ४ । १३ वि। ख । २४ । २ यामैं आदि एक विशेष मिलावनेकों दोय करि भाजित एक हीनकी जायगा एक अधिक चाहिए सो न गिणैं ऐसा ४ । १३ । वि । ख । २४ । २ याकौं गच्छकरि गुणैं ऐसा ४ । १३ । वि । ४ । १३ ख । २४ । २ । ख । २४ इहां भाज्यविषै तेरह तेरहके दोय गुणकारनिकौं परस्पर गुणैं अर गुण्य गुणकारनिकौं आगैं पीछैं लिखैं क्रोधकी तृतीय संग्रहविषै ऐसी ४ । ४ । १६९ ख । २४ । ख । २४ । २ बहुरि क्रोधकी द्वितीय संग्रहविषै गच्छ ऐसा ४ ख । २४ तामैं एक घटाइ ताका आधाकौं विशेषकरि गुणैं ऐसा ४ । वि । ख । २४ । २ यामैं एक अधिक क्रोधकी तृतीय संग्रहका गच्छमात्र विशेष आदि मिलावना सो ऐसा ४ । १३ । वि । ख । २४ याकौं दोयकरि समच्छेद कीएं ऐसा ४ । २६ । वि । ख । २४ बहुरि याकैं अर वाकैं एक अधिक हीनकौं न गिणि अन्य समानता जानि याका छवीसका गुणकारविषै एक गुणकार वाका मिलाएं क्रोधकी द्वितीय सं

विषैं ऐसा वि । ४ । ४। २७ बहुरि क्रोधकी प्रथम संग्रहविषैं एक घाटि गच्छका आधा विशेष
ख । २४ । ख । २४ । २

करि गुणित ऐसा ४ । वि । याविषैं एक अधिक क्रोधकी प्रथम द्वितीयका मिलाया हूवा
ख । २४

गच्छमात्र विशेष आदि सो ऐसा— ४ । ४ याकौं दोयकरि समच्छेदकरि पूर्वोक्त प्रकार
ख । २४

मिलाएं संकलन धन ऐसा वि ४ । ४ २९ ऐसैं ही विधान कीएं मानकी प्रथम संग्रह आदि
ख । २४ । ख । २४ । २

लोभकी तृतीय संग्रह पर्यंत भाज्यराशिका गुणकारविषैं दोय दोय अधिकका क्रम हो है। बहुरि तिस विशेषप्रमाण आदि उत्तर स्थापि सर्व उभय कृष्टिमात्र गच्छ स्थापैं सर्व उभय द्रव्य ऐसा—

वि । ४ । ४ बहुरि अपना अपना द्वितीय समयविषैं अपकर्षण कीया द्रव्यका भागहार अ-
ख । ख

संख्यात ताके आगैं पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेके अर्थि तीनवार किंचिदूनकी ऐसी—(≡) संदृष्टि कीएं अर अपनी अपनी उभय कृष्टिका गुणकार ताहीका भागहार कीएं अपना अपना मध्य खंड द्रव्यकी संदृष्टि ऐसी हो है—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
तृतीय संग्रह	व १२ ४ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ १३ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४
द्वितीय संग्रह	व १२ ४ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४
प्रथम संग्रह	व १२ ४ (।) (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४	व १२ ४ (।) ओ ४ ख २४ a ≡ ख २४

बहुरि अपकृष्ट द्रव्यविषैं तैसैं ही संदृष्टि कीएं सर्व मध्यम खंड द्रव्यकी ऐसी— व । १२ ४ हो है । बहुरि इस च्यारि प्रकार द्रव्य देनेका विधान जानि तहां यथा संभव संदृ-

ओ । ४ ख

a ≡ । ख

ष्टि जाननी । बहुरि यहु दीया द्रव्य पूर्व कृष्टितैं अपूर्वकृष्टिविषैं असंख्यात भाग वृद्धि रूप दीजिए है । सो ऐसैं ग्यारह स्थान हैं । बहुरि अपूर्व कृष्टितैं पूर्व कृष्टिविषैं असंख्यात भाग हानि लीएं द्रव्य दीजिए है सो ऐसैं बारह स्थान हैं । अवशेष स्थाननिविषैं अनंत-

भाग हानि लीएं द्रव्य दीजिए है सो इनकी तेवीस ऊंट कूटानिके समान रचना हो है। सो यथा संभव जाननी। बहुरि इहां अपूर्व कृष्टिनिकी रचना ऐसी है। —

पृ० नं० १३३ (क) में देखो

इहां नीचैं लोभकी प्रथम कृष्टि ताविषैं नीचैं अपूर्व कृष्टिनिविषैं अधस्तन कृष्टि दीया ताकी संदृष्टि ऐसी (८) बहुरि तिनके उपरि पूर्वकृष्टि तिनाविषैं समपाट्टिकारूप द्रव्य विशेष सहित था ताकी संदृष्टि ऐसी ताविषैं अधस्तन शीर्ष विषैं द्रव्य दीया ताकी संदृष्टि ऐसी ऐसैं भएं पूर्व अपूर्व कृष्टिनिकी समपाट्टिका भई ऐसैं ही लोभकी द्वितीयादि क्रोध-की तृतीय पर्यंत विधान जानने। बहुरि इन सवनिविषैं समानरूप मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी समलकीररूप सहनानी जाननी। बहुरि इन सवनिविषैं एक एक विशेष घटता उभय द्रव्य विषैं विशेष द्रव्य दीया था ताकी क्रमहीन लकीररूप सहनानी जाननी। ऐसैंही कृष्टि करण कालका तृतीयादि अंत समय पर्यंत विधान जानना। बहुरि कृष्टि करण काल समाप्त भएं कृष्टि वेदक कालका प्रथम समयविषैं जो सर्व द्रव्य कृष्टिरूप परिनमि तीन कृष्टिनिविषैं गोपुच्छाकार भया ताकी संदृष्टि कृष्टि कारक विधानविषैं कही थी तैसैं ऐसी जाननी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
द्रव्य	व १२ ⁄ ७ । ८	व १२ ⁄ ७ । ८	व १२ ≡ ५ ⁄ ७ । ८	व १२ = ५ ⁄ ७ । ८

बहुरि सर्व द्रव्य ऐसा व १२ याकौं चौइसका भाग देइ अन्य संग्रह विषैं एक एक भाग, क्रो-

४ । १३ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग ऐसैं ४ । १३ । प कृष्टि
ख । २४ ख । २४ । प a a

वेदकका प्रथम समयविषैं बंध उदय रूप जे वीचिकी उभय कृष्टि तिनका प्रमाण है। बहुरि एक भाग ऐसा ४ । १३ / ख । २४ । प a ताकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा शलाकानिका जोड सोलहका अंक ताका भाग देइ दोय शलाकाकरि गुणें तो नीचैकी बंध उदय रहित अनुभय कृष्टिनिका अर तीन शलाकानिकरि गुणें तिनके उपरि जे नीचेकी उदय कृष्टि तिनिका च्यारि शलाकानिकरि गुणें उपरिका अनुभय कृष्टिनिका सात शलाकानिकरि गुणें तिनके नीचैं जे उपरिकी उदय कृष्टि तिनका प्रमाण है। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

अनुभय	उदय	उभय	उदय	अनुभय
४ । १३ । २ / ख।२४।प।१६ a	४ । १३ । ३ / ख । २४ । प । १६ a	४ । १३ । प (१ —) / a / ख । २४ । प । १६ a	४ । १३ । ७ / ख । २४ । प । १६ a	४ । १३ । ४ / ख । २४ । प । १६ a

इहां युगपत् उदय आवने योग्य एक निषेकविषैं ऐसा अनुभाग है। तातैं आडी रचना करी है। तहां नीचैंतैं प्रथमादि कृष्टिनिकी क्रमतैं रचना जाननी। तिनविषैं अनुभय उदय

उभय अनुभय कृष्टि क्रमतैं पाइए है तिनका प्रमाण लिख्या है। बहुरि द्वितीय समयविषैं नीचली उदय कृष्टि थी सो तौ उदय रूप भई। अर नीचली अनुभय कृष्टि थी ताकौं प-

ल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग ऐसा ४ । १३ । २ ताकौं अंक संदृष्टिकरि
ख । २४ । प । १६ । प
a a

पांचका भाग देइ तहां दोय भागप्रमाण जघन्यादि कृष्टि तौ अनुभय रूप हो हैं। अर ताके उपरि तीन भाग प्रमाण कृष्टि उदय रूप हो हैं। अर ताके उपरि बहुभागमात्र कृष्टि ऐसी

४ । १३ । प १-a उभय रूप हो हैं। बहुरि जे उभय कृष्टि थीं तिनिविषैं पूर्वैं जे उदय
a
ख । २४ । प । १६ । प
a a

कृष्टि थीं तिनकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक भागमात्र कृष्टि इहां उदय

रूप अर अनुभ(द) य रूप भई ऐसी— ४ । १३ । ७ ४ । १३ । ४ इनिकौं मिलाएं
ख । २४ । प । १६ । प ख । २४ । प । १६ । प
a a a a १-a

ऐसा ४ । १३ । ११ याकौं पूर्वैं उभय कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । १३ । प तामैं घटा-
ख । २४ प । १६ । प ख । २४ । प a
a a a

वना सो अन्य भागहार समान जानि ऐसा १६ प भागहारकरि समच्छेद कीएं ऐसा—
a

१८

भया सर्व द्रव्य ऐसा (व। १२)ताकौं सर्व कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४/ख ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दो गुणहानिका भाग दीएं पूर्व विशेष ऐसा व १२ / ४।१६—४ ख। ख २ याकी लघु संदृष्टि ऐसी (वि) बहुरि इहां गच्छका प्रमाण सर्व कृष्टिमात्र स्थापि जैसें कृष्टिकारकका द्वितीय समयविषैं विधान कह्या है तैसें अधस्तनशीर्षविशेषकी संदृष्टि हो है। विशेष इतना—

तहां ताकौं प्रथम संग्रह कृष्टि कही थी ताकौं इहां तृतीय संग्रह कहनी। तृतीय कही थी ताकौं प्रथम कहनी। बहुरि लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टि ऐसी। व। १२ / ४ ख इहां सर्व द्रव्यकौं सर्व कृष्टिके प्रमाणका भाग दीएं मध्यम धन होइ। ताविषैं विशेषका आधिकपना कीएं जघन्य कृष्टि भई है। बहुरि याकौं दोयवार असंख्यातकरि गुणित अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक मध्यम खंड ऐसा व। १२ / ४ ख। ओ। a a याकौं अपनी अपनी संग्रहके कृष्टिका प्रमाणकरि गुणें अपना अपना मध्यम खंड द्रव्य हो है। बहुरि लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिविषैं एक मध्यम खंड मिलावनेकौं साधिककी संग्रह कृष्टि कीएं ऐसा व। १२ / ४ ख

बहुरि अपनी अपनी संग्रहके नीचे संक्रमण द्रव्यकरि करीं जे नवीन कृष्टि तिनिका प्रमाण अपनी पूर्व कृष्टिनिकौं असंख्यात गुणां अपकर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसा ४

। ख । ओ । ३

भागहारका गुण्य गुणकारनिकौं आगैं पीछैं लिखैं ऐसा ४ ताकरि तिस लोभकी

ख । ३ । ख

जघन्य कृष्टि समान द्रव्यकौं गुणैं अपना अपना संग्रहके नीचैं संक्रमण द्रव्यकरि भई नवीन कृष्टि संबंधी समान द्रव्य हो है। तहां क्रोधकी प्रथम कृष्टिविषैं यहु द्रव्य नाहीं संभवै है। तहां शून्य जाननी। बहुरि पूर्व उत्तर द्रव्यकौं पुरातन नूतन कृष्टिमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं एक उभय द्रव्य विशेष होइ ताकी लघु संदृष्टि ऐसी (वि) स्थापि जैसैं कृष्टिकारकका द्वितीय समयविषैं विधान कह्या था तैसैं इहां उभय द्रव्यविशेष कीएं संदृष्टि हो है। विशेष इहां मध्यम खंडवत् जानना। बहुरि

॥

एक मध्यम खंड सहित लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिका द्रव्य ऐसा व १२ ताकी

४

ख

एक शलाका होइ तौ लोभकी तृतीय संग्रहका आय द्रव्य विषैं पूर्वोक्त च्यारि द्रव्य घटावने कौं आगैं किंचिदूनकी संदृष्टि कीएं ऐसा व । १२ । २ – सो इतने द्रव्यकी केती शलाका

२४ ओ

होइ? ऐसैं त्रैराशिक कीएं लब्धिराशि ऐसा व । १२ । २–इहां किंचित् हीन अधिक न गिणि

२४ । ओ । त्र । १२

४

ख

होइ । तहां मानका स्तोक तातैं क्रोध माया लोभका क्रम अधिक है तिनकी संदृष्टि रचना ऐसी— मान $\frac{स}{४}$ क्रोध $\frac{स}{४}$ माया $\frac{स}{४}$ लोभ $\frac{स}{४}$ बहुरि मध्यम खंड सहित लोभकी तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टिका द्रव्य ड्योढ गुणहानि गुणित समय प्रवद्धकौं सर्व कृष्टिका भाग देइ साधिक कीएं ऐसी $\frac{स}{१२}$ सो इतने द्रव्यकी एक कृष्टिरूप एक शलाका होइ तो पूर्वोक्त मानका द्रव्यकी $\frac{स}{४ ख}$ केती होइ ! ऐसैं त्रैराशिक कीए लब्धिराशि मानविषैं ऐसी $\frac{स \; १२}{४ \; स \; ४ \; ख}$ इहां समयप्रवद्धका अपवर्तन कीएं अर भागहारका भाग ऐसा $\frac{४}{ख}$ ताकौं भाज्य कीएं अर भागहारविषैं च्यारि अर ड्योढ गुणहानि ऐसा (१२) इनिकौं परस्परगुणैं छह गुणहानि भई। तहां गुणहानिकी संदृष्टि आठका अंक करि ताके आगैं छहका गुणकार कीएं संदृष्टि हो है। बहुरि क्रोधादिक विषैं ऐसी ही अधिक क्रमरूप संदृष्टि हो है। ऐसैं बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी—

मान	क्रोध	माया	लोभ
$\frac{४}{ख ८ । ६}$	$\frac{४}{ख ८ । ६}$	$\frac{४}{ख ८ । ६}$	$\frac{४}{ख ८ । ६}$

बहुरि इनि बंध कृष्टिनिके वीचि पाइए हैं जे अंतर कृष्टि तिनका प्रमाण गुणहानिके चौथा भागमात्र है। तहां क्रोधविषै नोकषाय द्रव्य संबंधी कृष्टि मिलनेतैं तेरहका गुणकार जानना। तिन

की संदृष्टि ऐसी लो मा या क्रो एक एक कषायकी एक एक संग्रह बंधरूप होइ सो
८ ८ ८ ८ १३
४ ४ ४ ४
इहां चार्यो कषायनिकी पहली संग्रह बंधरूप हो है। सो इहां नवीन बंधरूप भया समयप्रबद्ध
। ॥ ॥।
च्यारो कषायनिका ऐसा— स स स स। इनिकौं अनंतका भाग देइ एक भाग तौं जुदा
४ ४ ४ ४
राखि अर बहुभागनिकरि नवीन बंधांतर कृष्टि निपजाइए है। तहां अंत कृष्टितैं लगाय जेथवी अतका नवीन कृष्टि होइ तितने विशेष तौ आदि अर अपना अपना अंतरालरूप कृष्टिनिका पूर्वोक्त प्रमाणमात्र विशेष उत्तर अर अपनी अपनी बंधातर कृष्टिनिका पूर्वोक्त प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलनधन कीएं बंधांतर कृष्टि विशेषद्रव्य हो है। सो अन्य कृष्टिनिविषैं तौ उभय द्रव्य विशेष द्रव्य देना जहां कह्या था तहां बंध कृष्टिनिविषैं इस द्रव्यकौं देना। सो इहां क्रोध मान माया लोभकी प्रथम संग्रहके बंधांतर विशेष विषैं आदि उत्तर गच्छकी अर संकलन कीया धनकी ऐसी संदृष्टि हो है—

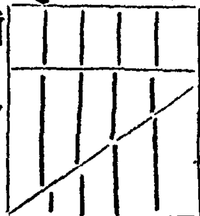
नाम	क्रोध प्र०	मान प्र०	माया प्र०	लोभ प्र०
संकलित धन	। वि।४।१३।४ ख।२४।२।ख८।६	। वि।४।३१।४ ख।२४।२।ख८।६	। वि।४।४३।४ ख।२४।२।ख८।६	। वि।४।४३।४ ख।२४।२।ख८।६
गच्छ	४ ख।८।६	४ ख।८।६	४ ख।८।६	४ ख।८।६
उत्तर	१— वि।८।१३ ४	१— वि।८ ४	१— वि।८ ४	१— वि।८ ४
आदि	। वि।४।१३ ख।२४	। वि।४।१५ ख।२४	। वि।४।१८ ख।२४	वि।४।२१ ख।२४

बहुरि बहुभागनिविषैं इतना द्रव्य घटाएं अवशेष द्रव्य जो रह्या ताकौं अपना अपना बंधांतर कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं एकका कृष्टिका द्रव्य होइ। ताकौं तिसही प्रमाणकरि गुणैं बंधांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य होइ। याकरि लोभकी जघन्य कृष्टिके समान बंध कृष्टि निपजै है। बहुरि एक भाग जुदा राख्या था तिसविषैं दोय भाग करने। तहां तिस एक भागकौं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि प्रमाण गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि हीन दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ सो एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर सर्व कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि संकलन धन कीएं बंध विशेष द्रव्य हो है। सो याकौं सर्व बंध कृष्टिनिविषैं जहां उभय द्रव्य विशेषविषैं घटता द्रव्य देना कह्या तहां याकौं देइ पूर्ण करना। बहुरि तिस एक भागविषैं याकौं घटाएं जो अवशेष रह्या ताकौं अपनी अपनी सर्वकृष्टि प्रमाण का भाग दीएं एक खंड होइ ताकौं तिसहीकरि गुणैं सर्व मध्यम खंड द्रव्य होइ। ऐसैं बंध द्रव्यविषैं च्यारि प्रकार कहे। इनिकी संदृष्टिनिका मोकौं नीकैं ज्ञान न भया तातैं इहां नाही लिखी है। बहुरि इनि द्रव्यनिके देनेका विधान पूर्वैं व्याख्यानविषैं कहि आए हैं। बहुरि इहां अनंती जायगा पहलैं बहुत पीछैं घाटि पीछैं वाधि वाधि द्रव्य दीए हैं तातैं अनंत उष्ट्रकूट रचना हो है। बहुरि बारह संग्रहनिविषैं नीचैं नवीन भई कृष्टि अर पूर्व अर अपूर्व वीचि वीचि संक्रमण द्रव्यकरि निपजीं नवीन कृष्टि अर च्यारि संग्रहनिविषैं बंध रचना ऐसी जाननी। —

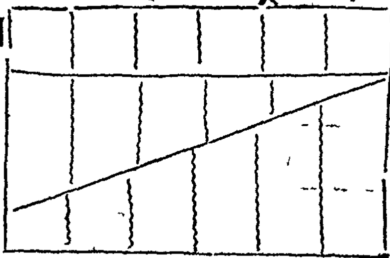
पृ० सं० १५६ (क) में देखो।

...भागकी रचना युगवत् कालविषैं संभवै है तातैं आडी रचना करी है। तहां नीचैं ...विषैं नीचैं नवीन कृष्टिनिकी रचना ऐसी [ ] तिनके उपरि

पूर्व कृष्टिनिकी रचना ऐसी यावि‍षैं समपट्टिकाकी समान लीक अर विशेष घटता क्रमकी क्रम हीन रूप लीक अर तिनविषैं अधस्तन शीर्ष विशेषका द्रव्य दीया ताका क्रम अधिक रूप लीककी संदृष्टि कीएं ऐसी ऐसैं कीएं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिकी समपाट्रिका भई। ऐसैं ही लोभकी द्वितीयादिविषैं संदृष्टि जाननी। तहां क्रोधकी तृतीय संग्रहविषैं नीचैं नवीन कृष्टि नाही भई तातैं तिनकी रचना नाही करी है। पूर्व कृष्टिनिही की रचना करी है। बहुरि इनि पूर्व कृष्टिनिके वीचि संक्रमण द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी सूधी ऊभी लीकरूप संदृष्टि अर बंध द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी वांकी ऊभी लीकरूप संदृष्टि जाननी। तहां लोभादिक च्यारयो कषायनिकी तृतीय द्वितीय संग्रहविषैं तौ संक्रमण द्रव्यहीकरि नवीन काष्टि भई तिनकी संदृष्टि ऐसी



अर लोभ माया मानकी प्रथम संग्रहविषैं संक्रमण द्रव्यकरि अर बंध द्रव्यकरि नवीन कृष्टि भई तिनकी संदृष्टि ऐसी



अर क्रोधकी प्रथम संग्रहविषैं बंध द्रव्य-

हीकरि नवीन कृष्टि भईं तिनकी संदृष्टि ऐसी जाननी । बहुरि इन सर्व

पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषैं मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी समानरूप लीककी संदृष्टि जाननी। बहुरि इन सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनिविषैं क्रम हीन रूप उभय द्रव्य विशेष द्रव्य दीया ताकी क्रम हीन रूप लीक संदृष्टि जाननी । बहुरि बंध होने योग्य पूर्व कृष्टिनिका उभय द्रव्य विशेष द्रव्यविषैं वा बंध द्रव्यकरि निपजी नवीन कृष्टिका बंधांतर विशेष द्रव्यविषैं घटता द्रव्य दीया तहां बंध विशेष द्रव्य दीया अर बंध द्रव्यका मध्यम खंड द्रव्य दीया ताकी उभय द्रव्य विशेष द्रव्यकी संदृष्टि ऐसी जाननी। ऐसैं इहां रचना जाननी

बहुरि क्रोधकी प्रथम संग्रहका द्रव्य ऐसा— व १२ १३ । सो द्वितीय संग्रह रूप भया । अर
२४
द्वितीय संग्रहका द्रव्य पूर्वैं ऐसा व । १२ । १ था ही सो मिलि द्वितीय संग्रहका द्रव्य ऐसा
२४

व । १२ । १४/२४ । भया । अैसैं ही अन्य संग्रहविषैं लोभकी द्वितीय संग्रह पर्यंत पूर्व पूर्व संग्रहका द्रव्य अपने द्रव्यविषैं मिलनेतैं अपना अपना द्रव्य हो है । सो जानना ताकी संदृष्टि रचना अैसी—

नाम	क्रोध			मान			माया			लोभ		
संग्रह	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ
द्रव्य	व १२ १३/२४	व १२ १४/२४	व १२ १५/२४	व १२ १६/२४	व १२ १७/२४	व १२ १८/२४	व १२ १९/२४	व १२ २०/२४	व १२ २१/२४	व १२ २२/२४	व १२ २३/२४	व १२ २४/२४

तहां अपने अपने द्रव्यका अपकर्षणकरि प्रथम स्थितिविषैं गुणकार क्रमकरि द्वितीय स्थितिविषैं विशेष हीन क्रमकरि देनेका विधान पूर्ववत् जानना । बहुरि आयुद्रव्य आदि यथासंभव जानि तिनकी संदृष्टि पूर्ववत् जाननी । बहुरि तहां संक्रमण द्रव्य बंध द्रव्यका विधान यथासंभव जानि तिनकी संदृष्टि पूर्ववत् जाननी । विशेष होइ सो विशेष जानि लेना । बहुरि क्रोध मान माया लोभ वेदककैं क्रमतैं च्यारि तीन दोय एक कषानिका बंध है । तहां जिस कषायकी जिस संग्रहकौं वेदै है तिस कषायकी तौ तिसही संग्रहका बंध है । अन्यकषायकी प्रथम संग्रहका बंध है । तिस बंधांतर कृष्टि शलाकाविषैं क्रोध वेदकके कृष्टि प्रमाणकौं छह गुणहानिका भागहार कह्या था । मान माया लोभ वेदककैं क्रमतैं साढा च्यारि तीन ड्योढ गुणहानिका भागहार जानना । तिनकी संदृष्टि अैसी—

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध
क्रोधवेदक	४ ख । ८ । ६	४ ख । ८ । ६	४ ख । ८ । ६	४ ख । ८ । ६
मानवेदक	४ ख । ८ । ९ २	४ ख । ८ । ९ २	४ ख । ८ । ९ २	
मायावेदक	४ ख । ८ । ३	४ ख । ८ । ३		
लोभवेदक	४ ख । ८ । ३ २			

बहुरि बधांतर कृष्टिनिके वीचि जे अन्तर कृष्टि तिनिका प्रमाण क्रोधका प्रथमसंग्रहका वेदकविषैं अन्यकषायानिकी गुणहानिका चौथा भागमात्र क्रोधका तातैं तेरह गुणा कह्या था। बहुरि ताकरि द्वितीय तृतीय कृष्टि वेदकविषैं अन्य कषायनिका पूर्ववत् अर क्रोधका चौदह पंद्रह गुणा जानना। बहुरि मानकी प्रथमादि संग्रह वेदककै अन्यकषायानिका गुणहानिकैं तीन सोलहवां भागमात्र मानका तातैं सोलह सतरह अठारह गुणा क्रमतैं जानना। बहुरि मायाकी प्रथमादि संग्रह वेदककैं लोभका गुणहानिका दोय सोलहवां भागमात्र, माया का तातैं उगणीस वीस इकईस गुणा कमतैं जानना लोभकी प्रथमादि संग्रह वेदकके लोभका गुणहानिका सोलहवां भाग वाईस तेईस चौवीस गुणा जानना। तिनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम क्रोध वेदक	लोभ	माया	मान	क्रोध
	८ / ४	८ / ४	८ / ४	८ । १३ । १४ । १५ / ४
मानवेदक	८ । ३ / १६	८ । ३ / १६	८ । ३ । १६ / १६	१७ । १८
मायावेदक	८ । २ / १६	८ । १८ / १६	२० । २१	
लोभवेदक	८ । २२ / १६	२३ । २४		

बहुरि द्वितीय संग्रहका द्रव्य ऐसा व । १२ । २३ / २४ याकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ पचीस भागमात्र संक्रमण द्रव्य ऐसा व । १२ । ५७५ / २४ । ओ तिसविषैं एक भागमात्र तृतीय संग्रहरूप परिणया द्रव्य ऐसा— व । १२ । २३ / २४ । ओ अर चौईस भागमात्र सूक्ष्मकृष्टिरूप परिणया द्रव्य ऐसा व । १२ । ५५२ / २४ । ओ बहुरि तृतीय संग्रहका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भाग सूक्ष्मकृष्टिरूप परिणया ऐसा व । १२ । १ / २४ । ओ इनिकौं मिलाएँ सर्व सूक्ष्म कृष्टिरूप परिणया द्रव्य ऐसा व । १२ । ५५२ / २४ । ओ इतने द्रव्यकरि सर्व सूक्ष्मकृष्टि करण कालका प्रथम समय विषैं बादरकृष्टिनिके नीचैं सूक्ष्मकृष्टि करिए है । तिनिका प्रमाण कहिए है—

कोधकी प्रथम संग्रह कृष्टि ऐसी ४ । १३ / ख । २४ बहुरि पूर्व पूर्व संग्रह उत्तर उत्तर संग्रहरूप

होइ परिनमैं है तातैं पूर्व प्रमाणकौं विवाक्षित संग्रहकृष्टिका प्रमाणविषैं मिलाएं अपना अपना वेदक कालविषैं कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा—

नाम	क्रोध			मान			माया			लोभ		
संग्रह	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	तृ	प्र	द्वि	सूक्ष्मकृष्टि
कृष्टिप्रमाण	४ १३ ख २४	४ १४ ख २४	४ १५ ख २४	४ १६ ख २४	४ १७ ख २४	४ १८ ख २४	४ १९ ख २५	४ २० ख २४	४ २१ ख २५	४ २२ ख २५	४ २३ ख २५	४ २४ ख २५

हो है। तहां सूक्ष्मकृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । २४ / ख । २४ अपवर्तन कीएं ऐसा ४ / ख हो है। बहुरि इहां लोभका द्वितीय संग्रहविषैं आय द्रव्यका तौ अभाव है। तृतीय संग्रहरूप भया व्यय द्रव्य ऐसा हो है व । १२ । २३ / २४ । ओ सोई तृतीय संग्रहका आय द्रव्य है । इसहीका नाम संक्रमण द्रव्य है। बहुरि लोभकी द्वितीय तृतीय संग्रहविषैं अपनी अपनी कृष्टि प्रमाणकौं अपकर्षण भागहारका असंख्यातवां भागका भाग दीएं अपना अपना घात कृष्टिका प्रमाण हो है। ताकरि अपनी अपनी अंत कृष्टिका द्रव्यकौं गुणि किछू साधिक कीएं अपना अपना घात द्रव्य हो है। तहां घात द्रव्यकौं यथा संभव दीएं स्वस्थान परस्थान गोपुच्छरूप होइ कृष्टि हो है। तिनविषैं संक्रमण द्रव्य वा घात द्रव्यका विभाग कहिए है—

एक विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर एक घाटि घात कीएं पीछैं रहीं अपनी कृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ स्थापें संकलन धनमात्र द्रव्य तृतीय संग्रहविषैं आय द्रव्यतैं ग्रहि स्थापना। अर तृतीय संग्रह कृष्टिमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर घात कीएं

पीछैं रही अपनी कृष्टिमात्र गच्छ स्थापैं संकलन घनमात्र द्वितीय संग्रहविषैं घात द्रव्यतैं ग्रहि स्थापने। इसका नाम वादर कृष्टि संबंधी अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य है। इहां 'पदमेगेण विहीणं' इत्यादि सूत्रकरि संकलन घन कहिए है—

तृतीय संग्रहविषैं गच्छ ऐसा ४ इहां घात कृष्टिनिका वा एक घाटिका किंचिदूनपनाकौं
ख । २४ १ ⌒

नाहीं गिण्या है। यामैं एक घटाइ दोयका भाग दीएं ताकरि ऐसा ४ याकरि उत्तर
१ ⌒ ख । २४ । २

जो विशेष ताकौं गुणैं ऐसा वि ४ यामैं आदि एक विशेष मिलावनेकौं एक घाटि था तहां
ख । २४ । २

एक अधिककरि ताकौं गच्छ ऐसा ४ करि गुणि तहां गुण्य गुणकारनिकौं आगैं
ख । २४
१—

पीछैं लिखैं संकलन घन ऐसा वि । ४ । ४ हो है। बहुरि द्वितीय संग्रहविषैं गच्छ ऐसा—
ख । २४ । ख २४ । २

४ । २३ यामैं एक घटाइ दोयका भाग देइ ताकरि उत्तर जो विशेष ताकौं गुणैं ऐसा—
ख । २४ १ ⌒

वि । ४ । २२ यामैं आदि ऐसा वि ४ मिलावना सो याकौं दोयकरि समच्छेद कीएं ऐसा—
ख । २४ । २ ख २४

वि । ४ । २ अर याकैं वाकैं अन्य समान देखि तेईसका गुणकारविषैं दोयका गुणकार मि-
ख । २४ । २ १ ⌒ १ ⌒

लाएं ऐसा वि । ४ । २५ याकौं गच्छ ऐसा ४ । २३ करि गुणैं ऐसा वि । ४ । २५ । ४ २३
ख । २४ । २ ख । २४ ख । २४ । २ । ख २४ ।

इहां पचीस अर तेइसकौं परस्पर गुणैं पांचसै पिचहत्तरिका गुणकार कीएं अर गुण्य गुण-
२०

कार आगैं पीछैं लिखें संकलन घन असा। त्रि। ४। ४। ५७५ हो है। इहां एक आधिक
ख। २४। ख २४ २
हीनकौं न गिणि संदृष्टि करी है असा जानना। बहुरि तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टि
असी व १२ याकौं असंख्यात गुणां अपकर्षण भागहार असा (ओ a) ताका भाग देइ ताकौं
४
ख
तृतीय संग्रहविषैं कृष्टि प्रमाण असा ४ अर द्वितीय संग्रहविषैं कृष्टि प्रमाण असा ४। २३
ख। २४ ख। २४
सो इनकरि गुणैं अपना अपना वादर कृष्टि संबंधी मध्यम खंड द्रव्य हो है। बहुरि एक
विशेष आदि एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी पूर्व कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां जेता
संकलन घन भया ताविषैं एक विशेषका अनंतवां भाग घटाएं जो होइ सो द्वितीय संग्रह
का घात द्रव्यतैं ग्रहि स्थापना। इहा एक विशेषका अनंतवांभाग घटाया है। तहां बंध
द्रव्य देइ पूर्ण करिए है असा जानना। बहुरि एक आधिक द्वितीय संग्रहकी कृष्टिनिका
प्रमाणमात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर संक्रमण द्रव्यकरि निपजी कृष्टि सहित
अपनी पुरातन कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ स्थापि तहां संकलन घनमात्र तृतीय संग्रहका आय
द्रव्यतैं ग्रहि स्थापना इसका नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है। इहां 'पदमेगेण विहीणं'
इत्यादि सूत्रकरि द्वितीय संग्रहविषैं गच्छ असा। ४। २३ तामैं एक घटाइ ताकौं दोयका भाग
ख। २४
देइ ताकरि उत्तर जो विशेष ताकौं गुणैं असा वि। ४। २३ बहुरि आदि एक विशेष मिलावनेक
ख। २४। २

एक हीनकी जायगा एक अधिककरि ताकौं गच्छकरि गुणें ऐसा वि ४ २३ ४ १६ ख २५ १ ख २४ बहुरि इहां ते

ईसकरि तेइसकौं गुणि पांचसे गुणतीसका गुणकार कीएं अर गुण्य गुणकारनिकौं आगें पीछें

लिखें संकलन घन ऐसा वि । ४ । ४ । ५२९ ख । २४ । ख । २४ । २ हो है । बहुरि तृतीय संग्रहविषें गच्छ ऐसा—

४ ख । २४ यामैं एक घटाइ दोयका भाग देइ ताकरि उत्तर जो विशेष ताकौं गुणें ऐसा वि ४ । ४ ख । २४ । २

यामैं आदि ऐसा वि । ४ । २३ ख । २४ । मिलावना सो याकौं दोयकरि समच्छेद कीएं यहु ऐसा—

वि । ४ । ४६ ख । २४ । २ अर याके वाकैं अन्य समान देखि याका छयालीसका गुणकारविषें

वाका एक गुणकार मिलाएं ऐसा वि । ४ । ४७ ख । २४ । २ बहुरि याकौं गच्छ ऐसा ४ ख । २४ करि गुणें गुण्य

गुणकारनिकौं आगें पीछें लिखें संकलन घन ऐसा वि । ४ । ४ । ४७ ख । २४ । ख । २४ । २ इहां घात कृष्टि-

निका हीनपना वा संक्रमण कृष्टिनिका अधिकपना वा एकका अधिक हीनपनाकौं न गिणि संदृष्टि करी है । ऐसा जानना । बहुरि इस तीन प्रकार द्रव्यकरि हीन तृतीय संग्रहका आय द्रव्य ऐसा व । १२ । २३ ≡ २४ । ओ तहां किंचिदूनकौ न गिणि ताका मध्यम खंड सहित तृतीय संग्रहकी जघन्य कृष्टि ऐसी व । १२ ४ ख ताका भाग देइ अपकर्षण कीएं वा भागहारका भागहारकौं

राशि कीएं संक्रमण द्रव्यकरि वीचि वीचिमें भई नई कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । २३ बहुरि
ख । २४ । ओ
इसका भाग अपनी सर्व कृष्टिनिका प्रमाणकौं दीएं संक्रमणांतर कृष्टिनिके वीचि जे कृष्टि
पाइए तिनका प्रमाण ऐसा ४ इहां अपवर्तन कीएं वा भागहारका भागहारकौं
ख । २४ । ४ । २३
ख । २४ । ओ
राशि कीएं ऐसा ओ बहुरि पूर्वोक्त संक्रमणांतर कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । २३ ताका
२३ ख । २४ । ओ
भाग अवशेष आय द्रव्यकौं दीएं एक खंड होइ ताकौं तिसहीकरि गुणैं अपने अवशेष
आय द्रव्यमात्र संक्रमणांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य हो है। द्वितीय संग्रहविषैं आय द्रव्यके
अभावतैं ऐसा द्रव्य नाहीं है। तहां शून्य जाननी। इनकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभकी तृतीय सग्रह	लोभकी द्वितीय संग्रह
अधस्तन शीर्ष पूर्वविशेष द्रव्य	१— वि । ४ । ४ ख । २४ । ख । २४ । २	१ —॰ वि । ४ । ४ । ५७५ ख । २४ । ख । २४ । २
मध्यम खंड	व । १२ ४ ४ । ओ । ३ । ख । २४ ख	व । १२ । ४ । २३ ४ । ओ । ३ । ख । २४ ख
उभय द्रव्य विशेष द्रव्य	१ —॰ वि । ४ । ४ । ४७ ख । २४ । ख । २४ । २	१ —॰ वि । ४ । ४ । ५२६ ख । २४ । ख । २४ । २
संक्रमणांतरकृष्टि संबंधीसमानद्रव्य	व १२ । २३ २४ । ओ ।	०

बहुरि बंध द्रव्यविषैं विभाग कहिए है—

अंतकी बंधातर कृष्टि सहित याके ऊपरि पूर्व कृष्टिनिका प्रमाणमात्र विशेष आदि ऐसा— वि । ४ । २३ । १ अर एक अधिक गुणहानिका सोलह्वां भागकरि हीन ड्योढ गुण-
ख । २४ । ५ । १६
३
हानिमात्र विशेष ऐसे— वि । ८ । २३ । सो उत्तर अर पूर्व सर्व कृष्टि प्रमाणकौं द्व्यर्ध गुणहानि
१६
का भाग दीएं सर्व नवीन भई बंधांतर कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ६ । ८ । ३ इहां गुणहानिकी
ख । २
संदृष्टि आठका अंक है। ऐसैं स्थापि तहां संकलन घनमात्र बंधांतर कृष्टि विशेष नामा द्रव्य हो है। सो इसकी संदृष्टिके विधानका मोकौं ज्ञान न भया तातैं नाही लिख्या है। बहुरि समय प्रबद्धका अनंतवां भाग जुदा जुदा स्थापैं अवशेष किंचिदून समय प्रबद्ध ऐसा (स —) ताकौं द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्धमात्र द्रव्यकौं कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं एक बंधांतर कृष्टिका द्रव्य ऐसा स १२ ताका भाग दीएं बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा
४
ख
स — इहां किंचिदून न गिणि समय प्रबद्धका अपवर्तन कीएं अर ऐसा ४ जो भागहारका
स १२ ख
४
ख
भागहार था ताकौं राशि कीएं ऐसी नवीन निपजी कृष्टिनिका प्रमाण ४ भया बहुरि
ख । १२
याका भाग सर्व कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ । २३ ताकौं दीएं ऐसा ४ । २३ इहां ऐसे का
ख । २४ ख । २४ । ४
ख । १२

अपवर्तन कीएं ४/ख अर भागहारका भागहार ऐसा (१२) कौं राशी कीएं तहां ड्योढकारि अपवर्तन कीएं ड्योढ गुणहानि ऐसा (१२) ड्योढ गुणहानिमात्र भाज्य था ताका तौ एक गुणहानिमात्र ऐसा (८) भाज्य भया। अर चौईसका भागहार था सो सोलहका भागहार भया तव ऐसा ८।२३/१ नवीन निपजी बंध कृष्टिनिके वीचि जे कृष्टि तिनका प्रमाण हो है

वहुरि पूर्वोक्त बंधांतर कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४/ख।१२ ताका भाग किंचिदून समय प्रवद्ध ऐसा (स —) ताकौं दीएं एक खंड होइ। ताकौं तिसही करि गुणें बंधांतर कृष्टि संबंधी समान खंड हो है। वहुरि जो समय प्रवद्धका अनंतवां भाग जुदा राख्या था ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व बंध कृष्टि प्रमाण गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ सो सर्व बंध कृष्टि प्रमाण गच्छका संकलन धनमात्र विशेष तिस जुदा राख्या भागविषैं ग्रहणकरि स्थापना। सो इहां एक विशेष ऐसा (वि) आदि एक विशेष उत्तर अर सर्व कृष्टिनिका प्रमाणविषैं अनुभय उदय कृष्टिका प्रमाण घटाएं बंध कृष्टि हो है। सो तिस प्रमाणकौं किंचित् जानि न गिण्या। तव बंध कृष्टिमात्र गच्छ ऐसा ४।२३।/ख।१४ इहां गच्छ में एक घटाइ ताकौं दोयका भाग देइ उत्तर जो विशेष ताकरि गुणें ऐसा वि।४।२३ (१८ / ख।२४।२) यामें एक विशेष आदि मिलावनेकौं एक हीनकी जायगा एक आधिक भया ताकौं न गिणि

बहुरि गच्छकरि गुणें ऐसा वि । ४ । २३ । ४ । २३ इहां तेईस तेईसकौं परस्पर गुणि पांचसे
ख । २४ । २ । ख । २४ ।

गुणतीस कीएं अर गुण्य गुणकार आगे पीछें लिखें ऐसा भया वि । ४ । ४ । ५२९ याका
ख । २४ । ख । २४ । २

नाम बंध विशेष है। बहुरि जुदा स्थाप्याविषैं याकौं घटाएं अवशेष समय प्रवद्धका अनंतवां भाग ऐसा स/ख ताकौं सर्व बंध कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं एक खंड होइ ताकौं तिसहीकरि गुणें बंध मध्यम खड द्रव्य होइ। ऐसै बंध द्रव्यका विधान कह्या ताकी संदृष्टि ऐसी—

नाम	लोभाद्वितीयसंग्रह
बंधांतर कृष्टि विशेषद्रव्य	वि । ४ । २३ । ४ ख । २४ । २ । ख । ८ । ३/२
बधांतरसंबधी समान खंड	स – ४ ख । २४ । ख । १२
बंधविशेष खड	वि । ४ । ४ । ५२९ ख । २४ । ख । २४ । २
बंधमध्यम खंड	स । ४ । २३ ख । ४ । २३ । ख । २४ ख । २४

इहां द्वितीय संग्रह हीका बंध है। तातैं तिसहीविषैं ऐसा विधान जानना। बहुरि संक्रमण द्रव्यकरि निपजी सूक्ष्म कृष्टिनिका द्रव्यविषैं विभाग कहिए है—

सूक्ष्मकृष्टि संबंधी द्रव्य पूर्वोक्त ऐसा व । १२ । ५५३ ताकौं प्रथम समयविषैं कीनी
२४ । ओ

सूक्ष्मकृष्टिनिका प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा ४/ख ताका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष ऐसा व । १२ । ५५३ १ ⌢ / २४ । ओ । ४ । १६ − ४ / ख ख २ गच्छ अर संपूर्ण गच्छकौं दोय अर एकका भाग दीएं एक वार संकलन धन होइ तिहिंकरि तिस विशेषकौं गुणैं सूक्ष्मकृष्टि संबंधी विशेष द्रव्य हो है । बहुरि याकरि हीन सूक्ष्मकृष्टिका द्रव्यकौं सूक्ष्मकृष्टि प्रमाण ऐसा ४/ख का भाग दीएं एक खंड ताकौं तिसही करि गुणैं सूक्ष्मकृष्टि संबंधी समान द्रव्य हो है । तिनकी संदृष्टि ऐसी—

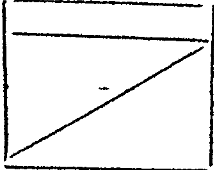
नाम	सूक्ष्मकृष्टि
विशेष द्रव्य	व । १२ । ५५३ । ४ । ४ १ ⌢ / २४ । ओ । ४ । १६ − ४ । ख । ख । २ 1 ⌢ / ख ख २
समान खंड द्रव्य	व । १२ । ५५३ । ४ / ४ / २४ । ओ । ख । ख

बहुरि सूक्ष्मकृष्टि संबंधी विशेष ऐसा व । १२ । ५५३ १ ⌢ / २४ । ओ । ४ । १६ − ४ / ख ख याकौं दोगुणहानिकरि गुणैं

प्रथम कृष्टिका द्रव्य होइ। इस गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घटाइ एकघाटि सूक्ष्मकृष्टिमात्र घटैं अंत कृष्टिका द्रव्य हो है। इनि सबनिकी रचना ऐसी—

सूक्ष्मकृष्टि	लोभकी तृतीयसंग्रह	लोभकी द्वितीयसंग्रह
४ ख	४ ख २४	४ २३ ख २४
व १२ ५५२ १६००० व १२ ५५२ १६—४ (१ ०) २४ ओ ४ ख १६—४ ख २ (१ ०) २४ ओ ४ ख १६ ४ ख २ ख (१ ०)	४७	५२९

इहां अनुभागकी रचना है। तातैं आडी सहनानी करी है। तहां नीचैं सूक्ष्मकृष्टि लिखी है। ताकी समपट्टिका अर विशेष घटता क्रमकी संदृष्टिकरि नीचैं आदि अंत कृष्टिनिके द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। बहुरि ताके उपरि लोभकी तृतीय कृष्टि अर ताकै उपरि द्वितीय कृष्टि लिखी है। तहां समपट्टिका पूर्व विशेष अधस्तन कृष्टि उभय द्रव्य विशेष की संदृष्टि पूर्वोक्त प्रकार करी है। बहुरि तिन कृष्टिनिके वीचि जे नवीन कृष्टि भई तिन

की संदृष्टि वीचिमें लीककरी है । तहां संक्रमण द्रव्यकरि निपजीकी तौ सूधी लीक अर बंध द्रव्यकरि निपजी कृष्टिनिकी वक्र कहिए वाकी लीक करी है । बहुरि द्वितीय कृष्टिकी जिनि पुरातन नूतन बंध कृष्टिनिविषैं बंधांतर कृष्टि विशेष बंध मध्यम खंडरूप बंध द्रव्य दीजिये है । तहां उभय द्रव्य विशेषविषैं इतना द्रव्य घटना दीया है ताकी संदृष्टि उभयद्रव्य की रचनाविषैं ऐसी  करी है । बहुरि सूक्ष्म कृष्टिकारक कालका द्वितीय समयविषैं प्रथम समयविषैं जेती कृष्टि कीनी तिनके असंख्यातवे भागमात्र नवीन कृष्टिकरिए है तिनकी संदृष्टि ४/ख ३ तिनविषैं पूर्व कृष्टिनिके नीचैं जे कृष्टि करिए है तिनके असंख्यातवे भागमात्र ऐसी ४/ख ३ ३ अर पूर्व कृष्टिनिके वीचि करिए है ते बहुभागमात्र ऐसी ४ । ३ १– / ख ३ ३ इहां गुणकारका एक हीनपनांकौं न गिणि अपवर्तन कीएं ऐसी ४/ख ३ हो है । बहुरि इस समयविषैं द्रव्य असंख्यात गुणा अपकर्षण करिए है । ताकी संदृष्टि ऐसी व । १२ । ५५३ / २४ ओ ३

इहां असंख्यातका गुणकारकौं अपकर्षण भागहारका भाग कीया है । बहुरि याविषैं एक पूर्व विशेष आदि एक विशेष उत्तर एक घाटि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ

ऐसा ४ करि तहां संकलन सूत्रके अनुसारि गच्छ अर एक अधिक गच्छकौं दोयका भाग
१८
ख
दीएं संकलन धन हो है। सो इतने विशेषमात्र द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम अधस्तन शीर्ष विशेष है। बहुरि प्रथमसमय संबंधी सूक्ष्म कृष्टि द्रव्यकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाणका भाग दीएं अर विशेष अधिक है। तिनिकौं न गिणैं तिनकी जघन्य कृष्टि का द्रव्य ऐसा व। १२ ताकौं द्वितीय समयविषैं पूर्व कृष्टिनिके नीचैं करी कृष्टिनिका प्र-
२४। ओ। ४

ख
माण ऐसा ४ ताकरि गुणैं नीचैं निपजाईं अपूर्व कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य हो है।
ख। ३। ३
बहुरि ताहीकौं वीचि करी कृष्टिनिका प्रमाण ऐसा ४ ताकरि गुणैं वीचि निपजाईं अपूर्व
ख। ३
कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य हो है बहुरि प्रथम द्वितीय समय संबंधी सूक्ष्म कृष्टिका द्रव्यकौं मिलाय ताकौं प्रथम द्वितीय समय संबंधी सर्व सूक्ष्म कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं एक उभय विशेष होइ ताकी संदृष्टि ऐसी [वि] ताकौं प्रथम समय संबंधी कृष्टि प्रमाणविषैं द्वितीय समय संबंधी

कृष्टि प्रमाण मिलावनेकौं अधिककी संदृष्टि कीएं गच्छ ऐसा ४ ताकरि अर एक अधिक-
वि
करि गुणि दोयका भाग दीएं संकलन धनमात्र उभय विशेष द्रव्य हो है। बहुरि इस च्यारि प्रकारका द्रव्य घटावनेकौं सर्व द्रव्यके आगैं किंचिदूनकी संदृष्टिकरि ताकौं सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि प्र-

माण ऐसा ४/ख ताका भाग दीएं एक खंड होइ। याकौं तिसही गच्छकरि गुणैं सर्व मध्यम खंड द्रव्य हो है। ऐसैं द्वितीय समयविषैं सूक्ष्म कृष्टि संबंधी द्रव्यविषैं पांच प्रकार द्रव्य कहे तिन की संदृष्टि ऐसी—

नाम	द्रव्य
अधस्तन शीर्ष	वि । ४ । ४ ख । ख । २ (१—९)
अधस्तन कृष्टि समान खंड	व । १२ । ५५३ । ४ २४ । को । ४ ख २ २ ख
मध्यम अपूर्व कृष्टि समान खंड	व । १२ । ५५३ । ४ २४ । को । ४ । ख २
उभय द्रव्य विशेष	वि । ४ । ४ ख ख २ (१—९)
मध्यम खंड	व । १२ । ५५३ ≡ ४ २४ को ४ ख ख

बहुरि बादर कृष्टि संबंधी च्यारि प्रकार संक्रमण द्रव्य अर द्वितीय कृष्टिविषैं च्यारि प्रकार बंध द्रव्य अर तीन प्रकार घात द्रव्य देनेका पूर्ववत् विधान जानना। इहां तिनकी रचना ऐसी—

अपूर्व अधस्तनकृष्टि	पूर्व अपूर्व सूक्ष्मकृष्टि	तृतीयसंग्रह	द्वितीयसंग्रह
४ ख a a			

इहां पहलैं द्वितीय समयविषैं नवीन करी नीचली कृष्टिनिकी रचना करी। ताके ऊपरि प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टिनिकी रचना करी । तहां समपाट्टिका पूर्व विशेष अधस्तन कृष्टिकी रचना करी। अर वीचि वीचि नवीन भई कृष्टिनिकी ऊभी लीककी सहनानी करी बहुरि तिन दोऊ रचनानिके मध्यम खंड अर उभय द्रव्य विशेषकी समरूप क्रम हीन

रूप सहनानी करी। बहुरि ताके उपरि तृतीय द्वितीय संग्रहकी रचना करी ताका विधान प्रथम समयवत् जानना। ऐसें ही आडी रचना इहां करी है। बहुरि ऐसें ही सूक्ष्म कृष्टिकारक का तृतीयादि अनिवृत्तिकरणका अंतसमय पर्यंत विधानकी रचना यथासंभव जाननी। बहुरि ताके अनंतरि सूक्ष्म सांपराय हो है। तहां प्रथम समयविषैं सर्व मोहनीयका सत्त्व द्रव्य ऐसा स। ३/७। १२ इहां उत्कृष्ट समय प्रबद्धकौं द्व्यर्ध गुणहानिकरि गुणैं सर्व सत्त्व द्रव्य होइ

ताकौं सातका भाग दीएं मोहका सत्त्व द्रव्य जानना। याकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं अपकृष्ट द्रव्य ऐसा स ३/७ । १२/ओ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं एक

भाग ऐसा स। ३/(७। ओ प/३)। १२ ताकौं सूक्ष्म सांपरायका कालतैं किछू अधिक जो अवस्थित गुण-

श्रेणि आयाम ताविषैं गुणकार क्रमकरि देना। तहां अंक संदृष्टि अपेक्षा पिच्यासीका भाग ताकौं देइ एककरि गुणैं प्रथम निषेकविषैं चौसठिकरि गुणैं अंत निषेकविषैं दीया द्रव्य हो है।

बहुरि बहुभाग ऐसै स ३/(७। ओ। प ३/३)। १२–प^१ इहां गुणकारविषैं एक हीनकौं न गिणि पल्यके असंख्या-

तवे भागका अपवर्तन कीएं ऐसा स ३/(७। ओ)। १२ बहुरि अंतरायामका प्रमाण संख्यात गुणा

अंतर्मुहूर्तमात्र ऐसा २ १। ४ यातैं संख्यात गुणा स्थिति कांडकायाम ऐसा २ १। ४। ४

यातैं संख्यात गुणी कांडकके नीचैं अवशेष रही स्थिति सो ऐसी २ १। ४ । ४ । ४ इहां गुणकारनिकौं परस्पर गुणैं कांडकायाम ऐसा २ १ । १६ अर अवशेष स्थिति ऐसी— २ १। ६४ इनिकौं मिलाएं द्वितीय स्थितिका प्रमाण ऐसा २ १। ८० याकौं अंतरायाम का भाग दीएं वीस पाए ताका भाग तिस बहुभागकौं देइ च्यारितौ अंतरायामविषैं दीएं तिनकी संदृष्टि ऐसी स । ३ । १२ । ४ अर सोलह भाग प्रमाण द्रव्य द्वितीय स्थितिविषैं
७ । ओ । २०

दीया ताकी संदृष्टि ऐसी स ३ । १२ । १६ इहां यथा योग्य संख्यातकी सहनानी च्यारिका
७ । ओ । २०

अंककरि ऐसी संदृष्टि करी है। बहुरि अपना अपना द्रव्यकौं अपना अपना आयाममात्र गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ। ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेकविषैं अर तिस गुणकारविषैं क्रमतैं एक एक घटाइ एक घाटि अपने गच्छमात्र घटैं अंत निषेकविषैं दीया द्रव्य हो है। इहां अंतरायामका गच्छ ऐसा २ १। ४ अर द्वितीय स्थितिका गच्छ ऐसा २ १। ८० जानना। तहां द्वितीय स्थितिविषैं अंतकी अतिस्थापनावलीविषैं द्रव्य दीजिए है। तातैं तिस गच्छविषैं इतना घाटि है। तथापि ताकौं किंचित् जानि संदृष्टिविषैं नाही गिन्या है। इनकी संदृष्टि ऐसी—

सूक्ष्मसांपराय प्रथम कांडक प्रथम समय रचना

इहां नीचें गुणश्रेणि आयामकी क्रम अधिक रूप उपरि अंतरायामकी ताके उपरि द्वितीय स्थितिकी क्रम हीन रूप संदृष्टि करि तहां आदि अंत निषेकविषैं दीया द्रव्य आगे

लिख्या है। मध्य निषेकनिकी बिंदी सहनानी करी है। इनिके उपरि अतिस्थापनावलीकी सहनानी च्यारिका अंक कीया है। अर इहां अंतरायामविषैं पूर्वैं द्रव्यका अभाव था नवीन ही द्रव्य दीया तातैं दो बडी लीक करी। द्वितीय स्थितिविषैं पूर्वैं द्रव्य था नवीन ही दीया तातैं दो बड़ी लीक करी। बहुरि द्वितीयादि समयविषैं भी ऐसा क्रम जानना।

बहुरि प्रथम स्थितिकांडककी अंत फालिका पतनसमयविषैं विधान कहिए है—द्वितीय स्थितिका प्रथम निषेकविषैं एक घाटि द्वितीय स्थितिमात्र विशेष घटाएं चरम फालिका अंत निषेक ऐसा स। ३। १२ इहां सत्व द्रव्यकौं द्वितीय स्थितिका भाग दीएं मध्य निषेक हो
७। २ १। ४। २०

है। ताविषैं जो विशेष हीन है तिनकौं द्रव्यका प्रमाण किंचित जानि नाही गिन्या है बहुरि ताकौं अंतरायाममात्र जो चरम फालिके निषेकनिका प्रमाण ताकरि गुणैं चरम फालिका सर्व द्रव्य ऐसा स। ३। १२। २ १। ४। ४ इहां विशेष अधिक है तिनिका द्रव्यकौं कि-
७। २ १। ४। २०

चित जानि नाही गिन्या है। इहां ऐसैं २ १। ४ का अपवर्तन कीएं ऐसा स। ३। १२। ४
७। २०

याविषैं गुणश्रेणिके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य मिलावना ताकौं किंचित् जानि संदृष्टिविषैं नाही गिन्या है। बहुरि याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग ऐसा— स। ३। १२। ४ गुणश्रेणि आयामविषैं पूर्वोक्त प्रकार क्रमरूप देना। बहुरि बहुभाग ऐसा
७। २०। प
३
६२

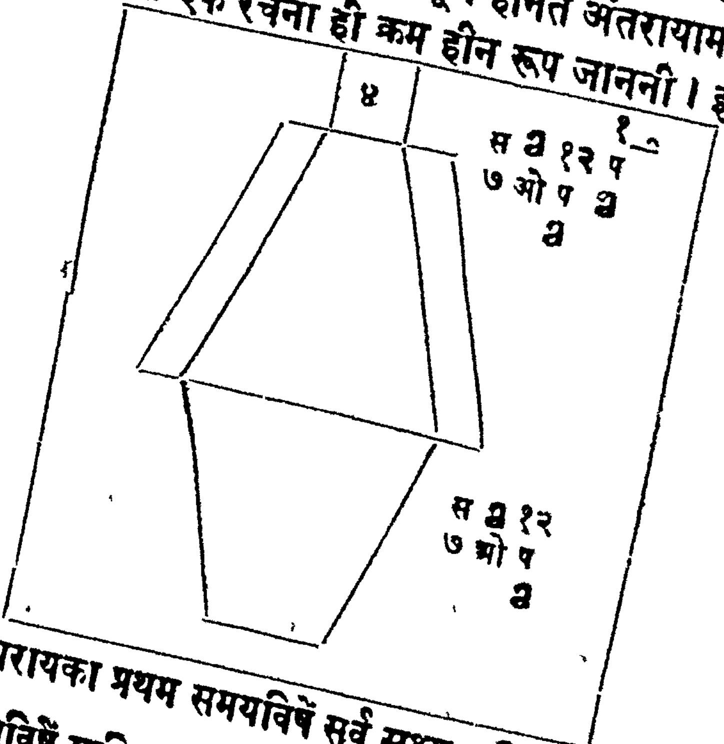
स । a । १२ । ४ । प (७ । २० । प a a) इहां गुणकारविषैं एक हीनकौं न गिणि पल्यके असंख्यातवे भागका अपवर्तन कीएं ऐसा स । a । १२ । ४ (७ । २० ।) याविषैं अंतरायामविषैं दीया द्रव्य ऐसा स a । १२ । १० (७ । २० । १७) अर द्वितीय स्थितिविषैं दीया द्रव्य ऐसा स a । १२ । ३ । १६ (७ । २० । १७) इनि दीए दोऊ द्रव्यनिविषैं ऐसा गुणकार भागहार कैसैं भया ताका मोकौं नीकैं ज्ञान नाहीं भया तातैं विधान नाहीं लिख्या है। बहुरि अंतरायामका गच्छ ऐसा २ १ । ४ अर कांडक घात इहां संपूर्ण भया तातैं कांडकायाम सहित अवशेष द्वितीय स्थितिका गच्छ ऐसा २ १ । ४ । ४ सो अपने अपने गच्छका अर एक घाटि गच्छका आधाकरि न्यून दोगुणहानिका भाग दीएं विशेष होइ ताकौं दोगुणहानिकरि गुणैं प्रथम निषेक इस गुणकारविषैं एक घाटि गच्छ घटाएं अंत निषेक हो है। इनकी रचना ऐसी—

सूक्ष्मसांपरायविषै प्रथमकांडक अन्तफालि पतनसमय रचना ।

अतिस्थापनावली	४	स ३ १२ । ३ । १६ । १६–२वृ ६४ / ७ २० १७ २वृ ६४ १६— २वृ ६४ / २
द्वितीयस्थितिः		स ३ १२ ३ १६ १६ १ / ७ २० २वृ ६४ १६— २वृ ६४ / २
अंतरायाम		स ३ १२ २० १६— २वृ ४ / ७ २० २वृ ४ १६— २वृ ४ / ० २ ; स ३ १२ २० १६ १ / ७ २० २वृ ४ १६— २वृ ४ / २
गुणश्रेणि		स ३ १२ ४ ६४ / ७ २० ८५ ; ० ; ० ; स ३ १२ ४ / ७ २० ८५

इहां रचना पूर्वोक्त प्रकार जाननी । अंतरायामविषैं पूर्वैं भी द्रव्य था तातैं इहां दो बड़ी लीक करी हैं । बहुरि द्वितीय कांडकका प्रथम फालिपतन समयविषैं सर्व द्रव्यकौं अप-

कर्षण भागहारका भाग दीएं ऐसा स । a । १२ द्रव्य ग्रहि ७ । ओ ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ एक भाग गुणश्रेणि आयामविषैं बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं अतिस्थापनावली छोड दीजिए है। इहां अंतरायाम पूर्ण होनेतैं अंतरायाम अर द्वितीय स्थितिका एक गोपुच्छ भया। तातैं एक रचना ही क्रम हीन रूप जाननी। इनिकी संदृष्टि ऐसी—



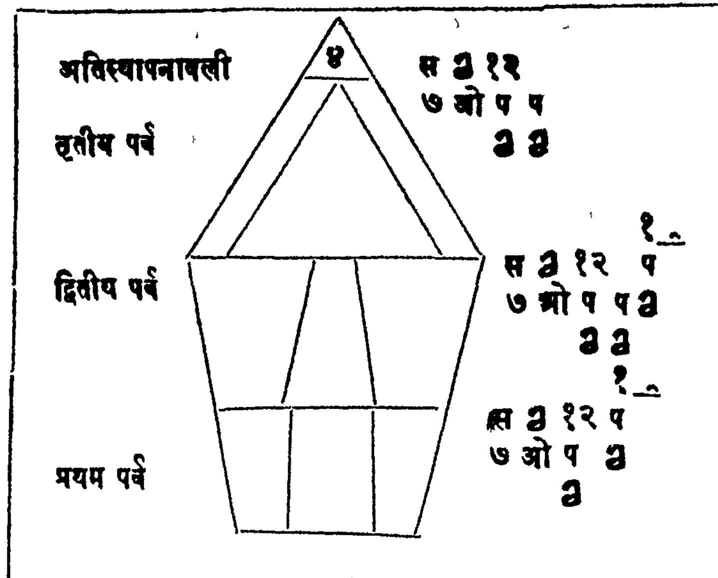
बहुरि सूक्ष्म सांपरायका प्रथम समयविषैं सर्व सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रथम समयविषैं कीनी सूक्ष्म कृष्टिनिका प्रमाणविषैं साधिक कीएं ऐसा ४ ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका

भाग दीएं बहुभागमात्र मध्य कृष्टि उदय रूप हो हैं। एक भागकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पांचका भाग देइ तहां दोय भागमात्र नीचली तीन भागमात्र उपरिकी कृष्टि अनुदय रूप हो हैं। बहुरि द्वितीयादि समयनिविषैं नीचली कृष्टि नवीन उदय रूप भई। ऊपरिली कृष्टि नवीन अनुदय रूप भई। तिनिका प्रमाण पूर्वं नीचली ऊपरली अनुदय कृष्टिनिकैं असंख्यातवां भागमात्र क्रमतैं है। मध्य उदय कृष्टि किंचित हीन क्रम लीएं है । तिनकी संदृष्टि ऐसी—

		० ० ० ०	
तृतीय	२ a a	४ ≡ ख	३ a a
द्वितीय	२ a	४ = ख	३ a
प्रथम	। ४ २ ख। प ५ a	। १ – ४ प ख a प a	। ४ ३ ख प ५ a
	अनुदय	उदय	अनुदय

इहां क्रम हीन रूप प्रथमादि समयनिविषैं उदय आवने योग्य प्रथमादि निषेक तिनकी ९७३

ऊर्ध्व रचनाकरि तहां प्रथमादि निषेकनिविषैं नीचली अनुदय मध्यकी ऊपरली अनुदय कृष्टिनिकी आडी रचना करी है। अर तिनिका प्रमाण लिख्या है। तहां द्वितीयादि निषेकनिविषैं नीचली ऊपरली कृष्टिनिविषैं दोय तीन भाग थे तिनकी संदृष्टि दोय तीनका अंककरि ताकौं क्रमतैं एक दोय आदि वार असंख्यातका भाग देइ नवीन उदय अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण लिख्या है। वीचिमें सर्व कृष्टिनिकौं दोय तीन आदि करि किंचिद्‌की सहनानीकरि उदय कृष्टिनिका प्रमाण लिख्या है ऐसा जानना। बहुरि सूक्ष्म सांपरायका अंतकांडका द्रव्य ऐसा—स ३ । १२ इहां किंचित् ऊन है ताकौं न गिण्या है। याकौं अपकर्षण
७
भागहारका भाग दीएं ऐसा—स । ३ । १२ प्रथम फालिका द्रव्य हो है। याकौं पल्यका असं-
७ । ओ
ख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग सूक्ष्मसांपरायका अंतसमयपर्यंत गुणकार क्रमकरि दीजिए है। इहां यहु गुणश्रेणि शीर्ष है। बहुरि अवशेष एक भागकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ बहुभाग पुरातन गुण श्रेणिका अंतपर्यंत विशेष घटता क्रमकरि दीजिए है बहुरि अवशेष एक भाग ताके उपरि स्थितिविषैं अतिस्थापनावली छोडि विशेष घटता क्रमकरि दीजिए है। ऐसैं तीन पर्वनिविषैं द्रव्य दीजिए है ताकी रचना ऐसी—



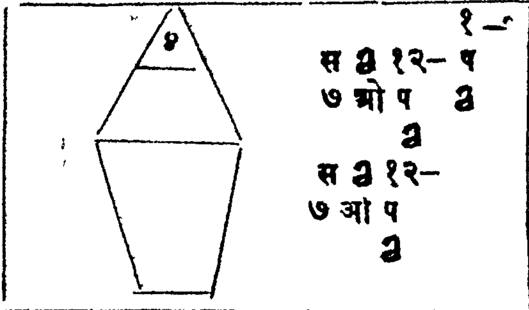
इहां नीचें अधिक क्रमरूप पुरातन गुणश्रेणिकी रचनाकरि तातिषैं दीया द्रव्यकी दूसरी लीक नीचैं प्रथम पर्वकी अधिक क्रमरूप ताके उपरि द्वितीय पर्वकी क्रमहीनरूप संदृष्टि करी है। बहुरि ताके उपरि तृतीय पर्वका पुरातन नवीन द्रव्यकी दोऊ लीक क्रमहीन रूप करी हैं। इनके आगें दीया द्रव्यका प्रमाण लिख्या है। उपरि अतिस्थापनावली लिखी है ऐसा जानना। बहुरि ऐसैं ही द्वितीयादि फालिविषैं विधान जानना। बहुरि अंतफालिका द्रव्य किंचिदून द्व्यर्धगुणहानि गुणित समय प्रवद्ध प्रमाण ऐसा स । ७ । १२ ताकौं पल्यका असंख्यात वर्गमूलमात्र असंख्यातका भाग देइ एक भागमात्र ताकौं सूक्ष्मसांपरायका द्वि-

चरम समय पर्यंत प्रथम पर्वविषैं असंख्यातगुणा क्रमकरि देना। तहां ताकौं अंक संदृष्टि करि पिच्यासीका भाग देइ एक च्यारि सोलह चौंसठिकरि गुणैं प्रथमादिनिषेक हो हैं। बहुरि बहुभाग सूक्ष्मसांपरायका अंत समय संबंधी निषेकविषैं दीजिए है। यह दूसरा पर्व है इनकी संदृष्टि रचना ऐसी—

द्वितीयपर्व	स ३ १२— मू ३ १ ≏ ७ मू ३
प्रथमपर्व	स ३ १२— ६४ ७ ३ ८५
	स ३ १२— १६ ७ ३ ८५
	स ३ १२— ४ ७ ३ ८५
	स ३ १२— १ ७ ३ ८५

इहां नीचैं प्रथम पर्वकी अधिक क्रम रूप संदृष्टि करी है। ताके आगैं प्रथमादि निषेकका द्रव्य लिख्या है। ताके उपरि एक निषेक वडा लिख्या है। ताके आगें तहांही दिया द्रव्य लिख्या है ऐसैं कृष्टि वेदनाधिकारका विधानविषैं संदृष्टि जाननी। बहुरि क्षीणकषायविषैं छह कर्मनिविषैं विवक्षित एक कर्मका सत्त्व द्रव्य ऐसा स। ३। १२ / ७ ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग देइ तहां एक भाग गुणश्रेणि आयाम

विषैं गुणकार क्रमकरि बहुभाग उपरितन स्थितिविषैं आतिस्थापनावली छोडि विशेष घटता क्रमकरि देना तिनकी संदृष्टि ऐसी—



बहुरि निद्रादिक चौदह घातियानिका अंतकांडकविषैं प्रथमादि फालिनिका वा अंत फालिका द्रव्य देनेका विधान जैसैं सूक्ष्म सांपरायविषैं मोहका कह्या तैसैं ही जानना। तिनकी रचना पूर्वोक्त प्रकार ऐसी–

निद्रादिक प्रथमादिफालि	चौदह घातियानिकी प्रथमादिफालि	निद्रादिककी अंतफालि	चौदह घातियानिकी अन्तफालि
४	४	०	०

बहुरि तीन वेद च्यारि कषायनिविषैं एक सहित चढनेकी अपेक्षा क्षपक जीव बारह प्रकार हैं। तहां पुरुष वेद क्रोध सहित चढनेवालेकैं नपुंसक स्त्री सात नोकषाय क्षपणा अश्वकरण कृष्टिकरण क्रोध मान माया लोभ क्षपणा क्रमतैं हो है बहुरि मान माया लोभ सहित चढ्याकैं नोकषाय क्षपणा पर्यंत तौ समान है पीछैं क्रोधकी अर क्रोध मानकी अर क्रोध

मायाकी क्रमतैं क्षपणा हो है। पीछैं अश्वकरण कृष्टिकरण हो है पीछे क्रमतैं अवशेष कषायनिकी क्षपणा हो है बहुरि अंतकरण पीछैं कृष्टि करण पर्यंत तो जिस कषाय सहित चढ्या ताकी प्रथम स्थिति स्थापै है। पीछैं अवशेष कषायनिकी जुदी जुदी प्रथम स्थिति स्थापै है सो प्रथम स्थिति गुणश्रेण्यायाम रूप है तातैं तिनकी अधिक क्रम रूप रचना जाननी। बहुरि नपुंसक स्त्रीवेद सहित चढ्या जीवकैं स्त्रीवेदका क्षपणा कालविषैं दोऊ वेदनिकी क्षपणा हो है। इहां जिस वेद सहित चढ्या ताहीकी प्रथम स्थिति स्थापै है। ऐसा जानना। ऐसैं ए नव कालके प्रत्येक यथायोग्य अंतर्मुहूर्तमात्र जानने तिनकी संदृष्टि रचना ऐसी—

२७				लो ख	लो ख	लो ख	लोख
२७				या ख	या ख	या ख	कि का
२७				मा ख	मा ख	कि का	अस्स
२७				को ख	कि का	अस्स	या ख
२७				कि का	अस्स	मा ख	मा ख
२७				अस्स	को ख	को ख	को ख
२७			नो ७	नो ७	नो ७	नो ७	नो ७
२७	न इ	न इ	इ	इ	इ	इ	इ
२७	न	म	न	न	न	न	न
	न	इ	स्त्री	को	मा	या	लो

इहां इनका प्राकृत नामका आदि अक्षरकी संदृष्टि जाननी। बहुरि अवशेष तीन

घाति कर्मनिका नाशकरि सयोग केवली हो है। तहां प्रथमादि समयविषैं आयुविना तीन घातियानिका द्रव्यकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ उदयादि गुणश्रेणि आयामविषैं गुणकार क्रमकरि उपरितन स्थितिविषैं विशेष घटता क्रमकरि अतिस्थापनावली छोड दीजिए है। ताकी संदृष्टि सुगम है। इहां स्वस्थान केवलीतैं आवर्जित करणविषैं अपकर्षण द्रव्य असंख्यात गुणा, गुणश्रेणि काल संख्यातवे भागमात्र जानना। बहुरि दंड कपाट प्रतरलोक पुरणविषैं स्थिति सत्व घात कीया ताका प्रमाण दंडविषैं पल्यका असंख्यातवां भागकौं असंख्यातका भाग देइ बहुभागमात्र अर कपाटविषैं अवशेष एक भागकौं तैसैं ही भाग देइ बहुभागमात्र बहुरि प्रतरविषैं अवशेष एक भागकौं तैसैं ही भाग देइ बहुभागमात्र अर लोकपूरणविषैं अवशेष एक भाग संख्यात गुणा अंतर्मुहूर्तकरि हीन जानना। ऐसैं समय समय घात भएं अवशेष स्थिति संख्यात गुणा अंतर्मुहूर्तमात्र रहै है। ताका संख्यात बहुभाग आयाम रूप कांडक विधानकरि क्रमतैं घात कीएं आयुके समान तीन घातियानिकी अंतर्मुहूर्तमात्र स्थिति रहै है ताकी संदृष्टि ऐसी—

तीनघातिया	तीनघातिया	आयु
दंड कपाट प्रतर लोकपूरण १ ⌒ प ૩ ૩ ૩ १ ⌒ प ૩ ૩ ૩ ૩ १ ⌒ प ૩ ૩ ૩ ૩ ૩ प २ ११ ૩ ૩ ૩ ૩ २ ७ ७	२७ २७ ७	२ ७

इहां क्रम हीन रूप निषेकनिकी संदृष्टि रचना जाननी। बहुरि सयोगी जिनकैं पूर्व स्पर्धक अपूर्व स्पर्धक सूक्ष्म कृष्टि रूप योग अनुक्रमतें हो हैं। तहां एक जीव प्रदेशविषै असंख्यात लोक प्रमाण अविभाग प्रतिच्छेद हैं। याहीका नाम वर्ग है ताकी संदृष्टि ऐसी [व] बहुरि समान अविभाग प्रतिच्छेद लीएं वर्गनिका समूह रूप वर्गणा ताविषैं वर्गनिका प्रमाण असंख्यात जगत्प्रतर प्रमाण है। बहुरि वर्गणा समूह रूप एक स्पर्धक तीहिविषैं वर्गणा श्रेणिका असंख्यातवां भागमात्र है। याहीका नाम वर्गणा शलाका है। याकी संदृष्टि च्यारि का अंक है। बहुरि स्पर्धक समूह रूप गुणहानि तीहिविषैं स्पर्धकनिका प्रमाण असंख्यात है

याहीका नाम स्पर्धक शलाका है। ताकी संदृष्टि नवका अंक है (९) बहुरि गुणहानि समूहरूप एक स्थान तीहिविषैं गुणहानिका पल्यके असंख्यातवे भागमात्र है। याहीका नाम नानागुणहानि है। ताकी संदृष्टि ऐसी (ना) ऐसैं जघन्य स्थान हो है। इनके प्रमाणकी संदृष्टि ऐसी जाननी–

अवि	वर्ग	वर्गणा	स्पर्धक	गुणहानि	नानागुणहानि
≡	≡ ३	३	३ ३	५ ३	१

बहुरि स्थान स्थान प्रति सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग प्रमाण मात्र जघन्य स्पर्धक बंधे है। ऐसैं उत्कृष्ट परिणाम योग पर्यंत क्रम है ऐसैं पूर्वस्पर्धकविषै विधान है। तहां पूर्व-स्पर्धकका जघन्य वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनिकी संदृष्टि ऐसी (व) याकौं स्पर्धक शलाका अर नाना गुणहानिकरि गुणै अंत स्पर्धकका प्रथम वर्गकी संदृष्टि होइ। तामैं अंक संदृष्टि अपेक्षा वर्गणा शलाकाका प्रमाण च्यारि तामैं एक घटाएं तीन होइ सो अधिक कीएं पूर्व स्पर्धकका उत्कृष्ट वर्गके अविभाग प्रतिच्छेदनिकी संदृष्टि ऐसी– व। ९। ना (३–) बहुरि इनके नीचैं अपूर्वस्पर्धक हो है तिनका प्रमाण स्पर्धकशलाकाकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भाग-हारका भाग दीएं एक भागमात्र हो है सो ऐसा – ८ / ओ ३ याका उत्कृष्ट वर्गविषै अविभाग प्र-तिच्छेद पूर्वस्पर्धकका जघन्य वर्गके असंख्यातवे भागमात्र है सो ऐसा व / ३ याकौं अपूर्व स्पर्धक प्रमाणका भाग अपूर्वस्पर्धकके जघन्यवर्गका अविभाग प्रतिच्छेद हो है। सो

ऐसा—व ९ बहुरि सर्व प्रदेशनिकों द्व्यर्ध गुणहानिका भाग दीएं पूर्वस्पर्धककी प्रथम
    a ओ a

वर्गणाका द्रव्य हो है । याकौं दोगुण हानिका भाग दीएं एक विशेष हो है । बहुरि प्रथम वर्गणातैं द्वितीयादि अंतवर्गणा पर्यंत एक एक विशेष घटता द्रव्य प्रथम गुणहानिविषैं हो है । बहुरि द्वितीयादि गुणहानिविषैं आधा आधा क्रम अंत गुणहानि पर्यंत जानना । बहुरि आदि वर्गणाकौं द्व्यर्द्ध गुणहानिकरि गुणें सर्व प्रदेश प्रमाण ऐसा (व १२) ताकौं अपकर्षण भागहारका भाग देइ एक भागमात्र द्रव्य ग्रहि ताकौं अपूर्व पूर्व स्पर्धकनिविषैं यथा योग्य दीजिए है । इनकी संदृष्टि यथासंभव जानि लेनी । पूर्व अपूर्वस्पर्धकनिकी रचना ऐसी—

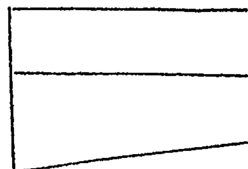
पूर्वस्पर्धक ६ ना अपूर्वस्पर्धक ९ ओ a			३— व ९ ना यहां द्रव्यकी संदृष्टि यथा संभव जाननी व व a व ६ a ओ a

इहां रचना ऊभी लीक करी है । बहुरि द्वितीय समयविषैं प्रथम समयतैं असंख्यात गुणा द्रव्य अपकर्षण करै है सो ऐसा—व १२ / ओ a इहां गुणकारकौं भागहारका भागहार कीया है । बहुरि प्रथम समयविषैं कीने अपूर्वस्पर्धकनिके नीचैं नवीन अपूर्वस्पर्धक करिए है । तिनका प्रमाण प्रथम समय संबंधी स्पर्धकनिके असंख्यातवे भागमात्र है सो ऐसा—९ / a a a इहां संदृष्टि रचना ऐसी—

१ ना	पूर्वस्पर्धक		३— व ९ ना व व a व ७ ६ ओ a व । ६ a। ओ । a।a
९ / ओ a	प्रथमसमयअपूर्वस्पर्धक		
६ / ओ a a	द्वितीयसमयअपूर्वस्पर्धक		

इहां सर्व स्पर्धकनिकी वर्गणाकी संदृष्टिविषैं समपट्टिका करि आगैं विशेष घटता क्रम की संदृष्टि करी है । तहां उपरि पूर्व स्पर्धक नीचैं प्रथम समयविषैं कीने, अपूर्व स्पर्धक नीचैं द्वितीय समयविषैं कीने । अपूर्व स्पर्धककी रचना जाननी । ऐसैं ही अपूर्वस्पर्धक करणकाल

का अंत समय पर्यंत जानना। बहुरि कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषैं सर्व पूर्व अपूर्व स्पर्धक संबंधी जीव प्रदेश ऐसे—व १२। इनिकौं अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र ऐसा व । १२ । ओ अहि प्रथम समयविषैं कीनी प्रथमादि कृष्टिनिविषैं अर अपूर्व स्पर्धककी प्रथमादि वर्गणानिविषैं द्रव्य दीजिए है। इहां कीनी कृष्टिनिका प्रमाण वर्गणा शलाकाके असंख्यातवे भागमात्र ऐसा ४ इनकी रचना ऐसी—
a



इहां कृष्टिकी समपट्टिकारूप संदृष्टिकरि नीचैं विशेष घटता क्रमकी संदृष्टि करी है बहुरि द्वितीय समयविषैं पूर्व द्रव्यतैं असंख्यातगुणा द्रव्य ऐसा व । १२ ओ a अहि ताकौं प्रथम समय विषैं कीनी कृष्टि प्रमाणकौं असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहारका भाग दीएं एक भागमात्र ऐसा ४ a a तिनके नीचैं नवीन कृष्टि करै है। तिनविषैं अर प्रथम समय संबंधी प्रथम कृष्टिकौं आदि देय अंत कृष्टि पर्यंत कृष्टिनिविषैं निक्षेपण करै है। इनकी रचना ऐसी—

द्वितीय समय कृत कृष्टि ४ ३ ओ ३	प्रथम समयकृतकृष्टि समपट्टिका प्रथम समयकृतकृष्टि विशेष अधस्तनशीर्ष
मध्यमखंड	
उभय द्रव्य विशेष	

इहां नीचैं नवीन कृष्टिनिकी उपरि पुरातन कृष्टिकी संदृष्टि करी है। तहां पुरातन कृष्टिविषैं समपाट्टिका अर विशेष घटता क्रमकी संदृष्टि करी है। बहुरि पुरातन कृष्टिविषैं अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य दीएं सर्वकृष्टिकी समपट्टिका भई ताकी सर्व कृष्टिनिविषैं मध्यम खंड द्रव्य दीएं समपाट्टिका रही ताकी अर उभय द्रव्य विशेष द्रव्य दीएं विशेष घटतौ क्रम भया ताकी रचना करी है। इहां ऐसैं आडी रचना करी है। बहुरि इहां प्रथम समयविषैं प्राप्त द्रव्य ऐसा व । १२ ओ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं कृष्टि संबंधी द्रव्य ऐसा व । १२ ओ प अवशेष बहुभागमात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनिविषैं दीजिए है। बहुरि कृष्टिसंबंधी द्रव्यकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा ४/३ ताका अर किंचिदून दोगुण

हानि ऐसा १६— ताका भाग दीएं प्रथम समय संबंधी विशेष होइ सो ऐसा व । १२ ओ प ४ १६— a a ताकौं दोगुणहानि करि गुणैं प्रथमवर्गणा ऐसी व । १२ । १६ ओ प ४ १६— a a ताकौं द्वितीय समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाण ऐसा—४ ओ a । ताकरि गुणैं अधस्तन कृष्टिका द्रव्य हो है । बहुरि प्रथम समय संबंधी विशेष ऐसा—व । १२ ओ प ४ १६— a a ताकौं एक घाटि प्रथम समय संबंधी कृष्टि प्रमाण गच्छ अर तातैं एक अधिक प्रमाणकौं दोयका भाग दीएं तिस गच्छका संकलन धन होइ सो ऐसा— ४ । ४ a a २ याकरि गुणैं अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य हो है । बहुरि द्वितीय समयविषैं द्रव्य ऐसा व १२ ओ a इहां भागहारका भागहारकौं राशिका गुणकार कीएं ऐसा व १२ । a ओ याकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं कृष्टि संबंधी द्रव्य ऐसा व । १२ । a ओ प a याविषैं प्रथम समय संबंधी कृष्टि संबंधी द्रव्य मिलावनेकौं आगिला असंख्यातका गुणकार उपरि एक अधिक कीएं उभय संबंधी कृष्टि द्रव्य ऐसा व । १२ a ओ । प a याकौं प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि

प्रमाण विषैं द्वितीय समय संबंधी कृष्टि मिलावनेकौं साधिक कीएं उभय समय संबंधी कृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ ऐसा ४ ताका अर किंचिदून दोगुणहानिका भाग दीएं उभय द्रव्य विशेष ऐसा व १२ ∂ (१–, ∂) याकौं उभयकृष्टि प्रमाणमात्र गच्छ अर तातैं एक अधिक प्रमाणकौं दोयका भाग दीएं तिस गच्छका संकलन धन ऐसा ४ । ४ (१—) ताकरि गुणैं उभय द्रव्य विशेष (ओ प ४ १६–, ∂ ∂ ; ∂ । ∂ । २) द्रव्य हो है। बहुरि द्वितीय समय संबंधी द्रव्यविषैं पूर्वोक्त तीन द्रव्य घटावनेकी आगैं ऐसी (≡) संदृष्टि कीएं अवशेष द्रव्य ऐसा व । १२ । ∂ । ≡ (ओ । प, ∂) याकौं उभय संबंधी कृष्टिनिका भाग दीएं एक खंड होइ। ताकौं तिस ही करि गुणैं सर्व मध्यम खंड द्रव्य हो है। इनकी संदृष्टि ऐसी—

अधस्तन कृष्टि	व । १२ । १६ । ४ ओ प । ४ । १६ — a । ओ a a a
अधस्तन शीर्ष	१ — व । १२ । ४ । ४ ओ । प । ४ १६ — a a । २ a a
उभय द्रव्य विशेष	१ — १ — व । १२ । a । ४ । ४ ओ । प । ४ । १६ — a a । २ a a
मध्यम खंड	। व । १२ । a ≡ । ४ ओ । प । ४ a a a

बहुरि अंत कृष्टि करण कालका तृतीयादि समयनिविषैं यथा संभव रचना जाननी। इहां अपूर्व स्पर्धकनिका वा सूक्ष्म कृष्टिका विधान अनिवृत्तिकरणवत् जानना। तहां कर्मपरमाणूनिविषैं अनुभाग शक्ति अपेक्षा कथन है। इहां जीव प्रदेशानिविषैं योग शक्तिका निरूपण है तहां प्रमाणादिकका विशेष है सो विशेष जानना। बहुरि कृष्टि वेदक कालका प्रथम समयविषैं विधान कहिए है—

कृष्टि करण कालका प्रथम समयविषैं कीनी कृष्टि प्रमाणविषैं अन्य समयविषैं कीनी १९७

कृष्टि प्रमाण मिलावनेकौं अधिककी संदृष्टि कीएं सर्व कृष्टि प्रमाण ऐसा $\frac{४}{a}$ ताकौं पल्यका असंख्यातवां भागका भाग दीएं बहुभाग ऐसा $\frac{४}{a}\frac{प}{a}$ बीचिकी उदय कृष्टिनिका प्रमाण है बहुरि एक भाग ऐसा $\frac{४}{a} । \frac{प}{a}$ ताकौं अंक संदृष्टि अपेक्षा पांचका भाग देइ दोय भागमात्र नीचेकी तीन भागमात्र ऊपरिकी अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण जानना। बहुरि द्वितीय समय विषैं नीचेकी अनुदय कृष्टिनिविषैं तिनके असंख्यातवे भागमात्र उदय रूप हो हैं । अर उपरिकी अनुदय कृष्टिनिविषैं तिनके असंख्यातवे भागमात्र उदय कृष्टि हैं । ते अनुदय रूप हो हैं। ऐसैं ही तृतीयादि समयनिविषैं विधान जानना। इस सूक्ष्म कृष्टि वेदक काल-विषैं सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती शुक्लध्यान हो है। ताकी संदृष्टि ऐसी—

	० ० ०		
द्वितीयसमय	अनुदय	उदय	अनुदय
	। ४ २ a / a प ५ / a	४=	। ४ ३ a / a प ५ a / a
प्रथमसमय	अनुदय	उदय	अनुदय
	। ४ २ / a प ५ / a	। ४ १ प / a प a / a	। ४ ३ / a प ५ / a

इहां प्रथमादि समयनिकी रचनाकरि तहां कृष्टिनिकी रचना आगैं करी है । तहां समपट्टिका विशेष घटता क्रमरूप संदृष्टि करी है अर अनुदय उदय अनुदय कृष्टिनिका प्रमाण लिख्या है बहुरि सयोगीविषैं अंतर्मुहूर्त काल अवशेष रहैं वेदनीय नाम गोत्रका अंत कांडककी प्रथम फालिका पतन हो है । तहां ताके द्रव्यकौं ग्रहि स्थिति कांडक घात कीएं

पीछैं अवशेष जो स्थिति रहैगी ताविषैं असंख्यातगुणा क्रमकरि अर ताके उपरि पुरातन गुणश्रेणि आयामका अंत पर्यंत चय घटता क्रमकरि अर ताके उपरि अतिस्थापनावली छोडि उपरितन स्थितिविषैं चय घटता क्रमकरि द्रव्य दीजिए है। ऐसैं इहां तीन पर्व जानने ऐसैं ही ताकी द्वितीयादि चरमफालि पतन समय पर्यंत विधान जानना। बहुरि अंत फालि पतन समयविषैं अवशेष स्थितिका द्विचरम समय पर्यंत एक पर्व अर अंत समयरूप द्वितीय पर्व ऐसैं दोय पर्वनिविषैं द्रव्य दीजिए है। इहां पिच्यासी प्रकृतिनिका सत्त्वविषैं बहत्तरि प्रकृति तो अयोगीका द्विचरम समयविषैं अर तेरह प्रकृति ताका अंत समयविषैं खिपैंगी तातैं जुदी जुदी रचना करिए है। अर तेरह प्रकृतिनिविषैं मनुष्यायुका स्थिति कांडक घात नाहीं। तातैं इहां बारह प्रकृतिनिका ग्रहण कीया है। सो इहां जैसैं क्षीण कषायविषैं ज्ञानावरणादिकनिका अंत कांडकविषैं विधान वा सम्यग्दृष्टिका स्वरूप कह्या था तैसैं इहां जानना। बहुरि आयुकी अंतर्मुहूर्तमात्र स्थिति रही ताकी घटता क्रम लीएं निषेकनिकी रचना जाननी। ऐसैं इनकी संदृष्टि ऐसी हो है—

बहुरि ताके अनंतरि अयोगी गुणस्थान हो है तहां पांच लघु अक्षर उच्चारण कालमात्र स्थिति है। ताकौं प्रथमादि समयनिविषैं तिन पर्वनिका एक एक निषेककौं गलावै है। तहां बहत्तरि प्रकृतिनिका द्विचरम समयविषैं तेरह प्रकृतिनिका अंत समयविषैं अंत निषेककौं गलावै है। सो इहां अयोगी कालका अंक संदृष्टिकरि च्यारि समय मानि बहत्तरि

प्रकृतिनिकी तीन निषेक रूप अर बारह प्रकृतिनिकी च्यारि निषेक रूप रचना ऐसी जाननी

प्रकृति ७२	प्रकृति १२
०	०
०	०
०	०
	०

अर निषेक घटते क्रम लीएं हैं अर अधोगलन रूप जुदे जुदे हैं तातैं तिनकी जुदी जुदी रचना घटता क्रम लीएं करी है ऐसैं सर्व कर्मनिका क्षयकरि ताका अनंतर समयविषैं पर द्रव्य संबंधी रहित केवल आत्मा ऊर्ध्व गमनकरि लोकका अग्रभागविषैं जाइ विराजमान हो है। तहां अनंत काल पर्यंत तैसैं ही रहै है तातैं कृतकृत्य अवस्थाकौं प्राप्त भए तातैं तिनकौं सिद्ध कहिए। सो सिद्ध भगवान परम मंगलकारी होऊ। ऐसैं श्रीलब्धिसार नामा शास्त्र अर इसहीविषैं क्षपणासार शास्त्रका अर्थ गर्भित है। ताविषैं अर्थनिकी संदृष्टि अर तिन संदृष्टिनिका स्वरूप निरूपण किया है। तहां जो चूक होइ सो विशेष ज्ञानी संवारि शुद्ध करियो मोकौं अल्पज्ञ मानि क्षमा करियो।

श्लोक—

गर्भितक्षपणासारं लब्धिसारश्रुतं महत् ।
तत्संदृष्टिसमाख्यातिः पूर्णजातार्थभासिका ॥ १ ॥
मगलं मलहंतार्हन् सिद्धात्मा शुद्धमंगलं ।
मंगलं साधुसंघस्तद्धर्मो मंगलमुत्तमं ॥ २ ॥

इति क्षपणासार अर्थगर्भित लब्धिसारके अर्थनिकी संदृष्टिनिका वर्णन संपूर्ण भया,
याकौं संपूर्ण होतैं यहु ग्रंथ समाप्त भया, ग्रंथ समाप्त होतैं प्रारंभ कीया
कार्यकी सिद्धि होनेकरि हम आपकों कृतकृत्य मानि इस कार्य
करनेकी आकुलता रहित होइ सुखी भए याके प्रसादतै
सर्व आकुलता दूरि होइ हमारैं शीघ्र ही स्वात्मज
सिद्धि जानित परमानंदकी प्राप्ति होउ ।



अथ ग्रंथप्रशास्तिवर्णन।

श्रीमत लब्धिसार वा क्षपणासार सहित श्रुत गोम्मटसार
ताकी सम्यग्ज्ञान चंद्रिका भाषामय टीका सुखकार।
प्रारंभी अर पूरण भई अब भए समस्त मंगलाचार
सफल मनोरथ भयो हमारो पायो ज्ञानानंद अपार॥ १॥

दोहा—

आप अर्थमय शब्दजुत ग्रंथ उदधि गंभीर। अवगाहैं ही जानिये याकी महिमा धीर॥ १॥
षट्कारक या ग्रंथके निश्चय अर व्यवहार। जानहु जानत होत है जातैं सत्य विचार॥ २॥

सवैया—

सिद्ध श्रुत शब्द सोई है स्वतंत्र करतार भया यहु ग्रंथ सोई कर्म पहिचानिए।
ग्रंथरूप जुरनेकी शक्ति सो करण जैन शासनके अर्थि ऐसो संप्रदान जानिए।
ग्रंथहीतैं भयो ग्रंथ यहु अपादान जैन श्रुतविषैं यहु अधिकरण प्रमानिए।
स्वाश्रित स्वरूप षट्कारक विचारो ऐसैं निश्चय करि आनकौ विधान न वखानिये॥
जिन गन इंद नेमि इंदु आदि करतार भयो ग्रंथ काज सोई कर्म शर्म थान है।
याके होत भए जे सहाई हैं करण तेई भव्यनिके अर्थि किया ऐसैं संप्रदान है।
आन काज छूटनेतैं भयो यहु काज सोई अपादान नाम ऐसैं जानत सुजान हैं।
भयो क्षेत्रविषैं अधः करण कहावे सोई ऐसैं व्यवहार षट्कारक विधान है॥ ५॥

दोहा—

ग्रंथ होंनके जे भए समाचार सुखकार । तिनकौं जानहु कहत हो जाने जाने सार ॥ ६ ॥

सवैया ॥ ३१ ॥

वर्धमान केवलीके देहरूप पुद्गल ते जीव नाहि प्रेरै तौऊ उपकार करै हैं।
मेघवत् अक्षर रहित दिव्य ध्वनि करि धर्मामृत वरसाय भवताप हरै हैं।
ताहीका निमित्त पाइ आन स्कंध पुद्गलके नानाविध भाषारूप होइ विसतरे है।
जाकौं जैसो इष्ट सो सुने है सो सत्य अर्थ सभा माहि ऐसौ जिन महिमा अनुसरे है॥
गनधर गौतम जु च्यारि ज्ञानधारी आप महा रुचि धारि तिनकौं तहां सुने है।
तिनकौं निमित्त अर श्रुतज्ञान शक्तिसेती साचे नाना अर्थिनिकौं नीकी भांति मुने है।
राग अंश उदै होत भई उपकार बुद्धि तातैं ग्रंथ गुथनेकौं भले वर्ण चुने हैं।
अंग अंग बाह्यरूप रचना बनाई ताकौं करिके अभ्यास भव्य सर्व कर्म धुने हैं॥ ८ ॥
बुद्धि ऋद्धि धारी कोई संपूरण जानि ताहिकोई ताके अंग अंश जानि अर्थ पायो है।
केई ताके अनुसार ग्रंथ जोरे हैं नवीन करिकैं संक्षेप सोई अर्थ तहां गायो है।
गणधरके गूंथे ग्रंथ तिनकौं न पाठी अब ऐसो कलिकाल दोष आपको दिखायो है।
अनुसारी ग्रंथनितैं शिव पंथ पाइ भव्य अबहू करि साधन स्वभाव भाव भायो है ॥
मुनि भूतबलि यति वृषभ प्रमुख भए तिनि हूनैं तीन ग्रंथ कीने सुखकार हैं।
प्रथम धवल अर दूजो है जयधवल तीजो महाधवल प्रसिद्ध नाम धार हैं।
श्लोक तो हैं लाखो अर अर्थ है कठिन घनो तातैं बुद्धिमान विनु जानै नाहि सार है।

दक्षिणमें गोम्मट निकटि मूलविद्रपुर तहां ठीक कीए ग्रंथ पाइए अवार है ॥
दक्षिण दिशामें नेमिचंद्र आदि मुनिराज भये तिनहूंकें भयो तिनकौं अभ्यास है।
जैनी राजमल्ल राजा ताको मंत्री आप राजा भयो है चामुंडराय तहां ताकौं वास है।
तींहि कीनी प्रश्न तब धवलादि शास्त्रनिके अनुसारि कीयो इस ग्रंथको उजास है।
बंधकादि संग्रहतैं नाम पंचसंग्रह है अथवा गोम्मटसार नामको प्रकाश है ॥ ११ ॥

दोहा—

बहुत सूत्रके करनतैं नेमिचंद गुनधार। मुख्यपने यों ग्रंथके कहिए है करतार ॥

चौपई।

कनकनंदि फुनि माधवचन्द। प्रमुख भए मुनि बहु गुन कंद।
तिनहूको है यामैं सीर। सूत्र कितेक किए गंभीर ॥ १३ ॥
मौक्तिक रत्न सूत्रमें पोय। गूंथ्या ग्रंथ हार सम सोय।
अर्थ प्रकाशक अमल अनूप। हृदय धरै सो है सुखरूप ॥ १४ ॥
नेमिचंद जिन शुभपद धारि। जैसे तीर्थ कियो गिरिनारि।
तैसैं नेमिचंद मुनिराय। ग्रंथ कियो है तरण उपाय ॥ १५ ॥
देशनिमें सुप्रसिद्ध महान। पूज्य भयो है यात्रा थान।
यामैं गमन करै जो कोय। उच्चपना पावत है सोय ॥ १६ ॥
गमन करणकौं गली समान। कर्णाटक टीका अमलान।
ताकौं अनुसरती शुभ भई। टीका सुंदर संस्कृतमई ॥ १७ ॥

केशववर्णी बुद्धि निधान । संस्कृत टीकाकार सुजान ।
मार्ग कियो तिहिं जुत विस्तार । जहं स्थूलनिकौं भी संचार ॥ १८ ॥
हमहू करिके तहां प्रवेश । पायो तारन कारण देश ।
चितवन करि अर्थनिकौं सार । ऐसैं कीनो वहुरि विचारि ॥ १९ ॥
संस्कृत संदृष्टिनिकौं ज्ञान । नाहि जिनके ते बाल समान ।
गमन करणकौं अति तरफरैं । बल विनु नाहि पदनिकौं धरैं ॥ २० ॥
तिनि जीवनिकौं गमन उपाय । भाषा टीका दई वनाय ।
वाहन सम यहु सुगम उपाव । याकरि सफल करो निज भाव ॥ २१ ॥
पूर्व कहे सिद्धान्त महान । तिनहीमैं जयधवल प्रधान ।
ताका पंच दशम अधिकार । ताकरि करिके अर्थ विचार ॥ २२ ॥
नेमिचंद नामा मुनिराय । लब्धिसार श्रुतसार वनाय ।
वर सम्यक्त्व चरित्र वखान । करिके प्रगट किए गुणथान ॥ २३ ॥
उपशम श्रेणि कथन पर्यंत । ताकी टीका संस्कृतवंत ।
देखी देखे शास्त्रनि माहि । संपूरण हम देखी नाहि ॥ २४ ॥
माधवचंद यती कृत ग्रंथ । देख्यो क्षपणासार सुपंथ ।
संस्कृत धारामय सुखकार । क्षपक श्रेणि वर्णनयुत सार ॥ २५ ॥
वह टीका यह शास्त्र विचार । तिनि करि किछू अर्थ अवधार ।
लब्धिसारकी टीका करी । भाषामय अर्थनसौं भरी ॥ २६ ॥

ऐसैं ग्रंथ दोयकी बनी। भाषा टीका सुंदर घनी
इनिमैं जैसैं कियो वखान। क्रमतैं जानो ताहि सुजान ॥ २७ ॥

सवैया।

करिकैं पीठबंध जीवकांड भाषा कीनी तामें
गुणथान आदि दोय वीस अधिकार हैं।
प्रकृति समुत्कीर्तन आदि नव ग्रंथनिको
समुदाय कर्मकांड ताकी भाषा सार है।
ऐसैं अनुक्रम सेती पीछैं लिख्यो इनिहीकी
संदृष्टीनिकौ स्वरूप जहां अर्थभार है।
पूरण गोम्मटसार ग्रंथ भाषा टीका भई
याकौं अवगाहैं भव्य पावैं भव पार हैं ॥ २८ ॥
समकित उपशम क्षायिकको है वखान
पीछे देश सकल चारित्रको बखान है।
उपशम क्षपक श्रेणी दोय तिनहूको
कीयो है वखान ताकौं जानै गुणवान हैं।
सयोगी अयोगी जिन सिद्धानिकौं वर्णनकरि
लब्धिसार ग्रंथ भयो पूरण प्रमान है।
इनकी संदृष्टिनिकौं लिखिकैं स्वरूप ताकी

संपूरण भाषा टीका कीनी भयो ज्ञान है ॥ २९ ॥
याविध गोम्मटसार लब्धिसार ग्रंथनिकी
भिन्न भिन्न भाषा टीका कीनी अर्थ गायकैं।
इनिकैं परस्पर सहायपनो देख्यो तातैं
एक करि दई हम तिनिकी मिलायकैं।
सम्यग्ज्ञान चंद्रिका धर्यो है याकौ नाम
सो ही होत है सफल ज्ञानानंद उपजायकैं।
कलिकाल रजनीमैं अर्थको प्रकाश करै
यातैं निज काज कीने इष्ट भाव भायकैं ॥ ३० ॥
संशयादि ज्ञाननिकौं हेतुभूत जीवनिकैं
तथाविध कर्मको क्षयोपशम जानिए।
ताकरि हमारैं किछू संशय विपर्यय वा
अनध्यवसाय भया होसी ऐसैं मानिये।
तिनकरि ग्रंथविषैं कहीं लिएं संशयकौं
कहीं विपरीत कहीं स्पष्ट न वखानिये।
लिख्यो होइ अर्थ ताकौं मेरो वश नाहि तातैं
क्षमा करो गुनी, शुद्ध करो चूक मानिये ॥ ३१ ॥

दोहा।

संशयादि होते किछू जो न कीजिए ग्रंथ।

तौ छद्मस्थनिकैं मिटै ग्रंथ करनको पंथ ॥ ३२ ॥
जो कषाय उपजायकैं धरै अर्थ विपरीत ।
तौ पापी है आप ही आज्ञा भंग अभीत ॥ ३३ ॥
आज्ञा अनुसारी भए अर्थ लिखे या माँहि ।
धरि कषाय करि कल्पना हम किछु कीन्हौं नाहि ॥ ३४ ॥

चौपई ।

सम्यग्ज्ञान चंद्रिका नाम, भाषामय टीका अभिराम ।
भई भले अर्थनिकरि युक्त, जाविध सो सुनिये अब उक्त ॥ ३५ ॥

सवैया ।

मैं हौं जीव द्रव्य नित्य चेतना स्वरूप मेरौ
लग्यो है अनादितैं कलंक कर्ममलको ।
ताहीकौ निमित्त पाय रागादिक भाव भए
भयो है शरीरको मिलाप जैसो खलको ।
रागादिक भावनिकौं पायकैं निमित्त फुनि
होत कर्मबंध ऐसो है बनाव कलको ।
ऐसैं ही भ्रमत भयो मानुष शरीर जोग
बनै तो बनै इहां उपाव निज थलको ॥ ३६ ॥

दोहा ।

रमापति स्तुत गुन जनक जाको जोगी दास ।

सोई मेरो प्रान है धारै प्रगट प्रकाश ॥ ३७ ॥

चौपई ।

मैं आतम अर पुद्गल स्कंध । मिलिकैं भयो परस्पर बंध ।
सो असमान जाति पर्याय । उपज्यो मानुष नाम कहाय ॥ ३८ ॥
मातगर्भमैं सो पर्याय । करिकैं पूरण अंग सुभाय ।
बाहिर निकसि प्रगट जब भयो । तब कुटुंबको भेलो थयो ॥ ३९ ॥
नाम धर्‌यो तिनि हरषित होइ । टोडरमल्ल कहै सब कोय ।
ऐसो यहु मानुष पर्याय । वधत भयो निज काल गमाय ॥ ४० ॥
देश ढूंढाहडमांहि महान । नगर सवाई जयपुर थान ।
तामैं ताकौं रहनो घनो । थोरो रहनो औठै बनो ॥ ४१ ॥
तिस पर्यायविषैं जो कोय । देखन जानन हारो सोय ।
मैं हौं जीव द्रव्य गुन भूप । एक अनादि अनंत अरूप ॥ ४२ ॥
कर्म उदयको कारण पाय । रागादिक हो है द्रव्य दाय ।
ते मेरे औपाधिक भाव । इनिकौं विनशैं मैं शिवराव ॥ ४३ ॥
वचनादिक लिखनादिक क्रिया । वर्णादिक अर इंद्रिय हिया ।
ए सब हैं पुद्गलका खेल । इनिमैं नाहि हमारो मेल ॥ ४४ ॥
रागादिक वचनादिक घना । इनके कारण कारिजपना ।
तातैं भिन्न न देखै कोय । विनु विवेक जन अंधा होइ ॥ ४५ ॥

सवैया ॥

कर्मको क्षयोपशम होत भयो मेरे किछू
बुद्धिको विकास तातैं विद्याभ्यास कर्‍यो है ।
होनहार नीको तातैं ऐसा ही बनाव बन्यो
नाना जैन ग्रंथनिमैं ज्ञान विस्तर्‍यो है ।
सार्थक गोम्मटसार लब्धिसार शास्त्रनिकौं
अर्थ अवभास्यो तब ऐसो भाव धर्‍यो है ।
इनिकी जो भाषा टीका है तौ तुच्छबुद्धि घनी
जानैं सार अर्थ जो प्रमाण अनुसर्‍यो है ॥ ४६ ॥

चौपई ।

रायमल्ल साधर्मी एक । धर्म सधैया सहित विवेक ।
सो नानाविध प्रेरक भयो । तब यहु उत्तिम कारज थयो ॥ ४७ ॥
ज्ञान राग तौ मेरो मिल्यो । लिखनौ करनौ तनकौं मिल्यो ।
कागदमाहि अक्षर आकारि । लिखि या अर्थ प्रकाशन हार ॥ ४८ ॥
ऐसैं पुस्तक भयो महान । जानै जाने अर्थ सुजान ।
यद्यपि यहु पुद्गलको स्कंध । है तथापि श्रुतज्ञान निबंध ॥ ४९ ॥
संवतसर अष्टादश युक्त । अष्टादश शत लौकिक युक्त ।
माघ शुक्ल पंचम दिन होत । भयो ग्रंथ पूरन उद्योत ॥ ५० ॥

